बुन्देली दरसन
अंक-५
2011
नगर पालिका परिषद्, हटा, जिला-दमोह

बुन्देली दरसन
अंक-५
2011
सम्पादक
डॉ. एम.एम. पाण्डे
सेवानिवृत्त, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी
हटा, जिला-दमोह (म.प्र.)
नगर पालिका परिषद्, हटा, जिला-दमोह

संपादक
डॉ. एम.एम. पाण्डे

रेखा चित्र
मनोहर 'काजल'

छायांकन
मनोहर 'काजल' मनोज जैन

मुद्रक
स्टैण्डर्ड प्रिंटिंग प्रेस
2108, राइट टाउन, जबलपुर
मोबाइल: 9425800132

प्रकाशक
नगर पालिका परिषद्
हटा, जिला-दमोह (म.प्र.)

सम्पादकीय...

बुन्देली दरसन की यह चौथी डग है, अब हम यह तो नहीं कह सकते हैं–कि यह वामन भगवान की चौथी डग सिद्ध होगी– किन्तु इतना जरूर कह सकते हैं कि इस डग को हमने पूरी ताकत से अपने फेफड़ों में हवा भरकर रखा है, और बुन्देलखण्ड के अनेक ज्ञात–अज्ञात इलाकों को जानने–समझने का अवसर जुटाया है। इस अंक में हमने मुख्य रूप से तीन खण्ड बनाये हैं– पहला खण्ड बुन्देली बगीचा है– इसके अन्तर्गत भाषा, साहित्य और परिवेश के साथ हमने धरोहर के रूप में ऐतिहासिक महत्व की सामग्री को प्रमुखतः प्रस्तत किया है। द्वितीय खण्ड के रूप में 'बुन्देली वाटिका' को प्रस्तुत किया है– इस खण्ड के अन्तर्गत बुन्देली बोली में ही हमने गद्य, रचनायें प्रस्तत की हैं– बुन्देली बोली में गद्य का अभाव है– इसकी पूर्ति हेतु इस खण्ड का अपना महत्व है। तीसरे खण्ड का नाम है– 'बुन्देली कुंज' इसमें बुन्देली कविताओं को संकलित किया गया है। ये तीनों खण्ड बुन्देलखण्ड की सर्जनात्मकता को अपने कलेवर में समेटे है। बुन्देलखण्ड में कई स्थलों पर अब बुन्देली उत्सव मनाये जाते हैं इन उत्सवों की मुख पत्रिकायें भी प्रकाशित हो रही है। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन से बुन्देली रचनाकारों को प्रकाशित होने के लिए अधिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। यह बुन्देलखण्ड के लिए शुभ है, लेकिन हमारा विनम्र निवेदन यह भी है कि अधिक प्रकाशन के सहज सुलभ अवसर कभी–कभी हमारी रचनात्मकता के साधना पथ को भी दुर्बल बना देते हैं– इसलिए अब यह जरूरी है कि हम इन अवसरों को चुनौती के रूप में लें। इस अंक के प्रकाशन में कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी प्रेरणास्रोत रहे नगर पालिका अध्यक्ष श्री बाबूलाल तंतुवाय, व पार्षदगण एवं श्री संजेश नायक मु.न.पा. अधिकारी हटा डॉ. श्याम सुन्दर दुबे राष्ट्रीय ख्याति लबब्ध साहित्यकार का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

इन सबके प्रति हमारी हार्दिक कृतज्ञता यदि इनका आत्मीय सम्बल नहीं मिलता तो यह अंक आपके समक्ष न होता। आप अपनी प्रतिक्रियायें अवश्य दें।

डॉ. एम.एम. पाण्डे

बुन्देली बगीचा

बीज आस्था के - अंकुर संस्कृति के

- डॉ. कैलाश विहारी द्विवेदी

लोक जीवन में कल्याण की भावना सर्वत्र निहित है। लोक का यह पक्ष उसकी निर्मल और पवित्र दृष्टि से उद्भूत हुआ है। प्रत्येक लोक अपनी तरह से अपने स्वस्तिमूलक मूल्यों की स्थापना करता है किन्तु उसके वे जीवन मूल्य अन्य लोकांचलों ने जीवन मूल्यों को नकारा नहीं है इसलिए ये मूल्य सर्व समावेशी है। बुंदेली लोकजीवन के ऐसे ही मूल्यों की चर्चा कर रहे है। बुन्देली साहित्य के विद्वान डॉ. कैलाश विहारी द्विवेदी

मनुष्य जिस परिवेश में जन्म लेता है उसमें समाहित मनुष्य पशु-पक्षी, धरती और जल, पेड़-पौधे तथा अन्य वस्तुएँ मिलकर ही लोक कहलाती हैं। उसमें अपने आप को समायोजित करने संबंधी मनुष्य के विचार, जब सामूहिक हो जाते हैं तब विचारो का यहाँ संतुलन लोक चेतना कहलाता है।

व्यक्तिगत विचारों के द्वन्द और संघर्षण के फलस्वरूप विवेक और नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरे जिन सामजस्य पूर्ण विचारों का विकास होता है, उनसे समाज की एक संसृष्ट (सामूहिक) मानसिकता बनती है। इसमें परा (पारलौकिक) तथा अपरा (लौकिक) के पारस्परिक संबंध का चिन्तन भी सम्मिलित होता है। वही लोक दर्शन है। इसी से स्वस्थ एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की शैली का निर्माण होता है।

लोक दर्शन का व्यावहारिक स्वरूप ही लोक संस्कृति है। इसका सैद्धांतिक पक्ष एवं नियामक तत्व लोक दर्शन होता है। लोक दर्शन में उदात्तता या अनुदात्तता संबंधी जो भी परिवर्तन होते हैं वे तद्नुरूप लोक संस्कृति को प्रभावित करते हैं।

वस्तुतः लोक चेतना, लोक दर्शन तथा लोक संस्कृति लोक चिन्तन के ही तीन आयाम है। मोटे तौर पर इन्हें समानार्थी ही समझा जाता है।

लोक दर्शन और लोक संस्कृति गतिशील होती है। आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक बदलते हुए परिवेश के दवाव में लोक दर्शन (लोगों की संसृष्ट मानसिकता) खण्डित और विकृत हो सकती है। तद्नुसार लोक संस्कृति भी प्रभावित होने लगती है। उसके उदात्त मूल्य कमजोर या नष्ट हो जाते हैं तो उनसे संबंधित व्यवहारिक कार्यकलाप भी खोखले हो जाते हैं।

बुन्देलखण्ड के लोक दर्शन का वैशिष्ट यह है कि इसकी मूलभावना स्वस्तिमयी है, यद्यपि भारत की अन्य लोक संस्कृतियों में भी न्यूनाधिक यह वैशिष्ट है, परन्तु बुन्देली लोक दर्शन में इसके साथ कुछ और भी विशेष है, जिसके दर्शन बुन्देली संस्कृति में पग-पग पर होते हैं। यथा-

बुन्देलखण्ड में कभी शक्ति पूजा की प्रधानता रही होगी, यह इतिहास की गहन शोध का विषय है, परन्तु वर्तमान समय में बुन्देली समाज के धार्मिक कार्य कलापों पर विचार करने से ऐसा माना जा सकता है।

स्वस्ति भावना के उदाहरण प्रस्तुत करने से पूर्व शक्ति पूजा संबंधी बात करना चाहूँगा क्योंकि बुन्देली लोक दर्शन की यह अति विशिष्टता प्रतीत होती है।

जिस तरह नवदुर्गा में व्रत और उपासना में जिस प्रतिबद्धता और तन्मयता के नौं दिन की अवधि में दर्शन होते हैं वह दूसरों पर्वों में दुर्लभ हैं। केवल कार्तिक स्नान ही एक अपवाद है। यह परवर्ती संसर्ग का फल हो सकता है। नवदुर्गा में ही कुमारी कन्याओं द्वारा नोंरता खेलने के रूप में गौरी पूजन का कलामय खेल बुन्देलखण्ड में शक्ति पूजन की एक विशिष्ट

परम्परा है जो और कहीं तो क्या सम्पर्ण बुन्देलखण्ड में बुन्देलखण्ड के इस हृदय स्थल को छोड़कर कहीं नही है। जहाँ-जहाँ इसका प्रचलन है भी वहाँ भी इसके स्वरूप में किंचित भिन्नता पाई जाती है।

एक विशेषता और भी है जो कि शक्ति पूजा की भावना का प्रभाव प्रतीत होती है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ही बहिन-बेटियाँ सदा पूज्य मानी जाती है। उनके ब्याज से बहनोई और दामाद भी पूज्य माने जाते हैं। पितामह, पिता, काका, उनसे आयु में वृद्ध भाई तथा इसी क्रम में दादा-दादी काका-काकी भाभी और नाना-नानी, बुआ-फूफा आदि सभी द्वारा भी उक्त रिश्तों संबंधी लड़कियों के पैर छुए जाते हैं। यह चिंतन बुन्देलखण्ड की विशेषता है। यह चलन देश के अन्य भागों में नहीं है। बंगाल जहाँ शक्ति पूजा की प्रधानता है छोटी छोटी कन्याओं का आदरवादी सम्बोधन के लिए उनके नाम के आगे माँ शब्द जोड़ कर पुकारा जाता है, वहाँ भी बहिन-बेटियों के पैर छूने का चलन नहीं है।

बुन्देलखण्ड में कन्या किसी भी जाति की हो, उसको पैर छू जाने का पाप माना जाता है।

किसी भी जाति की कन्या के विवाह में तन, मन, धन जो भी संभव हो से सहायता करना पुण्य कार्य माना जाता है।

पुत्रियाँ अपने से छोटी बहिनों की ससुराल में भोजन नहीं करती हैं। यहाँ की प्रथा तो आज भी है। यद्यपि आज वह खण्डित हो रही है तो भी उसका बहुतांश में अस्तित्व है। एक जमाना था जब लोग उस गाँव का पानी भी नही पीते थे जहाँ पुत्री ब्याही हो।

इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में सुप्रसिद्ध शक्तिपीठों की स्थिति से भी इस बात के संकेत मिलते हैं। बुन्देलखण्ड में कुछ प्राचीन शक्ति पीठों का परिचय इस प्रकार है-

विन्ध्यवासिनी (मिर्जापुर, बल्देवगढ़ जि. टीकमगढ़), शारदा (मैहर, जबलपुर मदन महल के पीछे), विन्ध्यवासिनी (गढ़ा कुण्डार जि.टीकमगढ़), सिंहवाहिनी (बाँदा), बाघराजन (सागर, टीकमगढ़), जोगेश्वरी देवी (चन्देरी जि.गुना), रतनगढ़ की माता (जि.दतिया), अखार की माता (जि.छतरपुर), रानगिर (जि.सागर), पीताम्बरा पीठ (दतिया), के इस पीठ की स्थापना बीसवीं शताब्दी के लगभग मध्य में हुई थी। यह तांत्रिक शक्ति पीठ है। इसकी स्थापना एक विलक्षण एवं विचित्र सिद्ध सन्यासी द्वारा की गयी है। एक नवीन 'पीताम्बरा शक्ति पीठ' की स्थापना का शुभारंभ हटा जिला दमोह (म.प्र.) में स्व. ग्याप्रसाद जी नायक ग्रस्त संत द्वारा सूत्रपात किया गया था जिसका भव्य निर्माण उनके प्रिय शिष्य कुंअर मानवेन्द्र सिंह हजारी हटा द्वारा तन-मन-धन से किया जा रहा है।

इन उदाहरणों से सिद्ध है कि बुन्देलखण्ड की लोक चेतना में शक्ति प्रथा गहरे तक समायी है।

इसके अतिरिक्त बुन्देली समाज के अनेक-अनेक कार्यकलापों में स्वस्तियन की एक पुरातन भावना के दर्शन होते हैं। देखने में यह बहुत छोटी बात लगती है लेकिन बुन्देली लोक दर्शन का प्रचीनतम इतिहास उजागर करती है। यथा-

ब्रत त्यौहारों के पूजन में कही जाने वाली कॉनिया (कहानी) के अन्त में प्रणाम करते हुए कहा जाता है कि हे महादेव बब्बा, हे गौरा रानी, हे मइया, हे लक्ष्मी मइया, हे गनेस जू (कथा के प्रसंगानुसार देवी देवता को सम्बोधित कर कहा जाता है) एक और विशेष बात है ये देवी देवता तो पौराणिक होते हैं किन्तु उनके चरित्र लौकिक होते हैं।

जैसे अमुक के दिन फेरे ऐसई सबके दिन फेरियो,
जैसी कृपा अमुक पै करी ऊसई सब पै करियो।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि संबंधी देवी-देवता से

दिन फेरने या कृपा करने की कामना सबके लिए की जाती है केवल अपने लिए नहीं।

संध्या समय दिया (दीपक), उजयार वौ कहा जाता है, बारना या जलाना नहीं। पँजारबौ या मिलकाबौ भी कहीं कहीं कहा जाता है, उसमें भी प्रकाश प्रवर्द्धन की भावना है। दीपक उजयारने के बाद ज्योति स्वरूप भगवान को प्रणाम करते समय - हे संजा माई सबकौ भलौ करियो, संगै हमाऔ भलौ करियो कहा जाता है।

दीपक बुझाने के लिए ठण्डा करना, शान्त करना या बढ़ाना कहा जाता है।

इसी प्रकार प्रात:काल दातुन, कुल्ला-मुखारी के बाद भी कहा जाता है-हे सूर्य नारायण स्वामी सब खों रोग दोख (दोष) से दूर राखियों (सूर्य जीवन और आरोग्य के देवता हैं। इसलिए उनसे सबके लिए केवल अपने लिए नहीं, आरोग्य की कामना की जाती है।)

जब कोई व्यक्ति या समूह तीर्थ यात्रा को जाता है तो उसे पुष्प मालाएँ पहना कर गाजे-बाजे के साथ सम्मानपूर्वक बिदा किया जाता है। उसके शुभ संकल्प की पूर्ति में सहयोग या उसके पुण्य में किंचित ही सही, भागीदार बने के लिए अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार उसको नकद राशि भी भेंट की जाती है।

इसी तरह जब कोई फूल सिराने (अस्थि विसर्जन) के लिए प्रयागराज जाता है तो लोग अस्थियों पर कुछ द्रव्य चढ़ाते हैं मृतक के प्रति सम्मान और फूल लेकर जाने वाले को प्रयागराज में पुण्य तोया गंगा मैया के दर्शन, परसन, मज्जन और उसके पवित्र जल के पान से जो पुण्य मिलेगा उसमें किंचित भागीदारी का भाव भी हो सकता है।

बुन्देलखण्ड के लोक दर्शन की स्वस्तिमयी विशिष्टता के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत कर बुन्देली लोक की परा तथा अपरा संबंधी भावधारा से प्रभावित लोक परम्परा का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न किया गया है। उसका अनेक सामाजिक कार्य कलापों में अनुभव किया जा सकता है।

जैसा पहले कहा जा चुका है कि अनेक दबावों के कारण लोक दर्शन में बदलाव हो सकता है और उससे लोक संस्कृति भी प्रभावित हो सकती है।

वर्तमान समयमें दैवी आस्था जो नारी सम्मान के रूप में प्रतिम्बित होती थी वह लगभग समाप्त हो रही है। आज नारी सर्वाधिक प्रताड़ित हो रही है। उसका अपहरण होता है। उसके साथ बलात्कार होता है। उसकी को दहेज की बलिवेदी पर चढ़ाया जाता है।

व्यक्तिवादी आर्थिक सोच और शीघ्र बड़े आदमी (धनवान) बन जाने की आपाधापी में समस्त नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। सामाजिक संबंध एवं समन्वय के सूत्र ढीले पड़ रहे हैं। परिणाम स्वरूप चोरी, डकैती, लूट, अपहरण, हत्या आदि समाज को अशांत और भयग्रस्त बनाये रखने के मुख्य कारण बन गये हैं। पहले अन्न को देव तुल्य मान्यता थी, अब शत्रुता निभाने के लिए खलिहानों में रखी फसलों को आग लगाना एक सामान्य तरीका हो गया है। गाँव-गाँवमें फैलती इस विषवेल के बीज से लेकर खाद-पानी की पूर्ति तथाकथित पंचायती राज्य के चुनावों से हो रही है। इससे सामाजिक समन्वय और दायित्व बोध छिन्न-भिन्न हो गया है। शेष रहा है अहंकार शत्रुता और गुटबाजी।

सामाजिक स्वस्ति अर्थात् लोक कल्याण और लोक मंगल की भावना निज कल्याण में सिमट गयी है। संस्कार खोखले हो गये हैं। इस भयावह स्थिति में त्राण पाने का एक ही उपाय है-

'हम सुधरेंगे जग सुधरेगा'

वा.नं.8, पुरानी न नाई,
टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन-472001
फोन: 07682-240750

* * *

बुंदेली की प्रकृति और भाषिक प्रवृत्ति

- डॉ. रमेशचंद्र खरे

डॉ. रमेश चन्द्र खरे हिन्दी साहित्य के विशिष्ट रचनाकार हैं। वे कविता-समीक्षा लेखन में सिद्धहस्त हैं। उन्होने बुंदेली बोली के व्याकरण परख स्वरूप की मीमांशा प्रस्तुत आलेख में की है। बुंदेली व्याकरण के क्षेत्र में यह प्रयास आधारभूमि बन सकता है।

विन्धा की घाटी और बुंदेली माटी की सौंधी गंध में रची बसी बुंदेली बोली की मिठास अपने आप में निराली है । युगों की विकास यात्रा में इसके शब्द धिसपिट कर चिकने हो गये जो जबाव से फिसलने लगे । अपनी देशज अनुभूतियों की बुलंद, अभिव्यक्ति में वह लोक भाषा वनती संवरती गई । जनकवि जगनिक (जन्मस्थान सकौर) तह.-हटा, जि. दमोह) के आल्हाखंड से लेकर लोक कवि ईसुरी जन्म स्थान मेंढ़की जि. मऊरानीपुर) तक बुंदेली ने अपने विस्तृत क्षेत्र में कई आयाम देखे हैं । यमुना और नर्मदा नदियों के बीच स्थित भौगोलिक इकाई में उ.प्र. के झांसी, ललितपुर, हमीरपुर, जालौन, बांदा, और म.प्र. के सागर, दमोह, पन्ना, छत्तरपुर, टीकमगढ़ जिले मुख्य रुप से आते हैं । अपने विस्तार के कारण एक अंचल की बुंदेली कभी-कभी दूसरे अंचल में अपरिचित सी लगती है । कहा भी गया है। स्वभावत: **''दस कोस पर भाषा बदले, बीस कोस पर पानी''** जैसे कई जगह 'को' के लिए प्रचलित खां-खो कारक शब्द, दमोह-सागर में अप्रचलित सा है। पूर्वी क्षेत्र में कुछ भिन्न बोली प्रचलित है। डॉ. भगवान दीन मिश्रा ने बुंदेली का सीमा विस्तार पर शोध प्रबंध प्रस्तुत कियाथा (सन् 1973) ।

सर जॉन अब्राहम ग्रियर्सन ने विश्व विख्यात सर्वेक्षण-लिग्विसिटिक सर्वे ऑफ इंडिया के ग्यारहवें खंड के हिंदी शाखा के अंतर्गत् बुंदेली का विवरण प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही पृष्ठ 91 पर लगभग 31 बुंदेली शब्दों की हिंदी पर्याय सहित सूची भी दी गई है। वह त्रुटिपूर्ण भी है जैसे(पिता-भाऊ, मां-दीदी आदि) डॉ. कांति कुमार जैन के संपादन में सागर विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग की बुंदेलीपीठ की वार्षिक पत्रिका ईसुरी के अंक 1 (1983-9) में शब्द कोष के रुप में डॉ. सुरेश आचार्य ने सागर जिला की श्री सगरयाऊ बुंदेली के 341 शब्दों की सपर्याय सूची ही है, (खंड-3 पृ. 4-16) विगत बुंदेली दरसन तथा बुंदेली बसंत बार्षिक स्मारिकाओं में भी विभिन्न बुंदेली शब्दांकन हैं। बुंदेली शब्दकोष का पर्यवेक्षण उसकी प्रकृति और प्रवृत्ति को सूचित करता है। डॉ. छविनाथ तिवारी ने अपने शोध प्रबंध दमोह जिले की बोली के आधार पर बुंदेली के शब्द सामर्थ्य का अध्ययन (1967) सागर विश्व विद्यालय से डॉ. राम लाल सिंह के निर्देशन में प्रस्तुत किया था । यहाँ हम ठेठ हिन्दी के तत्सम रुपों से बुंदेली की देशज प्रकृति और प्रवृत्ति बदलते कुछ स्वरूपों पर व्याकरणिक दृष्टि से ध्यान देंगे । बोलियाँ बहुदा अपने क्रिया रुपों से बदल जाती हैं। यथा -

1. **क्रियाएँ** - वर्तमान काल में कई जगह आकारांत हो जाती है जैसे कौन है ? कोआ, को आय ? को आव (हो) ओकारांत - हाँ - हओ, आया-आओ । आता है- आउत है
2. **क्रियाएँ** - भूतकाल में त वर्ग के द्वितीय वर्ण से प्रथम वर्ण में ढ़ल जाती हैं। वे आये थे - ते, थीं-तीं, थो-तो -

3. **क्रियाएँ** - भविष्य काल में गा, गे, गी, से, ओंकारांत हो जाती है, यथा वह आएगा वो आएगों, या में आहों लिखूंगा - लिखहों कभी कभी भविष्य काल, वर्तमान का भ्रम देता है - बो आ है .

4. बुंदेली क्रियाएँ कई बार अनुप्रासिक संयुक्ताक्षर में बदलती है। रहते थे- रत्ते-रत्ती (स्त्रीलिंग) कहते थे - कत्ते, कत्ती, (स्त्रीलिंग)

5. हिंदी क्रियाओं का आकारांत बुंदेली में अकारांत रह जाता है - आता-जाता-आत-जात, खाता-पीता- खात-पियत, सोता-जागता - सोअत जगत चलता - फिरता- चलत फिरत । वैसे ही उठत बैठत हँसत बोलत, खेलत कूदत, लेत-देत, दौड़त हाँफत आदि

6. वर्तमान क्रमागत (कंटीनुअस) काल में 'हुए' (चलते हुए) बुंदेली 'त' में बदल जाता है यथा, चलत, बैठत, कहत, गाउत, खात, पियत, देखत, सुनत आदि ।

7. भविष्य काल में तीन 'पुरुषों' एवं 'वचनों' के साथ क्रिया के 'ह' रुप - (उत्तम पुरुष) में आऊँगा - में आहो, दूंगा - देत हों ।

   मध्यम पुरुष (एक वचन) - तू आहे कै नई ?

   वहुवचन - तुम औरें आहो का ?

   अन्य पुरुष (एक वचन) - बो आहे, ऊ आहे

   बहुवचन - वे औरें आहें ।

8. अनुनासिक क्रियाएँ (ऊँकारांत) ओंकारांत में बदल जाती हैं।

   (एक वचन) करुं - करों, खाऊं - खाओं, गाऊं - गाओं, चलू-चलों ।

   उठूं- उठों, बैठों - फिरो, लिखों, खेलों आदि ।

9. बुंदेली में हिन्दी की मात्रा बड़ी ई मात्रा (ी) से काम नहीं चलता बल्कि पूरा ई, अक्षर ही उपयोग में आता है। यथा

   वही-ओई, एक ही - एकई, वैसे ही - ऊंसई नहीं - नई ।

   इसी - एई, कही - कई, ऐसे ही - ऐसई, ली - लई आदि

10. विशेषणों में कई बार ओकारांत रुप हो जाता है -

    अच्छा बुरा, अच्छो बुरो, भारी-गरओ, करो- करओ, हट - हटाओ, कड़ुआ- करओ, नया - नओ आदि ।

11. क्रिया विशेषणों - में जोर देने के लिए ई. जोड़ देने हं - बहुत सी - भौतई, अच्छोई, बुरीई, तेजई, धीमोई, एकई, दौई, तीनई, अचम्भोई आदि,

12. **विभिक्तियाँ** (कारक रचना)

    कर्त्ता - ने (नें.), कर्म - को (खां, खों) करण से (से) संप्रदान - को, के लिए (कै लाने), अपादान - सै (सै, -पृथक: अधिकरण - में, पर, (पै) संबंध - का, के, की (को.कै,की) संबोधन - हे, अरे, (ओ रे) ।

13. **उपसर्ग** - शब्द से पहले लगने वाले शब्दांश जैसे प्र, अनु, बुंदेली में एक वर्णी हो जाते हैं - प्रकाश, परकाश, प्रलय, परलय, परवेश, अनसार, तिगुनी, तिजारी ।

14. **प्रत्यय** - शब्द के बाद लगने वाले शब्दांश जैसे वाला ला का रो याटी (स्त्रीलिंग) हो जाता है। यथा

    दूधवाला - दूधबारो, हटाबारी - लकड़हारो

    लघुता दर्शक प्रत्यय (इयां) लुटिया, डालिया, टुकनियां, कुल्हाड़ियाँ आदि.

15. संबोधनों में बहुत रे का प्रयोग होता है -

    काय रे ओ रे, ऐ रे, ऐ री, आदर सूचक दाओ जू ।

16. **लिंग भेद** - स्त्रीलिंग या छोटा रुप दर्शाने के लिये शब्द में आ अथवा या लगा देते है। यथा - बिलैआ लरकिया महारिया, पतुरिआ, बटैआ, खटुलिआ,पटिया ।

17. सर्वनाम -

(पुरुष वाचक)		कर्ता	संबंध कारक	करण कारक
उत्तम पुरूष	एकवचन	मैं कर रओ हों	मोरो मकान	मोसे कई कहीं
	बहुवचन	अपन कै रयै	अपनो खेत	अपन से कई
मध्यम पुरूष	एकवचन	तै	तेरो	तो सें
	बहुवचन	तुम औंरें	तुम औरन को	तुमऔरन से
अन्य पुरूष	एक. पु.	ऊ, जो, बो	ऊ कौ, इन, कौ	ऊ,सै,उन सै
	एक.स्त्री	बा	बा कौ	बा सें
	एक.उभय	जे (ढोर) जौ (नाज)	इन कौ	इन सें
	बहुवन	बे	उन कौ	इन सें

18. बुंदेली मितव्ययिता बरतती है। यदि एक - दो शब्दों में काम चल जाय तो ज्यादा फिजूलखर्ची क्यों ?

जैसे - इस - ई, ईसै, ऊसै, ई पै, ईको, इतै, इत्ते, उत्ते, । इसलिये बुंदेली एकाक्षरी शब्द संपदा बड़ी संपन्न है। एक एक स्वर और व्यंजन स्वतंत्र या संयुक्त अर्थातंर देता है। यथा का अ कै ती ? (क्या कह रही हो ?) इ से ऊ खो दै दो (इससे उसको दे दीजिये ?)

19. बड़े ऊ की मात्रा (ू) और छोटे 3 की मात्रा (ु) यहाँ उनके मूल स्वर वर्ण में ही बदल जाती है। जैसे - साहूकार - साऊकार, गेहूँ, गेऊ, पाहुने - पाउने या कभी कभी ओंकारांत हो जाती है। कहूँ कओ,

20. ख वर्ण क में बदल जाता है। यथा सूखा - सूका, सीख- सीक, देख-देक, पाख-पाक,

21. बहुवचन बनाने के लिये न वर्ण जोड़ दिया जाता है। लड़कन, बच्चन, लड़कियन, आदमियन, पुस्तकन, पहाड़न, बागन, बनन, नदियन, औरतन । यहाँ तक कि अंग्रेजी शब्दों तक में यह घाल मेल चल गया है। एक मित्र बोले - मेरी कैस्टन की दुकान है। कैसिट्स समझे ।

22. बुंदेली में बहुधा बीच में आने वाले 'ह' वर्ण का लोप हो जाता है। जैसे गहराई - गैराई, कहनात - कैनात, कन्हैया-कनैया, रहते - राते, रहे - रय, इकगटी - इकैटी, तरह-तरां, दुल्हा - दूला, बहन - बैन, चाहत - चात, बहरा, - बैरा - मंहगाई - मेंगाई, कहती - काती, रहन दो - रन दो, पहले - पैलऊं, कहानी - कानी, ठहरा - ठैरो, कचहरी-कचैरी, दुपहरी - दुपैरी, महंगे - मांगे, बहुत - भौत, गहना - गानों, टहनी - टैनी, मुंहरी - मौरी ।

23. यहाँ ष या श की जगह स का ही प्रयोग होता है। शहनाई - सैनाई, शक्कर, सक्कर, शंकट-संकट, भाषा - भाषा,

24. कई जगह 'ल' वर्ण 'र' बन जाता है, जैसे दाल - दार, हल्दी - हरदी, केला -केरा, कालो-कारो, सालो - सारो, सोलह-सोरउ, (स्थान) वाली-बारी, डाल-डार, पालो,-पारौ,

25. कहीं कहीं (ग्राम रियाना), छ अक्षर ही नहीं बोला जाता । यथा छाने - साने, छत्ता -सत्ता, बिछौना - बिसौना ।

हिन्दी वर्णमाला के 52 वर्णो में से बुंदेली में मुख्यत : 36 वर्ण की मिलते है। शेष वर्ण जो नहीं है, अ, उ, ण, य, व, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, ऋ, ञ. । बुंदेली सरल जनभाषा है।

73, विवेकानंद नगर, दमोह (म.प्र.)-470661

* * *

पद्माकर भट्ट और उनका राम रसायन

- उदय शंकर दुबे

महाकवि पद्माकर बुंदेलखण्ड के साहित्य प्रसिद्ध कवि हैं- उनकी रचनाओं में बुंदेली वानी के भी दर्शन होते हैं। प्रस्तुत शोध निबंध में पद्माकर कृत 'राम रसायन' का शोध परक विवेचन किया गया है। हमने अपने साहित्य को पांडुलिपियों के माध्यम से लगातार संरक्षित किया है। राम रसायन की पांडुलिपि का यहाँ एक पृष्ठ अपने मौलिक रूप में छायाप्रति के माध्यम से दिया जा रहा है। अप्रतिम साहित्यकार पं. उदय शंकर दुबे का यह लेख प्रकाशित कर बुंदेली दरसन गौरवान्वित है।

अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर देश की कड़ीरिया-नागपुर, सतारा, जयपुर, उदयपुर, ग्वालियर, दतिया आदि के राजाओं द्वारा सम्मानित एवं पर्याप्त धन धन्य प्राप्त करने वाले पद्माकर भट्ट एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनका ठाट-बाट, शान शौकत राजाओं जैसा ही था। ये दक्षिण के तैलंग ब्राम्हण थे। इनका जन्म बाँदा में संवत् १८१० वि. में हुआ था और संवत् १८९० वि. में कानपुर में गंगा तट पर स्वर्गवास हुआ। स्वर्गवास के पूर्व पद्माकर दतिया राज्य के राजा परीक्षत शासनकाल सन् १८०१-सन् १८३९ ई. के दरबार में आ गये और राज्य द्वारा प्रदत्त हवेली में स्थायी रूप से निवास करने गये थे। रूग्णावस्था में वे कानपुर गंगा तट पर अंतिम समय तक रहे।

पद्माकर की प्रसिद्ध रचना जग धिनोद है। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं- हिम्मत बहादुर विरूदा वली,पद्माभरण, जयसिंह विरूदावली आलीजाह प्रकाश, गनगौर मेला वर्णन, हितोपदेश, राम रसायन, प्रबोध पचासा और गंगा लहरी। राम रसायन उनका विशाल ग्रंथ है। यह वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने राम रसायन ग्रंथ में काव्य पक्ष शैथिल्य होने के कारण इसे पद्माकर कृत होने में संदेह व्यक्त किया है। श्री शुक्ल जी कथन है कि राम रसायन नामक वाल्मीकि रामायण का आधर लेकर लिखा हुआ है एक चर्चित काव्य भी इनका दोहा चौपाइयों में हैं र उसमें इनहें काव्य संवंधिनी सफलता नही हुई है, संभव है वह इनका न हो। आचार्य जी ने राम रसायन के काव्य पक्ष को ध्यान में रखकर यह संदेह व्यक्त किया है। राम रसायन पदद्माकर भट्ट की रचना है इसमें कोई संदेह नहीं है राम रसायन के प्रत्येक काण्ड की पुष्पिका में पद्माकर भट्ट का नाम है तथा अयोध्या कांड की पुष्पिका-

''सिद्धि श्री मथुरास्य मोहनलाल भट्टात्मज कवि पद्माकरि विराचित्तो राम रसायने अयोध्या कांड समाप्तः ॥ शुभं भूपातु ॥ आषाढ़ शुक्ल १५ बुद्ध वासरे संवत् १८८० मुकाम दलीप नग्रे पुस्तक सिध श्री ब्रह्ममूर्त श्री गुसाई जू महाराज की''

-हस्तलिखित प्रति, पत्र १५८

''लंका की पुष्पिका-

''सिद्धि श्री महाराजाधिराज राज राजेन्द्र जगत सिंहाज्ञप्त मथुरास्य मोहनलाल महात्मज कवि पद्माकर विरचिते राम रसत्यने लंकाकांडे समाप्तम्॥'' नकल लिषितं लाल भवानी परसाद कुंवार, संवत् मुकाम दिलीप नगर जो बांचै सुनै ताको रामराम पैंचे॥जैसी प्रति देखी वैसी लिखी मम देस न दीजै। श्री श्री श्री॥

-लंकाकांड मुद्रित प्रति पृ.२३०

पद्माकर के पौत्र गदाधर ने संवत् १९३४ वि. (सन् १८७७ ई.) कैसर सभा विनोद ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ के आरंभ में कवि ने अपने पूर्वजों का विवरण प्रस्तुत किया है। गदाधर भट्ट अपने पितामह पद्माकर भट्ट के विषय में लिखते

हुये रामचरित की चर्चा की है-

भूपति गुमान सिंघ सुन पुरान।
दिय ग्राम दुरई बांदा सुथान सागर नरेश आभाउदार।
दीन्हें मतंग हय द्रविज भार।
जय नगर भूपमनि श्री प्रताप।
दिय ग्राम धाम धन अतिअमाय दतिया नरेश बुंदेल वीर।
महिपाल परीक्षत समर धीर॥
तिह सुजस गाय लिय ग्राम धाम।
बै कर अयाचि बिख्यात नाम॥
तिहि किय कवित बहु काव्य ग्रंथ।
श्री रामचरित बाल्मीकि पंथ॥

राम रसायन ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतियों की पुष्पिका एवं गदाधर भट्ट लिखित साक्ष्य से यह प्रमाणित होता है कि इस ग्रंथ के कर्ता पद्माकर भट्ट थे। नागरी प्रचारिणी सभा. काशी की खोज रिपोर्ट सन् १९०१ ई. की खोज विवरणिका में भी पद्माकर को राम रसायन का रचयिता माना गया है। (संख्या १-५ तक, पृष्ठ १०-१२)। पद्माकर भट्ट ने रामरसायन की रचना, जयपुर नरेश जगत सिंह सवाई के आदेश पर की थी। जगतसिंह सवाई का शासनकाल संवत् १८६० से संवत् १८७५ वि. (सन् १८०३-१८१८ ई.) तक था। बाल्मीकि रामायण जैसे विशाल ग्रंथ का हिन्दी रूपांतरण करने में कवि को स्वाभाविक है पर्याप्त समय लगा होगा। कवि ने यदि संवत् १८६० वि. में राम रसायन लिखना शुरू किया होगा तो उसे पूरा करने में अनुमान से चार-पाँच वर्ष लगा होगा। इस आधार कहा जा सकता है कि राम रसायन संवत् १८६० और संवत् १८६५ वि. के मध्य लिखा हो गया होगा। नागरी प्रचारिणी सभा. काशी की खोज विवरणिका में विवृतप्रति का लिपिकाल संवत् १८९४ वि. है। यह पूर्ण प्रति रीवा (म.प्र.) के पंडित साधु तिवारी के संग्रह में सुरक्षित थी। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतियाँ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में सुरक्षित हैं। राम रसायन अयोध्याकांड की एक संवत् १८८० वि. की हस्तलिखित प्रति इन पंक्तियों के लेखक के संग्रह में है। यह प्रति दलीपनगर, दतिया (म.प्र.) में तैयार की गई थी इससे इसकी प्रमाणिकता असंदिग्ध है।

अब तक राम रसायन पूरा प्रकाशित नहीं हो सका है। संवत् १८८३ वि. के मध्य भारत जीवन प्रेस, काशी से राम रसायन के बाल, अयोध्या और अरण्य कांड मुद्रित हुये थे जिनकी प्रतियाँ आज दुष्प्राप्य हैं। डॉ. भालचन्द्र राव तैलंग ने संवत् २०२९ वि. में राम रसायन लंका कांड को संपादित कर पद्माकर अनुसंधान शाला, सुषमा बेगमपुरा औरंगाबाद (महाराष्ट्र) से प्रकाशित किया था। डॉ. तैलंग ने दिलीपनगर दतिया (म.प्र.) में तैयार की गई प्रति को अपने संपादन का आधार बनाया है। आधार प्रति किस संवत् में लिखी गई थी यह भ्रामक है क्योंकि मुद्रित प्रति में उसका समय संवत् १८०९ छपा है जो अशुद्ध है। उन्होनें ग्रंथ के आमुख में प्रति के विषय कोई उल्लेख नही किया है। संपादक डॉ. तैलंग ने सन् १९९५ ई. में इस ग्रंथ की एक प्रति मुझे भेंट स्वरूप प्रदान की थी जो मेरे संग्रह में वर्तमान है।

राम रसायन दोहा, सोरठा, चौपाई, हरि गीतिका भुजंग प्रयात छंद में लिखा गया है। यह बाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद है। बालकांड के आदि के अंत मे पद्माकर भट्ट ने संस्कृत में स्वरचित एक-एक श्लोक रखा है। प्रत्येक कांड सर्गों में विभक्त है। कांड क्रम से सर्गों की संख्या इस प्रकार है-1- बालकांड-सर्ग-99, 2. अयोध्या कांड, सर्ग-199, 3- लंकाकांड युद्ध कांड-सर्ग-130, तथा उत्तरकांड सर्ग-129 इस प्रकार 65 सर्गों में संपूर्ण रामकथा विभक्त है।

गोस्वामी तुलसीदास की ही भाँति पद्माकर भट्ट ने श्री राम के मर्यादा पुरूषोत्तम रूप को स्वीकार किया है। कवि की राम के प्रति दृढ़ आस्था और भक्ति हैं। वह भगवान शंकर से विनम्र भाव से वरदान मांगता है कि मेरी चंचल मति राम के चरणों से कभी अलग न हो-

पद्माकर कर जोरि, वर मांगत यह संभु सौ।

अति चंचल मति मोर, तजति न कहुं रघुपति पगन॥

- किष्किंधा कांड

ग्रंथांत में कवि का कथन है कि जैसे भूखे को भोजन, प्यासे को पानी रूचिकर लगता है उसी प्रकार राम में मेरी रूचि सदैव बनी रहे।

भूख लागै ज्यों भण रूचत, प्यास लगैं ज्यो नीर।
यौं पद्माकर कौ सदा, रूचहु राम रघुवीर॥

-उत्तरकांड का अंतिम

पद्माकर ने राम रसायन के दोहा पाठ करने का माहात्म्य वर्णन भी किया है। पद्माकर द्वारा लिखे गये रीति परक ग्रंथों से अनभिज्ञ पाठक राम रसायन को पढ़कर उन्हें भक्त कवि ही मानेंगे। संभवत: इसी कारण से डॉ. पालचंद्र राव तैलंग ने राम रसायन को भक्ति रसायन की संज्ञा दी है। पद्माकर संस्कृत और हिन्दी भाषा के ज्ञाता थे। वंश परंपरा से कवि थे, पुराण वाचक थे, राज दरवारों की नीति-रीति से पूर्ण परिचित थे। उन्होंने दतिया के राजा परीक्षत को अपने द्वारा अनुमोदित बाल्मीकि रामायण (राम रसायन) की पूरी कथा को सुनाया था।

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि राम रसायन आदि काव्य वाल्मीकि रामायण का भाखानुवाद है। ब्रजभाषा में लिखा गया बुन्देलखण्ड का यह पहला रामकथा का महाकाव्य है। पद्माकर ने वाल्मीकि रामायण के अनुरूप ही इसे सर्गों में विभक्त किया है, प्रत्येक सर्ग के प्रांरभ में एक-एक हरिगीतिका छंद का विधान है और प्रत्येक कांड के अंत में स्वरचित संस्कृत भाषा में एक-एक श्लोक रखा है। दोनों ग्रंथों के संर्गों की संख्या इस प्रकार है-

		वाल्मीकि रामायण (सर्ग)	राम रसायन (सर्ग)
१.	वालकांड	७७	७७
२.	अयोध्याकांड	११९	११९
३.	आरण्य कांड	९५	९५
४.	किष्किंधाकांड	६९	६९
५.	सुंदर कांड	६८	६८
६.	युद्धकांड	१२८	१३०
७.	उत्तरकांड	१११	१२१
	कुल सर्ग	६४५	६५९

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पाँच कांडों में दोनो ग्रंथों की सर्ग संख्या समान है केवल युद्ध कांड और उत्तरकांड में सर्गों की संख्या विषम है। राम रसायन ग्रंथ के युद्धकांड में दो सर्ग और उत्तरकांड में दस सर्ग अधिक है। बाल्मीकि रामायण और राम रसायन दोनों ग्रंथों में युद्धकांड और उत्तरकांड की कथा समान है केवल सर्गों की संख्या का अंतर है।

पद्माकर भट्ट ने राम रसायन की रचना बुंदेली मिश्रित ब्रज भाषा में की है जिससे जन सामान्य भी राम कथा को समझ सकता है। राम रसायन के बारहवें सर्ग से कैकेयी दशरथ संवाद की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं- कैकेयी राजा दशरथ से भरत का राज्याभिषेक और राम को वनवास यह दो वर मांग चुकी है, इस से राजा दशरथ व्याकुल हो उठे, वे मूर्छित हो गये-

छंद- यौ कैकेई के दुर्वचन मुनि वज्र जनु नृप उर लागौ।
अति मुरछित ह्वै घरिक द्वै पुन कदुक मुर्छा तै जगौ।
तब करत भौं संसह मनहि मन यहहि कै सपनौ भयो।
कै चित्त ही कौ भ्रम भयो कै मोह मन प्राननि छयो॥

चौपाई- लहि पुनि चेत नृपति भौ ऐंसे।
वाघिन ढिग मृग व्याकुल जैसे।
विषधर अहि जिमि मंत्रन कीलों।
रूक रहि जात सकत ना ढीलौ।
धिक मो कह धिक जीवन मेरौ।
या कहि मूर्छित भयहु, धनेरौ।
ह्वै सचेत पुन देखी रानी।
करत भसम जानु तेजनि ठानी।
लखि भामिन कह नृप तब कहेऊ।
तू कुल नासिन यह कह कहेऊ।

तू अति क्रूर कसक नहि तोहै।
रामहि वन पठवन कह जोहै॥

पद्माकर ने बाल्मीकि मुनि रचित श्लोकों को कितनी सरल और बोल चाल की भाषा में अनुदित कर दिया है, यह कवि की क्षमता का बोध कराता है। इतना अवश्य है कि पद्माकर भट्ट के पूर्व बुंदेलखण्ड के ही ग्वालियर निवासी विष्णुदास ने पंद्रहवीं शताब्दी में बाल्मीकि रामायण की कथा को दोहा-चौपाई छंद में प्रस्तुत किया था। विष्णुदास रचित रामायण कथा संक्षेप में है। कवि ने बहुत रोचक तथा सरल ढंग से कथा को प्रस्तुत किया है। विष्णुदास की रामायण कथा को हम बाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद नहीं कह सकते क्योंकि रामायण कथा में तीन ही बालकांड, सुंदरकांड और उत्तरकांड हैं जिनमें बाल्मीकि रामायण में आये विविध प्रसंगों को रखा गया है। पौराणिक कथा वाचकों में से जो कवि थे उन्होनें संस्कृत भाषा में पद्यमय अनुवाद किया । विशेष रूप से महाभारत, श्रीमद्भागवत् और बाल्मीकि रामायण का विभिन्न कवियों द्वारा समय-समय पर अनुवाद प्रस्तुत किया गया।

पद्माकर भट्ट के समकालीन या उनके कुछ समय पूर्व कृष्ण कवि कलानिधि ने बाल्मीकि रामायण का भाषा में पद्यानुवाद विविध छंदों में किया था। उन्होनें रामायण सूचनिका (चूर्णिका) भी तैयार की थी। कवि कलानिधि भी जयपुर नरेश जयसिंह (द्वितीय) महाराज कुमार प्रताप सिंह तथा बूंदी नरेश राव राजा बुद्धसिंह के आश्रित थे। महाराज प्रताप सिंह सबाई का शासन काल संवत् १८३५ वि. से संवत् १८६० वि. सन् १९९८-१८३० वि. तक रहना संभव है, इसी अवधि में कलानिधि ने बाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया हो। ग्रंथ की पूर्ण पाण्डुलिपि अप्राप्त होने से निश्चित समय निर्धारण करना कठिन है। किंतु इतना तो कहा जा सकता है कि कवि कृष्ण कलानिधि और पद्माकर भट्ट दोनों ने जयपुर नरेशों के आश्रय मे रहकर बाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद किया था। पद्माकर के पश्चात् हिन्दी के कई कवियों ने बाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद किया। जिनमें संतोष सिंह (रचनाकाल संवत् १८९०) कवि छत्रधारी (रचनाकाल संवत् १९१४) ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी (रचनाकाल संवत् १९१६) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। पद्माकर भट्ट द्वारा राम रसायन की रचना के बाद हिन्दी में राम रसायन नाम से रचना लिखने और बाल्मीकि रामायण के अनुवाद करने की परंपरा चल पड़ी।

आधार ग्रंथ-

१. हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, खण्ड-प्रथम, ना.प्र.सभा, काशी

२. खोज रिपोर्ट, सन. १८०१, १९०५, १९७९ एवं १९३८

३. अयोध्याकांड की संवत् १८८० वि. की हस्तलिखित प्रति

४. राम रसायन-संपादक डॉ. भालचंद्र राव तैलंग (लंकाकांड)

५. रामायन कथा-विष्णुदास, संपादक-पं.लोकनाथ द्विवेदी, सिलाकारी

६. कैसर सभा विनोद की हस्तलिखित प्रति-दतिया राज्य पुस्तकालय

* * *

लोक कवि ईसुरी के काव्य में समाज की पीड़ा

- डॉ. बहादुर सिंह परमार

डॉ. बहादुर सिंह परमार बुंदेली के मर्म को जानने वाले साहित्यकार हैं। बुंदेली बसंत का संपादन वे अनेक वर्षों से कर रहे हैं। उन्होनें ईसुरी के काव्य में सामाजिक संदर्भों का लेखा-जोखा बहुत गंभीरता से किया है। प्रस्तुत आलेख डॉ. परमार की शोध वृत्ति की नूतनता को प्रकट करता है।

लोकानुभूति को लोककवि अपनी रचनाओं में स्वर देता है। वह लोक के सुख-दुख के साथ, उसकी पीड़ा उसके संघर्ष को अपनी रचना में इस तरह प्रस्तुत करता है, कि लोक को उसमें आनन्द के साथ समाधान का स्वप्न दिखाई देने लगता है। तत्कालीन समाज के अनुभवों को कवि अपनी सर्जना शक्ति से सभी का बना देता है। यही तत्व अपने समय के बाहरी और भीतरी दबाबों से जब टकराता है तो मौलिकता बनती है। जो लोक स्वीकार्य हो लोककंठ का हार बन जाती है। बुन्देलखण्ड अंचल के लोक कवि ईसुरी की कविता की लोक स्वीकार्यता के पीछे मुझे लगता है कि उनकी मौलिकता ही है। उन्होनें मौलिक ढंग से जहाँ एक ओर लोक जीवन का सौन्दर्य पक्ष अपनी कविताई में उजागर किया वहीं दूसरी ओर तत्कालीन समाज की पीड़ा को भी गाया है। दुर्भाग्य से ईसुरी के श्रृंगार पक्ष पर काफी विशद चर्चा हुई है लेकिन समाज की पीड़ा के गायक के रूप में उन्हें जिस हद तक याद किया जाना चाहिए था, उतना नहीं किया गया है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि साहित्य का श्रेय और प्रेय मानवीय मूल्य होते हैं। इसलिए जहाँ मानव मूल्य आहत होते हैं ह्रासमान होते हैं- वहाँ साहित्य उनको अपना आधार देकर उन्हें फिर शक्ति देता है क्योंकि साहित्य वस्तुत: आदमी के लिए और वह मानता भी है कि आदमी के अलावा और कुछ भी इस संसार में श्रेष्ठ नहीं है। आदमी इसलिए महत्वपूर्ण भी है कि उसने अपने अथक संघर्षों से मानवीय मूल्यों का अर्जन किया है।1 आदमी में मानवीय मूल्यों के क्षरण से उपजी सामाजिक पीड़ा को साहित्य के माध्यम से स्थपित करने का काम, सत्ता की गुलामी को ठुकराने वाले कवि ईसुरी ने बखूबी किया है। इनके काव्य में तत्कालीन समाज की पीड़ा के अनेक रूप व बिम्ब देखने को मिलते हैं। उस समय पड़े दुर्भिक्षों व सूखों से उत्पन्न भुखमरी हो, या अन्याय , रिश्वतखोरी, पक्षपात, भेदभावजनित पीड़ा लोककवि ईसुरी ने उसे अपने काव्य की विषय वस्तु बनाया है। अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष भावना से ओत-प्रोत कुछ चौकड़ियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो महत्वपूर्ण हैं।

ईसुरी उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में लगभीग चालीस साल तक काव्य सृजन करते रहे हैं। डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त उनके काव्य काल को 1965 ई. से 1909 ई. तक मानते हैं। डॉ. गुप्त 'ईसुरी का लोक और काव्य देश' में लिखते हैं कि 1857 की क्रांति जैसी ऐतिहासिक घटना के संबंध में ईसुरी की कोई फाग नहीं मिलती जबकि उनके पूर्व के फागकारों- फकीरे खान, गंगासिंह, दादूराम, रेवा राम आदि की फागों में क्रांतिकारियों का वर्णन किया गया है। 2 इतना ही नहीं ईसुरी के जीवन को आधार बनाकर 'प्रेम तपस्वी' उपन्यास लिखने वाले श्री अम्बिका प्रसाद दिव्य इस दिशा में मौन हैं। वहीं 'कही ईसुरी फाग' उपन्यास की लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम के संबंध में अलग ढंग से रजऊ के पति व रजऊ का काल्पनिक प्रसंग जोड़ा है। इस संबंध में 2008 ई. में स्थानीय स्तर पर प्रकाशित एक पुस्तक में कुछ भिन्न तथ्य प्राप्त हुए है। ईसुरी की जनम स्थली मेंढ़की निवासी पं. बाबूलाल पाठक की पुस्तक 'ईसुरी की चौकड़िया' फागें शीर्षक से श्री महेन्द्र कुमार पाठक ने प्रकाशित की हैं जिसमें बताया गया है कि ब्रिटिश सरकार जनता पर जुल्म ढा रही थी। कांग्रेसी जन

जान की बाजी लगाकर संघर्ष कर रहे थे। मेढ़की से श्री ग्या प्रसाद पाठक, रामलाल तिवारी, बड़े गरीबे, मिश्रा जी, बिलासी पाठक सभी लोग कांग्रेस का साथ दे रहे थे। ईसुरी ने इन्हीं लोगों में शामिल हो सरकार ब्रिटिश के खिलाफ इक्कीस फागें रची। 3 इनमें से पाँच फागे पं. पाठक को उपलब्ध हो पाई हैं। जो उन्होनें पुस्तक में संकलित की है। इस पुस्तक में तो यह भी लिखा है कि इन फागों की भनक जिलाधिकारी जो अंग्रेज था उसको मिली उसने ईसुरी को वारन्ट द्वारा मेंढ़की से पकड़ बुलाया। ईसुरी से साहब ने पूछा-फागें रचते हो ब्रिटिश सरकार के खिलाफ। ईसुरी ने हाँ में जबाब दिया। ईसुरी पर काफी मार पड़ी। जेल में भेज दिया गया। ईसुरी वहाँ जेल में कैदियों को अपनी फागें सिखाने लगे। कैदी गाने लगे और कांगेसी जेल में थे। इसकी खबर फिर जिलाधिकारी पर पहुँची तो माता शारदा की कृपा से जिलाधीश ने यह सोचकर इनको छोड़ दिया कि ये कवि पूरे जेल के कैदियों को बिगाड़ देगा। जमानत पर छोड़ दिया। 4 इस तथ्य की परख सरकारी रिकार्ड के अनुसार किये जाने की आवश्यकता है हो सकता है कि वावूलाल पाठक ने लोक श्रुति के अनुसार यह लिखा हो लेकिन लोक श्रुति के पीछे भी कोई घटना अवश्य होती है। इसे परखा जाना चाहिए। पं. बाबूलाल पाठक ने जो पाँच चौकड़ियाँ अंग्रेजों के संबंध में दी है, उनमें जनता की शासन के विरूद्ध भावना का उभार, उनके अन्याय व जुल्म के साथ ईसुरी यह कहने से भी नहीं चूकते कि बबूल के पेड़ बोने पर आम कैसे खाओगे ? वे लिखते हैं-

1. इनको अन्त राज कौ आ रओ, कातन हिरदय डरा रओ।
   जनता भड़क गई है सबरी, शासक जोर लगा रओ।
   उल्टी गैल में शासक चल रओ, सीधी छोड़े जा रओ।
   ''ईसुर कात चन्द दिन में, अब राज दूसरौ आ रओ।''5

2. जनता अब स्वतंत्रता चा रई बन्धन से अकुला रई।
   कैसे देश तजे जे अपनो , सबखाँ यही समा रई।
   मारें-मरें सबई खाँ केवल, ऐकई बात दिखा रई।
   ''ईसुर भारत माता रो-रो, भारी रूदन मचा रई।''6

3. कुछ दिन बाद अन्त आ जैहे, समय बदल अब जैहै।
   जौन सल्तनत जुल्म करत है, वो कैसे रै पैहै।
   जीने पेड़ बबूरा बै दये, आम कहाँ से खैहैं।
   ''ईसुर रो-रोकें कै रये हैं, जल्द दिया बुझ जै है।''7

पं. बाबूलाल पाठक ने दो चौकड़िया फागें औरसंकलन में दी है वे निम्नवत हैं-

1. भावई अंग्रेजन पै आ रई, राज छुड़ावौ चा रई।
   एक दिना जा अवध गई लौ, रामें बने पठा रई।
   एक दिना जा राजा नल खाँ, भारी दु:ख दिखा रई।
   ''ईसुर जा अब ब्रिटिश राज्य खाँ, भारत से भगवा रई।''8

2. गोरन खाँ अब दुख दिखा रये, इतै नहीं रै पा रये।
   जनता भारत की सब पलटी, गोरा दु:खी दिखा रये।
   गाँधी कहें भारत को छोड़ो, जो ऐलान करा रये।
   ''ईसुर ब्रिटिश हुकूमत को अब, भारत से भगवा रये।''9

उक्त प्रथम फाग में भावई (विपदा) के माध्यम से कवि कहता है कि अब अंग्रेजों पर विपदा आई हैं, इसके पहले विपदा राम को बनवास दिला चुकी है, राजा नल को भारी दुख विपत्ति के कारण ही झेलने पड़े हैं। अब यह विपदा ही ब्रिटिश राज को भारत से भाग जाने को विवश कर रही है। दूसरी फाग में वे कहते हैं कि गोरन (गोरी चमड़ी के यानि अंग्रेज) को अब दु:ख के दिन देखने पड़ रहे हैं, वे अब यहाँ नहीं रह पा रहे हैं, क्योंकि सारी जनता पलटी खा गई है। जननायक गाँधी गोरों से भारत छोड़नेका ऐलान कर रहे हैं। इन फागों की प्रमाणिकता परखी जाना शेष हैं। मुझे ऐसा लगता है कि ईसुरी के नाम पर अनेक लोककवियों ने चौकड़ियाँ रचकर खोटे सिक्कों की तरह समाज में प्रचलित कर दी हैं उनमें से कुछ उपर्युक्त हैं लेकिन पुस्तक के रचयिता पाठक के बाबा व ईसुरी गहरे मित्र व समकालीन थे और पाठक जी ने यह सभी अपने बाबा से सुनकर लिखी है जिनको शेधकर्ता प्रमाणिकता के

निष्कर्ष पर कसकर परखें।

बुन्देलखण्ड अंचल वनाच्छादित पहाड़ों-पठारों की भूमि पर अवस्थित है। यह भू-भाग कृषि की दृष्टि से अन्य अंचलों से पिछड़ा है। यहाँ पर्याप्त जल प्रबंधन न होने से सिंचाई की सुविधायें नहीं है जिससे अधिसंख्य किसान प्राकृतिक वर्षा पर आश्रित रहते हैं। यहाँ सूखा व अकाल जैसी विपदाएँ लगातार जन सामान्य को परेशान रखते हैं। दीवान प्रतिपाल सिंह के अनुसार - सन् 1819, 1833, 1868, 1877 और 1998 के दुर्भिक्ष बहुत ही भयानक थे।10 "लोककवि ईसुरी ने अपने जीवन काल में 1868, 1877 तथा 1898 के भयानक दुर्भिक्षों को देखा व झेला था। कहा जाता है कि 1898 ई. का अकाल इतना भयानक था कि समाज के हजारों लोग भूख से मरे थे। इस पीड़ा को भोगकर कवि ईसुरी इसीलिए लिखते हैं-

> घर में नही अन्न कौ पउआ, अब भये मोल बिसउआ।
> मरे जात भूंकन के मारै, नन्ने-नन्ने छउआ।
> भाजी पालौ एक बचौ न, लौंच खाव कनकउआ।
> सवा डेढ़ कौ नाज बिका रव, दो के हो गए मउआ।
> घाटी अटके प्रान "ईसुरी, कब घर आय लठउआ।"11

घर में अन्न का एक दाना न होने से भूख के कारण छोटे-छोटे बच्चे व्याकुल हैं। अकाल के दुष्प्रभाव से शाक-भाजी तक उपलब्ध नहीं है। यहाँ तक कि कनकउवा (सुलभता से उपलब्ध भाजी) तक लौंच कर पूरी खा ली गई है। दुर्भिक्ष के प्रभाव से अनाज बहुत मँहगा बिक रहा है, यहाँ तक कि महुआ भी दो सेर के बिक रहे हैं। अगली खरीफ की फसल लठारा (मोटा अन्न) का इन्तजार करके प्राण आशा से गले में अटके होने की बात कहते हैं। इसी भाव साम्यता की एक अन्य फाग में वे पुन: किसान की पीड़ा की चर्चा करते हैं। किसान केवल अकाल से परेशान नहीं होता उसकी फसल में रोग लगते हैं यहाँ तक कि महुआ में लौका रोग लगने से वह भी नहीं फूंले हैं जिससे अपने संचित आभूषणों को बेचकर किसान अपना पेट पाल रहे हैं। वे इसी पीड़ा को इस तरह कहते हैं-

> आसौं दै गव साल करौंटा, करौ खाव सब खोंटा।
> गोऊँपिसी खोंगिरूआ लग गए, मउअन लग गऔ लौंका।
> ककना दौरी सब धर खाये, रै गऔ फकत अनौंटा।
> कात ईसुरी बाँदें रइयो, जबर गाँट को खौंटा।12

किसान फसल की तैयारी हेतु खेत को बड़ी आशा से जोतता है फिर विश्वास के साथ बोता है उसकी सिंचाई करता है, रखवाली करता है और तैयार फसल को देखकर अनेक सपने पालता है। तैयार खड़ी फसल से न केवल किसान प्रसन्न होता है बल्कि कृषक आश्रित सेठ, साहूकार, जमींदार आदि सभी अपनी वसूली की आशा से प्रसन्न रहते हैं लेकिन तैयार फसल को प्रकृति नष्ट कर देती है, फसल बहुत कम होती है जिससे सभी के स्वप्न पानी के बुलबुले के समान नष्ट हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में कृषक भाग्य भरोसे होकर ईश्वर पर सब कुछ छोड़ते हुए कह उठता है कि-

> निनरै जैसी राम निवारै, घटी परी सिनसारै।
> अगन-पूस लै बई औ जोती, द्वार-द्वार दरबारै।
> माल गुजारी मांगन चाहत, का दैवी सिरकारै।
> नई दै सकत जिमी कौ पइसा, जिर्मीदार झकमारै।
> 'ईसुर' इनके कछु बचौ ना, साव का बार उखारे।"13

इस तरह विपदाओं से जूझता, अभावों में पलता बुन्देलखण्ड का कृषक समाज संघर्ष करता रहता है। यहाँ लोक मानस भाग्यवादी व आस्तिकता से पूरित है किन्तु बार-बार आपदाओं के आने से व्यक्ति खीझ जाता है और ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाने लगता है। ईश्वर को पालक, गरीब नवाज, दीनदयाल जैसी उपमाओं से नवाजने वाला लोक उसे निष्ठुर कह उठता है। इस लोक भावना को अनुभूत कर लोक कवि ईसुरी कहते हैं कि हर साल बिना अन्न के परमेश्वर हम लोगों को मारता है। यह हमें क्या पालेगा?

मारत बिना अन्न हर सालै, पनमेसुर का पालै ?
काय खाँ दुख दयै रात है, काटई करौ हलालै।
सबै समेट इखट्टो लै जा, कात काय ना कालै।
नौनीं लगै अकेलौ 'ईसुर', जब सब भक्ष बड़ालै।''14

अवर्षा की स्थिति के लिए वनों की कटाई को जिम्मेदार माना जाता है। इस तथ्य को लोक कवि ईसुरी ने समझा था इसीलिए उन्होंनें वृक्षों की कटाई को रोकने का आव्हान् किया था। वे फलदार पेड़ों का महत्व बताते हुए बुन्देलखण्ड में सबसे अधिक पाये जाने वाले वृक्ष महुआ की कटाई रोकने हेतु विनय करते हुए कहते हैं–

इन पे लगै कुलरियाँ घालन, मउआ मानस पालन।
इनें काटबो न चाइयत तो, काट देत जे कालन।
ऐसे रूख भूँख के लानें, लगवा दये नँद लालन।
जे कर देत नई सी ईसुर मरी-मराई खालन।15

समाज में सामूहिकता का भाव सदैव रहा है। मानस व समूह में रहकर समूह के दबाब में मानवीय मूल्यों को आत्मसात करके सांस्कृतिक परम्पराओं का निर्माण करता है। ये निर्मित सामाजिक रीतियाँ जब खण्डित होती हैं। तो पीड़ा मन में उपजती है। मनुष्य ने आरम्भ से सामूहिक रूप से अनीति पर चलने वालों को दण्डित कर नीति पर लाने का प्रयत्न किया है। इसके लिये पंचों की परिपाटी प्रारम्भ की गई थी। कहा जाता है कि पंचों के मुख से परमेश्वर बोलता है, वे सही न्याय करते हैं किन्तु समय के फेर ने बेईमानी के बोलबाले से पंचों को भी नही छोड़ा। पंचों में प्रपंच वाले लोग चुने जाने लगे हैं, जो मुँह देखी पंचायत करने लगे हैं। इस पीड़ा को ईसुरी ने आत्मसात करके लिखा है–

आ गऔ बेईमानी कौ पारो, इतै न डेरा डारौ।
पंचन में परपंच जुरत है, करै न बारो न्यारौ।
मौ देखी पंच्यात करत हैं, तकै चीकनो द्वारौ।
ईसुर कात सबई के मन की, जो तगड़ा टोडारौ।16

कई बार समाज में स्थितियाँ यह बनती हैं कि हम आपस में किसी को बिना बतायें गोपनीय तरीके से अपना काम निकालने की कोशिश करते हैं किन्तु किसी कारण से काम नहीं सटता तो हम सार्वजनिक पंचायत जोड़कर निर्णय की अपेक्षा करते हैं, लेकिन समजा में ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो इधर की बातें उधर और उधर की बातें इधर नमक मिर्च लगाकर करते हैं जिससे काम तो नहीं बनता उल्टे जग हँसाई होती है। इस पीड़ा को लोक कवि ईसुरी ने अनुभव कर स्वर दिया है–

पैलां कुठिया में गुड़ फोरे, फिर पंचयात निपोरें।
बिना काज और बे मतलब में, चार जनन खों जोरें
कछु नाँय के कछु माँय के, हरदम रात बिलोरे।
ईसुर ऐई सें भीतर रइयत, कड़ियत नइयाँ दोरे।17

ग्रामीण परिवेश में जमीन-जायदाद के झगड़ों से जहाँ एक ओर मनमुटाव बढ़ता है वहीं दूसरी ओर कोर्ट-कचहरी के चक्कर में किसान पिसना है। सरकारी कारिन्दा बिना रिश्वत के काम नहीं करते हैं। इसमें पुलिस तथा पटवारी का नाम अग्रगण्य है। इसी तरह का वाकया ईसुरी के जीवन में घटित हुआ। बड़ागाँव और बगौरा की सीमा को लेकर दोनों गाँव के कामदारों में विवाद हुआ जिसे निपटाने में ईसुरी ने सक्रिय भूमिका निभाई थी। इस संबंध में उन्होनें चार फागें रचीं थी जिनमें से दो यहाँ दृष्टव्य हैं जिनमें रिश्वतखोरी की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी गई है। वे कहते हैं कि अपनी लाँच (रिश्वत) के लिए लालाजू (पटवारी) यहाँ की वहाँ करते हैं। वे कहते हैं–

1. लाला बंसी मानत नइयाँ, नाप साब समझायें।
फिरें खतौनी औ खसरा खाँ, लाला जू कखयायें।
हो गये हैं हैरान बिचारे, कांलौ किये बताये।
अपनी लांच खायबे कौ वे, नाँय की माँय मिलायें।

2. गड्डी गाड़ें ढड़कत नइयाँ, ओंगन बिना लगायें।
इनका मिनका घुनका बड़के, तिनें वकील बनायें।
मंगल टुड़िया दुबे रबूदे, फल्ले खाँ दबकाये।
जिनके नैयाँ चून चनन कौ, उनसे लाग मँगाये।'' 18

इस तरह हम देखते हैं कि लोक कवि के मुख से समाज की पीड़ा के विविध पक्ष निसृत हुए हैं। ऐसे महान लोककवि ईसुरी की काव्य साधना को नमन करते हुए कवि भानुप्रताप शुक्ल की यह फाग याद आती है–

''ई धरती पै ईसुर सो गये, बीज काव्य के बो गये।
अपने कुल को नाँव–गाँव, सब सुयश सुधा से धो गये।
लोक गीत फागन कौ गजरा, माँ के कण्ठ पिरो गये।
नोंउ रसन की बूँद–बूँद के, गंगा इतै निचो गये।'' 19

निश्चित तौर पर ईसुरी के काव्य में नवरसों की गंगा प्रवाहित हुई है। जिसमें लोक आनंदित हो अपनी पीड़ा को भूल जाता है।

–एम.आई.जी.–7, न्यू हाउसिंग बोर्ड
कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)

संदर्भ संकेत

1. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे, लोक : परम्परा, पहचान एवं प्रवाह पृ. 72
2. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त , मामुलिया अंक–11–12, ईसुरी विषेषांक, पृ. 59
3. पं.बाबूलाल पाठक, ईसुरी की चौकड़िया फागें, पृ.7–8
4. पं.बाबूलाल पाठक, ईसुरी की चौकड़िया फागें, पृ.8–9

5से 9 पं.बाबूलाल पाठक, ईसुरी की चौकड़िया फागें, पृ.8–9

10. दीवान प्रतिपाल सिंह, बुंदेलखण्ड का इतिहास, प्रथम भाग, पृ.72
11. ईसुरी का फाग साहित्य सं. लोकेन्द्र सिंह नागर, प्रकाशक आदिवासी लोककला अकादमी भोपाल, पृ.258
12. ईसुरी का फाग साहित्य सं. लोकेन्द्र सिंह नागर, पृ.263
13. ईसुरी का फाग साहित्य सं. लोकेन्द्र सिंह नागर, पृ.264
14. ईसुरी का फाग साहित्य सं. लोकेन्द्र सिंह नागर, पृ.262–263
15. ईसुरी बुन्देली का फाग साहित्य सं.श्याम सुन्दर बादल, पृ.307
16. ईसुरी बुन्देली का फाग साहित्य सं. लोकेन्द्र सिंह नागर, प्रकाशक लोककला आदिवासी अकादमी पृ.282
17. पं.बाबूलाल पाठक, ईसुरी की चौकड़िया फागें, पृ.32
18. ईसुरी बुन्देली का फाग साहित्य सं.श्याम सुन्दर बादल, पृ.292
19. भानुप्रताप शुक्ल, फाग–फुहार, प्रथम पृष्ठ से

* * *

लोक कवि ईसुरी और उनकी रामभक्ति

- डॉ. कुँजीलाल पटेल 'मनोहर'

लोक कवि ईसुरी ने भले ही कोई महाकाव्य न रचा हो, किन्तु उनकी प्रतिभा अद्वितीय है वे बोली के महाकवि हैं। उन्होनें अपनी सूक्ष्म और गहन दृष्टि से बुंदेली लोक जीवन की अनेक बारीक विविधताओं का अवलोकन कर लिया था। वे निर्भीक कवि थे किन्तु उनकी भक्ति भावना में उनकी आत्म स्वीकृतियाँ और उनकी आत्म-विगलित अनुभूतियों का दिग्दर्शन हुआ है। इसके प्रति भक्ति परक रचनाओं का विवेचन विद्वान लेखक के इस निबंध से किया है।

बुन्देली फड़साहित्य के बुनियादी उन्नायकों में जिन लोकविभूतियों का वाचिक परम्परा में आदर के साथ यशोगान किया जाता है उनमें चौकड़िया फाग के जन्मदाता विन्ध्यकोकिल ईसुरी मील के पत्थर की भाँति आज भी स्थापित हैं। यदि ईसुरी के रचनाकाल में ही बुंदेली साहित्य का संकलन कर लिपिबद्ध किया गया होता तो आज बुंदेली लोक साहित्य का इतिहास कितना समृद्ध और लोकव्यापी होता, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में मौखिक परम्परा का अधिकांश फाग साहित्य हमेशा के लिये विलुप्त हो गया है। जो फाग साहित्य आज हमारे प्रकाशित संकलनों में है, उसमें श्रृंगार विषयक रचनाओं की अधिकता है। भक्ति एंव नीति संबंधी रचनाओं को पूर्णतः नकार सा दिया गया है।

बुन्देली फाग साहित्य के अधिकांश संकलनकर्ता तथा अन्वेपक - विन्ध्यकोकिल ईसुरी को प्रणयोन्मादी, उथली श्रृंगारिकता का अमर्यादित एवं असामाजिक गँमारू प्रेम की बैयक्तिक कामुक भावनाओं को खुलेआम आलापित करने वाला एक लम्पट फागकार मानते हैं। ऐंसी मानसिकतावादी अन्वेषक केवल ईसुरी और उनकी रजऊ विपयक फागों के पुनरावृत्ति दायरे से बाहर निकलकर उधेड़बुन का परम्परावादी रवैया बदलने का प्रयास ही नहीं करते। संभवतः यह कृत्य आचार्य शुक्ल की केशववादी लकीर की उक्ति को चरितार्थ करने जैसा जान पड़ता है व्यापक अन्वेषणात्मक नहीं। ऐसी स्थिति में सीमित दायरे के कटघरे से बाहर निकालने के लिये किसी रचनाकार को समझने के लिये उसके समग्र कृतित्व को व्यापक दृष्टि से पुनर्मूल्यांकित करने की आवश्यकता होती है। ईसुरी की भक्ति एवं नीति संबंधी आध्यात्मिक रचनाधर्मिता का अनुशीलन करने के पहले हमें फड़बाजी का देशकाल, रचनाकार का यौवन एवं उत्तरार्द्ध काल, रीतिकाल का चमत्कारिक नायिका चित्रण काल जैसी प्रवृत्तियों के प्रभावों को भी परखना होगा।

ईसुरी कालीन साहित्य और साहित्य में श्रृंगारिक मुखरता अधिक थी लेकिन इसके साथ ही भक्ति, नीति एवं आध्यात्मिकता संबंधी असाधारण साहित्यिक रचनाधर्मिता को भी पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता। फागकार ईसुरी की यदि भक्ति, नीति एवं आध्यात्मिक फागों को संकलित कर लिपिबद्ध किया जाय तो आज भी उनका एक ओर रामचरित और दूसरी ओर पूरा कृष्णचरित्र प्रबंध काव्य के रूप में बुन्देली लोक साहित्य में स्थापित किया जा सकता है।

बुन्देली में रामचरित का कोई ऐसा प्रसंग नही जिस पर ईसुरी ने भक्ति, नीति एवं आध्यात्मिक लोक रचनाएँ न की हों। केवल युग के प्रभाव की श्रृंगारिकता ने ईसुरी की रामभक्ति तथा आध्यात्मिक कालजयी रचना संसार को पूर्णतः दबाकर ढँक दिया है। ईसुरी की रामभक्ति संबंधी रचनाधर्मिता का

अनुशीलन उनके संबंध में कही गई सिर्फ एक ही उक्ति के आधार पर किया जा सकता है-

रामायन तुलसी कही, तानसेन ज्यों राग।
सोई या कालिकाल में, कही ईसुरी फाग।

उक्त लोक प्रसिद्ध दोहे के प्रथम चरण में ही ईसुरी की रामभक्ति अथवा उनकी फाग रामायन की प्रमाणिकता स्वयं सिद्ध हो जाती है। साहित्य जगत में जो ख्याति तुलसी की रामायन की है, ग्रामीण लोकजीवन की वाचिक परम्परा में वही ख्याति ईसुरी की रामचरित संबंधी बुन्देली चौकड़िया को प्राप्त है। इस आशय की पुष्टि ईसुरी की एक चौकड़िया फाग अन्वेषण के लिये कितना व्यापक मार्गदर्शी आधार प्रदान करती है-

रामें लयें रागनी जी की, लगै सुनत में नींकी।
छैऊ शास्त्र पुरान अठारा, चार वेद से झींकी।
गैरी भौत अथांय भरी है, थांय मिलै ना ईकी।
ईसुर सौंसऊँ सुरग नसैनी, रामायन तुलसी की॥

ईसुरी को केवल श्रृंगारी और फूहड़ लंपट रचनाकार कहने वाले अन्वेषकों ने लोककवि के भक्तिसंबंधी आध्यात्मिक साहित्यिक अवदान की ओर संभवतः झांकने की कोशिश ही नही की है, जबकि ईसुरी श्रृंगारी रचनाकार देशकाल के अनुसार जरूर हैं, लेकिन उनकी आत्मा भक्तिवादी होकर प्रभु की प्रभुता में पूर्णतः विश्वास करती है। ऐसी अनगणित रचनाएँ है जो ईसुरी की आध्यात्मिकता और ईश्वरीय आराधना को सिद्ध करती हैं। राम के नाम में जो सच्चाई है उसको झुठलाया नही जा सकता है। रामनाम का प्रभाव अनेक वैदिक पौराणिक प्रसंगों में देखा जा सकता है। बानगी के तौर पर एक चौकड़िया यहाँ प्रस्तुत है-

लै लो राम नाम इक सच्चा, लगै न दुख कौ दच्चा।
हिरनाकुस प्रहलाद के लानें, कौन तमासौ रच्चा।
सबरे भाँड़े पके अबा के, एक भाँड़ौ रओ कच्चा।
बरत आग में कूँदत आ गये, मंजारी के बच्चा।
लैं लैं नाम पार भये ईसुर, मीला-दोला फच्चा।

भगवान राम में आस्था रखने वाला जीवन में आने वाली विपत्तियों को उन्हीं का स्मरण कर उनसे मुक्ति पा लेता है। ईसुरी भी ईश्वर में पूर्ण आस्था रखने वाले लोककवि हैं। इसीलिये तो वे कहते हैं-

जिनके रामचंद्र रखवारे, को कर सकत दगारे।
बड़े भये प्रहलाद बचाये, हिरनाकुस को मारे।
राना जहर दओ मीरा खाँ, प्रीतम मान समा रे।
मसकी जाय ग्राह की गरदन, गह गजराज निकारे।
ईसुर प्रभु ने गाज बचाई, सिर पै गिरत हमारे॥

संसार में हर प्राणी का जन्म, जीवनयापन, यश-अपयश, सुख-दुख उसके अच्छे-बुरे कर्मो का ही प्रतिफल है। हमें जो कुछ इस संसार में भोगने को मिलता है वह सब ईश्वर की ही कृपा का प्रतिफल है। इसीलिये हमें मनुष्य होने का भी घमंड नहीं करना चाहिये।

जिनकौ साँझ-सकारै खैये, उयै बिसेस डरैये।
नौं दस मांस गरभ में राखै, उनें पीठना दैये।
नरनारी को कौन बला-वल, जिनकी संगत गैये।
सब जग रूठै रूठौ रन दो, राम ना रूठौ चैये।
ईसुर चार भुजाबारे सौं, का दो भुजा निरैये॥

ईसुरी जाको राखें साँइयाँ मार सके नहिं कोय की उक्ति के पक्षधर रहे हैं। अन्याय का विरोध करना और न्याय का पक्ष लेना ईसुरी की प्रहलाद की भक्ति का संबंधी एक रचना में देखिए-

गिरि से पटक दओ प्रहलादै, बिना हरि को सादै।
राजारानी त्रास देत नित, ताते खंभन बाँदै।
शिव कौ नाम लेत काहे ना, जनम करत बरबादै।
जान हरन को जाल पसारें, काल कुठरियन धांदै।
बैर पिता से करे जाओ सुत, दशरथ सुत को यादै।
जिनकौ नाम जगत जस फैलो, दओ बैकुंठ निसादै।
ईसुर तुमको जूझत नैयां, दूजौ नांव बता दै॥

ईसुरी ने मानव जीवन में रामभजन को सभी सुखों का मूल माना है। संसार के सारे नाते स्वार्थी और मतलबी हैं। लोक से परलोक तक साथ देकर फलीभूत होने वाला केवल रामभजन ही है। इसीलिये तो ईसुरी कहते हैं-

भजमन राम सिया भगवानें, संग कछु नई जानें।
धन दौलत सब माल खजाने, धरे इतईं सब रानें।
भाई बंधु घर कुटुम कबीला, जे स्वारथ पहचानें।
कैंड़ा कैसौ छोर ईसुरी, हंसा होय रमानें॥

ईसुरी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे, लेकिन वैदिक और पौराणिक साहित्य का इन्हें भरपूर ज्ञान था। ईश्वर के वरदान और अभिशाप के अनेक प्रसंगों पर फड़साहित्य में विरोधी फागकार को पराजित करने के लिये ईसुरी ने शिव की विचित्र महिमा पर अनेक रचनाएं रचीं है। शिवजी ने नारद को क्या से क्या बना दिया, एक चौकड़िया फाग में देख सकते हैं-

नारद हो गये नारी नर सें, सब कोऊ हारो हर सें।
साठ पुत्र द्वादस कन्यन हाँ, दओ निकारौ घर सें।
जो जाने सो करत उचित सब, का बस होत जबर सें।
ईसुर सबके गरब अहारी, शिव जी कहत गरून सें।

संसार में जिस किसी पर राम की कृपा हो जाये, उसका फिर कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। ईसुरी की रामभक्ति विषयक अनेक ऐंसी रचनाएँ लोकमानस में गाई जाती हैं। इन्हीं में से एक चौकड़िया यहाँ प्रस्तुत हैं-

जीपें कृपा राम की होई, करें लेत क्या कोई।
परमेसुर के चार भुजा हैं, मानुस कें है दोई।
उँगरी करें मरो ना जावै, ककरी कुमड़ा नोई।
ईसुर दुक्ख दीन खाँ देवें, दीन बंधु को होई।

ईसुरी ने जीवनयापन के लिये जो कुछ किया उसको सभी जानते हैं। लेकिन मानवीय जीवन को लौकिक और पारलौकिक दृष्टि से सुधारने के लिये क्या करना चाहिये। ईसुरी की स्पष्ट बयानी इस फाग में अवलोकनीय हैं-

अब मन करौ चाकरी हरकी, आस छोड़ कें नरकी।
बाल्मीक मुनि की गति देखौ, उल्टी से भई सरकी।
सबरी सी सुरलोक चली गई, मरजी सारंगधर की।
खैंच दई नकसीस ईसुरी, लंक अर्थ सब धरकी।

ईसुरी राम नाम की महिमा और पुण्यप्रताप को अच्छी तरह से जानते थे। केवल राम का नाम अन्तरात्मा से जपना ही मोक्ष प्राप्ति के लिये काफी है। इसीलिये वे अपनी रसना को ही ऐसा करने के लिये कैसी समझाइस देते हैं-

रसना राम-राम कह जारी, कौन जात तें हारी।
जौ हरि नाम सजीवन बूटी, खात बनैं तौ खारी।
कॉलौ दिन उर रात सिखैये, कहो जात बिरथारी।
ईसुर हमना कोऊ तुमारे, तैंना कोऊ हमारी।

ईसुरी औ तुलसी की दास्यभक्ति में अनेक जगह समानता देखने को मिलती है। ईसुरी की रामचरित सम्बंधी अनगिनत चौकड़ियों में उनकी भक्तिभावना को अन्वेषकों ने आज तक कहीं उदघाटित नहीं किया। लोकविख्यात ईसुरी की भक्ति विषयक एक फाग कितनी विचारणीय है-

अब का सैंय पराई उरिया, लगी राम सें डुरिया।
घंटा बजो भोग जब लागो, आये बसोर बसुरिया।
सब भगतन में सामिल ओड़ि में, सुनियत एक पतुरिया।
एक सौ आठ भगत कँय कॉलौ, विदत वेद की धुरिया।
तुलसी भये सुमेर ईसुरी, भक्त माल कौ गुरिया।

ईसुरी की मंशा है कि ईश्वरीय कृपा जिस पर होती है, उसका संसार में कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ईसुरी को केवल उन्हीं का डर है और किसी का नहीं, इसीलिये तो वे कहते हैं-

जिनकी करिये ताबेदारी, बेई लयें खबर हमारी।
एक मंदिर में रामचंद्र हैं इक में कुंज विहारी।
जिनकी पूजा करत रात दिन, पंडित और पुजारी।
ईसुर जग में बेई ना रूठै, रूठ जाय संसारी॥

ईसुरी की भक्ति के ऐसें अनेक उदाहरण गिनाये जा सकते हैं। एक फाग में उन्होनें अपने मन को मुंदरी और अपने आराध्य का नाम नगीना की भाँति उसमें किस प्रकार जड़ लिया है। अलंकारों के चमत्कार ईसुरी ने इस प्रकार दिखाये हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। ईसुरी का नपातुला बुन्देली मे विचित्र शिल्प सौन्दर्य देखिये-

मैंने मन मुँदरी में गाड़ो, राम नाम ना छांड़ो।
तन कंचन में डार दओ, सुरत खटाई कांड़ो।
नेम से बाँध धरम के पलवा, प्रेम तराजू ताड़ो।
तिसना तौल धरी जा ईसुर, रंग रसना में माँड़ो।

ईसुरी अपने मन को भगवान राम के नाम का जाप करने के लिये समझाते हुए कहते हैं कि राम का नाम ही अन्त में काम आता है। अनेक उदाहरण देते हुये वे अपने मन को इस प्रकार उत्प्रेरित करते हैं-

ये मन जपत काये ना रामें, आये आखरी कामें।
सुआ पड़ाउत गनका तरगई, लेत हरी के नामें।
अपने जनको पठा देत हरि, बैकुंठन के धामें।
जो न भजै राम को ईसुर, परै नरक के ग्रामें॥

ईसुरी समाज के हर व्यक्ति को देखते ही राम राम सीताराम करना जिन्दगी में कभी नहीं भूले। चाहे गली चलत की मुलाकात हो या किसी गाँव में होने वाली फागों की फड़वाजी में हो। इस संबंध में उनकी यह फाग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों की वाचिक परम्परा में प्रचलित है-

पाँचे सीताराम हमारी, सबको सभा मझारी।
जितने मान होय दंगल में, उने दंडवत न्यारी।
हो गये एकएक से भारी, उनको है लाचारी।
ईसुर कहत भोर के पारें, निहुर परे गिरधारी।

ईसुरी मूलतः जनभावनाओं के लोककवि हैं। प्रारंभिक रचनाकाल में भले ही उनकी रचनाओं में श्रृंगारिकता का आधिक्य रहा हो लेकिन बाद में भक्ति, धर्म, नीति से संबंधित लोक रचनाएँ ही सर्वाधिक रची गई है। राम भक्ति के संबंध में पूरे रामचरित मानस के आधर पर अनगिनित फागें दूरस्थ अंचलों में आज भी सुने को मिलती हैं। जिनमें रामजन्म, मुनि आगमन, ताड़कावध, धनुषयज्ञ, राम विवाह, वनगमन, सीताहरण, लंकादहन, मंदोदरी-रावण संवाद, लक्ष्मणशक्ति, मेघनाद वध, सुलोचना सती, रावणवध आदि प्रसंगों पर आधारित फागें शोधयात्रा के दौरान संकलित करने को मिली है।

ईसुरी ने जीवन पर्यन्त मौलिक रचनाओं की अभिव्यक्ति की है। समूचे बुन्देलखण्ड में उनकी अस्वस्थता तथा अंतिम समय की प्रसिद्ध चौकड़िया कितनी मार्मिक व्यंजना प्रस्तुत करती हैं-

मोरी राम राम सब खैयां, चाना करी गुसैयां।
दै दो दान बुला के बामुन, करौ संकल्प गैयां।
हाँत दोक जाँगा लिपवा दो, गऊ के गोबर मैयां।
हार खेत ना जाव ईसुरी, अब हम ठैरत नैयां॥

ईसुरी मृत्यु के पूर्व अपने सगे संबंधियों, परचितों, पुरा पड़ौसियों को बुलाकर अपनी मृत्यु का पूर्वाभास अपनी रचनाओं के माध्यम से करा चुके थे। इस संबंध में अनेक रचनाएँ लोकमानस में लोकगायकों द्वारा आज भी प्रचुर मात्रा में कहीं और सुनी जाती है। इन सभी रचनाओं में उनकी रामभक्ति प्रमुख रूप से सिद्ध होती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जीवन के उत्तरार्द्ध में ईसुरी रामचरित्र मानस से प्रभावित होकर तुलसी की भाँति रामभक्ति की अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में देते रहे हैं। ऐसी सभी रचनाएं दूरस्थ अंचलों के वृद्ध फागगायकों से संकलित कर उन्हें विलुप्त होने से बचाने की आवश्यकता है। जिनमें ईसुरी का व्यक्तित्व और उनकी रामभक्ति की लोकव्यापी निष्ठा को रेखांकित किया जा सकता है। ऐसी फाग रचनाओं में उनकी श्रृंगारिकता में भी लौकिक भक्ति का आभाष मिलता है।

सहायक प्राध्यापक
शास.महाविद्यालय छतरपुर मोबा.: 942589773

* * *

कलम और करवाल के धनी : बुन्देल केशरी महाराजा छत्रसाल

- हरि विष्णु अवस्थी

भारतीय इतिहास में 'बुन्देल केसरी' विशेषण से विभूषित महाराज छत्रसाल बुन्देला (1707-1732 ई.) एक ऐसे शूरवीर एवं कुशल शासक हुए जिन्होनें अपने प्रचण्ड बाहुबल से मुगल साम्राज्य के विस्तृत भू-भाग पर अधिकार कर लगभग दो करोड़ रूपया वार्षिक आय के पन्ना (बुन्देलखण्ड) नामक राज्य की स्थापना की थी। एक कवि ने महाराज छत्रसाल की राज्य सीमाओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि-

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।
छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस॥

प्रचण्ड बाहुबल से विशाल राज्य तो स्थापित किया जा सकता है किंतु राज संचालन हेतु आवश्यकता होती है दूरदर्शिता बुद्धिमत्ता एवं नीतिज्ञता की। मानव इतिहास के सबसे विलक्षण राजनीतिज्ञ चाणक्य ने कहा है कि 'राज्य मूलं इंद्रियजय:' अर्थात् सत्ता का मूल है इन्द्रियों को वस में रखना। नैतिकता तो राजनीति की रीढ़ है।

महाराजा छत्रसाल को एक शूरवीर के अतिरिक्त एक नीतिवान नरेश के रूप में भी स्मरण किया जाता है। स्वर्गीय वियोगी हरि जी के शब्दों में 'महाराज छत्रसाल जैसे वीर योद्धा वैसे ही कुशल शासक भी थे। उन्होनें बहुत कुछ अंशों में राम राज्य स्थापित कर दिया था वे प्रजा का पुत्रवत पालन करते करते थे। मदोंद्धत को यथेष्ट दण्ड देना और शरणागत, दीन तथा गौ ब्राम्हणों की रक्षा करना उनका एकमात्र ध्येय था।'

छत्रसाल महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्षधर एवं पर्दा प्रथा के प्रबल विरोधी थे। पं. गोरेलाल तिवारी के अनुसार- 'यवनों के संसर्ग के कारण बुन्देलखण्ड में भी पर्दा प्रथा बढ़ रही थी। परन्तु महाराजा छत्रसाल ने इसे रोकने का प्रयत्न किया और स्त्रियों को बिना पर्दा के निकलने का हुक्म दिया। उन्होनें स्त्रियों के प्रति दुर्व्यवहार करने वालों के लिए कठिन दण्ड की व्यवस्था की।' छत्रसाल के समान उदार और प्रजा पालन में तत्पर शासक इस संसार में थोड़े ही रहे होंगे।

महाराजा छत्रसाल का जितना करवाल पर अधिकार था उतना ही अधिकार उन्हें अपनी कलम पर भी था। एक ओर जहाँ वे एक वीर योद्धा थे तो वहीं दूसरी ओर एक सफल कवि भी। उनकी भक्ति विषयक रचनाएँ भी राधाकृष्ण, भगवान श्री राम एवं बजरंग बली हनुमान से मुख्यत: संबंधित है। इसके अतिरिक्त उन्होनें विशुद्ध श्रंगार एवं नीति विषयक छंदों की भी रचना की। स्वर्गीय वियोगी हरि जी ने संवत् 1983 वि. (1926 ई.) में उनकी उपलब्ध रचनाओं का सम्पादन कर **'छत्रसाल ग्रंथावली'** नाम से उनका प्रकाशन कराया था।

उनकी रचित **'नीति मंजरी'** का राजनीति संबंधी एक छन्द दृष्टव्य है-

चाहौ धन धाम भूमि भूषन भलाई भूरि,
सुजस सहूरजुत रैयत को लालियौ।
तोड़ादार घोड़ादार वीरन सों प्रीति करि,
साहस सों जीत जंग खेत तें न चालियौ॥
सालियो उदंगनि को दंडनि को दीजो दंड,
करिकै घमण्ड घाव दीन पै न घालियो॥
विनती छत्रासाल करैं होय जो नरेश देश,
रहै न क्लेस लेस मेरो कहो पालियौ॥

उपर्युक्त छंद का अति संक्षिप्त रूप भी अवलोकनीय है-

राजी सब रैयत रहै, ताजी रहै सिपाहि।
छत्रसालता राज कौ बार न बाँको जाहि॥

राजनीति में शत्रु परदया दिखाने पर पृथ्वीराज चौहान जैसे शूरवीर प्रचण्ड योद्धा को क्या दुष्परिणाम भोगना पड़ा उसकी ओर संकेत करते हुए महाराज छत्रसाल लिखते हैं-

अपुनो मन भायौ कियौ गहि गौरी सुलतान।
सात बार छाड़यौ नृपति कुमति करी चौहान।
कुमति करी चौहान, ताहिं निंदक सब कोऊ।
असुर बैर इकबार पकरि काढ़े दृग दोऊ॥
दोउ दीन को बैर आदि अंतहि चलि आयौ।
कहि नृप छता विचारि कियौ अपुनो मन भायौ॥

स्वार्थ और परमार्थ को परिभाषित करते हुए छत्रसाल ने लिखा है कि-

निज स्वारथ सो पाप नहि, परमारथ सो पुन्न।

दिये इकाई सुन्न ज्यों होत छता दस गुना॥

अपनी वृद्धावस्था में मुहम्मद खाँ बंगस जफर जंग द्वारा पन्ना राज्य पर किये गए आक्रमण का सामना करने में अपने को असमर्थ समझते हुए उन्होनें इस नाजुक घड़ी में बाजीराव पेशवा से सहायता लेने में कोई संकोच नही किया। उन्होनें बाजीराव को लिखा-

जो बीती गजराज पर सो बीती अब आय।
बाजी जात बुन्देल की राखौ बाजीराय॥

छत्रसाल का पत्र पाते ही बाजीराव पेशवा का एक लक्ष्य घुड़सवारों की विशाल सेना लेकर उनकी सहायता हेतु आ पहुँचा और उन्होनें पन्ना राज्य को बंगस के हाथों में जाने से बचा लिया। छत्रसाल ने इस उपकार के बदले बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र मानकर पन्ना राज्य का तीसरा भाग प्रदान कर अपने वचन का पालन किया। जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होनें अपनी राजनीतिज्ञ सूझबूझ से पन्ना राज्य की रक्षा की।

वियोगी हरि जी के शब्दों में, ''लक्ष्मी, काली और सरस्वती- इन तीनों महाशक्तियों की साधना एकसाथ ही यदि किसी साधक से बनी है तो वह बुन्देलखण्ड का रक्षक वीर शार्दूल छत्रसाल है।'' महाराजा छत्रसाल का बुन्देलखण्ड में वही स्थान है जो महाराणा प्रताप का राजस्थान में, छत्रपति शिवाजी का महाराष्ट्र में या गुरू गोविन्द सिंह का पंजाब में। चारों एक पंथ के पथिक थे।

- अवस्थी चौराहा, किले का मैदान
टीकमगढ़ म.प्र. 472001

* * *
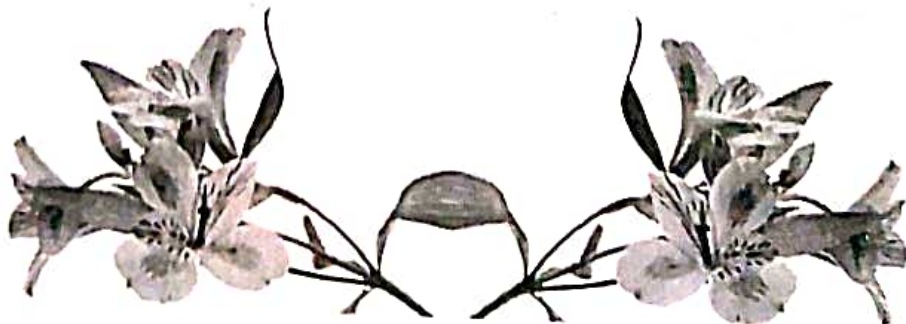
महाराजा पृथ्वीसिंह रसनिधि के काव्य में सामाजिक चेतना एवं समन्वय की विचारधारा

- डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव

उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल सामन्तवादी प्रवृत्तियों की प्रधानता वाला युग था। इस काल में सत्ता का प्रमुख केन्द्र बिन्दु बादशाह होता था और राजे रजवाड़े उसी के अधीन शासन सूत्र चलाते थे। यही कारण था कि उस युग में आम जनता शोषित और साधनहीन थी। समाज की सारी समृद्धि बादशाह, राजा महाराजा, सामन्तों, जागीरदारों के घेरे में सिमट गई थी। जनसाधारण इस सामंतवादी ढाँचे में दबा सहमा रहता था। राजा, सामन्त और जागीरदार विलासिता और मनोविनोद में डूबे रहते थे। बेगमों, वैश्याओं, रखैलों और अनेक उप-पत्नियों की प्रथा के चलते गृहकलह और आंतरिक वैषम्य की स्थितियां बनी रहती थी। दूसरी ओर बादशाहों और राजाओं के महलों में पलने वाली प्रभावशाली महिलायें सामान्य जनों पर अत्याचार की स्थितियां भी पैदाकर देती थीं- बेगमों और रक्षिताओं की अगणित संख्या के होते हुए भी ये लोग वेश्याओं के यहाँ पड़े रहते थे। इनके इशारों पर लोगों के भाग्य का निर्णय तक हो जाया करता था। इस प्रकार से विलास मे डूबे हुए ये लोग अपनी संतान की देखभाल तक नही कर पाते थे।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द्र पृष्ठ २८३.)

मध्यकाल का सामाजिक जीवन घोर अव्यवस्थाओं से भरा हुआ था। बादशाह, अमीर-उमरा, राजा, सामन्त आदि केवल स्वयं की सुख-सुविधाओं को महत्व देते थे। जनता की देखभाल पर उतना ध्यान नही दिया जाता था जितना कि अपेक्षित था, यही कारण है कि जन चेतना भीतर ही भीतर व्यवस्थाओं को अनुकूल बनाने के लिए कसमसाती रहती थी- सामाजिक दृष्टि से इस काल को आदि से अंत तक घोर अध:पतन का युग ही कहा जाना चाहिए। इस काल में सामंतवाद का बोलबाला था और सामन्तशाही के जितने भी दोष हुआ करते हैं, उनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव जन सामान्य के जीवन पर पड़ रहा था। सामाजिक व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु बादशाह था और उसके अधीन थे मनसबदार अथवा अमीर उमराव। इनके बाद ओहदों के अनुसार दूसरे कर्मचारी आते थे और सबका कर्तव्य-कर्म अपने से ऊपर वालों को प्रसन्न करना-नीचे वालों को ये मात्र सम्पत्ति समझते थे, उसका अस्तित्व केवल अपने लिए मानते थे।''

मध्यकालीन समाज में राजाओं, जागीरदारों के अतिरिक्त श्रमजीवी, किसान, सेठ, साहूकार आदि थे। ये सभी अपने से ऊपर के शासक वर्ग के लिए ही कार्य करते थे। उनकी कृपा पर ही इनके जीवन की सुरक्षा एवं सुख निर्भर करता था। श्रमिकों और किसानों का प्रथम स्तर पर शोषण सेठ, साहूकारों द्वारा किया जाता था और द्वितीय स्तर पर सामन्तों और जमीरदारों द्वारा इनका शोषण होता था। इसके बाद इनके शोषण का तीसरा चरण राजा होते थे। यदि कभी युद्ध की स्थिति आ गई तो फिर श्रमिकों और किसानों का जीवन तबाह भी हो जाता था। राजाशाही का वह युग युद्धों की विभीषिका का युग भी था। बड़ी-बड़ी सेनाओं के संचलन, प्राकृतिक आपदा आदि से इनके जीवन का एकमात्र आधार कृषि भी चौपट होती रहती थी। इस तरह से मध्यकाल का सामाजिक जीवन संकटापन्न बना रहता था। ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाने वाले राजा भी संकट के समय उदारता का व्यवहार कम ही करता है। जिससे जनता का आक्रोश और असंतोष उभारने को हो जाता था। जन आक्रोश को दबाने के लिए कभी-कभी जनता पर बल प्रयोग भी किया जाता था।

इतना सब कुछ होने के बाद भी सामाजिक गतिविधियाँ

संचालित होती रहती थीं। भक्ति-भजन-पूजन-सांस्कृतिक उत्सव, त्यौहार, मेले आदि के माध्यम से सामान्य जन अपने खोए आनन्द को खोजने का प्रयास करते रहते थे। समाज के साथ संस्कृति जुड़ी है। यह संस्कृति मानव समाज की चेतना को सदैव बल प्रदान करती रही है।

उपर्युक्त प्रकार के तमाम विरोधाभासों से दूर सेंवढ़ा (दतिया)के राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' की छवि एक प्रजापालक राजा की थी। प्रजा की सुविधा का पूरा ख्याल रखते थे। पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' ने राजा बनने के बाद पृथीनगर वसाया जिसे सेंहुडा कहा गया। पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' कवि हृदय शासक थे। इन्होनें 'रसनिधि सागर', 'रतनहजारा', 'मोहनविलास', 'विष्णुपद कीर्तन', 'अरिल्ल', 'मंज' आदि अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं। ये सन् 1677 से 1758 तक विद्यमान रहे। उन्होनें समाज के प्रत्येक वर्ग पर दृष्टि डाली है। 'रतनहजारा' में सामाजिक लोक-रीतियों का वर्णन भी दस-वारह दोहों में किया गया है। कुछ दोहें इस प्रकार है-

"जाही तैं इहि आदरै, जगत मांझ सब कोई।
वोलै जवै वुलाइये, अनबोलें चुप होइ॥
हुक्का सौं कहु कौन पै, जात निबाहौ साथ।
जाकी स्वांसा रहति है, लगी स्वांस के साथ॥
विनु औसर न सुहाइ तन, चंदन लावौ गारि।
औसर की नीकी लगै, मीता सौ सौ गारि॥
चलि आयौ जै है चलौ, जगत विदित व्यौहार।
गाहि लिए जोयन कनहिं, रहत ठहर इकु प्यार॥
वित चोरन चित चोर में, व्यौरौ इतनौ आइ।
उनै पाइकें मारिए, इनके लगियै पांइ॥
समौ पाइकें मारिए, नीचहु करन गुमांन।
पाय अमर पख दुजनि लौं, काग चहै सनमांन॥
झूठे ही जर जात हैं, याके साथी पांच।
देखी कै काहु सुनी, लगत सांच को आंच॥"

रतनहजारा-पृथ्वी सिंह 'रसनिधि' दोहा १९१६

पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' लोकरीति, लोक व्यवहार, लोकरूचि के ज्ञाता और अनुभवी थे। उनका सामाजिक सम्पर्क बहुत प्रगाढ़ रहा होगा, तभी तो वे इतनी गहराई की बातें लिख सके हैं। उपर्युक्त दोहों में सामाजिक व्यवहार की यथार्थता दृष्टिगोचर होती है। जैसे "जब कोई बोलने को कहे तो बोलो, बिना मतलब नहीं बोलना चाहिए।" हुक्का (तम्बाकू पीने के उपयोग में आने वाला एक देशी उपकरण) का उदाहरण देते हुए रसनिधि के निकट सम्पर्क का महत्व समझाया है। राजा होते हुए भी रसनिधि लोक व्यवहार में रमे हुए थे। वे जानते थे और नीति कथन भी करते थे कि अवसर के अनुकूल वार्ता और कर्म करना शोभा देता है। दोहा क्र. 924 में चितचोर और वित्तचोर शब्दों के माध्यम से सज्जन और दुर्जन के प्रति किए जाने वाले व्यवहार का औचित्य दर्शाया है। 'रसनिधि' ने 'दुर्जनवर्णन' शीर्षक से सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अच्छा ज्ञान प्रस्तुत किया है। कतिपय उदाहरण निम्नानुसार है-

"तिनिसौं चाहतु दादि तैं मन पसु कौंन हिसाव।
छुरी चलावत है गरैं, जे बकसत न कसाब॥
मीत बधिक जे निरदई, भूंज करेजा खाति।
जिबहें करत जे जियन की, कब मन में कसकाति॥"

पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' भक्त हृदय कवि थे। वे बधिकों जैसे निर्दयता तथा कठोर व्यवहार के विरोधी थे। ऐसे बधिकों और दुष्टों को 'रसनिधि' ने पशु तुल्य कहा है। इस प्रकार के दोहों के माध्यम से 'रसनिधि' ने लोगों के मन में प्रेम, दया, सौहार्द्र की संचेतना जगाने का काम किया है।

पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' लोक चेतना जाग्रत करने के लिए सांस्कृतिक पर्वों और उत्सवों को भी महत्व देते थे। 'रतनहजारा' में फाग के उत्सव का चित्रण इस प्रकार हुआ है-

"जिन नैनन में बसत है, रसनिधि मोहन लाल।
तिन में क्यों घालत अरी, तैं भर मूंठि गुलाल।
नेह अतर छवि अरगजा, भरि गुलाल अनुराग।

खेलत भरी उछाह सौं, पिय संग होरी फाग॥''

पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' ने लोक जीवन को सरसता और सक्रियता प्रदान करने के लिए प्रेम, स्नेह व निश्छल अनुराग की भावना को महत्व दिया है। बिना प्रेम के सामाजिक सौहार्द्र की प्रतिष्ठा हो ही नही सकती। 'रसनिधि' ने जाति, धर्म और वर्ग भेद से ऊपर उठकर सर्वधर्म समन्वय की बात कही है क्योंकि उसकाल में भारत में हिन्दू और मुस्लिम धर्मों और सम्प्रदायों के बीच वैमनस्य की स्थिति चल रही थी। 'रसनिधि' ने 'रतनहजारा' में लिखा है-

हिन्दू में क्या और है, मुसलमान में और।
साहिब सबका एक है, व्याप रहा सब ठौर॥

सामाजिक सौहार्द्र, एकता, समन्वय एवं सर्वधर्म समभाव को महत्व देने वाला उपर्युक्त दोहा सामाजिक चेतना जाग्रत करने का सशक्त उदाहरण है। 'रसनिधि' जोरदार शब्दों में आगाह करते हुए कह रहे हैं कि क्या हिंदू की देह में और मुसलमान की देह में अलग-अलग तत्व है ? जब एक ही ईश्वर, एक ही मालिक सब ठौर, सब प्राणियों में व्यापक है तो फिर हिन्दू और मुसलमान भी एक ही ईश्वर से अनुप्राणित है। स्वार्थपूर्ण शत्रुता और मनमुटाव व्यर्थ है।

'रतनहजारा' में पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' ने सहानुभूति की चेतना, एक दूसरे के प्रति संवेदना के भाव जागृत करने की प्रेरणा दी है। उन्होनें लिखा है-

''मीता तू या बात कौ, हिये गौर करि हेरू।
दरदमंद बेदरद कौ, निसियासर कौ फेरू॥''..

जितना अंतर, जितना विरोधाभास रात और दिन में है, ठीक उतना ही अंतर सह संवेदना युक्त मानव एवं दुष्ट कठोर, निर्मम मनुष्य के बीच होता है। दूसरों को कष्ट पहुंचाए जाने की अपेक्षा दूसरों के दुख में दुखी होने की चेतना मनुष्य में जरूरी है। ऐसी चेतना सामाजिक शान्ति, सद्भाव एवं समन्वय के लिए जरूरी है। क्योंकि इस संसार में अपनी-अपनी पीड़ा को तो पशु पक्षी भी समझते हैं-

''पसु पंछी हू जानहीं, अपनी अपनी पीर।
तब सुजान जानों तुमें, जब जानों पर पीर॥''..

पर पीड़ा, पराये दुख के प्रति संवेदनशीलता सामाजिक समन्वय का प्रमुख तत्व है। यह चेतना एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के निकट लाती है। 'रसनिधि' इसी भाव को जगतो हुए लिखते हैं-

जानतु है ऐ लला, तू काहू कौ हाल।
घाइल करि मृग कौं बधिक, जैसौ फिरत खुशाल॥..

उपर्युक्त दोहे में 'रसनिधि' परस्पर सौहार्द्र की चेतना और समन्वय की भावना जगाते हुए, कटाक्ष कर रहे हैं कि क्या तुम दूसरों के दुख दर्द के बारे में जानते हो, किसी पीड़ित के पास जाते हो, यदि नहीं तो तुम्हारी भी वही स्थिति है, जैसे कि कोई शिकारी किसी हिरण को घायल करके प्रसन्न हुआ घूमता है। तात्पर्य यह है कि सामाजिक सौहार्द्र और समन्वय की चेतना के लिए जरूरी है कि सभी व्यक्ति एक दूसरे के दुख में शामिल रहें। एक दूसरे की परवाह करें।

अतएव कहा जा सकता है कि पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' के काव्य में लोकोत्तर प्रेम भावना, सामाजिक सद्भाव तथा समन्वय की चेतना विद्यमान है। 'रसनिधि' का काव्य प्रेम, भक्ति एवं सामाजिक चेतना की त्रिवेणी है।

अनन्य कालोनी, सेंवढ़ा
जिला दतिया (म.प्र.)

* * *

ओरछा राज्य के अन्तिम नरेश महाराज वीरसिंह (द्वितीय)

चिन्तामणि वर्मा

इतिहास चिंतन के क्षेत्र में चिन्तामणि वर्मा ने पर्याप्त शोध कार्य किया है। वे बुंदेलखण्ड के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की बारीक पड़ताल करने वाले लेखक हैं। प्रस्तुत लेख में उन्होनें ओरछा के अंतिम नरेश वीर सिंह (द्वितीय) के जीवन से संबंधित अनेक घटनाक्रमों को प्रस्तुत करते हुए उनके चिंतन और उनके कृतित्व को अनेक कोणों से परखा है।

2 मार्च सन् 1930 से पहले तक ओरछा राज्य के राजा महाराजा प्रतापसिंह थे। इस राज्य की राजधानी सन् 1783 में तत्कालीन महाराजा द्वारा ओरछा से टीकमगढ़ बदल दी गई थी। महाराजा प्रताप सिंह टीकमगढ़ राज्य के ग्राम दिगौड़ा के साधारण ठाकुर थे। जब महाराज टीकमगढ़ का निहसंतान निधन हो गया तो अपनी चतुरता से विधवा राजमाता लड़ई सरकार द्वारा गोद लिए जाकर टीकमगढ़ के राजा बनाए गए थे।

महाराजा प्रतापसिंक के दो पुत्र थे। बड़े का नाम भगवन्त सिंह था। जो राजबहादुर कहलाते थे। छोटे का नाम सावन्त सिंह था। महाराज प्रतापसिंह की चतुराई से सावन्त सिंह गोद लिए जाकर विजावर के राजा बन गए थे। भगवन्त सिंह जिनसे राजा प्रताप सिंह असन्तुष्ट रहते थे का निधन प्रताप सिंह के ही कार्यकाल में हो जाने के कारण भगवन्त सिंह के ज्येष्ठ पुत्र वीरसिंह को 2 मार्च 1930 को ओरछा राज्य का राजा बनाया गया। वीरसिंह देव के व्यक्तित्व में कुछ अनोखी विशेशताएँ थी। जिनसे वे आज भी जनता के मानस पटल पर अंकित हैं।

इनकीसव से बड़ी विशेपता देशभक्ति और दूरदर्शिता थी। जब बुन्देलखंड के लगभग सभी राजा देशभक्तों के कट्टर विरोधी थे उस समय वीरसिंह के हृदय में एक सीमा के अन्दर देशभक्तों के प्रति सम्मान तथा उनकी सहायता करने की भावना थी। महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद साधु वेश में ओरछा के जंगलों में सातार नदी के किनारे एक कुटी बनाकर वर्षों रहे । जहाँ देश के अनेक क्रांतिकारी चन्द्रशेखर से मिलने जुलने आते रहे। वीरसिंह को यह तो मालूम था कि एक क्रांतिकारी साधु वेश में ओरछा के जंगलों में रहे रहे हैं। लेकिन उनको उनका नाम मालूम नहीं था। इन बातों की जानकारी जब ब्रिटिश शासन को गुप्तचरों द्वारा मिली तो उसने झांसी के कलेक्टर द्वारा राजा को लिखा कि आपके राज्य में कुछ क्रांतिकारी क्रांति की गतिविधियाँ चला रहे हैं। उन्हें तत्काल झांसी पुलिस के सुपुर्द कर दिया जावे। वीरसिंह यह सच जानते हुए भी सदैव यही उत्तर देते रहे कि यहां ऐसी किसी प्रकार की गतिविधियाँ नही चल रही हैं और न मेरे कठोर शासन काल में इस प्रकार की गतिविधियाँ चलने का किसी में साहस ही नहीं हो सकता है।

ऐसा लिखना उस समय अपूर्व साहस व देशभक्ति का काम था। क्योंकि ब्रिटिश सरकार को सच्चाई का पता लग जाता तो महाराजा वीरसिंह और उनके राज्य की कितनी दुर्गति होती इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। सन् 1942 और उसके बाद प्रसिद्ध साहित्यकार जो महाराजा वीरसिंह के डेली कालेज इन्दौर में भूतपूर्व शिक्षक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी का कुंडेश्वर (टीकमगढ़) का निवास महाराजा वीरसिंह का जानकारी में क्रांतिकारियों का अड्डा रहा।

महाराजा वीरसिंह की सहमति से ही राजय में ओरछा सेवा संघ जो काँग्रेस का परिवर्तित नाम ही था तथा बुन्देलखंड सेवा संघ नामक संगठनों की स्थापना की गई थी। इन संस्थाओं के माध्यम से सारे राज्य में खुलकर

जन-जागृति की गई और इन संथाओं में श्री लीलाराम वाजपेई, चतुर्भुज पाठक, प्रेमनारायण खरे तथा लक्ष्मीनारायण नायक ऐसे लोकनायक हुए जिन्होने केवल बुन्देलखंड और भूतपूर्व विन्ध्य प्रदेश का ही नेवृत्व नहीं किया वरन् समस्त मध्य प्रदेश की राजनीति पर व्यापक प्रभाव डाला।

महाराजा वीरसिंह के मन में जितना देश से प्यार था उससे ज्यादा बुन्देलखंड से प्यार था। वह तत्कालीन संयुक्त प्रान्त तथा मध्य प्रान्त और बरार के बुन्देलखंडी जिलो तथा बुन्देलखंड की छत्तीस रियासतों को मिलाकर संयुक्त बुन्देलखंड बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे। इसके लिए उन्होनें नवम्बर सन् 1943 में "बुन्देलखंड सेवा संघ" के माध्यम से टीकमगढ़ में एक विराट सम्मेलन बुलाया । जिसमें उत्तर प्रदेश के पं. गोविन्द वल्लभ पंत , मध्य प्रदेश के पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्रा ब्यौहार राजेन्द्र सिंह आदि कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता तथा बुंदेलखंड की रियासतों के राजाओं ने भाग लिया।

जब महाराज वीरसिंह का भाषण चल रहा था तो किसी ने प्रश्न किया, "यदि बुन्देलखंड प्रान्त निर्माता के लिए आवश्यकता पड़ी तो क्या आप अपने राज्य में जनता को उत्तरदायी शासन दे देंगे।" महाराज का उत्तर था "अवश्य"। अधिकांश राजाओं तथा उत्तर प्रदेश के जन नेताओं के विरोध के कारण यह सम्मेलन किसी प्रकार का निर्णय नहीं ले सका। राजाओं ने यह कहकर विरोध किया कि महाराजा ओरछा सभी राजाओं का अस्तित्व ही समाप्त करना चाहते हैं। कुछ ने कहा कि महाराजा ओरछा सारी रियासतों को हथियाना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश के जन प्रतिनिधियों ने अपने प्रदेश के किसी भी भाग को संयुक्त बुन्देलखंड में शामिल करने को तैयार नहीं थे। जब नौगांव के पौलिटिकिल एजेंट को इस बात का पता लगा तो उसने महाराज वीरसिंह का काफली लानत मलायत की। लेकिन उन्होंनें इसकी कभी भी कोई चिन्ता नहीं की। यह विचार धारा इस सम्मेलन से चालू हो गई और परिणाम स्वरूप 1948 में बुन्देलखंड और बघेलखंड की रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया तथा बाद में एक नवम्बर सन् 1956 को वर्तमान मध्य प्रदेश का गठन किया गया और महाराजा का स्वप्न उनकी मृत्यु के दो सप्ताह बाद पूरा हो गया।

एक बार राजाओं के वृहद सममेलन में प्रानत निर्माता के आन्दोलन पर काफी वाद-विवाद हुआ। कुछ राजाओं ने वैधानिक अधिकारों की दोहाई देकर कहा, "हमारे पास ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई सन्धियाँ सुरक्षित हैं और उसके आधार पर हम अपने अस्तित्व को कायम रखेंगे।" महाराजा वीरसिंह ने जनवादी भाषा में उत्तर दिया। "इन सन्धियों ओर सनदों का पुलन्दा बनाकर रख लीजिए।" महाराजा वीरसिंह के द्वारा सन् 1934 में "मौडर्न रिव्यू" के सम्पादक श्री रामानन्द चटर्जी से कलकत्ते में यह कहना, राजा महाराजाओं का युग तो अब समापत होने को है। जनता को ही आगे बढ़कर शासन संभालना होगा। इसमें कुछ विलम्ब लग सकता है परन्तु यह अवश्य है। इनकी राजनीतिक सूझबूझ और दूरदर्शिता की परिचायक है।

सम्पूर्ण देश की पांच सौ बासठ देशी रियासतों के राजाओं में वीरसिंह ही ऐसें तीसरे राजा थे जिन्होने एक दिसम्बर सन् 1947 को अपनी जनता को उत्तरदायी शासन दे दिया था तथा लालाराम वाजपेई को राज्य का प्रधानमंत्री तथा चतुर्भुज पाठक तथा अन्य दो को मंत्री पद पर नियुक्त कर दिया। जो विन्ध्य प्रदेश बनने तक राज्य शासन का स्वतंत्रता पूर्वक संचालन करते रहे। वीरसिंह ने उनके किसी काम में कोई भी हस्तक्षेप नही किया। वे केवल वैधानिक अध्यक्ष ही बने रहे। वीरसिंह ने अपने राज्य में मतदाता सूची बनवाकर जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की सलाह देने के लिए सन् 1940 में ही धारा सभा का गठन कर चुके थे। जो विन्ध्य प्रदेश बनने तक जो राज्य की

विधान सभा की तरह काम करती रही।

सन् 1947 की स्वतंत्रता के बाद जब भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने अपने गृह सचिव बी.पी. मैनन को भारत संघ में बुन्देलखंड की रियासतों के संविलियन के लिए राजाओं की सहमति प्राप्त करने के लिए नौगांव भेजा। वहाँ बुन्देलखंड के सभी राजा एकत्र हुए। वीरसिंह सबसे पहले संविलियन पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो गए। शेष सभी राजाओं ने यह कहकर वीरसिंह का विरोध किया। ''आप बुन्देलखंड की सबसे बड़ी रियासत के राजा होते हुए आप हमारे अधिकारों के रक्षक है।'' यह आप क्या कर रहे हैं। वीरसिंह ने उत्तर दिया। ''समय को पहचानिए। मैं अपने राज्य की रक्षा नहीं कर सकता। यदि आप अपने राज्य की रक्षा कर सकते हैं तो चाहे जो कीजिए'' और यह कहकर उन्होंनें तुरन्त संविलियन पत्र पर हताक्षर कर दिए। बाद में सभी राजाओं ने हस्ताक्षर कर दिए।

इस पर सभी राजा लोग वीरसिंह से नाराज हो गए। तो सन् 1948 में विन्ध्य प्रदेश बनने पर जब राजाओं की सहमति से राजप्रमुख और उपराजप्रमुख की नियुक्ति की जाना थी तो राजाओ वीरसिंह के पक्ष में मत न देकर महाराजा पन्ना के पक्ष में मत दिया। परिणामस्वरूप महाराजा को राजप्रमुख तथा महाराजा पन्ना को उपराजप्रमुख बनाया गया। जो सन् 1956 तक बने रहे। यह पद राज्यपाल और उपराज्यपाल की ही तरह थे। वीरसिंह ने इसकी कभी कोई भी चिन्ता नहीं की। वीरसिंह उपराजप्रमुख भले ही नही बन सके थे लेकिन उनका सम्मान भारत की राष्ट्रीय सरकार में मृत्यु पर्यन्त तक बना रहा। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सन् 1953 में टीकमगढ़ आकर जनसभा में वीरसिंह की प्रशंसा की। विन्ध्य प्रदेश बनने के बाद महाराजा वीरसिंह किले का निवास छोड़कर टीकमगढ़ से लगभग दो किलोमीटर दूर सड़क किनारे एक छोटी सी रमणीक कोठी ''बैकुंठी'' में सादे जीवन में शेष जीवन बिताते रहे।

महाराजा वीरसिंह में प्रजावत्सलता प्रगतिशीलता कूट - कूट कर भरी थी। उन्होनें 2 मार्च सन् 1930 पर राजगद्दी पर बैठते हुए जो प्रथम आदेश प्रसारित किए उनमें से मुख्य थे (अ) राज्य की भाषा उर्दू के बजाय हिन्दी होगी (ब) राज्य में छुआछूत दंडनीय अपराध होगा (स) बिना मजदूरी अथवा कम मजदूरी देकर बेगार में काम लेने की प्रथा समाप्त की जाती है। (द) हरिजन महिलाएँ पैरों तक में सोने चांदी के आभूषण पहन सकती हैं। (च) राजा के सामने लोग किसी भी वेश में नगे सिर तक आ सकते हैं। छाता लगा सकते हैं तथा कु र्सी पर बैठ सकते हैं। (फ) बाल विवाह करना राज्य में दंडनीय अपराध होगा। यह केवल कागजी कानून नही थे। वरन राज महल में सवर्ण हरिजन मुसलमान के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। यह उस समय की बात है जबकि इस तरह के अधिकांश राज्यों में रूढ़िवादी सामन्तों और नरेशों के शासन में जनता अशिर्क्षित, भयभीत और कूप मडक थी। ब्रिटिश राज्य तक उस समय बाल विवाह बुरा कर्म नही माना जाता था।

उनका विचार था कि छोटे-छोटे राज्यों में न ही प्रशासन व्यवस्था चल सकती है और न ही जनता की आर्थिक उन्नति ही हो सकती है इसके लिए उन्होने भाषा और संसकृति के आधार पर बुन्देलखंड प्रानत निर्माण का भरसक प्रयास किया । इसके प्रथम चरण में बुन्देलखंड के सभी नरेशों को राजी कर नौगांव में एक मिली जुली हाईकोर्ट तथा पुलिस आयुक्त मुख्यालय स्थापित कराया था। जिसमें ब्रिटिश राज्य के अनुभवी सेवानिवृत्त, ईमानदार अधिकारी हाईकोर्ट जज तथा पुलिस आयुक्त नियुक्त किए गए थे।

वे अकसर कहा करते थे मैं अपनी जनता के हृदय का राजा बनना चाहता हूँ। वे प्राचीन रूढ़ियों के कायल नही थे। एक बार जनता द्वारा चुने हुए मंत्री चतुर्भुज पाठक

की लड़की की शादी में प्राचीन रूढ़ि को तोड़करवे उनके घर गए। जब बारात शामियाने में आई तो महाराजा उस समय राजगद्दी पर बैठे थे। दूल्हा का देखकर वह उसका स्वागत करने लगे और स्वयं आपनी गद्दी खाली कर दूल्हे को उस पर हाथ पकड़कर बैठा दिया और स्वयं बगल में रखी साधारण कुर्सी पर बैठ गएसब लोगों ने यह देखकर आश्चर्य किया तो वे बोले ''इसमें आश्चर्य की क्या बात है। मैं तो केवल राजा ही हूँ दूल्हा तो ढाई दिन का बादशाह होता है। बादशाह को गद्दी पर बैठने का पहला हक है।''

एक बार टीकमगढ़ में भयंकर हैजे का प्रकोप हुआ । लोगों ने राजा से कहीं बाहर जाने को कहा उन्होने उत्तर दिया ''ऐसे संकट में मैंअपनी प्यारी प्रजा को असहाय छोड़कर नही भाग सकता हूँ।'' उनके राज्य में डाक्टरो को सदैव यह अनिवार्य रहा कि असमर्थ रोगियों को बिना किसी भेदभाव के प्रतिदिन उन्हें घर जाकर उनका मुफ्त इलाज करें इसके लिए डाक्टरों को वेतन के अतिरिक्त भत्ता और सरकारी गाड़ी घूमने को दी जाती थी।

भूमि पर कृषि का पहले राज्य की आवश्यकतानुसार मनमाने तरीके से लगान लिया जाता था । किसान जब कृषि कर नही दे पाते थे तो वह भूमि को त्याग पत्र देकर छोड़ देते थे। वीरसिंह ने सन् 1939 में ब्रिटिश शासन के अनुभावी सेवानिवृत्त अधिकारी डी.आर. डौंगरे को सैटिलमेन्ट अधिकारी नियुक्त कर सेटिलमेन्ट कराया और उनसे यह भी कहा गया ''सेटिलमेन्ट कराने का यह उद्देश्य नही है कि कृषि कर बढ़ाकर प्रजा पर और अधिक भार डाला जाय। कृषि भूमि की उपजाऊ क्षमता के आधार पर ब्रिटिश राज्य की अपेक्षा दो पैसा रूपया कम कर निर्धारित किया जावे।''

सेटिलमेन्ट के परिणामस्वरूप राजस्व आयमें लगभग बारह तेरह प्रतिशत की कमी आई । जिसे महाराज ने स्वीकार करने में थोड़ा भी संकोच नही किया। किसानों को उनकी भूमि पर लगे वृक्षों का पूरा अधिकार दे दिया। उन्होने अनेक प्राचीन कर जजिया बयाई झरी आदि समाप्त कर दिये। इतना ही नहीं जागीरदारों पर भी टांका आदि करों का इतना ऋण हो गया था कि उनकी इस ऋण चुकाने की क्षमता तक नहीं थी । उसे भी महाराज ने माफ कर दिया।

वास्तव में महाराज साम्यवादी विचारों के थे जिसका प्रयोग वे ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत सीमित अधिकार होने के कारण नहीं कर सके। फिर भी राज्य में साम्यवादी पार्टी के गठन की स्वीकृति उस समय दी जबकि ब्रिटिश साम्राज्य में साम्यवादी पार्टी का गठन गिने चुने स्थानों पर ही हुआ था। इस पार्टी के प्रमुख नेता नारायण दास खरे और अमृतलाल फरगीन्द्र आदि थे।

श्री नारायण दास खरे उत्तरदायी शासन की लड़ाई में शहीद हो गए थे। कुछ सामन्तों ने बड़ागांव धसान से लौटते हुए मार्ग में नरौसा नाले पर उनकी हत्या कर दी थी।

महाराजा वीरसिंह की हिन्दी तथा बुन्देली भाषाओं की सेवा को भुलाया नही जा सकता। राजगद्दी पर बैठते ही उन्होने उर्दू की बजाय हिन्दी को राजभाषा घोषित किया तो राज्य के सभी काम हिन्दी में होने लगे। 15 अप्रैल सन् 1930 को वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद तथा संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए देवेन्द्र संस्कृत विद्यालय राज्य शासन द्वारा स्थापित किए गए। वीरसिंह ने देश के सर्वश्रेष्ठ बहूमूल्य ''**वीरसिंह देव पुरस्कार**'' दो हजार रूपया देने की घोषणा की। जो प्रतिवर्ष बसन्तोत्सव के अवसर पर प्रदान किया जाता था। आज भी यह पुरस्कार म.प्र.हिन्दी साहित्य परिषद् द्वारा देव पुरस्कार के नाम से दिया जा रहा है। इसके मूल्य में भी वृद्धि कर दी गई है। इस पुरस्कार को महाराजा के कार्यकाल में ही देश के श्रेष्ठतम साहित्यकार डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ.रामनारायण पाण्डे, गोपाल शरण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, यशपाल आदि को प्राप्त होने का गौरव प्राप्त हुआ था। दुख है कि आज इस पुरस्कार को प्राप्त करने वाले लोग न तो इस पुरस्कार का

नाम "**वीरसिंह देव पुरस्कार**" जानते हैं और नही इस पुरस्कार के जनक वीरसिंह को ही जानते हैं।

इनके कार्यकाल में हाई स्कूल टीकमगढ़ से "**वीर बुन्देल**" मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन किया गया। वीरसिंह ने भारतके तत्कालीन लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, लोकनाथ शिलाकारी तथा कृष्णानंद गुप्त को अपने राज्य में बुलाया और उन्हें राज्य के दीवान की तरह सुख सुविधाएँ और सुन्दर कोठियां प्रदान की। वे लोग वर्षों तक टीकमगढ़ रहकर साहित्य सेवा करते रहे। चतुर्वेदी जी ने राज्य शासन के व्यय पर "**मधुकर**" नाम की पत्रिका तथा कृष्णानंद गु प्त ने लोकवार्ता मासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्षों तक किया। इन पत्रिकाओं ने हिन्दी तथा बुन्देलखंडी के प्रचार प्रसार का अच्छा काम किया। शिलाकारी ने बुन्देलखंड के जनप्रिय कवि बिजावर के बिहारी लाल जी भट्ट जी की कविताओं का सम्पादन "**साहित्य सागर**" के नाम से किया।

टीकमगढ़ में प्रतिवर्ष बसन्तोत्सव के अवसर पर एक भव्य समारोह होता था जिसमें देश के प्रसिद्ध कवि अपनी कविताओं का जनता को रसास्वादन करते थे तथा साहित्य गोष्ठियाँ हुआ करती थी। इस सबके आयोजन का भार पं. बनारसी दास चतुर्वेदी पर होता था। व्यय भार राज्य शासन वहन करता था। इतना सब होते हुए भी वीरसिंह चापलूसी पसन्द बिलकुल नहीं थे। उन्होनं साहितयकारों को यह निर्देश दे रखा था कि उनकी प्रशंसा में न कुछ लिखा जाय और न पढ़ा जाय।

एक बार हिन्दी की उत्कृष्ट सेवा करने के उपलक्ष्य में "**साहित्य सम्मेलन**" के अध्यक्ष पद पर वीरसिंह को सुशोभित करने का प्रस्ताव लेकर स्वयं मैथिलीशरण जी गुप्त टीकमगढ़ आए जिसे वीरसिंह ने सविनय सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया। उनके राजमहल में एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें अनेक भाषाओं को अनेक विषयों की पुस्तकें संग्रहित थी। वीरसिंह जी स्वयं पुस्तकें पढ़ने के शौकीन थे। टीकमगढ़ राज्य में हाई स्कूल तक की शिक्षा निशुल्क थी तथा स्कूल से बोर्ड परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले राज्य के निवासी विद्यार्थियों को उनकी इच्छानुसार राज्य शासन के व्यय पर उच्च शिक्षा के लिए राज्य के बाहर भेजा जाता था।

वीरसिंह ने अनेकों बगीचों को जीवनदान दिया। जिसमें महेन्दु बाग, जुगल निवास, विनोद कुंज तथा जतारा में अमृतवान नामक स्वादिष्ट केलों के बगीचे दर्शनीय थे। इनमें सैकड़ों माली काम करते थे। जतारा और बल्देवगढ़ के तो उस समय बुदेलखंड के काश्मीर कहा जाता था।

महाराजा सा. को हाकी का विशेष शौक था। इसके लिए भगवन्त साहब क्लब नाम से राष्ट्रीय स्तर की हाकी टीम का गठन किया गया था। जिसमें राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को टीकमगढ़ बुलाकर उन्हें हर प्रकार की सुख सुविधाएँ देकर वर्षों तक टीकमगढ़ में रखा । इस टीम में उस समय किशन सिंह, रिजारियो, फसाद सरीसे देश प्रसिद्ध खिलाड़ी थे। हाकी के जादूगर ध्यानचन्द्र तक इस टीम को प्रशिक्षण देने टीकमगढ़ आया करते थे। भगवन्त क्लब ने अनेक बार लखऊ का रामलाल कप, ग्वालियर का सिन्धिया कप, बम्बई की आगाखाँ कप, कलकत्ता का बाइरन कप, पटियाला का राघवेन्द्र कप तथा टीकमगढ़ का करण सिंह कप आदि जीतकर देश की टीमों पर विजय प्राप्त की थी।

आज महाराजा वीरसिंह नही हैं लेकिन उनकी यशगाथा बुन्देलखंड के लोगों की जबान पर कायम है।

- सावित्री भवन, चेतगिरि कालोनी
छतरपुर (म.प्र.) पिन-471001 दूरभाष - 242047

* * *

एक विस्मृत लोक कवि

स्व. श्री भगवान सिंह भदौरिया अरुणोदय

- डॉ. आनन्द गुप्त

बुन्देली में अनेक अज्ञात कवियों की ऊर्जा अभी भी हमारे काव्य संग्रह की प्रेरणा पुँज बन सकती है जरूरत है उसे अन्वेषित करने की उसे संजोने की और उसे संप्रेषित करने की। प्रस्तुत आलेख में बुंदेली के एक ऐसे ही कवि की चर्चा है जिनके कृतित्व के आलोक में अनेक काव्य अंकुर अपनी बढ़वार हासिल कर सकते हैं।

श्री भगवान सिंह भदौरिया अरुणोदय का जन्म सन् १९४७ ई. में आलमपुर, जिला-भिण्ड (म.प्र.) में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व. श्री हुकुम सिंह जमादार तथा माता का नाम श्रीमती सेंगरिनजू था। पिता श्री होलकर छत्री इन्फेन्ट्री में जमादार थे तथा इसी पदनाम से प्रसिद्ध थे।

कवि भदौरिया साधारण पढ़े लिखे थे किन्तु विद्वानों की सत्संगति से उन्होनें पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया था काव्य तथा संगीत कला में उनकी गहरी पेठ व रूचि थी।

उन्होनें तीन चार छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी थीं उनमें दो पुस्तकें गारियों की, एक कीर्तन की तथा एक चुनाव प्रचार के गीतों की व फिल्मी गीतों की तर्ज पर भजनों की है।

बहुत खोजबीन करने के पश्चात् मुझे उनकी एक पुस्तक बुन्देलखण्डी समाज सुधारक गारियां (भाग १) ही प्राप्त हो सकी उसी को आधार मानकर यह लेख लिख रहा हूँ। शेष साहित्य अगले लेख में लिखूँगा।

श्री भदौरिया लोक कवि ईसुरी तथा कवि दास जी से बहुत प्रभावित थे। मेरे पिता श्री डॉ. कमलेश को अपना काव्य गुरू मानते थे अत: उनकी कविताई में इनके संशोधन की झलक दिखाई देती है। जैसा कि पुस्तक के मंगलाचरण में उन्होनें अन्य देवी-देवताओं के साथ गुरू जी की भी वंदना की है-

सुमरों माता सरसुती, सुमरों सिद्ध गणेश।
कृपा करो मो दास पै, मेंटौ सकल कलेश॥
अपनी भारत मात को मैया शीश नबाओ।
पूज्य महात्मा गांधी के पूजों में पाँव।
जिनकी कृपा अपार से हो उर में उन्मेष।
कविता गुरू अरु विज्ञवर नमो सुकवि कमलेश।

श्री भदौरिया ने धार्मिक सामाजिक नैतिक, हास्य व्यंग आदि सभी विधाओं में अपनी कलम उठाई है। अधिक पढ़े लिखे न होने पर भी उनकी कविताओं में भाव गंभीर ओज आदि साहित्यिक गुण दिखाई देते हैं।

यहाँ मै उनकी रचनाओं में से प्रत्येक विधा की कुछ-कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करूंगा। मेरा उद्देश्य उनके काव्य से बुन्देली भाषा प्रेमियों को अवगत कराना मात्र है। यह गारियाँ मुख्यत: अमिधा में ही लिखी गई हैं, भाषा सीधी, सरल सपाट है अत: उनकी व्याख्या करना उचित नहीं समझ रहा हूँ जन साधारण भी आसानी से समझ सकता है- कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

गोपियों का संदेश

इतनी माधौ सें करियो समझाय कें,
ऊधौ सुनों चित लगायकें।

बातें सुन-सुन करकें सखीं,
अखियाँ सुनत संदेशों दुखी।
बे तो हैं दरसन की भूखी,
हमरी विपदा बतइयो जू जायकें। ऊधौ सुनों...

हरि बिन देह राख का करहें,
बिन घनश्याम जहर खा मर हैं,
अगलें जनम इनहिं कों बर है,
दुक्ख दे गये वे नैना लड़ायके। ऊधौ सुनो...

तुम्हरी कथा हमें न भावे,
कत भगवान रो आवे
जियरा श्याम बिना घबराबे।
प्रेम उमड़ो है अँखियन में आयके। ऊधौ सुनो...

उक्त पंक्तियों में प्रेम की पराकाष्ठा दर्शाई गई है जो हृदय स्पर्शी है।

बारहमासी

एक नायिका का पति विदेश गया है, समय पर न लौटने पर नायिका उसे खोजने निकलती है और पूरे मध्यप्रदेश में जाती है। उसमें मध्य प्रदेश के सभी जिलों के नाम बारह महीनों में लिये गये हैं कविता लम्बी है अत: कुछ अंश प्रस्तुत है-

जे कारे बदरा छाये गुइयाँ, सइयाँ घरे न आये।
आली छूट गई अब आश
अब तो आन लगौ बैशाख
पिय बिन मेरी लगे न आँख
सेज हमारी सूनी गुइयाँ पिय की याद सतायें। जे कारे...
पहुँच छतरपुर हो गई लस्त
आली अब आ गयो अगस्त
लाख खरगोन खा गई गस्त
सतना, पन्ना, रीवा देखो
सब जंगल मझ आये। जे कारे...

मई माह से लेकर दिसम्बर तक सभी जिलों के नाम इस कविता में है।

आलमपुर की शोभा

इस गति में आलमपुर नगर की ऐतिहासिकम, साहित्यिक सामाजिक कवि, कलाकारों, खिलाड़ियों आदि की प्रशंसा की गई है, कविता लम्बी है अत: कुछ अंश ही यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

मैया हो तुमको आज सुना दऊँ
शोभा आलमपुर की।
देखो छतरी बाग सुनाम
जामें छतरी बनीं ललाम
तामें कारीगरी तमाम
ताके नीचे पतित पावनी सोनभद्रका मुरकी। मैया...
कवियँन में कविवर कमलेश
विरही विमल मिसुर विरजेश
चन्द्र लाल, राकेश, दिनेश
इनकी कविता सुनें जो कोऊ भूल जाये घर की। मैया...
प्लेयर रज्जू, हरी निरालें
रामप्रकाश नोलियर आले
जाफर भी रमेश मतवाले
जाँ-जाँ खेलन गये वहाँ से जीती शील्ड विनर की।
होत रामलीला हर साल
दुर्गा चौबे लेत सम्हाल
करत लहारिया खूब कमाल
दूर वार जी पढ़त प्रेम से विमल कथा रघुवर की। मैया...
गाँव बुद्धि को है भंडार
वर्मा, झा, केशव, परिहार
कइयक और जने हुशियार
सबसें बस भगवान सिंह है किरया चाँय नजर की। मैया...

इस प्रकार लोक कवि ने अपने परिवेश में विभिन्न विषयों पर कलम चलाई है। गारी छंद उनका प्रिय छंद रहा है अत: अधिकांश कविताऐं गारी छंद में ही लिखी गई हैं। जो लोकप्रिय हुई हैं। वह स्वयं भी वाद्यों के साथ उन्हें गाते थे।

श्री भदौरिया जी सीधे सरल स्वभाव के व्यक्ति थे उन्होनें कभी ठकुरासी ठसक नही दिखाई। अंत समय अचानक उनकी पत्नि का देहावसान हो गया श्रीमती सिया जानकी के वियोग को वह नहीं सह सके। और सन् २००५ में अकाल में ही काल कवलित हो गये।

श्री भदौरिया जी के छै पुत्र हैं उनके एक पुत्र श्री रघुवीर सिंह भदौरिया उम्र ४५ वर्ष भी बुन्देली लोकगीत लिखते तथा गाते हैं। मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

अत: मैं दिवंगत लोक कवि आदरणीय श्री भगवान सिंह भदौरिया अरुणोदय को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मेरे शत्-शत् नमन।

शासकीय कन्या उ.मा. विद्यालय
माण्डेर जिला-दतिया (म.प्र.) पिन-475335

महामति प्राणनाथ के दर्शन में अहिंसा

- अश्विनी कुमार दुबे

महामति प्राणनाथ (सन् 1618-1694) गुजरात प्रदेश से प्रेम का संदेश लेकर अपने 5000 साथियों सहित चलकर बुंदेलखण्ड अंचल में आए और वहीं खजुराहो से 30 कि.मी. दूर पन्ना नामक स्थान में आपने अपना निवास बनाया। आप लगभग ग्यारह वर्षों तक यहाँ रहे और आपके साथ आए 5000 साथीगण यहीं स्थाई रूप से बस गये। कलांतर में पन्ना नगर का वह परिक्षेत्र पन्ना धाम और पद्मावती पुरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

महामति प्राणनाथ का प्रेम संदेश बहुत व्यापक है, जिसमें अहिंसा को एकदम नए परिपेक्ष्य में देखा गया है। महामति प्राणनाथ जीवन की समग्रता में विश्वास करते हैं। वे मानते हैं कि समस्त जीवन संयुक्त है। मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे सबका जीवन एकरस है। इनमें से किसी के जीवन में कोई भी कष्ट आता है तो दूसरा उससे अप्रभावित नहीं रह सकता। एक दूसरे के कष्ट और दुख सबके जीवन को बहुत गहराई में प्रभावित करते हैं। इसलिए महामति प्राणनाथ एक फूल की पंखुरी को भी दुख न देने की बात करते हैं। वे कहते हैं कि -

अब दुख न देऊं फूल पंखुरी, देखूं सीतल नैन।
उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि कोई फूल की पांखुरी भी यदि हमारे कारण दुखी होती है तो वह हिंसा है और निश्चित ही इस हिंसा का दुष्परिणाम हमारे जीवन में घटित होगा। क्योंकि हमारा और उस फूल पंखुरी का जीवन आपस में जुड़ा हुआ है इसलिए हम उसे दुखी करके सुखी कैसे रह सकते हैं? इसी प्रकार सारे मनुष्यों का आपस में और जगत के सारे प्राणियों का मनुष्य से परस्पर जुड़ाव बना हुआ है। कोई किसी को कष्ट देकर उसकी हिंसा करते हुए कभी सुखी नहीं रह सकता। मनुष्य अपने विकास की अंधी दौड़ में जीवन की संयुक्तता को भूलता जारहा है, इसीलिए उसके जीवन में संताप है। दुख है। तनाव है। महामति प्राणनाथ कहते हैं कि पशु हैं पक्षी हैं, पेड़-पौधे हैं तो हम हैं। जैसे जैसे हम इन्हें नष्ट करते जायेंगे, उसी अनुपात में हमारा जीवन भी नष्ट होता चला जायेगा। हम यदि किसी पशु को मारते हैं किसी पक्षी का वध करते हैं तो वह पशु और पक्षी तो प्रत्यक्ष रूप से मरता दिखाई देता है परन्तु उसी अनुपात में हमारे भीतर का भी एक हिस्सा मर जाता है। इसलिए आप देखें कि जो लोग बात-बात पर पशु-पक्षियों का वध करते रहते हैं, वे धीरे-धीरे मनुष्य नहीं रह जाते। वे संवेदनहीन होने लगते हैं।उनमें एक प्रकार की जड़ता आने लगती है। वे जीवन शून्य होकर शनैः शनैः पदार्थ हो जाते हैं। अब समाज में ऐसे ही जीवन रहित पदार्थों की भीड़ बढ़ती जा रही है। यह पदार्थों की भीड़ एक दिन पूरी धरती को जीवन रहित कर देगी, इस खतरे की ओर महामति प्राणनाथ आगाह करते हैं। इसी प्रकार पेड़, पौधे और पूरे वनस्पति जगत पर मनुष्यके अत्याचार सर्व विदित हैं। उनके जीवन सेहमारा जीवन जुड़ा है। हम पेड़ काटते गए। जंगलों का हमने सफाया कर दिया इस जबरदस्त हिंसा मे न जाने कितनी दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ जो जीवनदायनी हो सकती थीं, पेड़-पौधों की अनगिनत प्रजातियां हमने अपने स्वार्थ के लिए नष्ट कर दी। इसके दुष्परिणाम अब सामने आने लगे है। सबसे पहले तो धरती पर ऋतुओं का चक्र गड़बड़ हो गया। अब समय पर ऋतुएं अपना प्रभावलेकर नहीं आती। वर्षा अनियंत्रित हो गई। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा, अब आम बात हो गई। वायुमण्डल प्रदूषित हो गया। इस प्रकार वनस्पति जगत पर हिंसा करते हुए हमने अपने जीवन को ही नुकसान

पहुंचाया अर्थात कहीं न कहीं किसी न किसी अनुपात में हमारा जीवन भी नष्ट हुआ है। महामति प्राणनाथ बहुत स्पष्ट कहते हैं कि दूसरे का जीवन नष्ट करके हम अपना जीवन कभी भी सुरक्षित नहीं रख सकते।

फूल की पंखुरी को भी दुख देना, अपने जीवन को नष्ट करना है। इसलिए वे कहते हैं, देखूं शीतल नैन। सारे जगत को शीतल नयनों से देखना है। शीतल नयनों से तात्पर्य है दया, करूणा, ममता, स्नेह, आदर और प्रेम की दृष्टि, यही है महामति प्राणनाथ का अहिंसा दर्शन अर्थात् जब हम संपूर्ण जगत को शीतल दृष्टि से देखेंगे, अहिंसक दृष्टि से देखेंगे तभी हम सब सुखी हो सकेंगे। महामति प्राणनाथ की इस अहिंसक दृष्टि में पृथ्वी ही नहीं सुदूर अंतरिक्ष के सूर्य, चंद्र, नक्षत्र और तारे, जहाँ बहुत दूर दूसरा जीवित जगत भी होगा- यह सब सम्मिलित है। वे कहते हैं कि इन सबके साथ ही हमारा जीवन जुड़ा है, येसब रहेंगे तब हम भी रहेंगे इसलिए सबको देखूं शीतल नैन।

जब सब सुखी होंगे। जब सब बिना किसी भय के जीवित रहेंगे तब महामति प्राणनाथ कहते हैं-'उपजाऊं सुख सब अंगों, बुलाऊं मीठे बैन' ऐसी स्थिति में ही जीवन के सभी पक्षों में, सब अंगों में सुख की उत्पत्ति होगी और सब आपसमें मीठे वचन बोलते हुए सुखपूर्वक रह सकेंगे। महामति प्राणनाथ अपने दर्शन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि किसी को भी दुख न देकर मैं जीवन के सब क्षेत्रों में सब अंगों में सुख उपजाऊंगा और सबको मीठे बोल बोलते रहने के लिए प्रेरित करूंगा। यहां वाणी की हिंसा की तरफ भी महामति प्राणनाथ सचेत करते हैं। इस अवसर कड़वे बोल बोलते हुए अपने आसपास लोगों को दुख पहुंचाते हैं, यह वाणी की हिंसा है मीठे वचन बोलने का संकल्प लेकर हम इस हिंसा से अपने आपको बचा सकते हैं। इसलिए महामति प्राणनाथ कहते हैं- 'बुलाऊं मीठे बैन'

कोई हमें बुरा कहे। वाणी से हमारे प्रति हिंसा करे। हमें दुख पहुंचाए तो पहली प्रतिक्रिया होती है कि हम भी उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करें। ऐंसे तो पूरी दुनिया बुराई से भर जायेगी। सब परस्पर एक-दूसरे को कष्ट पहुंचाते रहेंगे। तब महामति प्राणनाथ कहते हैं- 'कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहिए तिन।' तुम्हें किसी ने गाली दी। तुम्हें किसी ने कष्ट पहुंचाया। वस्तुत: उसने अपना ही अहित किया है। अतः तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसके लिए मंगल कामना करो। उसका भला चाहो ऐसा करने सेएक दूसरे को कष्ट देने की धारा रूक जायेगी। वह आगे न बढ़ेगी। वह वहीं समाप्त हो जायेगी। यदि तुमने भी वैसा ही किया जैसा उसने किया था तो हिंसात्मक वृत्तियाँ बढ़ती जायेंगी। इनका कहीं अन्त न होगा। इसलिए महामति प्राणनाथ के शब्दों में- 'तुम भला चाहिए तिन।' यह महामति प्राणनाथ के दर्शन का अदभुत अहिंसात्मक पक्ष है।

महामति प्राणनाथ एक पूर्ण अहिंसात्मक जगत की कामना करते हुए कहते हैं-

बाघ, बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों बैर।
पशु, पंखी सुखे चरें चुगें, छूट गयो सबको जेहर॥

बाघ बकरी एक संग चरें, ऐसा कब हो सकता है? जब छूट गयो सबको जेहर। हिंसा की प्रवृत्ति एक जेहर की तरह है, इस जेहर को छुटाना है। यह प्रवृत्ति, यह जेहर मनुष्य के भीतर भी है। यह जेहर कैसे छूटेगा? यह छूटेगा, संपूर्ण तृप्ति से। अर्थात् आपको जो सहज उपलब्ध है, उससे आप संतुष्ट होना सीखें तो आपके भीतर का जहर धीरे-धीरे छूट जायेगा। मनुष्य के लिए प्रकृति ने कितने शाकाहारी भोज्य उपलब्ध कराये हैं, वे मनुष्य के लिए पर्याप्त से भी ज्यादा हैं फिर भी मनुष्य अपने उदर पोषण के लिए पशु-पक्षियों की हिंसा करता है, यह उसके भीतर के जेहर का असर है, जिसे दूर करना होगा। जिन पशुओं में यह जेहर ज्यादा है, वे हिंसक पशु

कहलाते हैं परन्तु उनके लिए भी प्रकृति ने कई प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाये हैं। इसलिए होना ऐसा चाहिए कि 'बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों बेर।'

'बैर' ही तो हमारे भीतर हिंसा का जेहर फैलाता है इसलिए मानव जाति को सबसे पहले आपसी बैर को मिटाना होगा। बैर मिटेगा, परस्पर प्रेम से, इसके लिए महामति प्राणनाथ कहते हैं-

इसक बड़ा रे सबन में, न कोई इसक समान।
एक तेरे इसक बिना, उड़ गई सब जहान॥

लोक में ही नहीं परलोक में भी प्रेम सबसे बड़ी और महान चीज है। प्रेम की तुलना में कुछ भी ठहर नहीं सकता। एक तेरे प्रेम के विना यह समस्त ब्रह्मण्ड पानी के बुलबुले की तरह उड़ जायेगा।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि प्रेम ही समस्त प्राणियों को एक दूसरे से जोड़ता है। जब मनुष्य के अन्त:करण में प्रेम का विस्तार होगा तो उसकी हिंसात्मक प्रवृत्ति स्वत: समाप्त हो जायेगी। महामति प्राणनाथ का मार्ग प्रेम का मार्ग है। वे अपना प्रेम संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए गुजरात प्रदेश से मध्य भारत के पन्ना नगर तक आए। रास्ते में हजारों लोगा उनसे प्रभावित हुए और उनके धर्म में दीक्षित हुये वे सबके सामने जीवन यापन की पहली शर्त यही रखते थे-

पीना तमाखू छोड़ दो, और मांस मछली सब।
शराब और सब कैफ, परदारा चोरी न कब॥

महामति प्राणनाथ के धर्म में दीक्षित होने के लिए ये पंचवृतों का पालन अनिवार्य है। तम्बाखू, मांस मछली, शराब, पर स्त्री गमन, चोरी पाँचों चीजें अवश्य छोड़नी होगी। वे एक जगह और स्पष्ट कहते हैं-

रेहवे तिरगुन होयके, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल रूह मोमन, कबहूं न दुखावे किन॥

इस प्रकार महामति प्राणनाथ के दर्शन की आधारशिला सात्विक जीवन और अहिंसा पर आधारित है। वे संपूर्ण जगत जड़, चेतन और समस्त प्राणियों से प्रेम करने का संदेश देते हैं।

महामति प्राणनाथ का मन अत्यंत संवेदनशील है। युवावस्था में उनके जीवन की एक घटना है। उनके ससुराल से उन्हें लिवाने के लिए उनके ससुर जी ने एक बैलगाड़ी भेजी थी। उन्होनें देखा कि उनके पास सामान बहुत ज्यादा है। बैलगाड़ी में जो बैल जुता है। वह बूढ़ा है। उसकी गर्दन पर वजन के कारण घाव का निसान है। रास्ता बहुत ऊबड़-खावड़ है। रास्तों में पर्वत मालाएं हैं और कहीं-कहीं गहरे गढ्ढे भी है। गाड़ीवान हाथ में चाबुक लिए हुए है और उसके पास एक हथियार सरई भी है, जिससे वह बैल पर प्रहार करता होगा। यह सब देखकर उनका संवेदनशील मन कराह उठा। उन्होनें बैलगाड़ी पर बैठने से इनकार कर दिया और बैल की स्थिति देखकर उन्हें याद आई कि इसी प्रकार माया मोह और जगत के बंधनों का बोझ ढोते हुए जीव को संसार के ऊबड़ खावड़ रास्तों से गुजरना है और मंजिल पानी है।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ के दर्शन में सात्विक जीवन शैली और अहिंसा का बहुत महत्व है. यह उनके धर्म की प्राथमिक सीढ़ी है. इसी से गुजरकर पराप्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। महामति प्राणनाथ की उद्घोषणा है- सुख सीतल करूं संसार।

-सुरेश लॉज के पीछे, कचहरी रोड,
पन्ना (म.प्र.)

* * *

हम जिस क्षेत्र के वासी हैं

- विश्वनाथ दुबे

बुन्देलखण्ड प्राचीन काल से सघन वनों से आच्छादित रहा है। इसी कारण इस भाग मे आवागमन बहुत कम रहे हैं। इस भूखंड की भूमि साधू भूमि रही । जिस पर धार्मिक चेतना फली-फूली। देवस्थान एवं तीर्थ स्थलों से यह चेतना आज भी अनादिकाल से इस भूमि पर मौजूद है। खजुराहो में शिव मंदिरके साथ जैन मंदिर, धौरा (ललितपुर) में वैष्णव एवं जैन मूर्तियां,देवगढ़ (ललितपुर) के पास भी वैष्णव व जैन हजारों मूर्तियां जंगलों में बिखरी पड़ी मिली। दमोह जिले के कुण्डलपुर में विष्णु भगवान की मूर्ति अम्बिका देवी की मूर्ति एवं महावीर स्वामी की विशाल जैन मूर्ति तथा बांदकपुर में शिव का स्वंम-भू-लिंग, इमरती (वावली) 1713 की तथा बांदकपुर में 6 जुलाई 1985 में एक जैन मूर्ति खुदाई में मिली।

राजा नल की रानी दमयंती के बसाये इस दमोह नगर एवं दमोह जिले के क्षेत्र का एक प्राचीन इतिहास है। चौपड़ा ग्राम के प्राप्त शिलालेख में दमनकपुर नगर का जिक्र है। 15वीं शताब्दी में दमोह का नाम दमनकपुर था।

हजारों वर्ष पूर्व इस जिले का क्षेत्र वैभवशाली था। ईश्वरमऊ जो कि हिन्डोरिया के पास था तथा छितराखेड़ा जो कि बांदकपुर से करीब 5 कि.मी. दूरी पर बांदकपुर-जुझार मार्ग पर पूर्व दिशा में था वैभवशाली नगर रहे जिसके ध्वंसावशेष मिले। बारहवीं शताब्दी में मगरध्वज नाम का एक प्रसिद्ध जोगी हो गया है जो 700 चेलो समेत तीर्थ यात्रा करने जाया करता था और जहां-जहां पहुंचता था वहां-वहां उसके साथ उसका नाम खोद देते था। ईश्वरमऊ में एक मूर्ति पर (मगरध्वज जोगी) लिखा मिला था। हिन्डोरिया से डेढ़ मील पर प्राचीन मंदिरों के ध्वंसाशेष पड़े मिले जिनमें बहुत सुंदर मूर्तियां हैं। खुदाई में भवनों का ध्वंसाशेष भी मिले। 13वीं शताब्दी में हिन्डोरिया कालिन्जरों के अधीन था। हिन्डोरिया ईश्वरमऊ का मुहल्ला रहा जिसमें हिन्डोले केउत्सव मनाने वाले अधिक रहा करते थे। छितराखेरा आसपास के जंगलों में सुन्दर मूर्तियां विखरी पड़ी है। यहां पर मध्यप्रदेश शासन ने एक चौकीदार रखा। इस जिले (दमोह) में सबसे पुराना ध्वंसावशेष हटा तहसील के सकौर ग्राम का मंदिर गुप्त वंशीय राजाओं के समय का है। चौथी शताब्दी में समुद्रगुप्त एक महाप्रतापी राजा हुआ। यह राजा दक्षिण की विजय करने को जाते समय सागर जिले से होता हुआ सत्तीसगढ़ की तरफ गया। सरन में गुप्त राजाओं ने अपना स्वभोग नगर बना रखा था। उन दिनों दमोह जिले का क्षेत्र सुरश्मि चंद राजा के अधीन था। सुरश्मिचंद का राज्य यमुना से नर्मदा तक था।

मोहना का शिव मंदिर 800 वर्ष पुराना है। इस मंदिर पर सुन्दर मूर्तियां बनी है। रोन में चपटे छत की एक पुरानी मढ़िया है। खगरोन में महादेव जी का एक मंदिर गौड़ राजाओं के समय का है। स्नेहका मढ़ा 12वीं शदी का है। सिंगौरागढ़ का किला (सिग्रामपुर के पास) एक बड़े भारी तालाब के कोने में स्थित था। तालाब चारों तरफ पहाड़ी की दीवालों से घिरा हुआ था। अब वह टूट-फूट गया है। आज भी ध्वंसावशेष मौजूद हैं। सन् 1302 ई. में बाघदेव राजा सिंगौरगढ़ में रहते थे। बटियागढ़ का किला मुगल शासक ने बनवाया था। उन दिनों बटियागढ़ में चंदन वन के समान एक बगीचा और वावली (बिहर) थी। नरसिंगगढ़ का किला शाह तैयब का बनवाया हुआ था। हटा का किला मराठों का बनवाया हुआ था।

महाभारत के समय में दमोह का क्षेत्र चेदि देश के अंतर्गत रहा है। हूणों का राजा तारमाण 5वीं शताब्दी के अंत में एरन तक आया पर उसका राज्य स्थाई रूप से इस ओर नहीं जमा। सन्

641 ई. में एक चीनी यात्री खजुराहो आया था उसने लिखा है कि इस क्षेत्र का राजा ब्राह्मण था। सातवीं शताब्दी में दमोह तहसील में पंडिहारों और हटा में ब्राह्मणों का राज्य था। सन् 1513 ई. में महमूद शाह दमोह में राज्य करते थे। खिलजियों ने दमोह को अपना सदर मुकाम रखा था। इसके पूर्व मुगल बादशाह का सदर मुकाम बटियागढ़ था। सिग्रामपुर गांव संग्रामशाह का स्मारक है। गौड़ राजा दलपतशाह सिगौरगढ़ में रहता था। अकबर बादशाह की नाराजी के कारण आसफखां ने 1564 ई. में सिगौरगढ़ पर हमला किया। युद्ध में रानी दुर्गावती की मृत्यु हुई। चन्द्रशाह ने 10 गढ़ अकबर को दिए और खुद गद्दी पर बैठा। 1678 ई. में इस क्षेत्र पर छत्रसाल का राज्य था। जब मुगलों ने छत्रसाल पर हमला किया तो छत्रसाल के बाजीराज पेशवा का एक पत्र मदद के लिए लिखा जिसमें लिखा कि जो गत ग्राह गजेन्द्र को, सो गत भई है आज। बाजी जात बुन्देल के, बाजी राखो आज॥

पेशवा की मदद से छत्रसाल को विजय मिली। छत्रसाल नेअपनी खुशी से तीसरे पुत्र के रूप में पेशवा को सागर, झांसी, कालपी, गुरसराय, जालोन आदि का हिस्सा दिया। जिसके प्रबंधक गोविन्दराव पंत बुंदेला (बल्लारखेर) तथा सागर सदर मुकाम था। सन् 1779 ई. में कालपी पर अंग्रेजों का अधिकार था। सन् 1819 में अंग्रेज, पेशवा व मराठों की संधि से उत्तर का प्रांत, सागर, जवलपुर, दमोह आदि अंग्रेजों के अधिकार में आए। सन् 1836 ई. में सागर, दमोह क्षेत्र संयुक्त प्रदेश (पश्चिम-उत्तर प्रांत) में थे। उस समय दमोह क्षेत्र का सदर मुकाम हटा था। सन् 1838 ई. में दमोह क्षेत्र सागर के अधीन रहा। सन् 1857 जुलाई माह में दमोह में विद्राही (स्वतंत्रता संग्रामी) नजर आते थे। किशोरसिंह का दमोह में तीन दिन तक कब्जा रहा। पुलिस, अंग्रेज कर्मचारी भाग गए थे। मालगुजारों व अन्य लोगों ने विद्रोहियों का साथ दिया जिससे सागर और दमोह में अगस्त माह 1857 में लड़ाई हुई। नागपुर और जबलपुर से अंग्रेज फौज आनेपर वालाकोट, तेजगढ़, हिन्डोरिया, सागर और दमोह अंग्रेजों के कब्जे में आए। 17 सितम्बर 1857 में नरसिंहगढ़ का किला अंग्रेजों के हाथ लगा अंग्रेजों की तरफ से पन्ना के राजा ने मार्च 1858 तक इस क्षेत्र की देख-रेख की इसके बाद अंग्रेजों का कब्जा हुआ।

सन् 1858 में यह क्षेत्र नर्मदा टेरेटरी में शामिल हुआ। सन् 1861 में पुराने मध्यप्रदेश का निर्माण हुआ तथा दमोह, सागर, सी.पी. और बरार प्रदेश में शामिल हुए। 1862-63 में प्रथम बन्दोवस्त हुआ। 1898 में बीना-कटनी रेल लाइन का निर्माण हुआ। सन् 1942 में स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक लोग जेल गए। सन् 1947 अगस्त माह में भारत स्वतंत्र हुआ। सन् 1956 में नए मध्यप्रदेश के निर्माण के साथ दमोह पुन: जिला बना।

व्यापारिक दृष्टि से प्राचीनकाल में इस क्षेत्र के पंचमनगर का कागज, जबेरा के सरौते, दमोह के पान, दमोह क्षेत्र की मिट्टी की चिलमें , बाँस के सामान में सूपा, दौरी, टोकनी, बिजना आदि। हटा और बांसा के कोरियो (कोरी समाज) द्वारा टाट की पट्टी बनाना, पटेरा में फूल (कांसे) के बर्तन तथा इस क्षेत्र के बुन्देलखण्ड की झब्बूदार जूता जिसकी उन दिनों कीमत एक जोड़ी चार रूपया थी, प्रसिद्ध थे। गोंद, खै, महुआ, चिरौंजी, शहद तथा जंगली जड़ी-बूटिया अधिक पैदा होती थीं। दमोह घी, व गल्ला मंडी एवं ढोर बाजार के लिए प्रसिद्ध रहा।

यह रक्षा हमारा क्षेत्र जिस क्षेत्र के हम वासी हैं, जहां ब्यारमा, सुनार, कोपरा अनादि काल से बह रही हैं।

सेवानिवृत्त टेलीफोन इन्सपेक्टर
बांदकपुर, दमोह

* * *

सैर साहित्य में षटऋतु वर्णन

- डॉ. श्रीमती गायत्री वाजपेयी

लोक : जीवन प्रकृति की क्रोड में विकसित हुआ है। प्रकृति का प्रत्येक परिवर्तित मानवीय अनुभूतियों पर भी असर करता है। बारहमासा तथा षटऋतु वर्णन परंपरा के अंतर्गत यही प्रभाव परिलक्षित होता है। लोक गीतों में बदलती प्रकृति के इसी परिवर्तन क्रम को ऋतुपरक गीतों में बांधा गया है। लोक विद डॉ. गायत्री वाजपेयी ने सैर लोकगीतों के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के अंतर्संबंधों को प्रस्तुत आलेख में तलाशा है।

सृष्टि के आरम्भ से ही मानव मन आश्चर्य मिश्रित आह्लाद एवं परिचय जन्य अनुराग से भरकर प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट होता रहा है। प्रकृति के कण-कण में उसने सौन्दर्य के दर्शन किए है। सदा से ही प्रकृति से उसका सीधा सम्बन्ध रहा है। मानव और प्रकृति दोनों ही एक दूसरे के हर्ष से हृष्ट और विषाद से विषण्ण होते आये हैं। संस्कृत साहित्य से लेकर लोक साहित्य तक सर्वत्र प्रकृति वर्णन प्रचुर रूप में प्राप्त होता है। साहित्य में षटऋतु वर्णन आवश्यक अंग के रूप में आया है। ऋतुओं का प्रभाव प्रकृति की रूपश्री और प्रभावोत्पादकता पर पड़ता ही है। काव्यकारों ने प्रकृति चित्रण प्राय: किसी न किसी ऋतु का आश्रय ग्रहण कर ही किया है। हाँ यह बात अवश्य है कि कवियों की वृत्ति किसी ऋतु के वर्णन में अधिक रमी है और किसी में कम। वर्षा शरद वसन्त एवं हेमन्त के वर्णन में कविमन अधिक रमा है। लोक साहित्य में प्रकृति चित्रण एवं षटऋतु वर्णन का विशिष्ट महत्व है। सैर साहित्य में तो लोक रचनाकारों ने षटऋतुओं के माध्यम से मानव मन की सुखात्मक एवं दुखात्मक संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। नायिका भेद से सम्बन्धित सैरों में अन्य ऋतुओं के वर्णन के साथ किसी विशेष ऋतु को सुरति के लिए उपयुक्त माना गया है। एक ऐसी ही सैर प्रस्तुत है जिसमें बसंत को सुरति के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया गया है-

दोहा - ग्रीसम पावस सर्द में, कंथ हेमन्त बहार।
सुमन सेज पैलेव तुम, सिसिर वसंत बहार॥

सोरठा- सिसिर हेमन्त बहार, लेव हुस्न जो खिल रहो।
जाव न अन्त मुरार, रहो प्रान प्यारे भवन॥

छन्द - ग्रीष्म में गरमी होत है पावस घटा घनघोर है।
सर्द उर हेमन्त में तन मदन करत मरोर है॥
सिसिर में स्वामी सुनो सरदी पड़त चहुँ ओर है।
ऋतुराज में ब्रजराज जइयो न कहीं मुखमोर है॥

सैर - ग्रीसम जनाय गरमी तन मदन जगारे।
तर तर चलत पसीना के कंथ पनारे।
पावस में पिया प्यारे घन घूमत कारे।
परदेश गमन त्याग राव सदन हमारे ॥१॥ टेक

चपला चमक चहुँओर रयी क्रोध जनारे।
ऋतु सरद की जुन्हाई उर गजब गुजारे।
आनन्द में न परमानन्द देव दगारे॥२॥ टेक

हेमन्त में न अन्त कंथ जइयौ प्यारे।
तरसत है गात प्रीतम सुनवचन तिहारे।
स्वामी सुनौ सिसिर में सीत करत विथारे॥३॥ टेक

सरदी लगत सकारे कपत रग रग सारे।

मौसम बसंत में तुम लेव हुस्न मजा रे।

गुरू सैर सुमर हर गोविन्द हते उचारे॥४॥ टेक

परिवर्तन प्रकृति का प्राणतत्व है। पुरातनता का त्याग और नूतनता का ग्रहण यही प्रकृति का शाश्वत नियम है। परिवर्तन के इस शाश्वत सत्य को कामायनीकार ने इन शब्दों में प्रकट किया है-

पुरातनता का यह निर्मोक,

सहन करती न प्रकृति पल एक।

नित्य नूतनता का आनंद,

किये है परिवर्तन में टेक।

कामायनी-जयशंकर प्रसाद, पृ. 25

ऋतुओं का क्रमशः परिवर्तन स्वाभाविक प्रक्रिया है। एक ऋतु के पश्चात दूसरी ऋतु का आगमन मानव मन को प्रभावित किये बिना नहीं रहता है। बसंत ऋतु जहाँ षटऋतुओं में सिरमौर है तो शिशिर ऋतु का भी अपना विशिष्ट महत्व है। एक सैर में शिशिर ऋतु को श्रेष्ठ ऋतु निरूपित किया गया है। यथा -

दोहा-आली बारामास में, षटऋतु पूरन होय।

सब ऋतु में लागत सखी, सिसिर सुहावन मोय।

सैर -रित है वसन्त जानो सिरमौर सभी की।

आमन में मौर भौंरन गुंजार सही की।

मैं कात एक बात सत्त अपने ही की।

ग्रीष्म में सखी मोय सिसिर लागत नीकी॥१॥ टेक

ग्रीष्म में किरन तेज तपत सूरज जी की।

वरसा में मेघ उमड़न घुमड़न है नदी की।

सबको लगत सुहाई हम जानत फीकी।

ग्रीष्म में सखी मोय सिसिर लागत नीकी॥२॥ टेक

है दरश बीच निर्मल चाँदनी ससी की।

शोभा सरस सरन में कमलन की कली की।

वासना काम जागत जोगी औ जती की।

ग्रीष्म में सखी मोय सिसिर लागत नीकी॥३॥ टेक

सुख दैन शरद सब खाँ है, मूर अभी की।

जाड़े में देह कम्पत सब दैस दुनी की।

नायिका कहो बुझन दुज व्यास कवी की।

ग्रीष्म में सखी मोय सिसिर लागत नीकी॥४॥ टेक

विरह विदग्धा नायिका को षटऋतुएँ किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इसका बड़ा ही सजीव चित्रण सेर रचनाकारों ने किया है। एक सैर प्रस्तुत है जिसमें विभिन्न ऋतुओं का वर्णन उद्दीपन रूप में हुआ है-

दोहा-परम प्यारे पीउ बिन, पूरी रहत बेहाल।

सौतन के बस में भये, मोहन मदन गुपाल॥

सोरठा-मोहन मदन गुपाल निरदई निपट कठोर।

खबर लेव तत्काल, विरह विथा व्याकुल करै॥

सैर -ग्रीष्म की तपन तन में मम करत बिहाली।

टप टप चुअत पसीना ज्यौ चलत पनाली।

पावस में भवन प्रीतम बिन लागत खाली।

सुमनन की सेज सूनी बिन प्रीतम आली॥१॥ टेक

कोपल कसान श्रवनन पै कूँकत काली।

ऋतु सर्द की समीर सुगम सजनी साली।

तन में गजब गुंजार करत मदन उताली॥२॥ टेक

हेमन्त में न आये वनमाली चाली।

मनमोहन की आसत सुन अजब प्रनाली।

सुख सिसिर करत सौत सदन तज तज ख्याली॥३॥ टेक

सरदी में श्याम सुन्दर बिन तलफत हाली।

मधु में मदन जरत अत लख हेसुन लाली।

गुरू सैर सुमर हरगोविन्द शीघ्र वना ली ॥४॥ टेक

बिना वियोग के संयोग श्रंगार परिपुष्ट नही होता। प्रेमी प्रेमसागर में उठती हुई लहरों में झूला झूलते और अन्तरिक्ष तक फैले हुये प्रेम पयोधि का पूर्ण दर्शन करते हैं। विरहाग्नि में तपकर प्रेमी का स्वरूप निखर उठता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अग्नि के तपने के बाद ही स्वर्ण की निकाई निखरती है। अग्नि परीक्षा के बाद ही तप्त कांचन वर्ण निखर पाता है सुवर्ण और विरही का।

श्रृंगार रस का शास्त्रीय विवेचन

डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृ. 37

पावस शिशिर बसन्त और हेमन्त आदि ऋतुएँ विरहिणी की भावनाओं को उद्दीप्त करती हैं उनकी विरह वेदना को तीव्रतर कर देती हैं। पावस ऋतु में विरह विदग्धानायिका की मनोव्यथा को मुखरित करती यह सैर दृष्टव्य है -

दोहा-घटा घनी घनश्याम की, रही गगन मंडराय।

दामिन दमक दिखाय रहै, देती मदन जगाय॥

सोरठा-देती मदन जगाय, बिन मन मोहन के सखी।

सुमन सेज न भाय, तलफत रजनी में रहत॥

सैर -घनश्याम घटा घनी घुमड़-घिर घिर आवै।

बरसा बड़ी विचित्र सखी इन्द्र करावै।

सुमनन की सरस सेज सखी पै न सुहावै।

बनमाली बिन आली बेहाली रावै ॥१॥ टेक

दादुर टेंटर दै दै मम गात जलावै।

पावस में पिया प्यारें नहीं खबर पठावें।

कपटिन कुरूप कुब्जा सै प्रीत बढ़ावै ॥२॥ टेक

कोयल कठोर कूँक कड़ी श्रवन सुनावै।

चंचल चालाक चपला नभ चमक दिखावै।

सुन्दर समीर बरछी सी चुभ चुभ जावै ॥३॥ टेक

रट पापी पिक पी पी पिउ याद दिलावै।

होतन प्रभात मुरगा नित आय जगावै।

गुरू सैर सुमर हरगोविन्द फड़ पै गावै ॥४॥ टेक

बारहमासा सम्बन्धी सैरों में भी प्राकृतिक वस्तुओं एवं व्यापारों का स्वाभाविक वर्णन देखने को मिलता है। बारहमासा लोकगीत का वह प्रकार है जिसमें विरहिणी नायिका के बारह मासों में प्रत्येक मास में अनुभूत दुखों व मनोभावों की विवृति होती है। इन गीतों में साल के बारहों मासों के दुखों का वर्णन होता है इसीलिए इनको बारहमासा कहा जाता है। इन गीतों की परम्परा अत्यन्त प्राचीनहै। संस्कृत में षटऋतुओं व बारहमासा वर्णन महाकाव्य का आवश्यक अंग माना जाता है। लोकसाहित्य में प्रचलित बारहमासे का प्रारम्भ प्रायः आषाढ़ मास से होता है। कहीं कहीं पर इसका प्रारम्भ मास चैत्र से भी शुरू होता है। इनमें वियोगिनी के कष्टों का उल्लेख मास के क्रम से होता है। इसका वर्णन इस सैर में सजीवता के साथ व्यंजित हुआ है-

दोहा-बारहमासी श्याम की, कहत विरहा दरसाय।

गए बीत महिना सबै, आयै न पति जदुराय॥

सैर- मधु महिना में सुध बुध घनश्याम बिसारी।

बैशाख में वसन्त मदन जारत भारी।

लागत ही जेठ पड़न लगी गरमी सारी।

गये बीत मास द्वादश ना आये मुरारी ॥१॥ टेक

आयो असाड़ आली ऋतु ग्रीष्म न्यारी।

सावन में स्याम सुन्दर न भवन मंझारी।

भादौ गये विथी में रैन झुक झुककारी ॥२॥ टेक

आश्विन में आये नाही पति गिरवरधारी।

कातिक में छाई ब्रज में चहुँ ओर दीवारी।

अगहन में सुनि आवन मम प्रीतम प्यारी ॥३ ॥ टेक

लिख पूस में पठाय दयो जोग विहारी।

माघ में मदन मोहन सुध लेव हमारी।

फागुन में हरगोविन्द सैर कहत उचारी ॥४ ॥ टेक

नायिका भेद से सम्बन्धित एक सैर में बसंत, ग्रीष्म और पावस का प्रभावोत्पादक वर्णन किया गया है ये तीनों ऋतुएँ वियोगिनी नायिका को किस प्रकार प्रभावित करती हैं, इसका स्वाभाविक चित्रण दृष्टव्य है-

दोहा-जिम जिम ग्रीष्म पायके , चलत प्रचण्ड समीर।

तिम तिम बिन ब्रजवाल के, छिन छिल होत अधीर॥

सैर- खोलत न कछू मन की दृग भरे नीर से ।

धरती के बीच कदम धरत छीर छीर से।

प्रीतम नही विदसें अत विकल भीर से।

किह काज आज विनती कर रई समीर से ॥१ ॥ टेक

बीतो बसंत जैसे तैसे अधीर से।

ग्रीष्म समाज साज चढ़ी बड़ी भीर से।

आतप की तपन छेड़ी चन्दन उसीर से ॥२ ॥ टेक

जो ग्रीष्म कट जैहे तखार तीर से ।

पावस प्रचण्ड कर है बरसा गहीर से।

रित तीनों का जतन करौ किस नजीर से ॥३ ॥ टेक

पंडित न वेद कहै बल अखीर से।

नायका कौन इसमें पूछै सहीर से।

कहै गंगगधर भेद खोल नीर छीर से ॥४ ॥ टेक

सैर रचनाकारों ने षटऋतु एवं बारहमासा चित्रण के अनेकानेक भावपूर्ण चित्र उकेरे हैं। उद्दीपन के रूप में प्रकृति के इस अनुपम चित्रण से सम्बन्धित सैंरे न केवल कथ्य की दृष्टि से प्रभावपूर्ण है वरन् शिल्प सौष्ठव की दृष्टि से भी अद्वितीय हैं।

सहा.प्राध्यापक, हिन्दी

श्रीकृपा निकेतन, आदर्श नगर हायर सेकेण्ड्री

नं.1 स्कूल के पीछे, छतरपुर (म.प्र.)

* * *

बुन्देलखण्ड ने दिया मध्यप्रदेश को पहला दैनिक

डॉ.मंगला अनुजा

मध्यप्रदेश में दैनिक समाचार पत्र के युग की शुरूआत 11 जून 1923 को सागर से होती है। मास्टर बलदेव प्रसाद ने ''दैनिक प्रकाश'' नामक पत्र को निकाला था। जिसका मुद्रण भगवान प्रिंटिंग प्रेस चकराघाट सागर से होता था। इसके शीर्षक के नीचे एक तरफ सम्पादक बलदेव प्रसाद मास्टर तथा दूसरी तरफ प्रकाशक प्रेमनारायण शर्मा मुद्रित रहता था। शीर्षक के ठीक नीचे ''मध्यप्रांत का पहला, सस्ता दैनिक पत्र'' छापा जाता था। प्रकाश का वार्षिक मूल्य सवा पाँच रुपये शहर वालों के लिए तथा बाहर वालों के लिए एक वर्ष का नौ रुपये था। छह माह का शुल्क साढ़े चार रुपये तथा तीन माह का सवा दो रुपये मुख्य पृष्ठ पर एक ओर छपा मिलता है। इसी पृष्ठ पर एक दोहा भी नीति वाक्य के रूप में अंकित रहता था-

''देश दशा दर्शन देता यह,
मनोभाव नित करे विकास
राष्ट्रप्रेम स्वातंत्र भाव हित,
पढ़िये दैनिक पत्र प्रकाश।''

दैनिक प्रकाश ने कुछ नियम निर्धारित कर रखे थे-

प्रकाश के नियम-

प्रकाश में छपने के लिए जो लेख भेजे जावें उनमें लेखक का नाम अवश्य रहना चाहिये। अगर लेखक चाहेंगे तो उनका नाम न छपेगा। पर संपादक के पास नाम का रहना बहुत जरूरी है। अक्षर साफ-साफ शुद्ध दूर-दूर पंक्तियों में आना चाहिये। लेख कागज के एक ओर ही लिखे जावें। लेख आदि संपादक के नाम आना चाहिये। लेखों का छापना या न छापना कमी बेशी करना संपादक के हाथ में होगा। बैरंग पत्र न लिया जावेगा।

11 जून 1923 के प्रवेशांक में प्रकाशित इस समाचार से प्रकाश की दिशा का भली भांति दिग्दर्शन हो जाता है-

''सर संकरन नायर जो बम्बई में गोलमेज कान्फ्रेंस के सभापतित्व को त्याग महात्मा गांधी जी पर नाराज होकर भाग दिये थे और जिन सर माइका ओ डायर ने अभी मुकदमा चलाया था आप ठिकाने आये हैं आप फरमाते हैं कि बगैर हिन्दु मुस्लिम, सिख, पारसी एकता के भारत का उद्धार होना मुश्किल है हम सबको मिल कर अपने को हिफाजत करना चाहिये।''

13 जून 1923 को दैनिक प्रकाश में ''गाय की कुर्वानी'' शीर्षक से समाचार था- बम्बई 9 जून समाचार मिला है कि डॉक्टर अनसारी और श्रीमती सरोजनी नायडू हिन्दुस्तान के तमाम अखबार नबीसों की सभा करने वाले हैं, यह सभा 26 तारीख को इलाहाबाद में होगी और इसमें आने वाली ईद पर गाय की कुर्वानी रोकने पर प्रेस वाले कितनी मदद कर सकते हैं इस पर विचार होगा। दैनिक प्रकाश में दूर-दराज के समाचार तथा देश में घटित प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना की खबरे पढ़ने को मिलती हैं। अपने पाठकों तक विविध खबरें पहुंचाकर दैनिक प्रकाश जनरुचि का पत्र बन सका था। साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन में भी बराबर हिस्सेदारी निभाते हुए अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति कर सका था स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी प्रत्येक खबर इस पत्र में देखी जा सकती है। अन्य समाचार पत्रों की खबरें या उन पर होने वाली कार्रवाई पर इसकी बेबाक टिप्पणी पठनीय होती थी।

13 जून को ''नवयुवक'' के सम्पादक श्री कल्याणजी मेहता को दफा 124 में दो साल की कठोर कैद तथा उर्दू पत्र लाहौर के संपादक प्रोफेसर गुलाम हुसैन को हिरासत में लिए जाने की सूचनाएं प्रकाश के 18 जून के अंक में मिलती हैं।

पटियाला रियासत में अमृत बाजार पत्रिका और निजाम शाही में हिन्दू अखबार का जाना जब उन दरबारों के हुक्म से निषिद्ध कर दिया गया, तब प्रकाश ने देश में समाचार पत्रों के हित सुरक्षित रखने की आवाज उठाई।

23 जून 1923 के अंक में श्रीमती सावित्रीवाई हर्डीकर का पत्र प्रकाशित किया गया जिसमें उन्होंने नागपुर सत्याग्रह में शामिल होने की अनुमति मांगी और अनुमति नहीं देने पर कांग्रेस अध्यक्ष के खिलाफ ही धरना देने की घोषणा की थी। यह पत्र सत्याग्रह आंदोलन में स्त्रियों के भाग लेने की आतुरता का एक प्रमाण है।

सागर की वीर स्त्री की दूसरी चिटठी शीर्षक से जो चिट्ठी दैनिक प्रकाश में छपी थी, वह इस प्रकार है-

श्रीयुत मंत्री जी
जिला कांग्रेस कमेटी, सागर

महाशय। मेरे पत्र का उत्तर मिला। पढ़कर वहुत दुःख हुआ स्त्रियां जावें या नहीं, मैं अकेली ही कल पहली टोली में नागपुर के लिए तैयार हो गई हूँ, यमुताई का मेरा साथ कैसा। अगर वह न गई तो क्या उनकी सरीखी मैं भी न जाऊं- हाथ जोड़कर कहती हूँ कि आप मुझे कल वाली टोली में भेज दीजिये। अगर आपने न भेजा, तो आप ही सत्याग्रह करके, कल मैं नागपुर को चली जाऊंगी। आखरी अर्ज है। उत्तर शीघ्र दीजिये।

आपकी
साबित्रीवाई हर्डीकर

ता.17.6.23

27 जून 1923 के अंक में प्रकाश ने श्री जमना लाल वजाज का संदेश छापा-

सत्याग्रह की लड़ाई में सत्य ढाल है और अहिंसा तलवार। इसमें किसी को भी संशय नहीं है कि सत्य अपनी ओर है, सर्कार को भी इसमें शंका नहीं है- होनी भी नहीं चाहिये। इस समय तक अहिंसा की तलवार का अतीव उत्तम रीति से प्रयोग किया गया है और इसीलिये इस समय तक सर्कार के साथ इस लड़ाई में कुश्ती का दांव हमारे हाथ रहा है। जब तक हम अहिंसा को नहीं छोड़ेंगे, जब तक अपनी विजय रहेगी।

यहां तक कि सर्कारी अधिकारियों को चिढ़ाने के लिए जय जयकार करना भी अहिंसा के विरुद्ध है। अहिंसा के अर्थं की इस गहराई तक अपने को पहुंचना चाहिये। इस लड़ाई का कार्यकाल बिलकुल सीधा व सरल है। इसीलिये इस लड़ाई में नेताओं की कुछ विशेष आवश्यकता नहीं है। यदि कुछ है तो उसे पूरा करने की जिम्मेदारी राष्ट्रीय महासभा ने अपने पर ले ली है, आवश्यकता केवल सैनिकों की है। मेरी यही मांग है कि मध्यप्रांत के प्रत्येक गांव को इस लड़ाई में अपने प्रतिनिधि भेजने चाहिए। प्रत्येक को चाहिए कि पक्षभेद भुलाकर समान तौर पर शत्रु का सामना करें। इस समय तो पक्षभेद को बिलकुल नष्ट ही कर देना चाहिए। कुछ अधिक कहना जाग्रत भारत का अपमान करना है। मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि इस बात को हमेशा स्मरण रखना चाहिये कि महात्मा जी अभी तक जेल ही में हैं।

- जमना लाल बजाज

दैनिक प्रकाश की स्वतंत्रता आंदोलन में जोश भरने में महती भूमिका रही है। 3 जुलाई 1923 को उसके मुख्यपृष्ठ पर निम्न खबर से यह स्पष्ट जाता है कि स्वातंत्र्य समय में अपने आपको झोंक देने की प्रेरणा देने का काम दैनिक प्रकाश ने बखूबी निभाया। खबर है -

''जेल खाने को स्वर्ग बना दो।
तकलीफों की परवाह मत करो॥''

अब ठहरने का गौर करने और सोचने का वक्त नहीं है। देश के एक हजार बच्चे जेल जा चुके हैं। तुम्हारे पूज्य नेता वे रोजगार और वे घरवार करार देकर वर्धा में 6 माह को जेल भेज दिये गये हैं। तैयार हो जाओ नागपुर के जेल तीर्थ को जाने के

लिये आज ही रवाना हो जाओ। कानपुर से सैकड़ों वीर आ रहे हैं। गुजरात से वालंटियर आ रहे हैं। देशबंधु सी.आर.दास साहिब नागपुर को रवाना हो चुके हैं। मौंका न चूकिये गंगा की गंगा और शिवरामपुर की हाट के माफिक नेताओं के दर्शन और सत्याग्रह का प्रसाद ग्रहण कीजिये।''

9 जुलाई 1923 के प्रकाश में सरदार दीवान सिंह संपादक अकाली ते परदेशी के गिरफ्तार होने की सूचना छपी है तथा साथ ही यह भी लिखा है कि संपादक जी ने अकाली कैदियों पर जेल में सख्ती के ऊपर लेख लिखा था।

10 जुलाई 1923 के अंक में रंगून मेल के संपादक को जेल शीर्षक से एक खबर छपी थी- रंगून मेल के संपादक जी का मामला मि.यू.वेकिन डिप्टी कमिश्नर रंगून की अदालत में पेश हुआ। मजिस्ट्रेट ने आप पर 124 ए का चार्ज लगाकर 2 साल साधारण जेल की सजा का हुक्म सुना दिया है। अंतर्राष्ट्रीय समाचारों का प्रकाश में छपना इस बात का द्योतक है कि मध्यप्रदेश के सागर जैसे छोटे स्थान से निकल कर भी प्रकाश अपनी दृष्टि व्यापक बनाए हुए था।

दैनिक प्रकाश में अन्य समाचार पत्रों से भी समाचार लेने की परम्परा थीं। 10 जुलाई 1923 के अंक की एक खबर थी- ''नेशन'' लाहौर लिखता है कि नरसिंहपुर के डिप्टी कमिश्नर मि.जे.जी.बोर्न साहिब ने अपने दस्तखत करके 1 पर्चा ''महाराजा पंचम जार्ज की जय'' नाम का तमाम शहर में बटवाया है। परचे में असहयोगियों को खूब कोसा गया है। लिखा है कि ''करीब 25 तीस बेवकूफ नरसिंहपुर से भी नागपुर गये हैं। अब सरकार बहादुर के हुक्म के मुताबिक 143, 117, 188, 120 वी ताजीरात हिन्द के माफिक गिरफ्तारियां की जावेंगी। जो आदमी नागपुर जायेगा या जाने की सलाह देगा वह नरसिंहपुर में इकदम गिरफ्तार कर लिया जावेगा। इसी तरह की बहुत सी गीदड़ भपकियां बोर्न साहिब ने देकर सरकार के राज्य में स्वर्ग सुख दिखाने की भविष्यवाणी की है।''

14 जुलाई 1923 के अंक में एक समाचार था- सरकार का खबरें मंगाने का खर्चा- लेजिसलेटिव एसेम्बली में उपरोक्त प्रश्न पर मि.ए.सी.चटर्जी ने निम्नलिखित जवाब दिया है- रूटर की एजेन्सी जो परदेशी खबरें भेजती है उसे सरकार की ओर से 55200 रु.सालाना दिए जाते हैं। भारत की खबरें देने वाली एजेन्सी एशोसियेटेड प्रेस को सन् 22 और 23 की 1 साल में 22740 रु. दिये गये हैं- रूटर में तार 76 अफसर जो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (भारत सरकार) में हैं भेजे जाते हैं। एसोशियेटेड प्रेस 30 रुपया की काफी के हिसाब से पाता है। पार साल रूटर के तार पाने वाले 60 अफसर भारत सरकार में विभाग में थे। यह बात आवश्यक मालूम होती है कि कुछ सरकारी अफसरों को और भी खबरें भेजी जावें।

मित्र समाचार पत्रों के समाचार देने में भी प्रकाश पीछे नहीं रहता था- ''सुबोध सिंधु'' यह पत्र हर बुधवार को श्री पण्डित राव लक्ष्मण प्रयागी के संपादकत्व में खण्डवा से निकलता है। पत्र अच्छा है हम सहयोगी की बढ़ती चाहते चाहते हैं। प्रेस में अनिवार्य कठिनाई के कारण सुबोध सिंधु के आगामी तीन अंक न निकलेंगे। अतएव वह 8 अगस्त को प्रकाशित होगा। हमें आशा है सहयोगी पाठक धैर्य रखेंगे।

राष्ट्रीय आंदोलन का प्रचारक दैनिक प्रकाश समय समय पर अपील छाप कर आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए लोगों का आव्हान भी करता था।

16 जुलाई 1923 के प्रकाश में प्रकाशित अपील दृष्टव्य है-

18 जुलाई बुधवार न भूलिये

हर जगह झंडई झंडा दिखे

(बेशुमार स्वयं सेवक भर्ती हो)

उस दिन हर घर, मस्जिद, मंदिर, दुकान आदि पर राष्ट्रीय झण्डा फहरावे। हर एक आदमी अपने बदन पर राष्ट्रीय झण्डा लगावें। नागपूर के राष्ट्रीय झण्डे के सत्याग्रह के लिए

स्वयं सेवक हो वह हर जगह राष्ट्रीय झण्डे का जुलूस निकाला जावे।

निवेदक- **विश्वास राव भावे**
एक्टिंग मंत्री जिला कां.क.सागर

दैनिक प्रकाश ने अपने आपको स्वतंत्रता के उद्देश्य से जोड़कर मानो स्वयं सरकार को एक चुनौती दे रखी थी। इसकी खबरों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आन्दोलन की ललकार गूंजती थी। 17 जुलाई 1923 के अंक में प्रथम पृष्ठ पर ही खबर है-

18 तारीख को झंडा दिवस मनाओ।
जुलूस निकालने की तैयारी करो॥

नागपुर में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पास कर दिया है कि कल 18 तारीख को महात्मा गांधी के जेल जाने के दिन झंडों का जुलूस निकाल कर मनाया जावे, प्रांतीय और जिला कमेटियां जुलूस की तैयारी करें। अगर सरकार अठारह तारीख के जुलूस की मनाही करें तो वहां सत्याग्रह किया जावे। यह याद रखा जावे कि अंहिसा का ख्याल रहे। मध्यप्रांतवासियों तैयार हो जाओ। राष्ट्रीय महासभा का जुलूस निकल चुका है। विश्वव्यापी सत्याग्रह का मौका मिला है। कुल झंडामय प्रांत बना दो।

सम्पादकों को जेल और हवालात की खबरे छापना प्रकाश अपना नैतिक कर्त्तव्य समझता था। 22 जुलाई 1923 के अंक में एक समाचार छापा था- बम्बई खिलाफत के सम्पादक मौलाना अब्दुल गनी साहिब को जेरे दफा 108 एक साल साधारण कैद की सजा दे दी है। लाहौर के मशहूर पत्र ''जमींदार'' के प्रिंटर और पब्लिशर मौलाना अलाहदीन साहिब 124 में गिरफ्तार कर लिये गये हैं और सुना जाता है कि एडीटर जमींदार पर वारंट भी है।

27 जुलाई 1923 के अंक में वीर सावरकर बंधुओं को दी गई काले पानी की सजा के विरुद्ध दैनिक प्रकाश में अग्रलेख प्रकाशित किया गया।

''प्रकाश'' आजादी की अलख ही नहीं जगाता था। खुद भी जंगे आजादी में शरीक था। झण्डा सत्याग्रह के लिए प्रकाश के सम्पादक मास्टर बलदेव प्रसाद ने रवाना होते समय 28 जुलाई 1923 के अंक में लिख-

''नागुर की रवानगी''
''प्रकाश की प्रांत वालों को सुपुर्दगी''

''प्रकाश'' मध्यप्रदेश में दैनिक पत्र की कमी के कारण प्रकाशित किया गया है। पत्र का संपादन अब तक मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार करता रहा। आज नागपुर से प्रिय खांडेकर जी का पत्र आया है कि सत्याग्रह संग्राम दिन पर दिन कठिन होता जा रहा है, अब स्टेशन पर ही स्वयंसेवक गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। इसलिये प्रांत वार जत्थे नियमित तारीखों पर नागपुर स्टेशन पर गिरफ्तार होने के लिए आना चाहिए। परसों 21 जुलाई मध्यप्रांत के सागर जिले के 15 स्वयंसेवकों के नागपुर स्टेशन पहुंचने का दिन मुकर्रर कर दिया गया है। अब देश की पुकार सामने है मैं प्रकाश जो सिर्फ एक माह का मासूम बच्चा है, आपकी गोद में छोड़ नागपुर जाता हूँ चाहे तो आप इसे जिन्दा रख सकते हैं और प्रांत को प्रकाशवान कर सकते हें। मेरी एक मात्र प्रार्थना है कि मुझे भूल जाना मगर मेरे प्रकाश को न भूलना।

वंदेमातरम्

आपका सेवक
बलदेव प्रसाद मास्टर

28 जुलाई से ही प्रकाश की प्रिंट लाईन में प्रकाशक श्रीयुत बलदेव प्रसाद मास्टर के स्थान पर श्रीयुत प्रेमनारायण शर्मा लिखा जाने लगा। इसी अंक में प्रकाश की प्रार्थना शीर्षक से उपसम्पादक ने लिखा-

संपादक महोदय के नागपुर जाने के कारण ''प्रकाश'' को बड़ा धक्का लग रहा है। ''प्रकाश'' के बचपन में यह

जबरदस्त चोट है। मगर प्रांत का इकलौता ''प्रकाश'' प्रांत का सहारा है अतएव इसकी परवरिश करना प्रांत के हर इंसान का जरूरी फर्ज हो गया है। आप पत्र में विज्ञापन देकर उसके ग्राहक बनाकर उसकी घटी में पैसा पुजो कर लेख लिख और प्रचार कर उसे जीवित रख सकते हैं। मध्यप्रांत के एकमात्र दैनिक प्रकाश के आज ही ग्राहक बन जाइये और इस महत कार्य में योग दीजिये।

आपका सेवक
प्रेमनारायण शर्मा
उपसंपादक-प्रकाश

31 जुलाई 1923 के प्रकाश में एक खबर छपी थी-

''प्रताप के प्रिंटर गिरफ्तार''

लाहौर के उर्दू पत्र के प्रिंटर और एडीटर मि.कृष्ण 25 जुलाई को गिरफ्तार होने खुद रोतगली पहुंच गये थे आपकी पेशी 16 अगस्त को है। फिर 4 अगस्त 1923 को मद्रास की एक खबर आई जिसमें अखबार के दफ्तर की तलाशी का समाचार छपा था आंध्र पत्रिका के दफ्तर की कल 12 बजे तलाशी ली गई और दो लेखों की कापियां पुलिस उठा ले गई।

चाहे मद्रास हो या लाहौर या कोई अन्य शहर हर जगह के अखबारों में उस समय की राजनैतिक गतिविधियों का पता चलता है। यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय सभी जगह के अखबारों की नियति एक सी ही थी। एक समाचार और था जिसमें लाहौर के नेशन अखबार के बारे में समाचार था- ''नेशन अखबार गुरूद्वारा कमेटी के कब्जे में होकर अकाली पत्र होने वाला है दिल्ली में इसके लिए सिखों की सभा हुई।''

भाषा की दृष्टि से दैनिक ''प्रकाश'' उतना उत्कृष्ट नहीं हो पाया था जितना कि छत्तीसगढ़ मित्र और सरस्वती थे, जबकि यह इन पत्रों के जन्म के 23 वर्षों बाद अस्तित्व में आया था। 6 अगस्त 1923 को छपे इस समाचार से इसकी चलताऊ भाषा को परखा जा सकता है- ''अमेरिका के प्रेसीडेन्ट हार्डिज साहब की मृत्यु 7.30 बजे शाम को 3 अगस्त के दिन हो गई आप बोलते चलते दम छोड़ गये।''

अखबारों और संपादकों से संबंधित समाचार दैनिक प्रकाश में पहले दिन से ही महत्व के साथ छापे जाते थे। इसका प्रमाण यह है कि जब ''अकाली ते परदेशी'' के सम्पादक सरदार दीवान सिंह को ताजी रात हिन्द की दफा 124 ए में 3 साल की सख्त सजा और 200 रुपया जुर्माना हुआ तो प्रकाश उसकी प्रशंसा कर उठा। ऐसे सम्पादकों तथा समाचार पत्रों के भाग्य से उसे ईर्ष्या हो उठती थी। दिनांक 18 अगस्त 1923 के प्रकाश में उसके छपने के स्थान के परिवर्तन की सूचना मिलती है-

प्रकाश की सूचना

खेद से कहना पड़ता है कि प्रकाश के पाठको को बिना सूचना दिये हमें प्रकाश का प्रकाशन ता.14 से बंद करना पड़ा। बंद करने का कारण यह था कि प्रकाश का निजी प्रेस न होने के कारण वह भगवान प्रिटिंग प्रेस में छपता था परंतु कई कारणों से उसका वहां छपवाना उसकी उन्नति में बाधक दिखने लगा। इसलिये उसको वहां छपवाना बंद कर दूसरी जगह इंतजाम करना पड़ा। अब पत्र भविष्य में ''आलकाट प्रेस'' से छपने का प्रबंध हो गया है और आशा की जाती है कि वहां उसके छपने का प्रबंध ठीक ठीक रहेगा। अंत में प्रकाश के पाठकों से हमारी प्रार्थना है कि वे हमें इस अनिवार्य कारण से उनकी सेवा न कर सकने के लिए क्षमा करेंगे। जल्दी के कारण पत्र आज छोटे आकार में निकालना पड़ा।कल से पूर्ववत् निकला करेगा।

संपादक प्रकाश

''प्रकाश'' की प्रिंट लाइन में अब प्रकाशक प्रेमनारायण शर्मा के लिये नर्मदाप्रसाद पाठक ने भगवान प्रिंटिंग प्रेस चकराघाट सागर से मुद्रित किया के स्थान पर- प्रकाशक प्रेमनारायण शर्मा के लिए नारायण बालकृष्ण नागरे ने आलकाट

प्रेस कटरा सागर में मुद्रित किया छपना प्रारंभ हो गया। पृष्ठ चार के स्थान पर पहले दिन 1 और तत्पश्चात् 2 पृष्ठों का छपने लगे। 5 सितम्बर 1923 से पुन: 4 पृष्ठ का छपने लगा।

दैनिक "प्रकाश" में जानकारी परक समाचार भी रहते थे। हवाई जहाज का समाचार कुछ इस तरह छपा था- हवाई मोटर साईकिल डी.हेलीलैण्ड कंपनी हवाई मोटर साईकिल तैयार कर रही है, जिसमें 7 हार्स पावर का मोटर साईकिल एंजिन लगाया जायेगा ये 20 फुट लंबी और 6 फुट चौड़ी रहा करेगी, इस मशीन के जरिये हर व्यक्ति वायु मंडल में सैर कर सकेगा और उसकी कीमत लगभग 200 पौण्ड याने 3000 रुपये होगी। प्रवासी भारतीयों के हितों को ध्यान में रखते हुए पं.बनारसी दास चतुर्वेदी ने जो व्याख्यान दिया था, उसका समाचार दैनिक प्रकाश में छपा- जो हिन्दुस्तानी लोग वाहिक समुद्र के पार दूर देशों में जाकर बसे हैं उनके हित का संरक्षण करने के लिये एक इंडियन योवर सीज असोसियेशन नाम की सभा स्थापन करके एक अखबार भी जारी होना जरूरी है।

हैदराबाद में "हिन्दू पत्र" लगी रोक पर "प्रकाश" ने 25 सितम्बर 1923 को जो समाचार छापा था, वह इस प्रकार है- मद्रास का 20 सितम्बर का तार है कि वहां के "हिन्दू पत्र" में संत निहालसिंह के कुछ लेख छपे थे जिनमें दक्षिण हैदराबाद की रियासती कार्रवाई पर प्रतिकूल टीका की गई थी। इस पर से नाराज होकर निजाम सरकार ने एक फरमान जारी किया है कि "हिन्दू पत्र हैदराबाद की रियासत भर में कहीं न आनेपाये।"

ऐसा ही समाचार 13 अक्टूबर 1923 के "प्रकाश" में पढ़ने को मिलता है- "आनंद बाजार पत्रिका के 9 सितम्बर के अंक में कुछ राज विद्रोही लेख छापे जाने के इल्जाम पर उस पत्र के संपादक मि.प्रफुल्ल कुमार समीर और मुद्रक मि.आधार चंद्रदास इन दोनों पर चीफ प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा चलाया गया था। पर अब ये दोनों महाशय अदालत के द्वारा इल्जाम से वरी होकर छोड़ दिये गये।"

भारत वर्षीय समाचार पत्रों की समिति के गठन की अनिवार्यता पर दैनिक "प्रकाश" लिखता है- पटियाला रियासत में "अमृत बाजार पत्रिका" का और निजाम शाही में "हिन्दू पत्र" का जाना उन दरबारों के हुक्मों से मना कर दिया गया है इसी से देश में समाचार पत्रों का हित सुरक्षित रखने की अत्यंत आवश्यकता साबित होती है। वर्तमान दशा तो यह है कि हिन्दुस्तानी समाचार पत्रों किसी भी दरजे के और उनमें एक ऊँची दरजे की परम्परा पैदा करने और कायम रखने के लिए अब अखिल भारतीय समाचार पत्रों की एक सुसंगठित और वजनदार सभा स्थापित करना बिलकुल जरूरी और अनिवार्य हो गया है।

"प्रकाश" के समाचारों के दायरे का विस्तार इस समाचार को पढ़ने से पता चलता है जब मेरठ के मि.हमीदउल्ला को अमेरिका में इनाम मिला तो उसकी खबर दैनिक प्रकाश ने छापी- "मेरठ निवासी मि.हमीदउल्ला अफसर जो उर्दू के एक अच्छे कवि और अलीगढ़ में किसी पत्र के संपादक हैं उनका सम्पादकीय पेशे का भविष्य इस विषय पर अच्छा निबंध लिखने के कारण अमेरिका न्यूयाक के ओरियन्टल एकेडेमी ने पहिले दर्जे एक ईनाम दी ही है।"

विदेशी समाचार पत्रों से भी दैनिक प्रकाश में समाचार उद्धत किये जाते थे। एक समाचार "खुद सरकने वाली जादू की दरी" शीर्षक से छपा- इग्लैंड के डेली न्यूज पेपर में लिखा है कि इंग्लैंड देश में अल्डर शाट शहर के मि.जान टेबिट के पास एक विचित्र दरी है। यह दरी भाप ही से चला करती है। मि.टेबिट की और की बहिन मरे हुए लोगों की मुलाकात कर देने वाली मध्यस्थ औरत है एक मंगल को स्प्रीचुएलिस्ट (मरे लोगों की आत्मा बुलाने वाले लोगों की) एक घर में बैठक हुई। अंधेरे में एक कोठरी में इस दरी पर 6 लोग बैठे थे। इन 6 में मि.टेबिट के खानदान के या उसके नजदीकी दोस्त थे। ऐसा कहा जाता है कि इनमें से तीन लोगों ने पूर्व देशीय तीन मरे लोगों, के स्वरूप देखे जो लोग पगड़िया पहिने थे मगर किस देश का कौन है यह

पहचान नहीं सका- ऐसा कहा जाता है कि ये लोग वही थे जिन्होंने- जिन्देपन में ये दरी बनाई थी, जब जब इन लोगों की बैठकें वहां हुआ करती हैं तब यह दरी आप से सरका करती है। इस समाचार को पढ़ने से लगता है कि रहस्य-रोमांच भरे समाचारों का प्रचलन उस दौर भी था। दैनिक प्रकाश 20 अक्टूबर 1923 (अंक 105 वर्ष 1) में यह सूचना प्रकाशित कर प्रकाशन स्थगित करने की जानकारी दी गई-

प्रकाश की सूचना

इस वक्त प्रकाश के ऊपर अनिवार्य कठिनाईयों के आने व उस पर मानहानि का मुकदमा चलने से पत्र की व्यवस्था में अड़चन हो रही है। लिहाजा मानहानि का मुकदमा निबटने और उचित व्यवस्था होने तक कुछ समय के लिए पत्र का प्रकाशन स्थगित किया जाता है। उचित व्यवस्था हो जाने पर पाठकगणों को पुनः सूचना दी जावेगी।

कुछ दिन के लिये प्रकाश आपकी सेवा से वंचित रहेगा उसके लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं- संपादक, प्रकाश

मानहानि का मुकदमा सरकारी, दमन और अन्य कठिनाइयों के कारण 20 अक्टूबर 1923 को प्रकाश का प्रकाशन स्थगित करने की घोषणा ही संपादक ने की थी। लेकिन फिर यह पत्र कभी प्रकाशित नहीं हो सकता।

सप्रे संग्रहालय भोपाल में उपलब्ध फाइल के अनुसार 11 जून से 20 अक्टूबर 1923 तक कुल 131 दिन की कालावधि में प्रकाश के 105 अंक निकले।

बाद में मास्टर जी ने बच्चों के लिये सचित्र मासिक पत्रिका बच्चों की दुनिया निकाली। उनका जेहादी तेवर जीवन के अंत तक बना रहा। जो बात उन्हें सामाजिक सरोकार की दृष्टि से चुभ जाती थी, एक परचे के रूप में उनकी प्रतिक्रिया सागर नगर के कोने-कोने में पहुंच जाती थी। इस उपक्रम को उन्होंने नाम दिया था- मिनिट मिनिट की डायरी इस पर तारीख के साथ समय भी दर्ज किया जाता था।

निदेशक

सप्रे संग्रहालय, भोपाल

* * *

बुन्देलखण्ड के स्थान नामों में इतिहास के सूत्र

- डॉ. कामिनी
डी.लिट.

बुन्देलखण्ड का इतिहास बहुत समृद्ध है। यहाँ मुगल चंदेल, गौंड़, बुंदेला, अशोक, भोज, कछवाह और सिंधिया शासकों से संबंधित स्थान नाम अधिक मात्रा में हैं। इस क्षेत्र का इतिहास भर, मय, यक्ष, मग, कुरू और दन्तवक्र के साथ जुड़ा हुआ है। चित्रकूट पद्मावती, पीरूखेड़ी, बुंदेला कोट, लश्कर और रानी महल में इतिहास का कालक्रम सुरक्षित है। स्थान-नाम पिंडारियों के अस्तित्व को सत्यापित करते हैं। इस क्षेत्र के स्थान-नामों में मय, यक्ष, कुरू, मग, भर और जर वे सूत्र हैं, जिनके आधार पर प्राचीन इतिहास को क्रमबद्ध किया जा सकता है। अशोक, भोज, सिकन्दर, बाबर, अकबर, वीरसिंह देव, हरदौल, जहाँगीर, चम्पतराय, छत्रसाल, शारजहाँ, आलमगीर और गौंड़, जाट, कछवाहे और सिंधिया नरेशों ने भी स्थान-नामों को आधार दिये हैं।

होशंगाबाद जिला का जम्बूदीप और जबलपुर जिला का सिंगलदीप ऐसे ही स्थान-नाम हैं जो पुराण इतिहास को आधार बनाकर रखे गये हैं। पुराने नाम नयेस्थलों पर रख दिये जाने की परम्परा गाथा साहित्य में भी हैं।

भर - भरौली (भांडेर-दतिया), भड़ौल भदौना, भरसूला (सेंवढ़ा-दतिया) भारखोह (मुरैना), भरौली (भिण्ड) से लेकर भरखेड़ा (नरसिंहपुर), भरबेला (सिवनी), भरद्वारा (मंडला), तक 156 स्थान-नाम भर जाति को आधार बनाकर रक्खे गये हैं। एकमत के आधार पर कहा जा सकता है कि द्रविड़ जाति थी जो पूरबी संयुक्त प्रांत में रहती थी। देश के भारत नाम का आधार यही जाति पद्मावती के भारशिव इन्हीं भरों से संबंधित थे।

मय - मय शिल्पकला में चतुर थे। इनके पाताल में रहने के उल्लेख मिलते हैं। बुंदेलखण्ड में ४०२ स्थान-नामों मे नामकरण के आधार मय हैं। ये स्थान-नाम पूरे जिलों में उपलब्ध हैं। अमेरिका के मयों और इन मयों के अवशेषों में गहरी समानता है।

यक्ष - वनस्पतिके मालिक यक्षों का उल्लेख वेदों और उपनिषदों में आया है। इनको देवों से नीचा और भूतों से ऊँचा माना गया है। ग्वालियर, मुरैना, भिण्ड, शिवपुरी, गुना, दतिया, झाँसी, ललितपुर, जालौन, बाँदा, हमीरपुर, छतरपुर, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा और मंडला जिलों में यक्षों से संबंधित 46 स्थान-नाम हैं।

मग - मग शकद्वीपी ब्राम्हण थे। इन्हें यहाँ शाम्ब लाये थे। इनका ज्योतिप और चिकित्सा पर पूरा अधिकार था। बुंदेलखण्ड में मगों को आधार बनाकर 57 रूप रचनायें हैं।

कुरू - इस जाति से संबंधित 55 स्थान-नाम ग्वालियर, मुरैना, भिण्ड, शिवपुरी, गुना, दतिया, सागर, छतरपुर, बैतूल, जबलपुर, झाँसी, ललितपुर और बाँदा में है।

दन्तवक्र - दतिया नगर में दंतवक्रेश्वर महादेव का मंदिर एक स्थान-नाम है। दंतवक्र द्वारा इस भू-भाग पर राज्य करने का एक पौराणिक मान्यता है। कृष्ण के हाथों दन्तवक्र का वध हुआ थ। वध करने के पश्चात् जब वे ब्रज की ओर बढ़े तो दतिया स्थान-नाम अस्तित्व में आता गया। बुंदेलखण्ड के दातौरा (वैतूल), दाँत खो (रायसेन) दन्तेरा (विदिशा) ऐसे ही रूप रचनायें हैं।

अशोक - अशोक नगर (गुना) और अशोक वार्ड जैसे स्थाननाम अशोक से संबंधित हैं। दतिया जिले के गुजर्रा में जो शिलालेख है उसमें अशोकका उल्लेख है।

भोज - सीहोर जिले के भोजपुर जैसेकुछ स्थान-नाम इस क्षेत्र में राजा भोज की न्यायप्रियता को प्रमाणित करते हैं।

मुगल - बाबरखेड़ा (मुरैना), अकबई (ग्वालियर-हमीरपुर), जहाँगीर महल (ओरछा-टीकमगढ़), शाहजहाँनाबाद (भोपाल) और कुरहना आलमगीर (जालौन) में मुगल शासकों की ऐतिहासिक स्मृतियाँ सुरक्षित हैं।

चंदेल, बुंदेला, गौंड़ और सिंधिया शासक - इस क्षेत्र के कई स्थान-नाम वीरसिंह जूदेव, जुझारसिंह, चम्पतराय, छत्रसाल, शंकरशाह, दुर्गावती, महादजी जया जी नारोमास्कर आदि से संबंधित हैं। इन स्थान-नामों के साथ इतिहास जुड़ा हुआ है।

बुंदेला कोट - नरसिंहपुर जिले का यह स्थान-नाम सन् 1634 में बुंदेला जुझारसिंह की विजय की स्मृति को लिये हुये हैं।

लश्कर - सन् 1810 में ग्वालियर के पास इस स्थान पर अपना खेमा दौलतराव सिंधिया ने गाड़ा था और उज्जैन की राजधानी को निस्तेज करके ग्वालियर को महत्व दिया था। इस खेमे वाले स्थान को लश्कर कहा जाता है। लश्कर का सामान्य अर्थ सेना है।

पद्मावती - नाग भारशिवों की राजधानी पवायाँ नाम से ग्वालियर जिले में डबरा के पास हैं। सिंध नदी में पारवती और महुअर का संगम हैं। इस नगर के भग्नावशेष पारवती नदी के दोनों किनारों तक फैले हैं। यह स्थान डबरा रेल्वे स्टेशन से लगभग 28 किमी. की दूरी पर स्थित है।

पीरूखेड़ी - विदिशा जिले का यह स्थान-नाम सिंधिया के फ्राँसीसी सेनानायक पैरोन की ऐतिहासिकता को पुष्ट करते हैं। महादजी सिंधिया की तीन विधवाओं को संरक्षण देते हुए जब लक्ष्मण अनंत लाड़ उर्फ लकवा दादा दतिया रियासत के सेंवढ़ा किले में आ गये थे तब दौलतराव सिंधिया की फौज का नेतृत्व पैरोनकर रहा था।

ककनमठ -मुरैना जिले में पूर्वकी तरफ 30 किमी. की दूरी पर सिहौंनियाँ है ये 8 से 12वीं सदी के मध्य 12 कोस के घेरा वाला नगर रहा है यहाँ के कछवाह शासक सूरजसेन और कीरतराज ने इस रथ मंदिर का निर्माण कराया था। पहले शासक की पटरानी ककनदे और दूसरे की कनावती थी। ककनमठ का संबंध ककनदे अथवा ककनावती रानी से रहा होगा।

रतनगढ़ - दतिया जिले की सेंवढ़ा तहसील में सेंवढ़ा से पश्चिम दक्षिण की ओर सिंध नदी के पास 11 किमी. की दूरी पर यह प्रसिद्ध मंदिर है। इसका निर्माण 10वीं, 11वीं सदी के बीच हुआ होगा। रतनकुँअर के नाम से प्रसिद्ध यह देवीमंदिर इस क्षेत्र की आस्था का अनूठा केन्द्र है। इसी पहाड़ी पर 'कुँअर साव' का चबूतरा है। इस चबूतरे पर साँप के काटे के विष का शमन होता है। इसी पहाड़ी के पास 'भरकुआ' का जंगल है।

गजमोतिन कौ थान - भिण्ड जिले की लहार तहसील में दबोह-अमाहा से ज्ञानपुरा के लिये पक्की सड़क है। ज्ञानपुरा के पास पहूज के किनारे सिरसा के खंडहर आज भी हैं। यह चंदेलकाल में परमालों के सहायक और आल्हा-ऊदल के भइया मलखान की गढ़ी रही है। पृथ्वीराज की चढ़ाई में मलखान मारा गया था। तब उसकी पत्नी गजमोतिन सती होगई थी।

नूराबाद - मुरैना जिले मेंसाँक नदी के किनारे बसे इस स्थान-नाम में मुगलों की बेगम नूरजहाँ की ऐतिहासिक स्मृति सुरक्षित है।

मल्हारराव की छतरी - इंदौर राज्य के संस्थापक मल्हारराव होल्कर थे। उनकी छतरी भिण्ड जिले की लहार तहसील के आलमपुर कस्बे में है।

तानसेन का मकबरा और गूजरी महल - यह स्थान-नाम तानसेन और तोमर राजा मानसिंह और उनकी गूजरी रानी मृगनयनी के इतिहास को अपने में सुरक्षित किये हुये है।

नरवर - शिवपुरी जिले का यह स्थथा-नाम सिंधध नदी के पास है। महाभारत में राजा नल का उल्लेख है, उन्हीं से संबंधित यह स्थान-नाम है।

ललितपुर - ललितारानी के नाम पर बसा हुआ यह नगर जिला मुख्यालय है। यहाँ सदनशाह की मजार प्रसिद्ध है।

रानीमहल -झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई के नाम पर रानी महल नाम है। झाँसी की रानी 1857 ई. की स्वतंत्रता संग्राम की सूत्रधार रहीं हैं। अब रानी महल में पुरातत्व का संग्रहालय है।

जहाँगीर महल - टीकमगढ़ के ओरछा नगर में यह स्थान-

नाम उस समय के राजा ओरछा के और बादशाह जहाँगीर की मित्रता का सूचक है।

दमोह - नल की रानी दमयंती से दमोह जिला मुख्यालय का संबंध जोड़ा जाता है।

लखनादौन - सिवनी जिला मुख्यालय से 57 किमी. उत्तर में बसे इस स्थान -नाम का संबंध लखनकुंवर से जोड़ा जाता है।

रानी कमलापत का महल - भोपाल में स्थित यह स्थान-नाम का संबंध अंतिम गौंड़ रानी कमलापत से है।

ताजुल मस्जिद - एशियाकी यह प्रसिद्ध मस्जिद है। इसका संबंध भोपाल की बेगम ताज बीबी से है।

भोजपुर - रायसेन जिले के इस स्थान-नाम का संबंध आल्हा-ऊदल की भतीजी से जुड़ा हुआ है।

शेरगढ़ - बैतूल जिले की मुलताई तहसील का शेरगढ़ स्थान-नाम औरंगजेब के सेनापति शेरखाँ की एक विजय स्मृति से संबंधित है।

पिंडरई - मंडला जिले के इस स्थान-नाम का संबंध पिंडारियों से है। पिंडारियों से संबंधित 41 स्थान-नाम हैं। ये स्थान-नाम हैं। ये स्थान-नाम जबलपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी और मंडला जिलों में है।

हिरदेनगर - मंडला जिले में हिरदेनगर है। हिरदेनगर का संबंध गौंड़राजा हिरदेशाह से है। बुंदेलखण्ड में 137 स्थान-नाम गौंड़ो से संबंधित हैं।

मधुपरी - मंडला जिले के इस स्थान-नाम से मधुकरशाह महाराज का संबंध हैं।

मदन महल - मदन महल स्थान-नाम का संबंध गौंड रानी दुर्गावती से है।

लोकोक्तियों से भी जुड़ी हुई स्मृतियाँ, स्थान-नामों में है जो लोक-मानस में बिखरी हुई हैं। जैसे एक लोकोक्ति है-

सेंउड़े की डाँग में खैर बमूर।
पीला जी ढूँड़े, भतीजे कौ मूंड़॥

पीरू मरे बरहा की खाँद॥

पहली लोकोक्ति में उस संघर्ष की स्मृति है जिसमें मराठा सरदार पीला जी के भतीजे की मृत्यु दतिया के पास सेंवढ़ा की डाँग में हुई थी। दूसरी लोकोक्ति में फ्रांसीसी सेनानायक पैरोन की मृत्यु बरहा गाँव की खाँद (बेहड़) में हुई थी।

इन स्थान-नामों का आधार इतिहास से जुड़ा हुआ है। अत: कहा जा सकता है कि बुंदेलखण्ड के स्थान-नामों में इतिहास के सूत्र छिपे हुये हैं। इन स्थान-नामों और लोकोक्तियों पर अलग से शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ -

1. भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास - डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन, मयूरी 1956
2. प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास - डॉ. रांगेय राघव, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली 1953
3. जिला गजेटियर - दतिया 1971
4. जिला गजेटियर - ग्वालियर 1968
5. जिला गजेटियर - झाँसी - गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश लखनऊ 1965
6. बुंदेलखण्ड के रासो काव्य - डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव, 1996 आराधना ब्रदर्स, कानपुर
7. गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. भगवत शरण उपाध्याय, हिन्दी समिति, लखनऊ 1969
8. मुगल साम्राज्य का पतन, चतुर्थ खंड, सर जदुनाथ सरकार, अनुवादक डॉ. मथुरालाल शर्मा शिवलाल एण्ड कंपनी, आगरा 1964
9. बुंदेली भाषी क्षेत्र के स्थान - अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. कामिनी आराधना ब्रदर्स, कानपुर 1985

- प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय गोविंद महाविद्यालय, सेंवढ़ा, जिला-दतिया (म.प्र.)

* * *

बुन्देलखण्ड की माटी कला की लोकपरम्परा

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

मिट्टी के अनेक रूप हैं- अनेक आकार हैं। पंच तत्वों में से मिट्टी ही वह तत्व है जिसके कारण यह संसार सगुण साकार रूप धारण कर पाया। मिट्टी से संबंधित अनेक मुहावरे प्राप्त होते हैं।इन मुहावरों का समुचित अध्ययन मिट्टी के अनेक गुणधर्मों का उदगार करने वाला हो सकता है, यद्यपि इस आलेख में इस तरह का प्रयास नही है किन्तु लेखक ने मिट्टी के नाना रूपों की चर्चा अनेक स्तरों पर की है।

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रूंधे मोय -
इक दिन ऐंसा आयेगा मैं रूंधोंगी तोय।
जौ तन माटी में मिल जाने।

इस प्रकार की अनेकों काव्य पंक्तियाँ, दोहा, कहावतें या अनेकों युक्तियाँ समाज में मार्गदर्शन एवं जागृति हेतु कहीं, सुनी, लिखी-पढ़ी जाती हैं जिनका आशय मनुष्य के मूल्यवान जीवन को दर्शाना भी होता है। परम पूज्य विश्व कवि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने रामचरित मानस में लिखा है -

क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा,
पंच रचित यह अधम शरीरा॥

वस्तुतः इन पाँचों तत्वों के आधार पर जीव की संरचना है और इसी में उसका विलय होना तय है। इसी सत्य को स्वीकार कर हमें इन सभी तत्वों को सरोकार करना चाहिए। हमारे जीवन में प्रकृति द्वारा तत्वों का ही महत्व है। जल, वायु, मिट्टी, पहाड़, गगन, पेड़-पौधे सभी हमारे जीवन के अंग है हमने इन्हीं तत्वों को जाना और अपने जीवन को इन्हीं के पास रखा।

लेख का विषय ''माटी कला की लोक परम्परा'' से जोड़ने का है माटी यानी मिट्टी। पृथ्वी का मूल्यवान तत्व मिट्टी में है मिट्टी से ही प्रकृति द्वारा पोषण की समस्त सामग्रियाँ उत्पन्न होती है। बल्कि यह कहा जाये की पशु-पक्षी, वृक्ष, मानवीय जीवन सभी का अस्तित्व मिट्टी से ही है। मिट्टी वृक्ष उत्पत्ति कर वायु प्रदानकरती है। जीविका के पोषण हेतु खाद्यान्न मिट्टी से ही उत्पन्न होते हैं जीव का जन्म और मरण के बीच का सेतु मिट्टी ही है। प्रकृति द्वारा दिये गये खनिज की उत्पादक भी मिट्टी ही होती है। म.प्र. के पन्ना क्षेत्र में पाये जाने वाला हीरा मिट्टी से ही उत्पन्न होता है। अगर हम स्वास्थ्य के माध्यम से सोचे तो भारतीय चिकित्सा पद्धति में जहाँ एक ओर आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की जड़ी-बूटियों का अपना सकारात्मक प्रभाव रहा है व आज भी विश्व स्तर पर उसे मान्यता मिल रही है। वह भी इसी भारत भू पर जन्म लेती है। दूसरी ओर दक्षिण भारत में मिट्टी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ देने की प्राचीन परम्परा है। आप इस चिकित्सीय पद्धति का लोग लाभ ले रहे हैं।

हमारे यहाँ एक लोक परम्परा रही है कि जन्म लिए शिशु को माटी का स्पर्श कराने हेतु उसे नग्न अवस्था में भूमि पर लिटाया जाता है। श्रीमद्भागवत पुराण में मैया जसोदा भगवान कृष्ण को जमीन पर लिटाने की कथा आती है और उसी अवस्था में वह कंस द्वारा भेजे गये राक्षस का वध करते हैं। बालक को जमीन पर लिटाने की यह एक वैज्ञानिक परम्परा शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंग तत्व को मिट्टी के उत्प्रेक्षण तत्वों से स्पर्श कराती है। अक्सर देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहन-सहन के स्तर पर

ध्यान ही नहीं दिया जाता। शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे मिट्टी से अधिक जुड़े रहते हैं उनका खेल उनकी दिनचर्या चाहे वह घर, द्वार की हो, गाँव मोहल्ले की हो या खेत हार के कार्यो के साथ की हो, सभी में वह एकदम वेफिक्र हो कर रहते हैं। अगर देखा जाये तो शहरी बालकों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के बालकों का स्वास्थ्य अधिक बलशाली एवं स्फूर्ति सहित होता है। मेरे कहने का तात्पर्य बिल्कुल ऐसा नही होगा कि लोग अव्यस्थित रूप से दिनचर्या का निर्माण करें। अपने होनहारों को ऐसे परिवेश में रहने दें जो ग्रामीण वातावरण को प्रस्तुत करें। मेरा आशय उन आधुनिक संसाधनों के विकास एवं उनके प्रयोग कराने के उपरांत स्वास्थ्य के गिरते स्तर पर ध्यानाकर्षण कराना है। चायनीज, टोस, चॉकलेट और पेस्टीज खाने वाला बालक क्या गाँव की मिट्टी से उपजी सब्जियाँ गाँव में बने दूध, दही, मक्खन, मठा, महेरी खाने वाले से स्वस्थ एवं बलशाली हो सकता है अगर उत्तर नहीं है तो फिर उन तमाम वस्तुओं की उपयोगिता का प्रश्न ही क्या। ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के विकसित शरीर और शहरी परिवेश के बालकों में फर्क महसूस किया जा सकता है ग्रामीण क्षेत्र का बालक मिट्टी से जुड़ा हुआ होता है। खेलता है कूदता है और खेल खेल में मिट्टी भी खा लेता है। जब वह एक किसान के रूप में शारीरिक रूप से आ जाता है तब खेत खलियान से जुड़ जाता है। खेतों में नंगे पैर चलने वाला किसान स्वस्थ एवं बलशाली होता है अर्थात् मिट्टी की हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

कला की दृष्टि से चर्चा करें तो मिट्टी से निर्मित जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्राचीन काल से ही हमारे उपयोग में रही है। इतिहाससाक्षी है कि मौहन जोदड़ो की खुदाई में सिन्धु घाटी की सभ्यता के आधार पर मिट्टी से बनी वस्तुएँ, उस काल में बनाई गई मूर्तिकला के अवशेष एवं भवन निर्माण में प्रयुक्त की गई मिट्टी की ईंटें, शिलायें व दैनिक उपयोग के वर्तनों के टुकड़े मिट्टी कला के अति प्राचीनतम होने के प्रमाण है। कनिष्क के राज्यकाल में मृण मूर्तिकला का विकास हुआ उस काल की मुणयुद्रायें अर्थव्यवस्था में सहायक होती थीं। कई आपातकाल, अकाल एवं महामारी के दंश ने भारत की संस्कृतिम को ढेरों में छिपा लिया है जब कभी भी पुरातत्व का कार्य किसी विशेष स्थल पर किया जाता है तो उस स्थान पर प्राचीन काल के पुरावशेषों में मिट्टी से निर्मित वस्तुऐं अवश्य ही मिलती हैं। वस्तुत: हम इतिहास और हमारी प्राचीन परम्परायें यह सिद्ध करती हैं कि धातु साधनों से पूर्व मिट्टी ही हमारी महत्ति उपयोगी साधन थी जिसका प्रयोग करते हुए कला संस्कृति जीवन्त रही वही स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से मिट्टी के साथ खाद्यान्न आदि में बढ़ती ऊर्जा शक्ति से हम सौष्टभ और बलशाली रहे होंगे। मिट्टी के बर्तन में बनाई गई दाल, मिट्टी के तबे पर पकी रोटी का जहाँ स्वाद ही निराला होता है वहीं स्वास्थ्य के लिए वह अधिक लाभकारी होती हैं। मटके का पानी ग्रीष्म ऋतु में आधुनिक युग के फ्रिज से कई मात्रा शीतलता प्रदान करता है। घड़े में रखा पानी कभी भी शारीरिक हानि नहीं पहुँचाता जबकि फ्रिज में बनता वर्फ गले पेट के लिये हानिकारक भी हो सकता है। भारत के घड़े (मटके) की अपनी सभ्यता रही हैं। उ.प्र. के कौछाभार के मटके कई प्रदेशों में जाने जाते हैं। दतिया जिले की तहसील भाण्डेर का नाम भांडे के नाम पर पड़ जाने की किवदंती प्रचलित है। अनेकों सभ्यताओं/परम्पराओं से मिट्टी को नाम मिले। लोक संस्कृति से जुड़ी व्यक्ति उसके विचारों उसकी सोच, परम्परा को कहा जाता है कि वह मिट्टी से जुड़ा व्यक्ति है यानी हमारी नींव मिट्टी की ही है। भले ही आधुनिकता की दौड़ में हम भवनों का निर्माण सुविधानुसार कर रहे हैं।

बुन्देलखण्डकला संस्कृति सभ्यता का धनाड्य क्षेत्र यहाँ कि प्रकृति मं सभ्यता है सुर है नाद है कहीं व्यक्ति में स्वभाव में कलात्मक रचनात्मक चित्रण देखने को मिलता है। यही ग्रामीण परिवेश की सुख-सुविधाओं से मिट्टी कला की अति महत्वपूर्ण भूमिका है इसी विषय पर कुछ संक्षिप्त सी

चर्चा की जा रही है। जो सभ्यता संस्कृति में प्रति लोगों के कम होते रूझान के कारण लिखा जाना उचित प्रतीत हो रहा है।

भवन निर्माण – आदिकाल के उपरांत मनुष्य मं आई सभ्यता से वह गुफाओं और जंगलों से बाहर आकर रहने हेतु जगह एवं साधन की खोज करने लगा और मकान निर्माण का स्वरूप उसके मन में रहा। संभवत: माटी के लौधों से कच्चा मकान बनाने की शुरूआत उसी समय की रही होगी। मिट्टी से बनने वाले ये मकान जहाँ गर्मी सर्दी आदि मौसम से सुरक्षित रखते हैं वही इन्हें संवारने संजाने में लगी महिलाओं ने लोक कलाओं को भी जन्म दिया आप म.प्र. के कई आदिवासी क्षेत्रों में इस प्रकार के सौंदर्य चित्रण लोक (वास्तुकला) दिखता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहारिया आदिवासियों के कच्चे मकान कलात्मक और रचनात्मक दिखते हैं। आज हम आधुनिक बनने की होड़ में वास्तविक सुख से दूर होते जा रहे हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कच्चे मकानों एवं व्यवस्थित पक्के मकानों में खपरों की छाया ही होती थी। जिसमें प्रयुक्त नरिया, खपरैल, मगरौ आदि की व्यवस्था मिट्टी से ही होती थी। यहाँ कहना उचित होगा कि खपरैल आज शहरों से गांवों से विदा ले चुकी है। इसके पलायन से हमारी लोक परम्परा विलुप्त हो रही है। अनेकों शब्द सिर्फ पुस्तकों में पढ़े जायेंगे या बुजुर्गों के बोलचाल में या आने वाले दिनों में शब्दकोष में ही रह जायेंगे। सभ्यता के आधार पर बनाये गये मकान, हवेली, गढ़ी, राऊरें की वास्तुकला समस्त क्षेत्र में पहचान दिलाने वाली होती थी। हयाँ पर माटी के द्वारा किया गया ......या उसी से भी गई नक्काशी देखने ही बनती थी आज भवन निर्माण सीमेन्ट, कंकरीट, टाईल्स, आदि से हो रहे हैं जो शीतल की अपेक्षा अनुकूलकलम वातावरण नहीं दे पाते।

बर्तन निर्माण की कला – धातुओं से बर्तन निर्माण की दौर आया। ताँबा, पीतल, कांस्य यहाँ तक की चाँदी होने के बर्तनों का भी उल्लेख मिलता है परन्तु स्टील से बने सस्ते और ना नष्ट होने वाले बर्तन चमक दमक के इस युग में सर्वोपरि हो गये हैं लोगों को उसके वारक का बोध नहीं उसकी सुन्दरता का बोध रहता है। इन सबसे पूर्व मिट्टी के बर्तन ही हमारे दैनिक उपयोग में लिये जाते थे। इन्हे कच्चे .... में लेते हुये प्रतिदिवस पोती से स्वच्छ किया जाता था। मिट्टी के तवे पर बनी रोटी, हंडिया में बनी दाल, सब्जी का स्वद सिर्फ वे जिसने चखा हो वही बता पायेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से मिट्टी के बर्तन, खाद्यान्न पदार्थों में प्राप्त दोष को दूर करने की क्षमता रखते हैं। अन्य बर्तनों में अचार हेतु चपिया भोज में प्रयुक्त कुल्हड़ ,बघार देने हेतु मिट्टी का दीया (दीपक) का अपना स्वाद होता था जल संग्रहण के लिए ठहार, नाद, मटका, घैला, घैलिया आदि बनाये जाते थे। घर पर सामग्री रखने हेतु मिट्टी के बर्तनों का उपयोग होता था, घी को रखने के लिए घिनोरी जिसमें रखा घी सुगन्धित स्वादिष्ट और ऊर्जा देने वाला बन जाता था। स्नान हेतु नाद पानी को कुनकुना रखती थी, गमलें पेड़ लगाने हेतु बनाये जाते थे।

कच्ची मिट्टी से देवी-देवताओं के विग्रह – हिन्दू धार्मिक परम्परा में वैसे तो प्रतिदिवस कुछ न कुछ तीज त्यौहार है पर ज्येष्ठ माह से कार्तिक तक का प्रत्येक दिवस उत्सवों से भरा रहता है इन दिनों में होने वाले अनेकों विधाओं में पूजा-अर्चना हेतु मूर्ति, विग्रह प्रतीकों की अस्थाई स्थापना की जाती है वह कच्ची मिट्टी द्वारा ही निर्मित की जाती है। इन्हीं में से हलछठ में गैया-बैल, तीजा पर गौर (पार्वती), महालक्ष्मी पर हाथी, गणेश चतुर्थी पर गणेश प्रतिमा, चैत्र नव दुर्गा की तीज पर गणगौर औकद्रवासस पर गैया बछड़ा आदि कच्ची मिट्टी से ही बनाकर उन्हें पकवानों से जाया संवारा जाता जाता है। चूंकि यह देवी-देवताओं के प्रतीक होते हैं अत: इन्हें विसर्जित तालाबों नदियाँ आदि में कर दिया जाता है। इन्हें अग्नि में पकाने की परम्परा इसीलिये नही है ज्ञातव्य रहे कि कुम्हार समाज ही इन विग्रहों का निर्माण करते करते आ रहे हैं। जिन्हें सम्मान स्वरूप 'पावन' यानी घर में बनेपकवान आटा, दाल, चांवल व कुछ उपहार स्वरूप राशि प्रसाद स्वरूप

दी जाती थी इन्हें परिवार का एक सदस्य ही माना जाता था।

मिट्टी के खिलौने – बच्चों को लुभाने वाले मनमोहक खिलौने उन्हें जहाँ व्यस्त रखने का कार्य करते थे वहीं उनकी जिज्ञासा प्रवृत्ति के स्तर को बढ़ावा प्रदान करते थे। आज प्लास्टिक ने खिलौने के संसार में अपनी पैठ बना ली है। विशेष कर हमारा खिलौने पर हो रहा व्यय चीन या जापान के बैंको की आमद बन रहा है। हमारा गरीब कलाकार मजदूरी करने हेतु मजबूर होता जा रहा है। मूलत: उसे स्थानीय कलाओं को छोड़ना पड़ रहा है। खिलौने वर्षोसे हमारी परम्परा के अंग है दतिया में बुलकिया जाति के लोग इस व्यवसाय कला को करते आ रहे हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी उन्होनें इसे सहेजकर रखा है इस परम्परा में लल्ला बुलकिया प्रमुख कला साधक है। जिनमें बनाये खिलौने सुहावनें व आकर्षित होते हैं।

दीपावली के खिलौने – दीपावली खिलौने का मेला है नवदुर्गा महोत्सव से ही प्रारंभ हो जाता है इन खिलौनों का निर्माण कार्य, ग्वालिन, लक्ष्मी, गणेश, हाथी सवार, घोड़ा सवार, बन्दर, जोकर, मोरा सेठ यह प्रमुख रूप से बनाये जाते हैं। पूजा हेतु दीपक, बजरौटी, डबुलिया, डहरिया, दीया आदि बनाये जाते हैं।

गोपालाष्टमी के कृष्ण – गोपाल अष्टमी के दिन भगवान कृष्ण गौ चरन को निकलते हैं इस अवसर पर गायों को चराते कृष्ण, माखन चुराते कृष्ण, एकल कृष्ण, बालकृष्ण, राधाकृष्ण व गाय आदि स्वरूपों के खिलौने विग्रह बनाये जाते हैं।

सुअटा की गौर – क्वार व कार्तिक माह में खेले जाने वाला सुअटा लड़कियों के लिये अति महत्वपूर्ण होता था इस अवसर पर बनाई गईं गौर को सजाया संवारा जाता था।

गणेश प्रतिमा एवं नवदुर्गा – गणेश चतुर्थी पर गणेश जी की पूजा अर्चना के लिये मर्तिका के गणेश विग्रह बनाये जाते है, जिन्हें हर घर में विराजमान किया जाता है। आजकल महाराष्ट्र की तर्ज पर गली मोहल्ला पर गणेश प्रतिमाएँ सजायी जाने लगी हैं। इसी प्रकार नव दुर्गा महोत्सव पर बंगाल की परम्परा ने स्पर्श कर अपनी आमद दर्ज करा ली है। हालांकि इन प्रतिमाओं के विसर्जन उत्सव से नदी-तालाबोंआदि को खतरा बना रहता है। कई बार तैरते हुए लोग इसका शिकार हो जाते हैं।

सांझी के खिलौने – दतिया की सांझी की परम्परा रही है जो अश्विन माह में घरों, मंदिरों एवं सार्वजनिक स्थलों पर हुआ करती थी। यह परम्परा हमें रंगसंयोज, रंग निर्माण का कलात्मक अभिरूचि बढ़ाने में सहायक थी,यह सांझी परम्परा दतिया के साथ वृंदावन में भी देखी जाती थी पर आज विलुप्त हो रही है। पर निशक्त संत बाबा राम लखन गुगौरिया ने इस ओर प्रयास किया है और इस वर्ष सांझी निर्माण करवा कर जागृति दे रहे हैं। सांझी में बनने वाले खिलौने, स्नान करती महिलायें दतिया, बैण्ड समूह, बन्दर, भालू, शेर आदि जानवरों के खिलौने दतिया में महाराज गोविन्द सिंहे का दशहरा का चित्रण यहाँ की सबसे खूबसूरत विधा थी। किसी खिलौने के माध्यम से सांझी में दिखाया जाता था। मकर संक्रांति के पर्व पर गड़िया धुल्ला की पूजा होती है जो मिट्टी से बनाये जाते हैं उच्च वर्ग पीतल के भी खरीदा करते हैं। दतिया संग्रहालय में इतिहासकार पं. महेश कुमार मिश्र 'मधुकर' के प्रयासों से दशहरे का यह चित्रण मूर्ति कला द्वारा प्रदर्शन हेतु रखा जाता है। दुर्भाग्य यह कि संग्रहालय में 10-15 रूपये के लाले में इसकी उपेक्षित सुरक्षा की गई है।

मोहर्रमकी बुर्राक – मुस्लिम समाज द्वारा निकाले जाने वाले मोहर्रम के ताजियों के बुर्राक निकाली निकाली जाती है जिसका सुन्दर चेहरा बुलकिया समाज मिट्टी से बनाते आ रहे हैं।

मिट्टी के वाद्य यंत्र – यह आश्चर्य चकित करने वाला होगा

कि वाद्ययंत्र और मिट्टी के। पर यह सत्य है दतिया से 25 किमी. दूर ग्राम कामद निवासी धनाराम प्रजापति ने कुछ ऐसा ही कर दिखाया। उन्हें नगढ़िया, ढोलक, मृदंग, चंग, का निर्माण मिट्टी से किया ही है साथ ही शंख, रमतूरा, बनाकर एवं मुँह से बजाकर चकित कर दिया है। लेखन ने स्वयं उन्हें ऐसे वाद्ययंत्र वनाने की प्रेरणा दी थी।

मिट्टी की फ्रीज - धनाराम प्रजापति ने मिट्टी की फ्रीज का निर्माण आज से 20 वर्ष पूर्व किया था, जिसमें 3 से 4 घण्टे तक पानी ठण्डा रहता है। इस फ्रीज ऊर्जा की बचत पैसा की वचत आदि करने का कार्य किया गया पर एक प्रशासनिक अधिकारी ने इस कलाकार से फ्रीज ही की प्रक्रिया घीनकर सम्मान की लालसा में इस साधक का मनोबल ही तोड़ दिया।

मिट्टी की मुद्रायें - दतिया क्षेत्र के केवलारी एवं बदौनी इतिहासिक ग्रामों में मिट्टी की मुद्रायें प्राप्त हुई थी जो दतिया संग्रहालय में रखी हुई हैं।

मिट्टी कला हमारी प्राचीन धरोहर है आज आधुनिक साधनों एवं समय की बचत के बढ़ते ग्राफ ने इस विधा को नुकसान पहुंचाया है। हमारी यह प्राचीन विधा दम तोड़ रही है। अगर इसके संरक्षण के लिए प्रयास नही किये गये तो हम मिट्टी करते रहेंगे - प्लास्टिक के अस्तित्व में खो जायेगें हम अपनी नींव को उसी तरह खोखला कर देंगे जैसे भूमि के लिये प्लास्टिक हानिकारक है।

म.प्र. में ऐसी ही कलाओं को जीवित रखने के लिए माटी कला बोर्ड बना हुआ है तथा बोर्ड भोपाल के कमरों में ही बंद रहेगा क्या कलाओं की आवाज उन तक नहीं पहुंचती। हमें बोर्ड निर्माण या उसके पदों पर बैठने की नही बल्कि उसके उद्देश्यों को चरितार्थ करने की आवश्यकता है।

- संगीत गुरूकुल

पकौरिया महोदव, दतिया म.प्र. मो. 9893437616

* * *

बुन्देलखण्ड के लोक खेल

- साकेत सुमन चतुर्वेदी

लोक संस्कृति के अनेक आयाम हैं। मनोविनोद परक जीवन साधनों में खेलकूद का अपना महत्व है। बुन्देली लोक-खेलों का अपना स्वरूप और अपना विधान है। लोक के खेल जैसे सीधे-सीधे अंचल विशेष की विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल ही अपन निर्धारण करते हैं- प्रस्तुत लेखक बुन्देली लोक क्रीड़ा का विस्तार से विवेचन करता है। लेखक बुन्देली लोक संस्कृति के जाने माने रचनाकार है।

हमाअे पुरवन में अपने इतै को प्रकृति, हवा, माटी, पानी और जलवायु खो ध्यान में रख कें अपने तप, साधना, तजुर्बन और खोजन में हँसी-खुशी में नौनी जिन्दगानी गुजारवे और शरीर से चन्ट रैवे के लाने जे खेल बनाये। उन लोक खेलन के मामले में बुन्देली कानात पूरी की पूरी खरी उतरत है कि हर्र लगे न फटकरी ओ रंग चौखो हो जात। असल में इन खेलन में खेलवे की चीजें बजार में खरीदवे की जरूरत नई परत वे सब मुफ्त में मिल जात हेंगी। संग-संग खेलवे में आपसी में आपसी प्रेम, मेर-जोर और एकता बढ़त है। अपने इते कछू कोस पे पानी और कछू कोस पे बानी बदल जात है सो जौ हो सकत है कें एक बन्न के खेल को नॉव एक जागा कछू और दूसरी जागा कछू होय। जे खेल गाँवन-गाँवन आज लौं खेले जात हेंगे। इन खेलन में (1) तूरमार (2) डगांसिलोई (3) रामबोल (4)डूबा (5)पिटमार (6)गप्पीमार (7)कोडा-है-दिमात गाई (8) अण्डी चिया (9) कबड्डी (10)घोड़ा कबड्डी (11)गूंगा (12)छुवाछुवउअल (13)गिल्ली डंडा (14)गेड़ी (15) आती पाती (16)गोट-पड़ा (17)अष्टाचंगा (18)सोरा गोटिया (19)खो-खो (20)चौपर (21)नागन-टापू (22)चंगला (23)रस्साकसी और (24)इत्तन इत्त पानी हैं।

तीज त्यौहारन और ब्याव की वेरा खेले जावे वारे नारे-सुआटा, टेसू, झिंरिया (ढ़िरिया), बाबा, मोनिया, अत्ती, चपेटा, कछू कौतूकन खों भी हम खेल मान सकत हैं। इन खेलन में कछू खास खेलन को जिकर हम कर रअे हैं -

(1) तूरमार- जो खेल दुनिया में सबसे मशहूर खेल क्रिकेट से ब्लात मिलत-जुलत है। असाढ़ के मइना में जब पानी बरसते से माटी गीली हो जात है तो पानी रूकवे पे दोऊ हाथन से गीली माटी समेट के दो फुटा ऊँचों थोप थोप के एक भदूना (माटी कौ ढेर) बना लेत है जिऐं तूर (विकेट) कत हैं। कभऊँ कभऊँ खेलवे पारे कोनऊ भौंत पें चौकोर या दो फुटा व्यास को गोल तूर खरिया या कोयला से बना लेत हैं। तूर से तीन या चार फुटा की दूरी पें एक आड़ी लैन (क्रीज) लकरिया से लंबी खेंच तई जात है। लत्ता खो गोल कसके लपेट के ऊखों सुतरी और सूजा से बुन लेत हैं एक खिलाड़ी तूर और आड़ी लैन के बीच में गेंद और तीन चार फुटा को डण्डा लैके ठाड़ौ हो जात है और बांकी के सबरे खिलाड़ी मैदान में (फील्डिंग करवे) कछूँ-कछूँ दूर ठाड़े हो जात हैं।

तूर के ऐंगर ठाड़ो खिलाड़ी (वही बॉलर और वही बैट्समेन) जी हाथ में गेंद पकरे होत है उअें बाडर की तरफ नैक ऊँचों उठा के गेंद खो धरती ताईं टपकत है और गेंद खाले जागां न छू पावें के ऊके पैला दूसरे हाथ में पकरें डण्डा खों तुरतई निशानों बांद के गेंद पे मारत है। गेंद में डण्डा नई घलत है और चूक जात है तौ चान्स के बाद डण्डा आउट मानो जात है और वौ मैदान में फील्डिंग करवे चलो जात है और मैदान से दूसरो खिलाड़ी खेलवे आ जात है। अगर गेंद में डण्डा लग जात है और जमीन खो बिना छुअें गेंद ऊंची उठके (फुलटॉस) मैदान

में जात है और फील्डिंग करवे वारे खिलाड़ी द्वारा गुपकलई जात (कैच कर ली जाती है) तो खेलवे वारौ आउट मानो जात हैं। अगर गेंद लुढ़कत-लुढ़कत मैदान में जात है तौ कोनऊ खिलाड़ी द्वारा गेंद फेंक के पकर लई जात है। छेंकवे वारी जागां से वौ खिलाड़ी निशानों सादके गेंद खों तूर में मारत हैगों, तूर में गेंद लगवे पे खेलवे वारौ आउट मानो जात है अगर गेंद तूर में नई लगत है तो गेंद छिकवे की जागां से तूर तक की दूरी खेलवे वारे के (वैट्समैन) के डंडा से नापी जात है इन डण्डन को नाप संख्या कों क्रिकेट की भाषा में हम रन कैं सकत हैं। इन डंडन की नाप संख्या से एक पिद्दू उसे एक बार फिर से खेलवे वारे के आउट होवे पे पिद्दू हुइयें खेल के पैलां तै हो जात है। पिद्दू एक या ज्यादा हो सकत हैं। ई खेल में आउट होवे को निरनय करवे वारौ (एम्पायर) नईं होत। खिलाड़ी होवे पे, खिलाड़ी अपनी गेंद और डण्डा दूसरे खिलाड़ी, खेल में जब सबरे आउट हो जात हेंगे तौ ई खेल ने क्रिकेट के लाने जागां तैयार करी है।

(2) डगांसिलोई- ई खेल में कोनऊ पेड़ के खालें, खिलाड़ी तीन-चार फुटा व्यास को एक गोला खेंच लेत हैं और एक खिलाड़ी ऊ में नैचें से डंडा हाथ में उठा कें अपनो एक गोड़ों उठाकें ऊके नैचे से डंडा दूर फील्ड में फेंकत है। चिढ़वे बारौ खिलाड़ी ऊ डंडा खो उठावे जब जात है तब लौ दूसरे खिलाड़ी रूख की डंगारन पें चढ़कें बैठ जात हैं। पिठवे वारौ डंडा ल्याकें गोला में धरके रख कें बैठ जात हैं। पिठव वारौ डंडा ल्याकें गोला में धरके रूख पे दूसरन खो छूवे चढ़त है और दूसरे ऊसे बचके डारन-डारन लट में खाले कूदकें डंडा चूमत जात हैं। डण्डा चूमने के पैलां पिदवे वारे से जौन खिलाड़ी छुव जात है बाजू पिदवे की ऊपें आ जात है। इत तरहा से खेल चलत जात है।

(3) रामबोल- ई खेल में 15-20 फुट व्यास कौ एक गोला बनाकें ऊके कछू दूर पै आठ-दस छै इंची गड़ा खोद लओ जात हेंगे। गोला के बीच में एक गड़ा खोद लओ जात है जीमें गेंद के संगे एक खिलाड़ी गड़ा में एक चार फुट की लठिया (डण्डा) डार के खड़ो हो जात है दूसरे खिलाड़ी अपने अपने गड़न में अपनी 2 लठिया डारकें खड़ो हो जात है बीच में ठाड़े खिलाड़ी बोलत है-रामबोल छमाछम बोल डमाडम बोल और दूसरे खिलाड़ी अपनों गड़ा छोड़के गोला में घूमते हुए आगे के गड़ा में अपनी लठिया धरत जात है। ई बीच में बीच में ठाड़ो खिलाड़ी घूमने वाले खिलाड़ियन के कोनऊ के गड़ा में ऊकी लठिया धरवे के पैले अपनी लठिया धर लेत है तौ बाजू पिदवे को ऊ खिलाड़ी पे आ जात है। कुछ समय के लाने खिलाड़ी हमाये गड़ा की ओलठोल कहकें खेल अपनी ओर से रोक सकता है।

4. डूबा - जौ खेल पानी के भीतर तैरकें, डूबके छूवे खेलो जात है पिदवे वारौ दूसरे खिलाड़ियन खों छूवे के कोशिश करत है और दूसरे ऊसें बचत फिरत है। ई छुआछूअउल में जौन डूब जात है बाजू ऊपै आ जात है।

5. गूंगा - ई खेल में और कबड्डी में इतऔ फरक है कै ईमें कबड्डी-कबड्डी बोलने नई परत है। कबड्डी दैवे वारे पाला खों क्रास करवे के पैला हाथ से खों-खों हप्प करके मौन जैसों सादके कबड्डी दैवे जात है और खिलाड़ियन खों छूके अपने पाला में लौट आउत हैगो तौ जितने खों छू लेत वे आउट माने जात है हैं और ऊसें उतने प्वाइंट मिलत है। अगर दांव लगाकें खिलाड़ी गूंगा वारे खों पकरलेत तौ ऊसों पाला की लैन नई छुअन देत और चढ़के, पटकें घसीटते गौ से चीं बोलवे खों वेबस कर देत है। चीं बोलते पें खिलाड़ी आउट मानो जात है। ई खेल में फील्ड की नाप और खिलाड़ियन की संख्या कछु हो सकत है। नदिया के किनारे लेंन खेंचके या स्वापी, लुंगी बिछाकें लैन को काम लें सकत है। इसमें कुश्ती जैसी जोरअजमाश होने कौ मजा आउत है।

6. कबड्डी - ई में सात खिलाड़ी के मैदान में एक तरफें और सात खिलाड़ी पाला (मध्य लाइन) के दूसरे तरफें ठाड़े हो

जात है। रेफरी खेल शुरू करात है और एक टीम कौ खिलाड़ी दूसरी टीम के पाले में कबड्डी-कबड्डी बोलत भओ पाला पार करके जात है। कबड्डी दैवे वारों सांस टूटने के पैला जितने खिलाड़ियन खों छूके वापिस पाला पे आ जात उतने खिलाड़ी आऊट माने जात है। उतने प्वाइंट कबड्डी दैवे वारी टीम खों मिल जात है। अगर कबड्डी दैवे वारे खों दाव लगाकें दूसरे टीम वारे पकर लेत और पाला छूवे के पैला ऊकी सांस टूट जात तौ वो आऊट मानो जात है। बारी-बारी से एक टीम दूसरी के फील्ड में कबड्डी खेलती है प्वाइंट में हार जीत मानी जात है।

7. पिटमार - ई खेल में लत्तन की सुतली से बुनी गेंद सों एक खिलाड़ी दूसरे में मारत है दूसरौ खिलाड़ी गेंद लगने पर या बचते पै गेंद उसमें किसी भी खिलाड़ी में कसकें मारत है। ई तरहा खिलाड़ी आपस में गेंद कसकें घलत है। खिलाड़ियन की संख्या कितेकऊ हो सकत है। खिलाड़ी एक दूसरे की पीठ में गेंद मारकें मजा लेत हैगे।

8. गप्पीमार - ई खेल मे खपरा की या फिर मटका/गगरी की गोल गोल सात छोटी-बड़ी गपई बनाई जात है। सबसें बड़ी खपरिया खों सबसें नैचे ऊसें छोटी ऊके ऊपरें यैंसऊ तर ऊपर सातऊ खपरियाँ धरी जात हेंगी। और खपरियाँ के चारु तरफें एक गोला खेंच देत है। पाँच-छै गज दूर से दूसरी टीम कों एक खिलाड़ी इन गप्पियन में लत्ता की गेंद घालत है। नई घलवे तीन चान्स के बाद आउट मानो जात है तीनदार गेंद मारवे में अगर गप्पी गिर जात है तो पिटवे बारी टीम कों खिलाड़ी आऊट मानो जात है। नई लगवे पें टीम को कौनऊ खिलाड़ी सातऊ गप्पी जई की तई तरऊपर लगा देत है तों लगावे बारी टीम खों एक धाई और खेलवे कौ मौका मिल जात है।

9. इत्तन-इत्तन पानी - ई में पानी की कल्पना मौड़ी करत है एक मौड़ी आँग के कितऊँ (जैसे कमर पे) हाथ धरके कत है- 'इत्तन-इत्तन पानी' तौ दूसरी संगाती कतीं हैं 'घोर-घोर रानी' आँग के पावन से शुरू खेल मोड़ी मुड़ी के ऊपर हाथ लें जाके खत्म करत है। तबै हाथ मुड़ी के ऊपर हाथ लें जाके खैला करत है। तबै हाथ मुड़ी के ऊपर उठाकें पानी की जैसे गहराई बढ़ाके कत है- सिरके डुब्बन पानी तो और मौड़ी कती 'घोर-घोर रानी'।

10. चपेंटा - नदी नारे के छोटे-छोटे सफेद पत्थर का घिसकें चपेटा बना लये जात है। ई में मीला आवे वारी मौड़ी चपेटन खों जमीन पें पारत है। फिर ऊमें से आकाश की तरफें एक चपेटा उछालत है और ऊके हुलवे के पैलां जागां में डरे चपेटन में से कोनऊ चपेटा ओठ हाथ में (हुलवे वारे हाथ से)

11. सोरा गोटी - जमीन के पत्थरन पे सोरा गोटी खपरिया/खरियां या कोयला से बना लेत हैं ईमें दो खिलइयाँ होते हैं, दोअन को सोरा-सोरा गोटें मिलत हैं। एक गोट बिना दूसरे की गांट मारे एक घर से ज्यादा नई चल सकत है। गोट मारवे के लाने लाईन पे गोट के आगे, पाछू अगल बगल में एक घर खाली होवो जरूरी है। ई खेल में जौन खिलाड़ी गोटे चाल में पैलें मार लेत ऊकी जीत मानी जात है।

12. रस्साकसी - ई खेल में सन को या नारियल के जटन कों बनो एक रस्सा दो टीमें आदौ-आदौ पकरलेत है एक टीम में सात-आठ खिलाड़ी होत हैं। जो ताकत को खेल है। खेल शुरू होत दोऊ टीमें मैदान में खिची लाईन के ई तरफें ठाड़ी हो जात है और रस्सा पकरकें अपनी-अपनी ताई ताकत लगाके तानत है। बीच की लैन में जौन टीम दूसरी टीम खों खचोंर के अपनी ताई कर लेत बई टीम जीती मानी जात है।

13. गोट पड़ा - दो जनन के बीच को जौ खेल है पथरा पै या धरती में लाइनें खेंच के बड़ो ककरा (कंकड) कों पड़ा बनाकें सात छोटे ककरा की गोटें बिछा देत है। एक जनों पड़ा और दूसरो गोटे ले लेत है पड़ा गोट खां नाके के खाली घर में पौचकें गोट मार देत है और दूसरो खिलईया नाकवें के लाने गोटें ऐसी चलत के खाली घर पड़ा खों नई मिलत और वो फंस

जात। पड़ा जब नई फसत तो गोटे मरबें से गोटन वारौ खेल मं हार जात है। पड़ा फसवे पें गोटन वारौ जीत जात है।

14. कोड़ा है दिमानसाई – सन को या कोनऊ उन्ना कों एक हण्टर (कोड़ा) बनाकें एक गोल दोंरें में खिलइयन खों बिठार दओ जात है बैठवे वारन को मो घेरे के भीतर ताईं करो जात हैगो। एक खिलाड़ी कोड़ा हाथ में लैके कोड़ा है दिमानसाई पाछें देखौ मार खाई बोलत वोल खिलाड़ियन को चक्कर लगात लगात मसकऊ कोनऊ के पिछाऊ कोड़ा रख देत और और बैठे खिलइया खों पतौ नई परत तौ कोड़ा वारौ एक चक्कर लगाकें ऊके पाछे कोड़ा उठाकें ऊखों कोड़ा से मारबे सों लग जात वो भगकें एवं चक्कर लगाकें अपनी जागां पे बैठ जात है कभऊ कभऊ जीके पाछे कोड़ावारो कोड़ा धरत है और ऊखों पतौ चल जात तों कोड़ा वारे के आगे जातई वो पाछे से कोड़ा उठाके ऊखों मारवे लग जात ई तरां से खेल में खूब कोड़ाबाजी से मजा आऊत है।

वास्तव में बुन्देलखण्ड के लोक खेलन में आज के जगजाहिर मशहूर खेलन के लानें जैसे नींव के पथरन जैसो करो है। नाव बढ़ाओ है। इन लोक खेलन खों खेलकें और संरक्षण दैके जीवित रखवो हम सबको फरज है।

36/15 प्रेमगंज, सीपरी (झाँसी)

* * *

बुन्देली संस्कृति में गाली गलौच

- डॉ. आर.बी. पटेल "अंजान"

"यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता" अर्थात् जहां पर नारियों की पूजा होती है वहां देवतागण निवास करते हैं। इस उक्ति को हमारे भारतीय प्राचीन ग्रंथ पोषित करते आ रहे हैं। बुन्देली संस्कृति का प्रमुख आधार या संरक्षक नारियों को ही माना जाता है। नारियाँ ही बुन्देली संस्कृति की संवाहक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करती चली आ रही है। बुन्देली ग्रामीण परंपरायें भारतीय संस्कृति की जड़ों को सिंचित कर रही है तो कहीं स्वयं के लिये अभिशाप भी साबित हो रही है।

गारी बुन्देली साहित्य की एक प्रमुख विधा है। जो बुन्देली तीज-त्यौहारों, पर्वों एवं शादी विवाह आदि अवसरों पर नारियों द्वारा परंपरा अनुसार प्रस्तुत कर संस्कृति के संवाहक सिद्ध हुई हैं। तो कहीं स्त्रियों को अपमानित करने के लिए गारी शब्द का अपभ्रंश गाली गलौच (अपमानसूचक शब्द) का भी प्रचलन बुन्देली संस्कृति में ग्रामीण परंपराओं के साथ-साथ चला आ रहा है। गाली-गलौच के अनेक रूप बुन्देली समाज में देखने को आज भी बखूबी मिलते हैं। जैसे परिस्थिति विषयक, जातिविषयक, चरित्र विषयक एवं जानवर विषयक आदि।

परिस्थिति विषयक : परिस्थितियां नारियों को वह करने व कहने के लिये मजबूर कर देती हैं जिसको वह नहीं चाहती यथा-

अनुआं का भओ जात लगायें, जौ लो राम बचाऐं।
राँड़े पकरीं जाए पेट से, ऐवातिन का बाऐं।
ऐंगर ठाँड़ो देख लेय कोऊ, आँखें चार मिलाऐं।
ईसुर चन्द होत न मैले, काऊ के धूर उड़ाऐं॥

अर्थात् एक महिला ही रांडे कह कर दूसरी महिला को अपमानित करती है। एक अन्य गीत में एक बुन्देली स्त्री के पति जब दूसरे गाँव में रात को रूक जाते हैं तो वह उन्हें ही कह उठती है-

बारेबलम को बेर-बेर हटकी-हटकी, घोपीपुरा जिन जाव।
घोपीपुरा की चंचल छुकरियाँ छुकरियाँ, छैला लये बिलमाय॥

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से संयुक्त परिवार की परंपरा रही है। इस परंपरा में सास-बहू की नोंक-झोंक गाली-गलौच गहमा-गहमी आदि के अनेक प्रसंग बुन्देली फागकारों ने कानो सुने और आखों देखे अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किये हैं, बानगी के तौर पर देखिए-

सुकत-रकत सासरे जातन, के सास-सास की बातन।
है कुड मुतू कुजातन कुतिया, चीथें जात कुजातन।
ब्याड़गई के मारें विपदा, परें रसोई खातन।
खोदी वहू खखोवे चूल्हौं, ईसुर सुनो बुझातन।

बुन्देली संस्कृति में बालक के जन्म विवाह या उत्सवों में नाचनें की प्रथाएँ है किन्तु ईर्ष्यालु स्त्री-पुरूष नाचने वाली स्त्री को तरह-तरह की गालियों से विभूषित करते हैं यथा-

बाबूलाल-बाबूलाल तेल की मिठाई दतिया की गेल में कुतिया नचाई। इतना ही नहीं बल्कि- बेड़नी सी नचत पतुरियन सी फरकत, नागिन सी लहरात आदि बुन्देली कहावतों के माध्यम से स्त्रियों को अपमानित किया जाता है।

विदेशी संस्कृति को एक बुन्देली रचनाकार ने चुड़ेल की पदवी दी है-

वेलेंटाइनडे के माने, ढँग से जेना जानें।
ले ले के उपहार सोचते, जाबें कहाँ मनाने।
किसके कैसे भये देश में, दीवानी दीवानें।
लगी चुड़ेल विदेशी सूंघन, देशी चाल भुलाने।

सबके सांमू लगे मनोहर खुलने चोंच लड़ाने।

इसी तरह यदि किसी नारी को संतान नही होती तो उसे बाँझ, संताने मृत हो जाती है तो उसे नागिन, सांपिन डाकिन आदि तरह-तरह से अपमानित किया जाता है।

बुन्देलखण्ड, जनपद कृषि प्रधान राज्य है यहाँ काम करने वाली महिलाओं को घसिहारिन कहा जाता है।

वह घसिहारिन घास काटती दिन-दिन भर मैदान में।
पोली दो पोली लै गैहूं, चली काँखरी शाम को॥

जानवर विषयक - बुन्देली संस्कृति में जानवर विषयक गाली-गलौच का प्रयोग भी सुनने में आता है। जब कोई महिला अधिक मोटी हो जाती है तो उसे भैंसिया सी मत गई। अधिक मुँह चलाने वाली को सुंगयिरा, छिरिया, इधर-उधर घूमने वाली को कलोर पड़िया गैया आदि कहा जाता है-

का कहावत है आजादी, इनको अवै पतो नैइयाँ।
वने वैल से जे कोल्हू के, घर की जनी बनी गैयाँ।
कुत्ता घांई कुन्ना रय हैं, तन पै नैयां उन्ना।
पेंरं फिरत विदेशी उन्ना, धन्ना सेठन के मुन्ना।

जाति विपयक : यहाँ विभिन्न जातिवर्ग के लोग निवास करते हैं। इन जातियों से जुड़ी महिलाओं को चमारिन, धोबिन, बसोरिन, काछिन, खवासिन, ढिमरिन, नटिन आदि अपमान सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा- कुम्हारिन बऊ खों का देखने घूरन-घूरन कंडी बीनत फिन्ने। काछिन अपने बेर खट्टे नई बताउत।

चरित्र विपयक : आज का मानव शंकाओं मे डूबता उतरता रहता है वह हर व्यक्ति में चारित्रिक कमी का अंदेशा करता है पत्नियों का परपति के साथ उठना-बैठना बोलना आदि उच्च संस्कृति मानी जाती है किन्तु बुन्देली संस्कृति इसे असभ्यता का प्रतीक मानती है। ऐसी नारियों को कुलच्छन, कलंकनी, नकटी, बदचलन, हरजाई, रण्डी आदि अपमान सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। राईगीत में तो चारित्रिक पतन की सीमायें ही पार कर दी है।

<u>नर्तकी</u> - रड़ुआ न मरे रड़ुआ न मरे, छाती के पथरा बनें रये।

फागकार - मत हो गई कलोर, मत हो गई कलोर, रडुवन की खा-खा कमाई।

<u>नर्तकी</u> - हम पै लाखों मरे, हम पै लाखों मरे, हम न मरे रजुआ काऊ पै।

फागकार - तुमरे लाखों भये, तुमरे लाखों भये, तुम न भई वेला काऊ की।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि ग्रामीण बुन्देली संस्कृति में अच्छाईयों की अथाह सीमायें भरी पड़ी है किन्तु कुछ अंशों में इसमें दोष भी निहित है। यदि इनको "निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय" वाली उक्ति के अनुसार किया जाए तो इसमें व्याप्त छोटी-छोटी बुराईयों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है और हमारी बुन्देली संस्कृति पुनः विश्व गुरू संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित होने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

- बजरंग नगर कालोनी, छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9755155016

* * *

बुन्देलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में साँवनी की परम्परा

- नीलकंठ पटेल

बुन्देलखण्ड में ब्याव के पैले और बाद में दस्तूर होत है वे भौतई नौनें लगत है। इनमें ब्याव हो जावे के बाद बुन्देलखण्ड में बहुत पुराना रिवाज आज लौं कऊँ-कऊँ चलो आ रओ जिये हम बुन्देली में साँवनी कात है।

साँवनी साँवन के मईना में ब्याव हो जावे के बाद लाईजात है और ई साँवनी खों लरका बारौ अपने घर से बिटिया वारे के घरे यानी लरका की ससरार भेजत है। साँवनी कौ जौ पक्कै नियम बनो है कै ब्याव हो जावे के बाद जैंसई साँवनकौ मईना आहे ऊ मईना में नागपंचमी हो जावे के बाद साँवनी कौ जाबौ चालू हो जात है तथा ई साँवनी कौ रिवाज रक्षाबंधन की पूने लौ चलत है।

कोनऊ कारन सेअगर ओई साल साँवनी नई जा पाउत तौ आंगत साल जरूरई भेज दई जात।

साँवनी में खेल-खिलौना भाँत-भाँत के बाजे, बाँसुरी, उन्ना-कपड़ा तथा मिठाई, गुरयाई भेजी जात। ई-साँवनी खों लेकें कं जो-जो आदमी जात है उने साँवनयाँ कओ जात और ये साँवनयाँ एक दिना सें लैके सात दिना लौ लरका की ससरार में रूकत है उनै वड़े आदर सत्कार से सात दिना लौ खूबई खवाओ जिमाओ जात। ई साँवनी में जो जो सामान भेजो जात ऊमें राखियाँ, चकरी, भौंरा, चपेटा, लकरिया के दो सोंटा, खुनखुना, पुतरा, पुतरिया, चिक बब्बा।

सिंगार कौ सामान सिंगारदानी में रखो जात। ऊ घर के मौड़ा-मौड़ियन हाँ उन्ना कपड़ा तथा जोन बिटिया कौ ब्याव भओ ऊ खों कपड़ा लाये जात है। मिठाई, बतासा भी खूब साँवनी में लाये जात लेकिन ई कौ भी बुन्देलखण्ड में पक्कौ नेम बनो है कै ई मिठाई खाँ बिटिया के बाप-मताई, कक्का-काकी, बब्बा-वऊ, फूआ-फूफा तथा बड़ी बैन नईं खा सकत, केवल बिटिया के भइया लौरी बैनें तथा बिटिया खुद खा सकत है।

साँवनी के सामान हाँ अगले दिना पुरा पाले में हर घर में तनक-तनक दओ जात। इमें दैवे के लाने नाऊ घर-घर जात। ई सामान हाँ दैवे के पैले नाऊ द्वारा पूरे गाँव में साँवनी देखने कौ बुलउवा लगवाओ जात। बुलउवा के होतन बच्चा, औरतें साँवनी हाँ देखवे आउत।

सँवनी भेजवे कौ भौतऊं महत्व है। साँवनी काये भेजी जात ई कौ जौ कारन है कै ब्याव हो जावे के बाद बिटिया पराये घर की होज जात। ब्याव के बाद ऊ हाँ खर्चा के लाने या कौनऊँ जरूरत होवे के लाने रूपइया-पइसा की आवश्यकता पड़त है तौ ससुरार बारे उये पूरौ करत है। ब्याव कौ पैलो सावन तथा रक्षाबंधन कौ त्यौहार बिटिया अच्छे से मनाये ई के लाने ससरार वाले साँवनी लैके पोंचत है ताकि बिटिया हाँ अपने बाप मताई से भइयन हाँ राखी बाँधवे हों रूपइया पइसा न माँगने पड़े।

रक्षाबंधन के दिना ओई राखी अपने भइयन हाँ बहिन बांधत है तथा मिठाई भी खबाउत है। भइया राखी बँधा के बहिन के पाँव परत और कछू पइसा टका भी अपनी बहिन हाँ देत है।

साँवनी के जो खेल-खिलौना हैं वे छोटे बच्चन हाँ खेलवे के लाने दे दये जात तथा साँवनी में आई मिठाई हाँ सब भइया बैने मिलके खात हैं तथा पुरा पाले के लरका बच्चन हाँ भी जा मिठाई खैबे हाँ दई जात।

साँवनी कौ आवो अब धीरे-धीरे कम हो रओ है, अब कछू वर्ग के लोग ई साँवनी हाँ ले जात लेकिन आज भी कऊँ-कऊँ साँवनी कौ मजा बुंदेलखण्ड के गाँवन में देखवे हाँ मिल

रओ। एक बदलाव अब जरूर आ गओ कै पैले जो साँवनयाँ सात दिना लौं रूके रात ते अब वे दोई दिना में अपने घर के लाने विदा ले लेत।

आज शहर के आदमी की ऐसी विचारधारा हो गई कै अगर कोई मेहमान रिश्तेदार ऊ के घरे आ जात तो दूसरे दिना ऊखें भगावे की सोचन लगत। तनकऊ भी मन ऊनकी खातिरदारी करबे हाँ नई रात लेकिन बुन्देलखण्ड के गाँव वारन की अटूट प्यार कौ देखौ कै कई दिना लौ मेहमान नातेदार की खातिरदारी करत रहत लेकिन उनसे वे ऊवत नइयां। ई को प्रत्यक्ष उदाहरण है कै सात दिना लौं नातेदारन हाँ प्रेम सें खवाउत रहत।

इनके प्रेम को एक और उदाहरण हम दे रये है। जब साँवनयाँ विदा हो के जान लगत ऊ समय पै उन पै बड़े प्रेम से रंग डारो जात है। रंग कौ डारवो ऊ साँवनयाँ हाँ विल्कुल बुरओ नई लगत चाय वे कितनऊ अच्छे उन्ना कपड़ा पैरें होय। रंग में रंगे साँवनयाँ जब जान लगत तब ऊने पठौनी दई जात। पठौनी में नाज, दार, चाँवर, सिमइयाँ तथा रूपइया पइसा दओ जात।

साँवनी कौ जौ चला सैकरन बरषन से चलो आ रओ। व्याव में अगर कोनऊं कारन से लरका पक्ष तथा विटिया पक्ष में कछु विवाद हो जात तौ लरका वारौ विटिया वारे हाँ शांति दैवे के लाने, पुरानी लड़ाई की बातें भुलावें के लाने नओ प्रेम को वातावरण वनावे के लाने साँवनी ले जात साँवनी के आये सें विटिया के बाप-मताई हाँ जा खुशी होत के मोरी विटिया हाँ ससरार में अब कौनऊ दुख तकलीफ न हुये।

शादी हो जावे के वाद विटिया हाँ पैलो सावन मा[illegible] होत ई कोआज भी भौतऊं ध्यान रखो जात। रक्षाबंधन [illegible] लौं विटिया हाँ ससरार से मायके बुला लओ जात [illegible] अपने भइयन हाँ बड़े प्यार से राखी बाँध सके तथा [illegible] की कामना भइयन से कर सके।

राखी कौ जो त्यौहार हमाये पूरे देश में मनाओ [illegible] चाहे वह व्यक्ति कौनऊ भी धरम और जात कौ काये [illegible] देश के कौने-कौने हर वहिन अपना भइया हाँ राखी बाँ[illegible]

रक्षावंधन के दिना लौं साँवनी ले जावे कौ [illegible] काय से रक्षावंधन के दिना साँवन को मइंना समाप्त हो [illegible] फिर अगलो मईया भादौं लग जात।

साँवनी ले जावे की खुशी तो देखौ कै जब एक [illegible] दूसरे गाँव जावे हाँ कौनऊं साधन नईहते तब भी [illegible] साँवनी हाँ अपने मूड़ पै रखकें वीसों मील पैदल जात [illegible] जब वापस आऊत ते तब भी बोरन पठौनी गठरियन में [illegible] मूड़ पै धर के लाऊत रये।

सावन जैसो हरौ-भरौ दिखावे के लाने साँवनी [illegible] आज लौं चली आ रई है।

ग्राम पोस्ट - कर्री, जिला-छतरपुर (म.प्र.)
बुन्देलखण्ड (म.प्र.)

* * *

परंपरा और नवीनता का एक शहर

- डॉ. राहुल मिश्र

बुंदेला शासकों से पहले इस शहर की हैसियत एक गुमनाम गाँव से ज्यादा नहीं थी। आज वह शहर बुंदेलखण्ड के एक मंडल का मुख्यालय है। मेरे लिए यह रोमांचकारी घटना से कम नहीं है कि उस शहर में मेरा बचपन गुजरा है। यह कथा यात्रा उस शहर की है, जिसके कलेजे को चीरती हुई पूरब से पश्चिम रेलवे लाइन गुजरती है। पूरब से घुसे तो किसी पुराने तालाब और हवेली के भग्नावशेष दिखाई देते हैं और पश्चिम से घुसने पर भूरागढ़ का किला और फिर केन नदी। बंबेसुर (वामदेवेश्वर) पहाड़ तो बहुत दूर से ही दिखने लगता है। हाँ यह वही बंबेसुर पहाड़, भूरागढ़ और केन नदी है, जो गोविंद मिश्र की कथाभूमि और केदारबाबू की कविताओं के सजीव पात्र हैं। आपने सही पहचाना, यह बाँदा शहर ही है, जिसे महर्षि वामदेव की कर्मभूमि और महाकवि पद्माकर की जन्म भूमि के रूप में आना जाता है।

कोल और भील आदिवासियों की आबादी के कारण इसे खुटला बाँदा कहा गया, आज भी एक मुहल्ला खुटला नाम से कायम है। यह महसूस करना भी कम रोमांचकारी नहीं है कि बायाँ का 'बा' और दायाँ का 'दा' मिलकर बाँदा बना, जहाँ वाम पक्ष भी उतना ही लड़ाका जितना दक्षिण पक्ष। रहे होंगे महुवे वाले बड़े लड़इया अब तो बाँदा वाले बाजी मारे हुए हैं। वैसे शहर उतना बुरा नहीं, स्टेशन की चकाचक नई-नवेली बिल्डिंग से बाहर आते ही हनुमान मंदिर और चाय-पान की दुकानों पर जुटी भीड़ कई गलत धारणाओं को सिरे से नकार देती है। हनुमान मंदिर में इधर कुछ दिनों से कीर्तन मंडलों ने भी कब्जा जमा रखा है। कीर्तन मंडल के जरिए ख्यालों, उमाह, फाग, ढिमरयाई और इसी तरह के लोकगीत गायकों को एक मंच मिल जाता है। यह उपेक्षित लोकगायक पल भर के लिए भीड़ को अपने मोहपाश में बाँध लेते हैं। वैसे भी स्टेशन रोड पूरे शहर के लिए टाइमपास करने और घूमने के लिए इकलौता अड्डा है। दिन में पं. जवाहरलाल नेहरू कॉलेज के परिसर, कचेहरी और उसके आसपास वाला भीड़ का दबाव शाम ढलते ही स्टेशन रोड की ओर खिसक आता है।

कचेहरी में जुटने वाली भीड़ को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ के लोगों को मुकदमें और न्यायपालिका पर कितना विश्वास है। संचार क्रांति से पहले कंधे में बंदूक टाँगकर निकलना यहाँ के लोगों का स्टेट्स सिंबल हुआ करता था, भले ही जूते फटे हों, लेकिन बंदूक की जगह मोबाइल फोन ने ले रखी है। साथ में बंदूक भी हो तो कहने ही क्या? वैसे कचेहरी की भीड़ बढ़ाने वालों में कुछ खबरची और छुटभैये टाइप के नेता भी होते हैं जो टाइमपास करने के लिए मूँगफली चबाते और पान की पीक से सड़कों पर अजीबोगरीब पेंटिंग बनाते टहलते रहते हैं।

कचेहरी चौराहे की अशोक लाट देश की आजादी में योगदान देवे वाले बाँदा के वीरों को याद करती और आजाद देश की आजादी का बखान करती है। अशोक लाट की पार्कनुमा जमीन अब दूसरी भूमिका निभा रही है। शासन प्रशासन से माँगे मनवाने वालों, धरना प्रदर्शन करने वालों का, दीन-दुखियारों का यह इकलौता सहारा है और जनवरी से लेकर दिसम्बर तक हर समय आबाद रहता है। जब लम्बे समय तक कोई बड़ा नेता शहर में नही आता था कोई बड़ी घटना नहीं होती या फिर कोई राजनीतिक भूचाल नही आता तो शहर उदासियाँ ओढ़ लेता है। तब समाज सेवक, जनसेवक और भइये दिल्ली और लखनऊ की ओर टुकुर-टुकुर ताकने लगते हैं, जैसे बारिश की आस में किसान आसमान की ओर ताकता रहता है। बोतलबंद मिनरल वाटर यूज करने वाले केन

नदी को बचाने की बात करने लगते हैं, गँदगी कारों में घूमनेवाले सर्वहारा समाज के दुखों-कष्टों की वेदना में व्यथित हो उठते और चेहरे पर मायूसी का मासूमियत का लेबल चिपकाकर भरोसा जीतने की कोशिशें होने लगती है। शहर की राजनीतिक नब्ज इसी तरह असामान्य-असहज होकर धड़कती ही रहती है, कभी तेज-कभी धीमी।

इन सबसे अलग शहर का सबसे अहम वर्ग है, जो मॉडर्न स्टाइल के कपड़े पहनता है, बम्बइया कट वाले बाल कतरवाता है, अनोखे किस्म से फरटिदार बाइक से पढ़ने भी जाता है। कुछ एक वर्षों में ही शहर में कोचिंग इंस्टीट्यूट की बाढ़ सी आ गई है, लिहाजा शहर की शिक्षण संस्थाएँ सिमटकर महज परीक्षा संस्थान बन गई हैं। परीक्षा दो-डिग्री लो और बेरोजगारी का बिल्ला टाँगकर घूमो। सरकारी नौकरी के लिए रोजगार दफ्तर के चक्कर लगाते फार्म जमा करने के लिए साइकिलें दौड़ाते युवाओं की संख्या भी शहर में कम नहीं। कोई बड़ी फैक्ट्री-वैक्ट्री न होने के कारण बेकार टहलना और भी आसान।

इनके बावजूद चौक बाजार बाँदा चाँदनी चौक से कमतर नहीं। देर रात तक गुलजार रहने वाला चौक बाजार शहर की समृद्धि की निशानी है। यह अलग बात है कि ज्यादातर खरीददार इंदिरा नगर और सिविल लाइन्स जैसे पॉश इलाकों के बाशिंदे होते हैं। बाकी तो खाली जेब में हाथ डाले हुए बाजार की रौनक देखते हुए महेश्वरी देवी के दर्शन करके घर को लौट जाते हैं। महेश्वरी देवी अपने गगनस्पर्शी मीनारनुमा मंदिर में बैठकर ऊँचे ख्वाब देखने को असीसती रहती हैं। नवरात्र में देवी गीतों (उमाह) और पारंपरिक दीवारी नृत्य से महेश्वरी देवी मंदिर ही नहीं मानो सारा शहर ही पुरनिया हो जाता है।

चौक बाजार से आगे बढ़े तो शंकर गुरू चौराहा आता है। शंकर गुरू हलवाई के वंशज तो शहर छोड़कर चले गए, लेकिन बांदा के मशहूर सोहन हलवा के कारण याद कायम है। ऐसे ही बोड़ाराम हलवाई के लड़कों-नातियों ने खुद को असली वारिस सिद्ध करने का शांतियुद्ध छेड़ रखा है, "बोड़ेराम की असली दुकान"। अब अगर सभी असली हैं तो नकली कौन? यह असली-नकली का भेद शहर को आज तक नहीं पता चल सका। अगर आपको पता चले तो बताइएगा जरूर।

शंकरगुरू चौराहे से मनोहरी गंज पहुँचा जा सकता है। कहा जाता है कि वर्तमान कालवन गंज मुहल्ला जिस भू-भाग पर बसा है, वहाँ कभी बड़ा सा तालाब हुआ करता था। 18वीं शताब्दी के मध्य में जब छत्रसाल के पौत्र राजा गुमानसिंह ने बाँदा को अपना मुख्यालय बनाया था तब उन्होंने इस तालाब की मरम्मत कराई, लिहाजा इसे राजा का तालाब कहा जाने लगा। अंग्रेज हुक्मरान मि. रिचर्डसन के उत्तराधिकारी मि. मेनवेरिंग ने इस तालाब की पुराई करवाकर आबादी बसाई। कोतवाली की तरफ उन्हीं के नाम पर एक बाजार मनोहरीगंज के नाम से बन गई।

मनोहरी के आगे अलीगंज है, जहाँ सेठ जी के अहाते में आज भी रामा जी के वंशज मराठी ब्राम्हण रहते हैं और यहाँ की मिट्टी में आज भी मराठा कालीन बाँदा की गौरवशाली परंपरा को महसूस किया जा सकता है। यहीं पर हिन्दु-मुस्लिम एकता और सौहार्द्र का प्रतीक रामाजी का इमामबाड़ा है। लाख बदलाव आ जाने के बाद भी राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान भी बाँदा ने रामा जी द्वारा स्थापित परंपरा को नहीं छोड़ा, इसीलिए चाहे ईद हो या दशहरा सारे बाँदावासी मिलजुल कर मनाते हैं।

लखनऊ और दिल्ली से लाए गए बीजों से शहर में ऐसी मजलिसें और परिषदें पैदा हो गई है जो जबरिया भय का भूत दिखाकर शहर को आतंक और खौफ का चादर ओढ़ाना चाहती हैं। इसके बावजूद कव्वाली और मुशायरे के दौर चलते ही रहते हैं और छोटी बाजार से निकलने वाली प्रभात फेरी तो मानो यहाँ के बाशिंदों के जीवन का ही अंग है। दो जून की

रोटी के जुगाड़ के लिए दौड़ते भागते लोगों को नवाब टैंक में लगने वाले कजली मेले और केन किनारे भूरागढ़ में लगने वाले नटबली के मेले का बेसब्री से इंतजार रहता है। नटबली मेले के बहाने भूरागढ़ की राजकुमारी और बल्ली नट की प्रेम कहानी के दुखद अंत को शहर याद करता है। यह अलग बात है कि शहर में अब चंद प्रेम कहानियाँ विफल भी हो जाती हैं या फिर बड़े विद्रूप तरीके से समाप्त हो जाती है।

दीवान कीरत सिंह द्वारा रनगढ़ की तर्ज पर बनवाएँ गए भूरागढ़ को बाँदा में बुंदेला शासकों के शासन का प्रतीक कहा जा सकता है। भूरागढ़ अपने अस्तित्व को बचाए रखने में भले ही विफल हो गया है, फिर भी इसके जर्रे-जर्रे में गर्व की अनुभूति की जा सकती है। सन् सत्तावन की गदर में फाँसी पर लटकाए गए हजारों रणबाँकुरों की आवाजें भी भूरागढ़ में गूँजती हैं। जब तक बाँदा में अंग्रेज हुक्मरान रहे, भूरागढ़ के सामने से गुजरते हुए सम्मान के तौर पर हैट उतार लेते थे। अब देशी हुक्मरान को इसकी जरूरत महसूस नहीं होती। तेजी से बढ़ती हुई आबादी ने शहर के दर्जनों तालाबों और सार्वजनिक स्थलों को लील लिया है।

भू -अभिलेखों में दर्ज है कि बाँदा की आबादी उत्तर की ओर भवानीपुरवा और दक्षिण की ओर लड़ाकापुरवा में थी। भवानी और लड़ाका मउहर राजपूत वंश के शासक ब्रजराज (ब्रजलाल) के भाई थे और उनका आधिपत्य था। नए-नए मुहल्लों के पीछे यह नाम तो छिप ही गए, आबादी के विस्तार ने तमाम खेतों को, पुरवों को विहार कालोनी और नगर में बदल दिया। आसपास के गाँवों के लोग शहरी हो जाने के फेर में बाँदा में बस गए।

शहर में बनगए बड़े-बड़े और महँगे होटल, लॉज व मैरिज हाऊस सुनियोजित तरीके से शहर को आधुनिक बनाने के महान उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। रंग बिरंगी रोशनियों के बीच आर्केस्ट्रा की धुनों पर थिरकते युवा और चंद बुजुर्ग कदम शहर को आधुनिकता की ओर ले जाने के लिए सक्रिय दिखाई देते हैं। वेलेंटाइन्स डे और फ्रेंडशिप डे जैसे इम्पोर्टेड डेज से भी शहर अनजान नही है। इसीलिए कुछ खास दिनों में बुके और गिफ्ट आइटम की दुकानें शहर में आश्चर्यजनक तरीकें से बढ़ जाती है। अजीब सा मादक और खुशनुमा माहौल बन जाता है, जिंदगी की तमाम समस्याओं से जूझते लोगों से दूर कहीं। इधर दो-एक वर्षों के भीतर ही शहर में खुल गए। बीयर बार ने आधुनिकता के नए सोपान खोलें है। डांस बार तो नहीं है लेकिन शहर को इनकी जरूरत महसूस होने लगी है।

दूसरी ओर, कड़कड़ाती ठंड में रजाई ओढ़कर रामलीला देखने वालों छोटी बाजार के श्री कृष्ण रास मण्डल में होने वाली रासलीला देखने के लिए घंटों इंतजार करने वालों और आल्हा प्रतियोगिता में रात दिन भर तन्मयता के साथ आल्हा सुनने वालों, कव्वाली-मुशायरों में वाह-वाह करने वालों की तादाद भले ही कम हो गई हो, लेकिन परंपराएँ जिंदा है।

शहर की जीवन धाराएँ कही जा सकने वाली केन नदी भी तमाम रिवाजों से तीज-त्यौहारों, पर्वों और उत्सवों से गाहे-ब-गाहें जुड़ जाया करती है, बिना जाति, धर्म का भेद किए हुए। बच्चों की तरह घुटुरूउनन चलती केन अल्हड़ जवानी की इठलाती केन और बूढ़ी शांत वीतरागी केन, गोविंद मिश्र की कहानियों और केदारबाबू की कविताओं की प्यास बुझाती केन शायद अब शहर के लिए नदी मात्र रह गई है, उसका अस्तित्व सिमटने लगा है। केदार बाबू अगर जिंदा होते तो उन्हें कितना दुख होता, शहर नहीं जानता।

अस्तित्व तो भूरागढ़ किले, निम्मी पार वाले महल, बारादरी और इनकी जैसी तमाम इमारतों का भी सिमट गया है। बहुत से लोग अपनी संततियों को इन ''खंडहरों'' के बारे में बता पाने, बुंदेलखण्ड के गौरवपूर्ण अतीत से परिचित करा

पाने में असमर्थ हो जाते हैं। बुंदेलखण्ड के गौरवपूर्ण अतीत की भग्नावशेष निशानियों के साथ ही खपरैल-मिट्टी वाले कच्चे मकानों का अस्तित्व भी सिमट रहा है, जहाँ प्रेम, स्नेह, सौहार्द्र और भाईचारा होता था, संयुक्त परिवार होते थे, जहाँ पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी को तमाम ज्ञान की बातें अनायास ही मिल जाती थीं, दादी-नानी की रोचक कहानियाँ मिलती थीं। अथाई लगती थीं, चौपालें होती थीं, लोगों के दुख और सुख सबके हो जाते थे, कुल मिलाकर जीवन सरल, सहज, सुखद और सुंदर हो जाता था।

पुरातनता बनाम नवीनता के संघर्ष को सामाजिक और मानवीय मूल्यों, संस्कारों व जीवन स्तर में आ रहे बदलाव को यहीं से जाना और समझा जा सकता है। बाँदा जैसा हर शहर संक्रांति काल के अधकचरे दौर में फँसा रहता है, हमेशा हर सदी में। कठिन होता अपने अतीत को छोड़ पाना जितना कठिन होता है, उतना ही वर्तमान क़ी गति के साथ दौड़ पाना भी कठिन होता है।

यह कहानी बाँदा जैसे हर शहर की हो सकती है। बुंदेलखण्ड के तमाम शहरों/कस्बों की हो सकती है, जिन्हें मुम्बई और दिल्ली की हवा तो मिलती है, लेकिन वैसा पोषण नहीं मिलता, लिहाजा कुपोषण के शिकार होकर वे बड़े विकृत तरीके से विकसित होते हैं।

प्राध्यापक हिंदी
छाबी तालाब रोड
बाँदा-210001 (उ.प्र.)
दूरभाष-09452031190

* * *

बुन्देलखण्ड में दलित उन्नति की सम्भावनाएँ

- रामजी लाल चौबे

सुराज के पैले- सुराज के पैलाँ दलितन के नाँव सूद्र श्वपच, नीच, नानीजात, अछूत, बाहर बाले जाने कितने नाँव घिरना से भरे ते। उनके नाँव कडोरा, घसीटा, लटोरा, रमुआ, नथुआ, चनउआ, चुनुआ, सन्टोले रत ते। काए कै मनुस्मृति मे कओ गओ है कै सूद्र के नाँव निन्दात्मक होना चहिए। सदृश्य जुगप्सितम। न के वल मनु महाराज सबरी स्मृतियन में महाभारत और रामायण महाकाव्यन में दलितन के लाने विचित्र प्रकार से दबा के राखवे के लाने लिखो गयो है। सूद्र के धन न भव घाइये, सूद्र रिन चुकाकें लो छुटकारो नइ पा सकत। एक जाँगा तो जौ लौ कै दओ गओ के सूद्र हाँ ईसे जियत रान दो कै नइतर काम करिया न मिलहै।

शूद्राश्च ददि तो नस्यु कर्म कर्ता न विद्यते। ईसे इने जियत रान दो नइँतर काग करइया, टहलुआ न मिलहै। वैसे स्त्री और सूद्रन हाँ पढ़वे को, लिखवे को कौनउ तराँ को ग्यान लेवे कौ अधिकार धरम ग्रंथन ने नई दऔ। कओ है स्त्री सूद्रो न धीरताम बाइ हरन की और सूद्रन की एकइसी हालत आ रइ आइ। कैवे हाँ वामन-वाई ठकरान, वात्री, दुजन में लेखी गई पै बे आएँ सूद्रन घाँईं कायसे वड़ी जात की लगाइयन के कौन जनेउ ओ होत । जैसे सूद्रन के नई होत। कओ गओ न किन्वित संस्कारम् अरहति इनके कोनऊँ संस्कार न भओ चाइए। वामुन आदमी आहै पवित्र, वामनी नोई होत। काएसे ग्रंथन में साफ के दओ के- द्वारस्थ एकम नरकस्य नारी अर्थात नारी एकदम नरक कौ द्वार आय, कवीरदास जू वड़े समाज सुधारक कए जात हैं उनने बामपंथी लौ वड़ो प्रगतिशील मानत हैं अकेले उनने तो कै डारी-

> नारी की झाँइ परे अंधो होत भुजंग।
> कविरा तिनकी का कहें जो नितनारी के संग॥

कवीरदास हा जातबाद बुरओ लगत तौ, पै औरतें उनें सोई खटकती तीं। दलतन हाँ और लुगाअन हां धन हीन रओ चाइयें, काए सें शास्त्रकार भ्राता भार्या सूद्राश्च त्रयो अधना श्यात्। औरत हा भाइहाँ और सूद्र हाँ धन हीनइँ करकें रखो चाइये नइतर जे काम न करहें। कबीरदास जू सोउ दलित होकें वामुन बनो चाउत रए। बे पछताकें कात हैं। "पूरब जनम हम ब्रम्हण हते, ओछे करम तप हीना, रामदेव की पूजा चूका पकर जुलाहा कीना।" कैबे को मतलब कै दलतन सें कहो जात तो कै तुम पुराने जनम में पापी रए हुओ सो ईसें तुम शूद्र अछूत भए और ई जनम में कोउ कों खा जैहो और ऊँची जात बारन की सेवा ना कर हो तो अगले जनम में बैलवा बनकें चुकाहो। सो विचारे डरा जात रए। आजादी के पैलाँ प्रेमचन्द भए उनने एक कहानी लिखीं सवा सेर गेहूँ। ऊमें एक वामुन कात है इते की बाते छोड़ो देवता ऋषि मुनि जिते सुरग में है वे सोइ अपनेइ आएँ हमें ई लोक में सुरग को आनन्द है और परलोक में तो हैई है। तुम सूद्र इतै कमीना आव, नरक भोग रए और मरे पे लो नरकई भोगनें। रामविलास शर्मा-जैसे मार्क्सवादी लौ सूद्रन की अवस्था पै दुख नई मनाउत रए। उनके जान में ईमें कछु विचित्रता नइयाँ।

गाँधी जी सबसे बड़े नेता हते। सबसें जादाँ समाज सुधारक माने जात। अब सच्ची कई जाए तो वे लो कैसें ते, ई बात से पतौ चलत, सत्तरा अगस्त 1932 में अंग्रेज प्रधानमंत्री ने अपनो फैसलों दओ कै अब दलतन के लानें अलग से निर्वाचन पद्धति सरकार ने मान लई। कांग्रेस और ऊँची जात के हिन्दुअन ने अंगरेज प्रधानमंत्री के ई बिल (कानून) कौ विरोध करो और गांधी जी ने 20 सितम्बर सन् 1932 में जेल में होत भए भी आमरण अनसन चालू कर दओ। डॉ. भीमराव अम्बेडकर उनकी ई बात हाँ राजनीतिक चाल मानत ते। सबरे कांग्रेसी और हिन्दू नेता बाबा साब के खिलाफ भाँत-भाँत के उने धिक्कारन लगे अन्त में बे का करते उने 25 सितम्बर 1932 को पूना पेक्ट स्वीकार करने आओ।

गाँधी जी ने वादा करो कै 50 साल में छुआछूत और गैर बराबरी ऊँची जात नीची जात को हम खतम करकें रैबी। अकेले उनने कछु नई करो, उनने कबऊँ कौ ई समस्या हां कैकें कोनऊँ न बड़ो आन्दोलन करो न अनसन करो। उल्टो जो करो के एक हिन्दू मालावार में अछूतन के लाने कडमर रओ तो, ऊको नाव केलप्पन हतो ऊ मंदिर में अछूतन के लानें मंदिर में प्रवेश करबे के लाने अनसर कर रओ तो गांधी जी ने उए रोक दओ। अकेले बाद में न उए अनसन करन दओ न खुद कछु करो। तीन बिल और पास होवे के लाने आये। दलतन के मंदिर में प्रवेश के लाने एक डॉ. सुब्बाराइन द्वारा दूसरो बिल सी.एस.रंगा द्वारा तीसरो बिल लालचन्द्र नवल राय द्वारा, चौथे बिल एम.आर. जयकर द्वारा। बाइसराय ई बिल हां विधायक में रक्खो चाहत तो, पै गांधी जी ने 21 जनवरी 1943 में प्रेस में बयान दओ कै अंग्रेज सरकार हाँ हमाए धार्मिक मामलन में हाथ डारबो को अधिकार नइयाँ वे कातते के हिन्दू जनन को ई को निपटारो करो चाहिए। फिर 24 मार्च 1933 को रंगा अइयर ने असेम्बली में बिल पेस कर दओ। अकेले सरकार दलतन से हमदर्दी राखत ती गाँधीजी और उनकी कांग्रेस नई राखत ती। चुनाव होन लगे ते सो गाँधी जी हाँ औ कांग्रेसियन हाँ ऊँची जात के हिन्दुअन के बोटन की चिंता हती। रंगा अइअर ने असेम्बलिअइ में गाँधी जी और कांग्रेस की खुली जोरदार आलोचना करी। गाँधी जी सुराज चाहत ते समाज सुधार बाद में देखो जैहे। ई के पैला तो वे वर्ण व्यवस्था नाम की अपनी गुजराती किताब में लिख चुके ते कै वर्ण व्यवस्था हिन्दू धर्म की रीढ़ आए जो वर्ण व्यवस्था न माने ऊ हिन्दुअइ नोंई। चाए आर्यसमाज हो, चाय रामकृष्ण मिसन होय, चाय कोनउ ऊ समय को आन्दोलन होय, कौनऊ नें सच्चे दिल से दलितन के दर्द हाँ नईं चीन पाओ। भले जनेउ पैराउन लगे, गायत्री जपवान लगे, पै रोटी बेटी कौ सम्बन्ध करबे हाँ कोउ मन में नइ चाउत रओ। हाँ इत्ती बात मानने परहै कै महाराष्ट्र में महात्मा ज्योति बा फुले भए उनने माली होत भए भी दलितन के लानें जी जान लगा दइ। उनकी पत्नी सावित्री बाइ ने भी उनकौ पूरौ संग दओ। उनने अंगरेज सरकार सें मिलकें स्कूल खुलवाए। दलतन हाँ स्कूलन में प्रवेश दिलवाओ। उनकी पत्नी सावित्री बाई ने खुद पढ़के अछूतन की बिटियन हाँ पढ़ाओ, विधवन के ब्याओ करवाए, अबे भी सावित्री बाई के नाव से महिला विश्वविद्यालय खुलवाओ। उनइसे प्रभावित होके डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितन खां क्रांतिकारी बना दओ उननकी आखें खोल दईं। अनेकन अपमान उठाए पै बे झुके नइयाँ। महात्मा फुले ने जैसे सत्यसोधक समजा की स्थापना करी ती ओइ तरा से डॉ. अम्बेडकर ने दलितन कौ संगठन बनाओ। स्त्रियन के लानें शिक्षा के दरवाजे खोले संविधान में कानून मंत्री के रूप में बाबा साव को हिन्दू कोडविल सामिल करकें दलतन और महिलाओं हाँ समाज में और सासन में अधिकार दिवाए। एई कारन आए के आज सुराज के बाद में दलतन की और औरतन की दसामेंभारी परिवर्तन देखवे मिल रओ। मजे की बात जा देखो कै जौन जातें विशेषकर वामुन, ठाकुर बाली पार्टी जौन बाबा साव हाँ दिन-रात गरयाउतइ रई, बेई अब रामकृष्ण और अपनी पार्टी के नेतन के संगै बाबा साहब के चित्र धरन लगे। बिना मन के सई, उन पे माला चड़ाउन लगे।

सुराज के बाद में, अबै – सन् सेंतालीस हां देश हां सुराज मिल गओ। देसइ के राष्ट्रपति प्रधानमंत्री सब होन लगे। अफसर तो बेइ हते। सन् सेंतालीस सें लेकें सन् 1955 तक संविधान की धारन हां तोड़ मरोड़ के दलतन खां दवाउत गए। सन् 1955 में नागरिक अधिकार संरक्षण नियम पास भओ उए शक्ति से लागू कर दओ, ऊके अनुसार दलितन हां , कुआँ, तालाब, मंदिर, होटल सबरीं सार्वजनिक स्थान खोल दए गए। हरिजन एक्ट ने करिश्मा दिखाओ अब ऊँची जात वारे तनक डरान लगे आदिवासियन ने जोन दलतन में सबसे कम पढ़े लिखे हते जौन बिचारे कपड़ा लौ न पै कें जानत ते न खैवो पीवो जानत ते जानवरन घाँई जंगलन में डए रातते उनमेंलो जागरन आ गओ। एक बात और हमाए मन में आउत है कै दलित विचारे न जिनके रेवे हाँ घर आय न खेती की जमीन आय और जौन सुराज के पैलौं बिगार सेंत-मेंत मेंकरत रए अपने घर गाँव को मोह छोड़

के कौनऊँ दिल्ली हाँ तन गए कोनऊँ पंजाव हाँ तो कोनउगुजरात हाँ कोनउँ महाराष्ट्र मुम्वई तरफ हाँ, उनें खूबइं तकलीफें भईं वे न टिकट लैकें जानत ते न टेसन जानत ते न जो जानत ते के उने कौन काम करने आहै अकेलें सैरन में मजूरनकी भारी जरूरत ती उनें उते छुआछूत सें छुटकारा मिल गओ। पइसा मजूरी में जिले। इतै बुन्देलखण्ड में मिलत ते ऊसें जादा मिलन लगे। एइसें वे उते खूब अच्छो खानपियन लगे। सिनेमा देखन लगे। उनने रेडिओ खरीद लए। टी.वी. खरीद लइ, लुगअइन हां खूब घूमे हां मिलन लगे। उनकी अकल खुलन लगी, सो ईमें न समाज की थराइ आए, ने वेतन की थराइं, न वे इए भगवान की देन मानत उनमें अब खुद पे विश्वास हौन लगो लो जौ आ विकास। जोन आजादी के बाद भओव हम तो कइत है कि उनें भगवान ने नई विज्ञान ने आगे बढ़ा दओ। वूड़े टेड़े तो अवै दवत जात पै नये लड़का बहुयें तनकऊ नई डरात। दूसरे आरक्षण के भये से कुल नौकर चाकर पुलिस तहसील में जगह पा गये। आमदनी बढ़ी, रूतवा बढ़ो। दलित कलैक्टरन ने उन्हें बन्दूकन के लाइसेन्स खूब दये। सो वे सोई वन्दूक तान देत सो दाऊ साव बाबा जू भैया-भैया करन लगत। एगर उत्तर प्रदेश में मायावती दलित की बेटी चार वेर लो मुख्यमंत्री रई आई। वे दलित कान लगे कै बड़े पदन पै बैठ वो ऊंची जात वारन की बपौती नौइ। बन्दूक लैकें फायर करवौ अकेले ठाकुर, वामुन नौईं जानत वे सोई निकर परत। वै रैदास जयन्ती मनाउत, वावा साहव अम्बेडकर की जयन्ती मनाउत।

वावा साव की मूरत हर जिला में लग गई। ई से उन्हे भौत प्रेरणा मिली। वे वावासाहव की कितावें पढ़न लगे। हाँ इतनी बातऔर है कै अवै वइयर जनन की शिक्षा कम से कम 3 प्रतिशत है लड़का उनमें 11 प्रतिशत पढ़ लिख गये कुल नौकरी पा गये। उन्हें स्वार्थ के कारण सव कोऊ ऐंगर बैठारन लगे। थाने में कछु होवे चाय न होवे वे रपट लगा कें हरिजन एक्ट जरूर लगवा देत। रातभर के लाने तो थाने में बन्द अच्छे-अच्छे हो जात। पचास प्रतिशत म.प्र. में औरतन हाँ पंचायत और निकायनमें आरक्षण मिल गये से लुगाइयन के आधे से ज्यादा घूँघट खुल गये।

आदमी औरतें बुन्देली में बिना डराँय खूब डिठयारी काती। सरपंच उपसरपंचन में वे कौनऊ पद पा जाती है। कौनऊ पद पा जाती है। कौनऊ बड़ो अगर अत्याचार, बलात्कार कर देत है फौरन अखबारन में छप जात भय फोटो के। अदालतन में वे गवाह देवे में बयान देवे में तनकउ नई झेंपत है। एक बात जरूर है कि जाँ जागीर रिसासत रई अबै डर पूर्णतरां नई छूटो। दलितन में दारू ने उन्हें बरबाद कर दओ। धन उनको पानी में बहा जात है। उनकी घरवारी दारू के ठेकन के आगे पररातीं, विरोध करतीं, पै का होत। रैदास जयंती और डॉ. अम्बेडकर जयन्ती में दारू माँस न खावे की कौल क्रिया कराई जात पै वे नई मानत। सरकार उनके नाम परती जमीन कर देत थे बड़े आदमी अबै लो दबायें जात। खाली नई करत। पेट्रोल पंपन के परमट उनके नाम पै लै लेत और मजा बड़े-बड़े पूँजीपत धन्नासेठ ले लेत। बड़े आदमी उन्हें आपस में लड़ा देत। भाँत-भाँत भ्रम फैला देत वे लड़त मरत रात। दारू पिवा के वोट लै लेत। पै अब उनके दिन लौट गये। अब वे राम की गाँधी की नई, बाबा साब की जै भी करन लगे।

– चौबे कॉलोनी, छतरपुर

* * *

"कढ़ी की आंच सी सुलगाते जीजा बुंदेलखण्डी"

डॉ. [illegible]

पूरे पचास साल का अंतराल पीछे छूट गया है- लेकिन कुछ है जो छूटे नहीं छूटता है - जो लौट -लौटकर बार-बार आ जाता है और मुझे उन दिनों उसीर काया की आग से कंपकपाते इन दिनों में किसी गर्म हथेली के स्पर्श जैसा सेंकने लगता है उन दिनों मैं हटा से हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण करके डिग्री कॉलेज में अध्ययन हेतु दमोह में निवास कर रहा था। हटा छोड़ा था- ऐसा हटा जिसने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी थी। मैंने गणित विज्ञान लेकर हायर सेकेण्डरी किया था। मन बनाया था इंजीनियरिंग बनने का लेकिन हटा में गणित पढ़ते-पढ़ते कविता लिखने का जो शौक चर्राया था, वह दमोह में परवान चढ़ने लगा, हटा में रमा जी की सोहबत और उनकी लाइब्रेरी की पुस्तकों पत्रिकाओं की प्रभावकारी भूमिका ने मुझे साहित्यकार होने के आत्मदीप्त अनुभव में ऐसा सौंप ग्रस्त कर दिया था कि उसकी सजा आज तक भोग रहा हूँ। दमोह में जिन लोगों ने मुझे आकर्षित किया था। उनमें से एक थे हनुमान प्रसाद अग्रजरिया वैद्य

दमोह में उन दिनों साहित्य का वातावरण अपने सर्वोच्च क्वथनांक पर था, बड़ी खदबदाहट थी। संस्थाओं की तोड़ में संस्थायें बन रही थी कार्यक्रम करने की एक से एक बढ़िया योजनायें बनती। कवि सम्मेलन, गोष्ठियाँ, विमोचन न जाने कितने तरह के कार्यक्रम सतत हो रहे थे। इन सबके बीच घंटाघर के पास वृन्दावन मंदिर के मुख्य द्वार के कोने की एक छोटी सी दुकान में आसन जमाये बैठे रहते थे जीजा बुंदेलखण्डी अर्थात हनुमान प्रसाद अग्रजरिया वैद्य। घण्टाघर दमोह का हृदय स्थल है- इसे पाँच रक्त वाहिनियों जैसे मार्ग अपनी गतिशील रफ्तार के सदैव धड़कते रहते हैं। घंटाघर के पहले यहाँ फुहारा हुआ करता था। फुहारे के समय के लोग कम ही बचे हैं- इसलिये फुहारा स्मृति से उतर सा गया है। तो घंटाघर के बाजू में बैठे वैद्यराज जीजा बुंदेलखण्डी दमोह की साहित्यिक नब्ज पर अपनी अंगुली रखे रहते थे और साहित्यिक वातावरण के ब्लड-प्रेशर का उतार चढ़ाव न केवल नाप लेते थे, बल्कि उस पर त्वरित काव्यात्मक प्रतिक्रिया भी कर देते थे। धोती, कुर्ता आचकन में शैलिजक अंदाज में खिंची-खिंची मझौल मूछों वाले जीजा बुंदेलखंडी मुझे आकर्षित

कर रहे थे, [illegible]

[illegible]

जीजा बुंदेलखण्डी बुंदेली के [illegible] बुंदेली की "फाग" और "ख्याल" [illegible]

[illegible]

वे जब [illegible] रचना करते थे। [illegible] वे बुंदेली चौकड़ियों [illegible] अपनी बात कहते थे। [illegible]

बुंदेली के आल्हा, फाग, सोहर, [illegible] जैसे लोक छंदों में [illegible] प्रधानता है। [illegible]

मर्म वाहिनी क्षमता का घोतक है और इस मर्म वहन धारकता को उसने पाया है अनेक सिद्ध हस्त रचनाकारों की सृजन आकुल चेष्टाओं के उद्यम आघातों से टकराकर फाग छंद में यदि ऐसा वैसा रचनाकार अपनी जोर आजमाईश करना चाहता है तो वह बहुत भाग्यशाली नहीं माना जायेगा, वह फाग तो रच लेगा, किन्तु फाग के पूर्व प्रभावों से मुक्त नही हो पायेगा । और फाग के पुरोधा पुरूषों के ब्लेक होल्स में समा जायेगा।

लोक छंद में रचना सुर-संधान की व्युहपत्ति का भी परिणाम है। जिस छंद में रचनाकार अपने को अभिव्यक्त करना चाहता है, उसका गायक भी वह होना चाहिए तभी वह अपने रचना छंद को साध पायेगा जीजा बुंदेलखंडी अपनी फागों की रचना गाकर ही करते थे यद्पि उनका गला खरज से भरा रहता था, फिर भी उन्होंने फाग की लय को पकड़ लिया था उनका प्रयत्न रहता था कि वे अपनी फागों में कुछ अलग कहे- इसलिये वे अपने समय से प्रतिक्रियाये करते है, उनकी कविता यथार्थ से टकराती है- और वे यथार्थ की टक्कर में कभी तिलमिलाते है, तो कभी करूणा विगलित हो जाते है और कभी ललकार भी भंगिमा में खड़े दिखते हैं यहाँ उनका व्यंग्य अधिक तीखा हो जाता है-

जग में मारी भरे कसाई, जे रये दूध मलाई
लाखों परे ठंड में कंप रये, सड़कन लोग लुगाई
फट्टी ओढ़े फुटपाथन पे जुरी ने जिने रजाई
उनखां चीथों चाहत निरलज इने सरमने आई
जीजा कवि विधना की जै हो, तेने लाज बचाई।।

वे कृषक की जीवनी से परिचित थे, बड़ी करीं होती है किसान की जिंदगानी। जीजा बुंदेलखण्डी किसान परिवार से ही थे। उनके पुरखे पन्ना रियासत के मुहदरा गांव के थे। गांव देहात की रहन सहन से वे पूरी तरह से परिचित थे। उन्होंने पहलवानी के गुर गांव में ही सीखे थे। गांवों में पहलवानी करते थे तो झगड़ा टंटा होता था पिता ने निर्णय लिया कि उन्हें दमोह भेज दिया जाये वे दमोह आ गये, लेकिन पहलवानी की धजा-ध्वजा यहा भी जमती रही किसान और पहलवान के मिले-जुले व्यक्तित्व में वैधकीय रसायन के संयोग ने कविता को जन्म देने की सारी परिस्थियाँ निर्मित कर दी थी। ये किसानी पर केन्द्रित चौकड़िया रचते है तो बुंदेलखण्ड का किसान इसमें जीवंत हो उठा है।

जीने करी ओई ने जानी, भारी विकट किसानी
बसकारों भर ठंड पूष की बा बैहर बरफानी
जठे दुपरिया तपे तिलमिला लू करीं सन्नानी
चोटी की ऐड़ी से टपकें टप-टप जैसे पानी
जीजा कवि ने करे अलाली ऊकी आय किसानी।

बुंदेलखण्ड का एक रंग उसके बिहूने पन का भी है बुंदेलीमन मनधुन्ना है। वह अपनी दार्शनिकता में बेजोड़ है। जीवन मृत्यु के सत्य का दर्शन उसने किया है, इसीलिए जीवन के प्रति एक अनासक्ति उसमें व्याप्त है। जीजा बुंदेलखण्डी को गले का कैंसर था इसी बीमारी ने उनके प्राण भी लिये। बोलते बनता नहीं था, आपरेशन हुआ और वे दमोह आये तो लोग उन्हें देखने गये। सब दुखी थे लेकिन उन्होंने अपना अंगूठा दिखाते हुये संकेत किया जैसे सब कुछ उनके कुतका के ऊपर है। वे जानते थे कि मौत उनके शरीर को तो मार सकती है, किन्तु उनकी आत्मा को नहीं यद्यपि वे जीवन को महत्वपूर्ण मानते हैं। वे मृत्यु की निश्चिंतता और जीवन की मूल्यवत्ता को निम्न चौकड़या में प्रकट करते हैं।

टांडे लाद चले बंजारे,तकत रहे गैलारे।
टुकुर-टुकुर हेरत रये सबरे, खोले पलक किवारे
उड़ गयो हंसा राख बदन भओ जी पे भये मतवारे।
फिर उठ गये स्याम बदरवा, भर गये नदिया नारे।
जीजा कवि जीवन का ऐसे मिलने राम प्यारे।

जीजा बुंदेलखण्डी, उपनाम के पीछे भी एक संदर्भ है हटा सेचलकर दमोह में बस जाने वाले एक जानकी प्रसाद मिश्र थे, उन्होंने अपना उपनाम जिज्जी रखा था। वे जिज्जी नाम से ही कवितायें लिखते थे। इस तरह स्त्रीवाची पेननेम की परंपरा पुरानी है। चन्द्रसखी के भजन तो सबने सुने है- वे पुरूष ही थे। स्त्री बन कर जीने में भी एक आनंदहै। पुरूष इस आनंद को कभी-कभी लेना चाहता है। श्रृंगार के क्षेत्र में इस तरह की भूमिका परिवर्तन के अनेक प्रसंग हैं जिज्जी अपनी ''रौ'' में कविता लिखते थे। हनुमान प्रसाद अरजरिया को लगा कि जिज्जी है तो एक जीजा भी होना चाहियें । उन्होनें न केवल जीजा उपनाम रखा बल्कि उसके साथ बुंदेलखण्डी भी जोड़ लिया, गोया वे सारे बुंदेलखण्ड के जीजा हो गये, जीजा होने से एक सुविधा तो थी ही वे चाहे जिस बहू-सास से बुलाया सकते थे। सो कविता में वे अक्सर बुलयाते रहते थे बुंदेली का यह

''वुलयाना'' शब्द अपने तरह का है। यह शब्द बोलने से अद्‌भुत है। ''वोलने'' को वोलियों ने जितनी रंगते दी है- उतनी किसी जमी- जमाई भाषा में नहीं है। ननदी जू ऐसे वोल न वोलो, ननद विन्ना ऐसे वुलया रई, वोल और वुलयाने के अर्थ संदर्भ एकदम भिन्न है। ''वोल'' जहाँ खरी-खोटी सुनाने के लिये प्रयुक्त है- वहाँ वुलयाना नर्म क्रीड़ा के सरस वक्तव्यों से संवंधित शब्द है।

वुलयाने से बुरा नहीं माना जाता। बोल की चोट झेलना कठिन हो जाता है। जीजा और बुलयाने का रिश्ता वहुत पुराना है। जीजा का बुलयाना अनुभव की जिये-

अब न तुम काऊ खां तकती, आँखें नीची रखती।
लोलईया के लगे सोऊती ने रातन में जगती
पैलऊ कैसे ने सुभाव रये अव तो सब खां दवती
जवसे लुखर गरे में बिद गई औरऊ जांदा फबतीं
जीजा कवि तुम खां जानत हैं कौकी का तुम लगतीं।

पूरा मुहल्ला में अनेक तरह की झगड़ा-झंझट भरी मिनी युद्ध कथायें चलती रहती है। ये जैसे जनम लेती है, वैसे ही इनका समापन हो जाता है, आखिरकार पुरा एक वड़ा घर-परिवार ही तो है जैसे घर- परिवार में खट-पट की किवड़ियाँ खुलती वंद होती रहती हैं- ऐसे ही पुरा पायरे में भी अनुदात्त- उदात्त प्रसंग छिड़ते रहते हैं जीजा बुंदेलखण्डी- स्वाभिमानी व्यक्ति थे। वे गुणीजनों के सच्चे सेवक और लफंगों के लिये सच्चे मुसंड थे। पुरा-परौस में कभी ठन गभी होगी। आमने सामने की लड़ाई ने कवि को आहत कर दिया होगा। कवि के कारखाने से अवसर ऐसा वॉय प्रोडक्ट भी निकलता रहता है- जिसमें उसके आहत मन की गुंजलक खुलने लगती है। और वह कविता के माध्यम से वदला लेने लगता है। कविता सदियों से वदला लेने का औजार रही है। कभी पड़ोस में जीजा की अड़ी पर तड़ी पड़ गयी होगी। जीजा कवि अपनी कविता में राहत की सांस लेते है-

घर के सामूं घर है, कवऊँ तो मौका पर है
अटका परम विदत जव कुंदा कित्तऊ बड़ो जवर है।
लिड़या जात राम करिये, जव आऊत औसर है
ई से मुक के रले प्रेम में दो सुन लेव खबर है।

जीजा कवि ने मरो वात सेकहा गाज से मर है। जीजा खांटी बुंदेलखण्डी के स्वभाव को आत्मसात कर चुके थे। इसलिये वे अपनी रचनाओं में बुंदेली के उन प्रयोगों को रूपांतरित करते हैं जिनका सभ्यता के विकास के साथ ही निरंतर लोप होता जा रहा है। वे बोली के मूल से निकलने वाली गंधको अपनी कविताओं में सुरक्षित रखते है। उन्होंने अनेक कवि सम्मेलनों में कविता पाठ किया था, और वे बुंदेली अंचल में खूब घूमे-फिरे थे इसका असर उनकी बोली बानी पर था। दमोह में रहते हुये भी वे बुंदेली की महीन से महीन अर्थ ध्वनियों से न केवल परिचित थे बल्कि वे उनको कविता में ध्वनि-चक्र में समाहित करके बुंदेली की एक ध्वनि उजास प्रकट कर देते थे। बुंदेली के स्वभाव में वे पूरी तरह ढ़ले हुये थे। इसलिये कविता उनके व्यक्तित्व से स्फोटित होती थी। बुंदेली स्वभाव रीझ वाला है - जिसपर रीझ गये तो फिर उस परवे मोल बिक गये। उन्होनें जीवन ने इस भाव को जीवन भर पाला। न जाने कितने अंकुरों को उन्होंने विरंवा बनाने में अपनी रीझ को आधार बनाया अनाम-अज्ञात पर रीभू जायें तो उसे एक कुशल-शील प्रदान करने में वे हिचकते नहीं थे, उन दिनों होली के समय समाचार पत्रों में उपाधियों दी जाती थी दमदार दोहो में उपाधियां छपती थीं। जिन्हें उपाधि दी जाती थी, वे जरा ऊँचे तपके में शामिल मान लिये जाते थे। में दमोह मे अल्पज्ञात होने की कोशिश में था कि उन्होनें मुझे उपाधि बक्श दी हटा दिया है, हटा को घंटाघर से मोह। अब तो आने लगा है, इनको नगर दमोह ''श्याम को नहीं किसी से मोहा'' इस उपाधि ने दमोह के साहित्यिक वर्ग में मेरा स्थान निर्धारित सा कर दिया। लोगों ने जीजा को उसाहना भी दिया की इतनी छोटे से रचनाकार को आपने बड़े रचनाकारों की पंक्ति में बैठा दिया, तो वे बोले मेने श्याम की कवितायें सुनी है वे बड़े कवियों के कान काटती है इतने सपाट वक्ता थे जीजा की किसके सामने खुल जाये उसकी थिग्गी बन जाये। ऐसे लोगों को याद करना एक युग को याद करना है, उन्हे याद किया जाना चाहिए।

चंडीजी वार्ड, हटा-जिला
दमोह - (म.प्र.)

बुन्देली वाटिका

जौ बौई देश है जौन में

- दिनेश चन्द्र दुबे

बुंदेली में निबंध बहुत लिखे गये हैं किंतु जो भी लिखे गये हैं उसमें बुंदेली जीवन की परंपरायें और उसके आधुनिक जीवन की विडम्बनायें प्राप्त होती हैं- प्रस्तुत निबंध में हमारे सक्षम और समाज को बुंदेली लोक संस्कृति के गवाह से देखा गया है।

सकारें से उठतनई कॉपी, किताबन कौ पुलिंदा पीठ पै लादें, फिर मताई बाप के संगै स्कूलन की मोटरन के इन्तजार में। फिर डेढ़ बजे नौ लौटे रोटी के दो चार कौरा में उतारे और हौन लगी तैयारी सरन के घरै टूशनन खौ। अंधियारौ होत होत लौ पौंचें नईयां के बौ का क्वाउत होमवर्क काल के लाने मास्टर ने जौन दओ तो, वा में चिपटने। काटे हो रये सूक कै। ऊपर सै चश्मा चढ़े। हे राम जौ कैसो बचपन? हमाये तो सात सात हते। दिन भर गिल्ली डंडा खेलत ते और सबेरे शाम खौं गोली बंटा। तौई सब बड़े बड़े अपसर बन गये। ऊनै अबै तक याद आउती वे गली जिते खेलत ते। चाँय चले गये हौ हजनन, सात समुन्दरन पार। इनै का याद रै कछू? याद लाख है का इनन की जिन्दगी में जा उमर कौ? याद करवे लाख हती कभऊं चीजे। कहानियाँ सुनाउत ती अम्मा एक हतौ राजकुमार। भौत सुन्दर राजकुमारी से बाँय प्रेम हो गओ। लेकिन राजकुमारी अखीर पे कूदई परी ती किले पे से जब राजा नई माने और आज कौ जमानौ। जई जगां चार-चार कचैरी चल रई घर के लुगाई लरकन के झगड़न की। कौन जुग कौ है मेरे पिरभु। जाके लानैन पढ़ाई ती बाप मताइन नै जे लड़की लरका? सब कछू याद परत। इनई बच्चन की मताई कौ बाप मरो। भैया ने खबर करी बाके। पर साफ मना कर दई हमाये आँय से कौन बापू जिन्दा भये जात। पर हम इनै छौड़ कें गये तौ इन बच्चन खौं और उनके दद्दा खों को देख। हमाई तौ जोई दौलत है। हमें कछू नई बटावने वे हती लुगाई। आज की लुगाई होती तौ खराबन के संगै पौंच जाती अपनी हिस्सा बटावें। अब तौ उल्टो डर सौ लगन लगौ आदमियनखौं इन औरतन सें। वादिनां अखबार मे छपी तौ हती खवर कै दिल्ली में हमायी सांस्कर्ती बचावे के लाने एक संस्था बनाई है आदमियन नै। रूपइया में पन्द्रा आना आदमी परेशान है।

परेशान काये न हुये आदमी। चोरी करत भऔ, दस रूपैया की रिस्वत लेवे वारौ तौ सजा खा रऔ और बड़े-बड़े नेता करोड़न खा रये। दुकावे के लाने पइसा, इतै से ले जाके जमा कर रये सात समुन्दर पार के बैंकन मे, का करै विचारो सीधो-सादौ परधान मंत्री या .... बीच में लगन लगी तौ कै जो सरकार ठीक बनी। लेकिन जैसे नागनाथ वैसे सांप नाथ। अटल जी तक के समय में तौ ..... सुनी है जई परदेश के पैले रये मुख्यमंत्री को होटल है मारिशश में उनकी जगा जोन महारानी आई ती .... अब काय खौ कऔ कछू। चुप्पई भली जाने का विदवा देवे। पुलिस बड़े-बड़े हत्यन, डकैती के मामले तौ सुलझा नई पा रई, अपनी कों सुन।

पर विचारी पुलिसई का करै। आधी पुलिस तौ लगी इत हमाये खुदई के चुनै मंत्री संत्री की रक्षा करवे। ता पै रोज हिन्दु मुसलमान खों लड़ावे बैठे नेता वोटन के फेर में। भलेई फैसला हो गओ। होय अयोध्या की बाबरी मस्जिदन कौ। लेकिन आजकल तो चाँदी खिलैय्यन की है करोड़न में बिक रये नये नये खिलैय्या। तेंदुलकर खौ तौ देखो। इतेक आमदनी तौ और भारत रतन की उपाधि के लानै जनता चिल्लाय रई। उनखौं नई दई जे उपाधि या धन जौन हाड़ कपा वे वारी ठंडन में बंदूकें

लये ठाड़े रत जा देश की रक्षा खौं या छलनी हो जात दुश्मनन की गोलियन से। का मजा है जा जुग कौ। सुनी है संसद मिटावे वारिन कौ मारवे वारिन खौ कई गई नौकरी और पइसा तक अबे लौ नई मिलौ। दूसरी तरफ हमायेइ गाँव कौ मोड़ा भोपाल गओ तो बैन खौं लुआवे। तबई गैसकांड हो गओ तो। बई ने नाम लिखा दओ तौ पीड़ितन में। लै आव मुआवजा। अबै तक मचौई है दमचौरा वई वात कौ। अव जौ को बकै आफत लैवे के...।

कभऊ कभऊ तौ लगत जा सै मर जाओ अब तौ। काका देखवो वदो तो भाग्य में। प्याज चालीस रूपैय्या। दूध से जादा कीमत प्याज की हो गई। का पतौ कभऊ नौनई जई भाव मिलन लगै।

अस्पताल में जाओ डाक्टर न मिल। रेल में जाओ जगा न मिल। रैवे खौं कऊँ टपरा डार लैऔ तो जाने कवै पठक दैवे नगर पालिका वारे कछू नई कै सकत। कोऊ सुनइया नइयाँ अदालतन में। जेब में पईसा है तो वकील मिल नई तौ फिरौ मारे मारे। हद तो जौ हो गई कै अव तौ जज्जन तक पै उंगरिया उठन लगीं। वकील पईसन के लाने दूसरी पार्टी से मिल जाये सो अलग।

भगवान का सो रओ। दिन-रात तिलक मंदरा लगाये बाबा पकरे जा रये, लुगाइन के चक्करन में। हवाई जाजन में फिर रये बाबा। जितै देखौ उतै जमीने हतिया रये। बाबा है कै राजा माराजा।

जौंई मचो कविता, कहानियां, लिखवे, पढवे वारिन में। असली लिखवे वारिन खों कोऊ नई पूछ रओ। पईसा देके सम्मान कराओ। पईसा पैले मंगा ले तबजे कऊँ कविता पढ़ने। जेई सेतौं मुन्नी बदनाम होके मजा मार रई और रात-रात भर आँखें फोरके जिन्दगी भर को सार लिखवे वारिन कौ कोऊ पुछैय्या नईयां।

सनेमा जाव तौ मारकाट। घरै बैठे टी.वी. देखौ तो अधनंगी लुगाई जादा देखौ कौनऊ से नाटक में। बलिहारी जा टेम की। प्रभु उठा लो अब तौ। जो बोई देश है जौन में राम, सीता, भरत, श्रवण, हरीशचंद्र, गुलजारी लाल नंदा, सुभाष विवेकानंद पैदा भये ते, कै....। अच्छा राम राम भैय्या हो सकै तो हमाई बातन पै गौर करियो। जो नई कै पढ़ौ और रैन दो किताब।

68, विनय नगर, ग्वालियर-12 (म.प्र.)

* * *

बदलाव

- डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया हिन्दी साहित्य के जाने माने समीक्षक हैं- उन्होनें व्यंग्य के क्षेत्र में भी अपनी कलम चलाई है। बुंदेली के अज्ञात कवियों पर उन्होनें शोधात्मक कार्य किया है- उनकी बुंदेली में रची गई अनेक कवितायें और अनेक गद्य रचनायें हैं- प्रस्तुत नाटिका बुंदेलखण्ड की सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालती है।

(आवाज लगाता हुआ क्लीनर : छतरपुर, छतरपुर, छतरपुर... जा रही है तूफान मेल। जिनको बमीठा, गंज, छतरपुर चलना हो वे जल्दी से आकर गाड़ी में बैठ जाएं.... फिर्रर-फिर्रर्रर-सीटी की आवाज जा रही है, जा रही है, जा रही है, दिल्ली की तूफान मेल)

कंडक्टर : ए बाई, उते आगे की सीट मा न बैठो।

मखनिया : काये न बैठे? अबे तो चिल्ला रयेते, बैठो-बैठो-बैठो। बैठ गये तो कै रये, उतै न बैठो। कां बैठें?

कंडक्टर : आगे की सीट छोड़ के कउं बैठो। उते पिछाऊं काये नई बैठती आराम से। पूरी गाड़ी खाली डरी है।

मखनिया : पूरी गाड़ी खाली डरी है तो हम पिछाऊं बैठें, और अगाऊं को बैठहै?

कंडक्टर : अगाऊं की सीट मा नन्ना खां बैठने बा उनके लाने रिजर्व है।

मखनिया : वे आए नई सो उन्हें आगे बैठने औ हम पैलऊं से आ गए तो पिछाऊं बैठे। जो कहां को न्याय आय?

कंडक्टर : न्याय-स्वाय की बातें छोड़ो जो हम कै रये सो सुनौ। पछाऊ बैठो। जोई न्याय आय।

मखनिया : तो लेव हमें पछाऊं की सीट पै आज नई बैठने। हम तो जेई आगे की सीट पै बैठहैं। देखत हमें को हटाउत।

कंडक्टर : देखो बाई, जिद न करौ। पीछे बैठो। बाद की चिक-चिक अच्छी नई होत। कह दई कि उतै नन्ना खां बैठनें।

मखनिया : जे नन्ना का लाट साब आय कि पछाऊं नई बैठ सकत? का उनको रूपैया बड़ो औ हमाओ छोटो है? हमें सोई किराया देने। मुफत में नई जानें। न हमाऔ रूपैया चउदा आना मा चलने? सोला आना मा नन्ना को चलने, सो सोलई आना मा हमाओ रूपैया चलहै। हम काये आगे नई बैठ सकत् पैले जो बताव?

कंडक्टर : हम तुमसे फालतू बहस नई करो चाहत। दिमाग न खाव। सूदे पीछे चली जाय।

मखनिया : तौ लेव अब मोय आँगेई बैठनें। हमने कै दई, आगे आए हैं सो आंगेई बैठहैं। हम काऊ से कम हैं का?

नन्ना : (नन्ना का बस में प्रवेश) नई बेटा, तुम आराम से आगे बैठो। पीछे काये जाव। आगे आई सो आगे बैठो। हम तो काऊ बैठ जैहें। का फरक परत । पहुंचने तो एकई साथ, एकई टेम में है।

मखनिया : हम सब जानत। हम औरत आय, छोटी

जात की आय। पढ़ी-लिखी न होय। अच्छे उन्ना-लत्ता नई पैने। गरीब हैं। बतावो नई जानत। सो हमें पीछे बैठो चइयै। जो बड़ी जात के इज्जतदार होयं, पढ़े-लिखे बड़े आदमी होयें, सो गरीबन्ह का उठाय कैं आगे बैठें। जोई आय मतलब ?

नन्ना : जो बात न होय बेटा। हम असल पै जा बस से रोज जात, सो कंडक्टर साहब हमैं अच्छे से चीनत-जानत। ऐईसे हमाये लाने आगे की सीट रखा लई ती। इमें छोटे-बड़े की कछू बात न होय। तुम आराम से बैठो हमें तो खुशी है।

मखनिया : हम जानत है कि आपका औ सब लोगन का कित्ती खुशी है। आपकी जेई खुसी के लाने तो हम आगे बैठ गए, और उठे नई। हमें पतो है कि आपको सबसे ज्यादा खुसी भई हुइ है। न भई होय तो हम अबै पीछे चले जात।

नन्ना : नई-नई तुम उतई बैठो। हमें तो आतमा से खुशी है। हमें कछु फरक नई परत।

मखनिया : फरक नन्ना इत्तो परत कि तुम आव बामन, सो सबके ऊपर आप की जगा है। हम जात की अहीर-दउवा आयं सो हमाई जागा सबसे नैचे कहाई। आप औरें जो करौ सो सब सोहत। औ हम तनक लैन छोड़े सो बेजा कहाउत।

नन्ना : एसो कछु नई आय। बस गाड़ी पे काये को ऊंच-नीच। काये को गरीब अमीर। जो पइसा देय सो बराबरी से बैठे। गाड़ी तो सबके लाने आय।

कंडक्टर : लो, साहब आ गये। इन्हैं ऊ आगे वा[illegible] सीट पै बिठाओ। .... पंडत जी आप [illegible] एकदम ड्राईवर की बाजू वाली सीट [illegible] निकर जाव। होई बैठो।

हेडमास्टर : अच्छी बात है (बस में चढ़ने के बाद).... आज नन्ना काये पछाऊं मुंह लटकाये बैठे? कछु गप-शप नई हो रई ?

एक यात्री : अबे तक गप्पई आय हो रही ती। मजबूरी म आय ठते बैठे। येई से तो मौं लटको।

नन्ना : देखो यार, तुम औरें फालतू की बातें न करं करौ। जहां सींक न जाय ठतै मूसर घुसेड़बे की जरूरत? इतै बैठे कि ठतै बैठे। ईमें का मजबूरी आ गई? आपस में लड़ाये से का फायदा मिलने ?

यात्री : आपको औ ई बाई को का अपसाना। ये कऊं की औ आप कऊं के। आपकी ऊंको कहा-सुनी भई, सो हमने भी तनक सी कै दई। बुरई लगी होय तो हम कान पकरत। लड़ाबे की तौ कछु बातई नई आय।

हेड मास्टर : का हो गओ, नन्ना? आज कछू है तो गड़बड़।

मखनिया : हम बताउत। हमसे पूछौ। हम आज उनकी सीट पै आगे बैठ गए सो उनकी बेइज्जती हो गई। इत्ती बात आय।

हेड मास्टर : हौं, है तो बेजा। नन्ना रोजई ऊ सीट पै बैठत ते। सयाने-बूढ़े हैं। बामन हैं। सब उनको मानत भी हैं। कई बार तो उनै देख कै लोग उठ जात।

नन्ना : भइया, मैं कऊं नई कहत कि मैं बामन हौं। इज्जतदार हौं। बड़ौ आदमी हौं। जा कहकै

मोई मखौल काय उड़ा रहे ?

हेड मास्टर : नई बाई। करो तो तुमने बेजा है। कन्डक्टर ने तुमै बताओ तो हुई है ?

कंडक्टर : मैंने तो ऐन बताओ। समझााई कि बाई पछाऊं सीट खाली है। चली जाव। नन्ना को बैठने। पै जा विधाता ऐसी जवर्जस्त निकरी कि नन्ना खां भी दस ठो सुना दई। वे भी चुप रै गये।

नन्ना : ऐसी कछू बात नई आय। हम तौ खुस हैं। हमैं काये की बुराई ? सब बराबर हैं। ऐसी जांगन पै जात-पांत की बातैं न करो चइये। काय साहब ?

मखनिया : साहब से नई, हमसे पूछो। सबके भीतर ऊंच-नीच को भाव भरो है। बाहर कछू, भीतर कछू। हम इतै बैठ गए, सो सबको अचरज हो रओ। अनरथ लग रओ। मखनिया आगे, नन्ना पाछे ? लोगन का सहन नई होत।

नन्ना : हम तौ अपनी आत्मा से कै रहे कि हमें कछु बुराई नई आय। जात-पात से का होत ? आदमी जात-पांत से छोटो-बड़ो नई होत। आचार-विचार से होत- अकेले लिहाज कायदा तो करो चइये। जा तो मनुष्यता आय।

मखनिया : जेई तो हम कै रहै। सब लोग दो मुंही बातैं करत। चाहे नन्ना होय, चाहे साहब होयं, चार्यें कोऊ।

नन्ना : अब ईमें दो मुंही का हो गई ?

मखनिया : आप हमैं नई चीनत। हम आपका चीनत । हम मंडल के गबडू दउआ की बहु आयं। गनेशी की घरवारी। मखनिया।

नन्ना : ओ, अच्छा............। तुम गबडू की बहू आव ? मैं तो तुमाये घरै दो बेरै चाय पी चुकौ। एक बेरा गनेशा ने मोको थैला भर बेर लाके दये ते। तुम्है याद है ?

मखनिया : सब याद है। हमैं तो बा सोई याद है जबै आप अम्बेदकर जयंती में भासन करबे आये ते। सरपंच हते संगै।

नन्ना : हां-हां, रात में देर हो गई ती, तो सब जने बरगद के नैचे सोये ते। और उतई भटा-गकरियां खाईं ती।

मखनिया : जो तो हमें पतो नई। बाकी भासन में आपने कई ती कि औरतें आगे आएं, बढ़ै, काम संभारै, तबई सबकी तरक्की हो पाहै। देश को भलो हुई है और अम्बेदकर जी की आत्मा को सांति मिलहै। काऊ से डरबे की, पीछे रहबे की जरूरत नई आय। हम सबकी मदद करबी।

नन्ना : हां-हां। कही ती। रोज कहत। हमाओ तो अटल विश्वास है कि जब तक हमाये देश की औरतें हिम्मत से आगे न आहें, पढ़-लिखकै सब काम न करहैं, घूंघट काढ़ कै चूल्हो-चक्की करत रैहैं, तब तक कछू नई होने। जबरा औ बेईमान शोषन करत रैहैं। कछू कल्याण नई हो सकत।

मखनिया : भासन मा, सम्मेलन मा जे सब कहत। उपदेश करत। औ बस पै हम आगे बैठ गये तो सबकी छाती मा जलन होत। हमाई हंसी ठिठोली करत। जेई तो दो मुंही बातें आएं।

नन्ना : अब तो तुम चिन्हार-जनार की, घर की बहू-बिटिया कहाय गई। तुमै ऐसो न कओ चइये। हमने तो कई नई कि तुम पाछे जाव। आगे न बैठो। हम आ गये तो तुम उठ जाव। फिर नाहक की गऊ हत्या हमारे ऊपर काये लगा रई।

मखनिया : गऊ हत्या नई लगा रये। सांसी कै रये। सो भीतरई-भीतर सबको चींटा आय लग गओ। ऊपर से कछु कओ। अब देखो बै साहब जौन आठ-आठ दिना अपने दफ्तर से गायब रहत, इनने बस पै चढ़तई-कैसी बातें करीं तीं?

हेड मास्टर : हमैं न समेटो बाई। हमने का बेजा कई ती?

मखनिया : नन्ना को तै बैठे देख कै आपको अचरज भओ तो? अपन तो पढ़े-लिखे, शिक्षक आव। साहब हौ। सबको ज्ञान-शिक्षा देत। आपको तो इतै एक औरत को बैठे देखकै खुसी भओ चइये। एक औरत ने ऊ सीट पे बैठबे की हिम्मत तो करी। कंडक्टर से अपने हक के लाने लड़ी। छाती फूलो चइये। फूलबे की जागा, सबकी छाती फटन लगीं। आतमा पै हाथ धर कै ईमानदारी से सब जने बतावो कि का हम गलत कै रये?

नन्ना : हम तो तुमाई तारीफई कर रये। इत्ती बातें करबे को साहस तौ तुमपै आवो। आगे बैठबे की हिम्मत तो करी। जा भावना तौ जागी कि सबको बरोबर को हक है। कोऊ छोटो-बड़ो नई होत। दादा-गीरी अलग बात है।

मखनिया : नन्ना। हम तो अब तुमाई बहू बरोबर है। आप हमाये पूज्ज हौ। कहौ तो हम आपखों सिर पै बैठायें। आपके चरनन पै सिर ध दें। हमैं कछू बुरई न होय। पै इतो ईमानदारी से कहौ कि जब हम आगे को सीट पै बैठ गए ते, और कंडक्टर के कने से आपके आए पै भी सीट छोड़बे से मन कर दओ तो, तौ आपको भीतर से बुरौ न लगो? सांची-सांची कहौ भगवान की कौल करके। आपको मौं बेगर गओ तो। चेहर उतर गओ तो। भीतरई भीतर गुस्सा सोई आ गई ती। सांची कहौ नन्ना, संकोच न करियो।

नन्ना : देखौ बेटा, इन बातन पै न जाव। मन बेगरो कि नहीं, ई बताबे के लाने भगवान कों कौल-कसम कराबे की जरूरत नई आय। परिवर्तन एक दिन मा नई होत। दुनिया मा सब तरां के लोग होत।

मखनिया : दुनिया की नई, हम तो तुमाई आय कै रये। काय आप तो सब जागा भासन देत। दलितन का जगाउत। औरतन खों समझाउत। नियम-कायदा बताऊत। पै आप मा सोई बा बात नई आय। सम्मेलन मा कछू, औ घर-बाहर कछू। साहब हरन की तौ खैर का कहने।

नन्ना : तुम कछू कहो, पै हम छूत-छात, ऊंच-नीच नई मानत- सबके घरै खात-पियत। सबका अपने घरै खबाउत। मौका परत तो सबके लाने लड़ाई भी लरत। बाकी, सबको ठेका तो कोऊ नई ले सकत।

मखनिया : सबको छोड़ो, आदमी अपनोई ठेका लै ले

तो भौत है। अब उत्तरप्रदेश, विहार म औरते मुखमंत्री वन गई सो काऊ को अच्छो लगो का?

हेड मास्टर : अच्छो लगै-चहै न लगै, राज तो उन्हें मिलई गओ।

मखनिया : मिल गओ कि सबने मिलकै सौंप दओ? ओई पै लोग हंसी उड़ा रये।

नन्ना : को हंसी उड़ा रओ? उड़ाउत हैं तो उड़ाउन दो। ऊकी का फिकर करने।

मखनिया : फिकर होत है नन्ना, लोग ओछी बातें करत तो मन को कलेश होत काल गांव मा विलात लोग कै रये ते कि अव घोर कलजुग आ गओ। दउवा, लोधी, दलित जात के हांतन राज चलो गओ। विहार मा पती गओ सोपतनी आ गई। जे ऊंठा छाप कैसे राज करहैं। सत्यानास होने।

नन्ना : दुनिया में हर तरा के लोग होत वाई। भांत-भांत की बातें होती। उनमें मजा लओ चइये। बुरओ न मानो चइये।

मखनिया : आदमी ऊंठा छाप होय, वड़े लोग ऊंठा छाप होंय, चाय जित्ते बेगारें बनायें, ऊकी चर्चा कोऊ नहीं करत। पंचात वनी हमाये इतै। सब वड़े लोगन ने हतिया लओ। दुनिया भर को भ्रष्टाचार मचो। न कोई सुनै, न देखै। अव कोऊ औरत सरपंच वनी होती औ जेई करती तौ हजार जीभन से बढ़-बढ़ कै बातें होती।

हेड मास्टर : का भ्रष्टाचार हो गओ बाई तुमाई पंचायत मा?

मखनिया : गांव के गरीब-दलित लोगन के नाम पे विजली, सड़क, अस्पताल, कुंआं, खेती, स्कूल, अनाज, पंप सबको पइसा आओ। कलट्टर साब ने पहुंचाओ। सब बड़े लोगन ने बांट लओ। अपने घरन पै धर लओ। गांव ऊंसई का ऊसों नरक बनो है। कोऊ सुनइया नई आय। एक दिना औरतन को जुलूस निकरो सो गांव मा हाहाकार मच गओ। बड़े लोगन ने कई कि जे अनरथ के लच्छन आय। कलजुग आ गओ। तवई तो औरतें लरबे निकर परी।

हेड मास्टर : हमैं जानकारी नई आय।

मखनिया : आपका जानकारी कहां से होय। आप ओरन की सामिलात से तो सब हो रओ। औरतें अपनी तकलीफ बतायें तो अरथ हो जात और आप कै रये कि औरतें आगे बढ़ै।

नन्ना : तुम्हाये भीतर जा भावना आ गई, जेई तो जागरन को लच्छन आय। जेई भावना से ताकत बढ़त आज हमें तुमाई बातें सुनकें आत्मा से खुसी भई । तुम सबका समझा कै औरतन को संगठन बनाओ।

मखनिया : हमाओ बस चलै तो हम घर-घर मुखमंत्री बना दें औरतन खां। सबकी नौकरी लगा दें। हर गाड़ी बस मां आगे की सीटेंगरीबन, दलितन औरतन का रिजर्व करा दें। सरकारी पइसा से गांवन का चमका दें। पै आदमियन के मारे ''न नौ मन तेल होने, न राधा को नाचने।'' कलजुग मा सतयुग नई आ सकत। बातें भले करौ।

नन्ना : आहै बाई, आहै। धीरज धरौ। भगवान के घरै देर है, अंधेर नई आय।

मखनिया : अब तो भगवान पै भी विस्वाश नई रओ

नन्ना! भगवान होते तो बेईमान मजा मारते? बेईमानी इत्ती फैलती? गरीबन दलितन खां इत्ते दुख-अपमान सहने परतो? गांवन का जीवन तो नरक है नरक। जो रहत सोई जानत दांतन के बीच मा जीभ जैसो।

नन्ना : मैं जानत हौ गांवन को हाल। गांव मा, गांव बारन के बीचई मा मोरी जिन्दगी बीती। पचास साल में परिवर्तन तो भओ है। पै उत्तो नई भओ, जित्तो भओ चइये। आगे और हुई हैं।

हेड मास्टर : परिवर्तनई को प्रभाव आय कि तुम बाई इत्ती बातें कै रई। तनक विचार करौ कि का दस-पन्द्रा साल पैलें ऐसी कै सकत तीं? जबान न खुलत ती। घूंघट न खुलत्ते।

नन्ना : परिवर्तन तो है। स्कूल, बिजली, पानी, अस्पताल, सड़क कई जगा बन गई। पंचायत से काम होन लगो। हां, ईमानदारी अवस चली गई। विकास भओ, तो बेईमानी को विकास भी खूब भओ। बेईमानी की जगा ईमानदारी आ जाती तो फिर पूरो प्रभाव दिखतो। बेईमानी ने सब लील लओ। कई गांव तो ऊंसई हैं अबै , जैसे पचास साल पैलऊं हते।

मखनिया : वेईमानी ने पइसा और विकास तो खाई लओ, भलमनसाहत सोई चली गई। आदमी-आदमी को दुश्मन हो गओ। सब समेटबे मा लगे। तबई तो पूरे देश पे इत्तो भ्रष्टाचार मचो है।

हेड मास्टर : अखबार, टी.बी., जहां देखो, उतई जेई-जेई की बातें भ्रष्टाचार की बाढ़ सी आ गई । कोऊ साफ नई देखात। परदा के पछाऊं सबई नंगे हैं। अदालत रोज खिंचाई कर रई। बहुत से तो जेलन म परे और कछू जाबे की तैयारी कर रये।

नन्ना : जेई से हम कै रये कि आदमी सब भ्रष्ट हैं तो औरतें आगे आके सब संभारें। आदमियन खां ठीक करें। तबई विकास हुइहै। तबई कल्याण हुइहै । खाली बातन से कछु नई होनें। औरतें तो ईमानदार हैं। बे सब कर सकतीं।

मखनिया : लो, बातन-बातन मा ठिकानो सोई आ गओ। हम जा रये। कछु बेजा कही-सुनी होय तो नन्ना हमें माफ करिओ। अब कोऊ और बैठक मा भेंट हुई है तबई बातें करहैं। हमने तो पक्की गांठ बांद लई। (क्लीनर की सीटी। बस रूकने की आवाज। मखनियां तथा और यात्रियों के उतरने की खटपट)

कंडक्टर : ये बोई, किराओ तो देत जाव। आगे की सीट पै बैठीं, औ किराओ भी गोल। ऐसी जबरई?

मखनिया : जब नन्ना औ साहब से किराओ नई लओ, तौ हमसे काय लै रये? जेई तो भेदभाव आय, जेई गुस्सा पैदा करत। ई में काये की जबरई? एक से लेव, एक से न लेव, जो कैसो नियम आय?

नन्ना : जाव बाई जाव। हम दै देहें किराओ। चलो, कंडक्टर साहब चलो।

मखनिया : अपुन काय दैहो हमाओ किराओ? हमे तो देनई हैं। हम तो ऊकी असलियत आय बता रये ते। लो, संभारो अपनो किराओ। सबको राम-राम। (जाने की आवाज)

12-MIG चौबे कालोनी,
छतरपुर (म.प्र.) पिन-471001

* * *

बुन्देली लोककथा

"चिरैया का दाना"

अजीत श्रीवास्तव

भौत पुरानी बात है, एक चिरैया हती, ऊखों एक जगा एक नाज कौ दाना पड़ौ मिल गऔ, सौ ऊनै बौ दाना चौंच में दाबो और लै उड़ी। उड़त-उड़त चिरैया एक मकान में लगे लकड़िया के खूँटा पै बैठ गई औ पंजन से दाना जैसंई काड़ो बौ दाना खूंटा बीच में फटो हतो सो ऊ दराँच में पिड़ गओ, बा बिचारी चिरैया बिलात देर तक दाना निकालत रई पै बौ नई कड़ो सौ हारकै बा एक बाढ़ई के लिगाँ गई और कन लगी

"बाढ़ई-बाढ़ई खूँटा-फारो। खूँटा फार के दाना निकारो।"

बाढ़ई काम में लगो तो सो बोलो- "मायें भग जा मोनौं समय नइयां।" चिरैया को भाई बुरौ लगो उतै से उड़के सिपाई के ऐंगर पौंची औ कन लगी-

"सिपाई सिपाई बाढ़ईखों डांटो। ऊसें कै दो, खूंटा काटो।"

सिपाई ऐंड गओ "हटो इतैं से, तुमाय लानै हम बाढ़ई डपटवे जाये।" चिरैया भाई दुखी होके सेनापति के पास पौंची ओ सिपाई की शिकायत करी पै सेनापपति ने चिरैया की एकई नई सुनी डपट के बोलो - "मायें भग जा तोरे लाने सिपाई खों डाँटू", अब तो चिरैया राजा नौं पौंच गई उनसे विनय करी सबरी बात सुनाई, राजा कनलगो-

"राजा होके सेनापति खों डपटायें। हम छुटकू पंछी के काम आयें।"

चिरैया ने हार नई मानी, सूदी रनवास में पिड़ गई, मा रानी परी हती सो उनसें कई- "रानी-रानी, राजा खौं रिसाओं, खूंटा फड़वा कै दाना निकरवाओ।" रानी फनक उठी "भगो इतै से, तुमाये लाने हम राजा खौं रिसाये" चिरैया की जब काऊ नैं नई सुनी सो वा चुहिया के लिंगा पौंची, बोली "चुहिया-चुहिया" रानी के कप्पर काटौ, चुखरिया मौं मटका कैं का बोली- "हमसें कपड़े नहीं फटते, नई काटने रानी के कपड़े", इकाऊ दुखी होकें चिरैया बिलईया नौ गई उसे कई- "बिलईया बिलईया चुखरिया को पकरौ, सूदौ चाय गुटकौ।" बिलईया थकी हती सौ कन लगी "तोरे लाने चुखरिया बौड़ूँ, ऊखों पकरवे दौंड़ू" चिरैया जान गई इतै काम नई बनने, जात में गैल में कुत्ता मिल गऔ सो ओइसै कई कुत्ता कुत्ता बिलैया खाओ, नई तो उये समझाओ, कुत्ता ने चिरैया की सुनी ही नईं। चिरैया नै फिर लठिया से कई "लाठिया-लाठिया कुत्ता मारौ, हमाओ काम निकारौं।" लठिया औरई तन गई, काम नई भओ इतै चिरैया थक गई पै हार ऊनें तौई नई मानी वा सूदे आग नौ गई ऊँसें कई "आगी आगी लठिया बारौ, कैसऊ दाना निकारौ" आग ने भी मना कर दई सौ नदिया तक उड़के चिरैइया गई "नदिया-नदिया आग सिराऔ, हमाओं काम बनवाऔ" नदिया ने तुरतई मना कर दओ सो चिरैया ने आत भऔ हाथी देखो सो उसे राम राम करके कई "हाथी-हाथी पानी सोखौ" हाथी झूमत कड़ गओ। तब तक चिरैइया इकाऊ हताश हो गई तो, मन मारके घर जान लगी सो चिंटी मिल गई चिरैइया ने चिंटो से सबरी बात बताई फिर कई "चिन्टी-चिन्टी हाथी सूँड में काटो, कै संगे चल कैं हाथी को डाँटो।"

चिन्टी इकदम काम करबे तहयार हो गई और

चिरैया के संगै चल दई, हाथी ने दूरई से चिन्टी खों चिरैया के साथ तको सौ कै उठो।

''हमें न काटियो कोऊ, हम पानूँ सोखें सोऊ''

चिरैया हाथी खों लैके नदिया के पाट पै ठाड़ी भई नदिया जान गई, हाथ जोरकै बोली- ''हमें न सोखियो कोऊ, हम आग बुझायें सोउ'' पानी चिरैया के संगै आग के लिंगा पौंची सो आग घिघयान लगी। ''मोये न बुझइयों कोऊ, मैं लठिया बारौं सोऊ'' उतै से नदिया खों छोर के चिरैया आगी के संगै लठिया नौ पोंची, लठिया तुरतई चिरैया के संगे आ गई कन लगी-

''मोये न जलइयो कोऊ, हम कुत्ता मारे सोउ'' लाठी लेकें चिरैया खो आतन कुत्ता नै तको सो भोंको-

''मौय न मारियों कोउ, हम बिलइया खैहे सोउ''

कुत्ता, चिरैया खो बिलइया ने आत देखो सो चिल्ला परी -

''हमें न खइयों कोऊ, हम चुहिया खैहे सोउ''

विलइया तुरतई चिरैया के संगे चुखरिया खाबे चल गई, इतै चुखरिया देखतनई जान गई सो का बोली -

हमें न खइयों कोई, हम रानी कप्पर काटें सोउ''

रानी के विस्तर लिंगा बा चिरैया जब चुखरिया खो लैकें पौंची, रानी बमक कै उठी बोली -

''हमायें कपड़े न काटियो कोई, हम राजा सिं[illegible] सोई''

राजा नै चिरईया, चुखरिया के संगै रानी खों [illegible] देखो सो हंसके कन लगो-

''हमसे न रिसाना कोउ, हम सेनापति [illegible] सोऊ''

राजा नै सेनापति खों टिराओ, सेनापति [illegible] देखतई सब जान गऔ

''हमें न डाटियों कोई, हम सिपाई डाटें सोई''

सिपाई खों बुलाओ गओ, हांथ जोर के [illegible] बोलो -

''हमें न डपटियो कोई, हम बाढ़ई से कैहें सोई''

सिपाई खो चिरैया संगे देख बाढ़ई हांय [illegible] लगे।

''हमें न डाटियों कोऊ, हम खूंटा फारें सोऊ''

बाढ़ई नै चिरईया के साथ जाकै खूंटा फार [illegible] दाना कड़ आओ, चिरैया दाना लैकें फुर्र सै उड़ गई, [illegible] हती सो निपटी।

राजीव सदन, नायक मोहल्ला
टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001

* * *

हिए की इकाऊ फूट गई का

- चिन्तामणि वर्मा

टीकमगढ़ के अखीरी राजा वीरसिंह जूदेव खाँ शिकार कौ इतनौ शौक हतोके रियासत के दीवन के पद पे दस दर्जा तक पढ़े लिखे एक ठाकुर सज्जनसिंह खाँ नियुक्त कर लओ तो । वे देश के नामी शिकारी हते। हमारे गाँव कके लगकें चारउ तरफ मीलों तक खूब घनी डांग हती जी में शेर, तेंदुआ, रीछ, नीलगाय, लड़ैया, बंदरा आद भारी जानवर रअ करतते । हमारे दद्दा पलेरा में पटवारी हुते गांव में एक थानों हतो उमें थानेदार और पांच सिपाई रऊ करते ते।

महाराजा सा.साल में एक बार दशेरा, दिवारी के मौका पे अपनी बग्गी से अपने कछू अफसरन और सिपाइयन खा लैके पलेरा शिकार खेलवे जरुरई आउत ते । अफसर धोड़े पै बैठ कै और सिपाई पैदल आउत ते ।

एक बार महाराजा सा. कौ शिकार कौ कार्यक्रम बनेरे तो ऊ के इन्तजाम की जिम्मेदारी हमारे दद्दा पलेरा के फारिस्टर और थानेदार पै लादी गई। पैला तौजतारा से पलेरा तक बग्गी के लाने कच्ची सड़क बनवाई गई फिर पलेरा की डॉग में झिझरिया नाम की तलैया के तीन तरफ लकरियन के ऊँचे ऊँचे मचान शिकारियन के बैठवे के लाने बनवाए गए । महाराजा सा. के लानै झिझरिया कै किनारे ईट, चूना की पक्की दालन पैलऊँ सै बनीती । पलेरा गांव से लगो भओ बाहर खाँ एक सरकारी बंगला हतो ऊमै महाराजा सा. के और बंगला के चारऊ तरफ अफसरन के ठहरवे के लाने कपड़न के तम्बू ताने गए । जे सब काम बिगाराई में करवाए जाते ते काउ खाँ कछु मजूरी नई दई जात ती । महाराजा सा. की तरफ सै इन कामन के लानै रुपइया भेजे जात होंय पर उन सब रूपइयन खाँ अफसर आपस में बाँट लेते दे।

अहीरन की ओसरी भरपूर डेरा पै दूध दई देवे की और बानिया की ओसरी लाय आटा दाल, चावल, घी आदि की बांध दई गई।

सबरे इलाके में खलबली मच गई ती । विचारे छोटी जात के गरीब सैकरन मजदूर इन्तजाम के लाने पकर लएं गए ते कोउ कछू नई कै पाउत तो । नाऊअन की ओसरी अफसरन के जरुरत पड़वै पै पैर दवाने की और दतौनन को इन्तजाम रखवे की, ढ़ीमरन खाँ डेरा पै बड़ी बड़ी डायरियाँ मटकियाँ भरी रखवे की और पानी पिलावे के लाने ओसरी बाद दई गई ती । दद्दा ने शिकार खिलावे की जिम्मेदारी संभारी थाने दारने हाँका को इन्तजाम करो । महाराजा सा. दालान की छत पे विदेशी बन्दूक लैके बैठ गए उनके बगल में इलाके कौ नामी शिकारी बुदुआ सौर खाँ बन्दूक लैके बिठा दओगओ । महाराजा सा. ने दद्दा खाँ अपनी दूसरी बंगल में बन्दूक लैके बिठवा दओ । दद्दा ने तौ अपनी जिन्दगी में कभऊँ चिरइया तक नई मारी ती पे नौकरी जावे के डर से विचारे डरात डरात महाराजा सा. के बंगल में बैठ गए ।

हौका शुरु भयो । तीन तरफ खड़ी जनता ने ढोल, मृदंग, टीन और थारी बजा के खूब हल्ला करो सौ जानवर चौथी तरफ जौन तरफ शिकारी और महाराजा सा. शिकार करवै बैठे ते भगन लगे । महाराजा सा. ने बुदुआ सै के दई कै जई शेर आउत दिखाय तौ अंगरिया से इशारे कर दिए मौसे कछू न बोलिए सौंर तौ ऊ चिरइया की बोली जानत

तो जौन शेर के संगे पेड़न पे बोलत जात सौ सौंर तो चिरइया की बाली ताई देख रओ तो महाराजा सा. चारउ तरफ देख रए ते ।

थोड़ी देर में बुटुआ खाँ एक शेर सामने से झाड़ियन में लुकछिप कै आवत दिखानौ सौ ऊनै राजा खाँ तीन बेर इशारो करो पै राजा खाँ शेर न दिखानो। जब शेर ऐंगरई खाँ आऊत दिखानो तौ बुटुआ खिसयाकैं बोलो हिए की इकाऊ फूट गई का बौ आ रओ सामने से बाप'' और बुटुओं ने अपनी बन्दूक से गोली दाग दई । बुटुआ की गोली लगवें से शेर घायल होकर गिर परो तौ राजा ने भी ऊँ पै दो तीन फैर दाग दए । शेर उतई ठेर हो गओ । हल्ला मच गऔ कै महाराजा सा. ने एक बहुत बड़े शेर को शिकार करो । दीवान सा. ने एक तिंदुआ मारो ।

भारी खुशी मनाई गई। शिकारियन खाँ भोजन के संगै शराब परसी गई । महाराजा सा. और दीवान सा. ने विदेशी शराब पीओ । आसपास की नचनारियन के नाच गाना भए उन्है इनामें बाँटी गई ।

महाराजा सा. खाँ भारी खुशी भई । महाराजा सा. खाँ जन चारउ और घेरे कछू अफसर बैठे ते तौ महाराजा सा. ने हमारे दद्दा खाँ बुलाकै कई कै ऊ सौर खाँ बुलवाओ जौन शिकार के लाने हमाए बगल में बिठाओं । गओतो । हमारे दद्धा ने सौर खाँ ढुढवा के बुलवाओ और ऊसे कई तुम्हे महाराजा सा. ने बुलाओ चलो वो डरन के मारे रोऊन लगो और कहन लगो । दद्धा उखौ कौनऊ तरा से समझा बुझा के महाराजा सा. के पास लुआ गए । महाराजा सा. ने बुटुआ से कई कै तै वे शब्द फिरकई दुहरा जौन तैने हमसे दालान पै बैठे बैठे कई ती । वह महाराजा सा. के पावन तरै गिरकै माफी मागन लगो रौन लगे । महाराजा सा.ने ऊखों उठा कै कई के हम तो सै नाराज नइयां तुम बिना डर कै कऔ । हम तुमें इनाम दैहै । ऊनै हिम्मत बांध कै कैदई कै हमनेजी कई तै के 'हिए की इकाऊ फूट गई का आ रऔ तुमाए सामने सै तुमाएँ बाप महाराजा सा. खूब खिल खिला कै हसन लगे तो सब अफसर हंसने लगे ।

महाराजा सा. ने बुटुआ खां पांच रुपइया इनाम में दुआ दए और ऊएं पलेरई में सरकारी पक्की नौकरी बनरखा दुआ दई । हमारे दद्धा की तनखा में दो रुपइयाँ मईना की तरक्की करा दई ।

फौलादी कलम मार्ग

छतरपुर (म.प्र.) पिन-471001

दूरभाष : 07682-242042

* * *

बदलत भए मूल्य

- कैलाश मड़वैया

कैलाश मड़बैया बुंदेली और बुंदेलखण्ड के लिये समर्पित रचनाकार है । वे बुंदेली में अनेक पुस्तकों का संपादन और लेखन कर चुके हैं। प्रस्तुत ललित निबंध में उन्होने अपने समय-समैया को ललित शैली में उकेरा है। संपूर्ण रचना बुंदेली की मिठास से ओतप्रोत हैं।

हैं आज बसंत पाँचें है। माता सरस्वती के पूजवे कौ दिना और मौसम के बदलवे की घण्टी। पै ई सालै जाड़ौ तो दमई नई लै रॅव । भुंसारें उरइयॉ में बैठवे निकरत सो उरईंयां लों ठिठुरत सी लगत; भरदुपरै तनक घामौ कड़त सो ओई में घरीक आराम मिलत कै फिर भुंसारें-दिनडूबें और रातभर कड़कड़ाकें ऐसी हाड़फुटउल ठण्ड परत कै कपकपी में दाँत किड़किड़ा कै रै जात । अच्छन अच्छन की चूलें हला दई ई साल के जाड़े ने । न पल्ली/कमरा में चैन परत और न हीटर में नौनों लगत। एक तौ मांगी बिजली और फिर रतई कित्ती देर है ? चुनाव के औसर पै भले सरकार बिजली नई काटत बाकी समय तौ विजली रत कम है जात जादाँ है। कौनउं काम में मनई न लगत-ई पनमेसरे जड़कारे के मारें । कौड़े तो अब कउँ दिखात नइयॉ, गुरसी-बरोसीं अब धरी काँ है। ऐसी ठण्डन में पैल नगर निगम की तरफन से अलाव बारे जात ते पै अव तौ बेई कागजन में अलाव बर जात-बुज जात । गरीव आदमी भले जड़याके मर जावें पै नेतन-अफसरन के फर्जीवाड़े नई रुकत । हालाँकि कत कै पूरी दुनियई में ई साले ठण्ड कछु जादई पर रई । काय कै समुंदर में ग्लेशियर पिघल रए-'ग्लोबल वार्मिग' के कारन से, कार्वन उत्सर्जन भी ऐन बढ़ रऔ सो प्रदूषण पसर रऔ और मौसम के वदलवे तक पै असर पर रऔ । अब रितुअई का करवें जब प्रकृति से ऐन छेड़छाड़ हो रई । धरती पैइ नई बादर तक में आदमी गर्रा रऔ । सवई मन की कर रये । दूरदर्शिता बची नईंया तुरंत सब कछू चानें । 'बनत बरा कै पीलटें तेल ?' की चुनौती है। धरम ध्यान की कछु साजी गत रई नइयॉ, उतै केवल दिखावटीपन होन लगे, धंधे होन लगे । हालत जे हैं कै कैउ साधु जेल में है। कैउअन पै बलात्कार, अतिक्रमण, जालसाजी और सम्पत्ति बनावे के केस चल रये । अब कोऊ उनसे जा नई पूछत कै भैया त्याग कौ मतलब साधु होवो होत तौ जब संग्रह में जुटे तौ साधु काँ से रै गए ? पै विज्ञापनी भौतिक चमक दमक के पावे के लानें बिना मेंनत के आदमी खों पइसा ऐन चानें । सो कछु उल्टो सूदौ तौ आदमी खों करनई परै । काय कें सूदे चले सें तौ अब दार- रोटी लो नई मिल पा रई । को खा पाउत सौ रुपइया किलों की दार उर तीस रुपइया किलो के भटा-प्याज । पिसी तौ माँगी हैई जुनई, बाजरा तक हदें टोर रये । अरे शक्कर पचास रुपइया किलो की भई सो तौ बड़े जानें, पै ससुर गुर तक अब शक्कर की चाल चल रऔ । दूद तौ माँगो होतई के ऑय पै पानियई मिलावटी पी रये । कत के जौन पानी हम पी रये ई में घुरे गंदगी के तत्व न छानें से कड़त और न खौलायें सें । वे विज्ञापन बारे आउत सो कत कै आर.ओ. लगबाओं - पानी मीठे करवे बारी मशीन बीस हजार की नईतर हात पॉव रै जें उर कैउ, तरॉ की बीमारी भीतर से होन लगे-ई बौरिंग के पानी से । अब बतावौ को पी पाउत सोरा रुपइया की एक बोतल 'मिनरल

वाटर?' तला पूरे जाराए, जंगल कट रये उर क्रांकीट की बादर छुवईयन बिल्डिगें सन्ना रई । कायके इनई से बिल्डरन के घर भर पाउत, नेतन, अफसरन खों भारी कमीशन नम्बर एक घाँई मिल पाउत ।

भारत में जंगा की कमी नौई है पै काम तौ बेई हुइयें जी में बड़े और बड़े होंय, भले गरीब और रसातल में चले जायें । बहुमंजिली बिल्डिंगन में आदमी खों कीड़ा-मकोड़ा बना के टाँग देत सो बस टी.वी. में उनके बने बनाये खेलन में फंसौ, जियौ और मर जाऔ । जौन तनखा सेकमाऔ सो आज के मौड़ी-मौडा विज्ञापन में देखे, गैरजरुरी सामानन में खर्च कर डारत । अब एई कथित प्रगति खों ओढ़ो, बिछाऔ, चाये खाऔ और चाय पियौ ।

विकास के नाव पै सब साँसौ उर सब साजौ है। दरसल जब आदमी खों केन्द्र में राख के विकास करौ जै तब ऐसउ हुइयै । होय तौ जौ चाइये कै विकास के केन्द्र में आदमी के संगै जीव जन्तु और प्राकृतिक पर्यावरण भी भय चाइए तवई जल, जंगल, जमीन बचें और आदमी स्वस्थ रै पें । पर्यावरण के संतुलनई में मौसम आफत की मार से वच पैंहे । वसन्त सोउ तबई खिलखिला पै । नईतर कॉ के वसंत और कॉ के तीज त्योहार? अब दिखात कॉ हैं गेंदा, चमेली के फूल ? जॉ देखों विदेशी बिना गंध के फूल सरकारीतौर पै लगाये जा रये । सुंगंधित फूल नई अब कैक्टस, आधुनिक और बड़न के ड्राइंग रुमन में सज रये ? की नें देखे भौंरा उर कोयलें कूँकत ? अब तौ बगदर यानी मच्छरन की भुनभुनाहट के सिवाय और कछु सुनाई कां देत ? की खों फुरसत है - बागन में बगरों बसंत है पढ़वे की ? जॉ देखो फिल्मी गानन की अंताक्षरी हो रई । को रटत साहित्य के गीत ? और साँसी तौ जा है अब जौन साहित्य में कविताई हो रई या जब समझई में नई आउत तौ का तौ बा आनंद दै और फिर कायखों उयै कोउ रटै ? पै परी तौ है आधुनिक और विदेशी नकल की । अब जौन काम दो पइसा की नीम की दातुन से हो सकत उके लानें हम सैकरन रुपइया रसायनिक पेस्ट और बुरुष में खर्च करकें भुंसरा से मौं में फसूका भरवे के आदी होगये । केवल जौ विज्ञापनन कौ चमत्कार है। आखिर जौन चीज हम अपनी बैठक में कैउ दार अपने टी.वी. में वार-वार रंग विरंगी तस्वीरन में देखे ऊ कौ कछु न कछु असर तौ समझ पै परतई है। एई मनोविज्ञान कौ फायदा जे टी.वी. वारे उठाउत । एई सें अब कावतें बदलत जा रई, समाज के मान दण्ड बदल गये यानी जीवन के मूल्य वदल गए। अब जैसे 'दिया तरे इंदियारौ' नई रऔ-कभउं देखो जलत बल्व के नेंचें इंदयारौ ? ऐसई अब पढ़वौ लिखवौ जरुरी नई रऔ न खेलवौ-कूँदवौ बुरऔ आय, बा कहावत बदल गई कै-पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नबाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब । अब खेल में जित्ती आमदनी होत, पढ़े लिखे में कॉ धरो ? बाबू बनके कित्ती तनखा मिलै ? न अब जा साँसी रई कै उत्तम खेती मध्यम बान,निषिध चाकरी भीख निदान । चाकरी में जौन मजा है बौ किसानी में कॉ धरे रई तो जा है कै अब तौ भीख माँगवौ भी फायदे कौ सौदा है। उर ब्यापार करवौ मध्यम नई रऔ । 'कण्टेनर आर बैटर दैन कण्टेण्स' की तर्ज पै मिलावट करौ और धन्धे में धन के सौ गुनें करौ । धन्धे में कौनउं आमदनी कमावे की सीमा नइयाँ जित्तौ बनै उत्तौ लूटौ । जैसौ चाय तेसौ लूटो जनता कौ कोउ नइयाँ पुछइया । न लाभ कमावे की सीमा तय आय और न नकली असली माल में कोउ अंतर करवे खों बैठो । जे सब बातें तौ नारों तक सिमट गई ।

अब धरम कौ, कै भगवान कौ डर तौ रऊ, नइयाँ, कायकै जा समझाई जात कै भगवान कछु नौई करत जौन करत आदमी अपनौ नौंनों बुरऔ खुद करत, ई से भगवान खों ने डराव । वे अपनीअई सुरक्षा नई कर पाउत, मंदिरन

में भागवानई की चोरी हो जात, अब वे तुमाई का सुरक्षा करें ।

मतलब अर्थ कौ अनर्थ हो रऔ और ऊसई समझो, समझाऔ जाऔ ?

जनम पै तौ आदमी नियंत्रण करवे में लगउ है - जब चाऔ तब मौड़ी-मौड़ा जनो, सुनी तौ जा तक कै अब शभ महूरत देखके लुगाईजनी प्रसव कराउतीं, नईतर इंजैक्शन से टारत रती । जौ पतौ परई जात के बिटिया होरई सो गरभ गिरवा देतीं । न इनें लाज शरम रई, न हत्या-हराम कौ डर रऔ । भले बिटियॉं लरकन से नौंनो निकरवें पै लालसा तौ जा है कै लरका हुइयै तौ दायजौ मिलै नम्बर दो की कमाई ल्यायै । भलई लरका बुढ़ापे में घर सें काढ़ देवै पै लरका की चाहना पुरुषन सें जादा महिलाओं में होत । अंधेर देखौ कै नारिअई अब नारी की दुश्मन बन गई।

बौ तो अकेलें मौतई पै बस नई रऔ आदमी कौ नईतर को जानें का करतौ आदमी । हालॉं के बातें करवे में कोउ सानी नइयॉं आदमी कौ । जब कोउ दूसरे की अर्थी में जात तब देखौ आदमियन की बड़ी बड़ी दर्शन की बातें और जेउ कभउँ खुद पै बीदत तब देखौ कैसौ मिमयात ।

जा भी साँसी है कै कछु क्षेत्रन में भौत बड़े परिवर्तन भए जैंसे मोबायल कौ आविष्कार, परिवहन में प्रगति, चिकित्सा के क्षेत्र में सुधार, दूरदर्शन से फासले में कमी, केलकुलेटर और कम्प्युटर से आमूल- चूल परिवर्तन .... पै इनको उपयोग अपनी सीमा में करबौ हमें आउत का कै हम अपनी मूल पूँजी हिरा के इनके आदी होत जा रये ? संयम, साधना और साँच की खोज रई का है । हम जा नई जानत काय, कै अन्न तौ जमीनई से उपजै, मौड़ी-मौड़ा तौ आदमी-औरत के जीन्स से ही जने जैंय, आदमी की मौत तौ हौनई होनें है, प्रकृति से सबई लगो है, ई के बिना तो कछु होनई नइयॉं तौ भैया कम से कम प्रकृति खों बख्शौ रऔ, सुविधा के लानें अपने संस्कार नई बिसारौ, दूसरे खों लूटे बिना अपनी भलौ करबौ सीखौ तो कोउ खों का शिकायत हो सकत ?

जौन चीजे तुमें नौनी नई लगती उनें दूसरन के संगे नई करौ। दूसरे खों उपदेश देवै कै पैल खुद सुदरौ तबई हम आप सब सुदरें । हम भले बदलवें पै हमाए नैतिक मूल्य नई बदलवें ।

पै हमाये नेता जौन करत उ कौ उल्टौ वे जनता से चाउत-वे मनचाऔ हमें लूटें और हम लुटत रयें, बड़े अफसर जनता की तनखा पै पलें और जनता खों ही गुलाम मानत रवें, । सॉंसउ आदमी से बड़ौ आदमी कौ दोस्त और दुश्मन कोउ नइयॉं ।

आखिर ऐसौ कबनों चलै । कबनों ....कबनों ....कबनों ?

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ.भा. बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद

75, चित्रगुप्त नगर, कोटरा, भोपाल,

मो. 09826015643

* * *

ब्रम्हपुत्र की पुकार

- रामनारायण शर्मा

रिपोर्ताज विधा का प्रारंभ घटना या दृश्य की तात्कालिक प्रतिक्रिया के केन्द्र से हुआ है। प्रस्तुत रिपोर्ताज एक मुकम्बल निबंध भी है। बुन्देली के विभिन्न तेवर इस निबंध में प्राप्त होते हैं।

विश्राम के बाद अलसाये मन सें ऊठौ तौ मोबाइल नें मानों चेतना जगा दई। नारी की आवाज सुनी-हैलो। डॉ. रामनारायण शर्मा जी से बात कर सकती हूँ। जी मै बोल रहा है। सर मैं साहिल अकेदमी नई दिल्ली से बोल रही हूँ। आपको बधाई! आपको अकेदमी ने भाषा सम्मान के लिये चुना है। इसकी सूचना शीघ्र ही टेलीग्राम द्वारा भेजी जा रही है। फिर से बधाई! धन्यवाद के शब्द अनायास मेरे मुख से निकल पड़े। मैंने सुशीला को सारी बात बताई और अपने बुजुर्गन के चित्रों के सामें माथा झुका उनकौ आशीर्वाद लऔ। मन में खुशी व असमंजस के भाव उठ रये ते। इतनों बड़ौ सम्मान मिले तो अनाकचीत दशा भई। मित्र व हितैषियन नें समाचार की पुष्टि करी तबईं संतोष भयी। रात में हमाये परम हितैषी मित्र ने आजऊँ फोन पर बधाई दई सो बात की पुष्टि से मन प्रसन्नता से उमंग उठो।

ईके बाद सम्मान की सूचना तार द्वारा मिली और 26 अगस्त को अकेदमी के बधाई पत्र सें ई की पुष्टि हो गई कै मुझे बुन्देली भाषा के अपने योगदान के काजें साहित्य अकेदमी ने वर्ष कौ बुन्देली भाषा में पैलो सम्मान मिलवे जा रओ। तो हम सुशीला के साथ 26 अक्टूबर 2010 को झाँसी छोड़ दिल्ली पार कर हवाई यात्रा से दिन लौटे ब्रम्हपुत्र की पुकार सुन कामरूप प्रदेश (असम) की पुन्न भूमि पै सकुशल पौंचे। मित्र के संग ब्रम्हपुत्र की सुन्दरता ई धरती की हरीतिमा कों निहारत अपने ठेरबे के स्थान डायनेस्टी होटल पौंचे। हमें कमरा नं. 514 एलौट हतो। थोड़ी देर आराम कर हमनें गुवाहाटी के एक मित्र से अपने इतै पौंचवे की सूचना दयें चाई तो हमाये मुबाइल जेंम मिले। मालूम परौ इतै बाहरी सिम के मोबाइल आतुंकी बारदातन के कारन बंद कर दये जात हमें अचरज भओ। सों रिसेपसन के फोन से मित्र सें बात करी। मित्र अपनी पत्नि के संग शाम सात बजे हमारे होटल आये। कछु बातचीत के बाद दूसरे दिन सुबह प्रसिद्ध कामाख्या देवी जी के दरसन की बात तै भई। मित्र कों अपने फोन सें मेरे घर हमाई सकुशल गुवाहाटी पौंचवे को समाचार देवें की कै कें हमनें उने विदा करौ।

गुवाहाटी में रात जल्दी उतरन लगी देख यात्रा की थकान मिटावें काजें हम बिस्तर पै लेट के आँख बन्द सोचवे लगे। असम पैले तंत्र ज्योतिष मंत्र कौ क्षेत्र मानों जात तो। ऐंइसे ई कौ नाँव प्राग ज्योतिषपुर प्रदेश हतो। इतै की सुन्दरता से स्यात कामरूप नाँव पड़ौ। ब्रम्हपुत्र के झालें में बसो जौ क्षेत्र न जानें कितने रूप छिपाये बाहरी यात्रियन को मोह लेत। तबई तन्द्रा टूटी और मित्र क़ी आवाज से विचार की कड़ी टूट गई।

गुवाहाटी में सुबह जल्दी शुरू हो जात। हम तैयार होकें मित्र की कार से लगभग तीन किलोमीटर की यात्रा कर नीलांचल पर्वत पै स्थित प्रसिद्ध कामाख्या देवी के दर्शनन को पौंचे। थोड़ी सी घूमदार राह चल हम मंदिर के समीप कार छोड़ ऊपर के रास्ते से चल पड़े। प्राचीन मंदिर देख मन प्रसन्नता से भर गओ। विश्वकर्मा द्व,ारा यह मंदिर बनो पुराण कथा से जुड़ो है। सती के अंग जांगा-जांगा गिरे शक्तिपीठ बने। नीलांचल पर्वत पै महामुद्रा यानि योनि भाग के गिरे से यह स्थान महायोग रूप में मानव कल्याण के काजें प्रसिद्ध भओ। ऐसे शान्तनु मुनि की पत्नि अमोधा को

ब्रम्हा जी की कृपा से जल स्वरूप पुत्र प्राप्ति सें ब्रम्हपुत्र महानद नाम परौ। वैसे इये लोहित सोई कत। यह महानद ६९० फीट ऊँचे नीलांचल पर्वत से अनेक कथा समेंटे शांत मन्द सी अपनी यात्रा करती सी लगी। गुवाहाटी शहर की ऊँचे-ऊँचे भवन अपनी सुन्दरता में मौन खड़े से लगे। मानो देवी दरसन की चाह में खड़े हो। इतने में हमारे पंडा जी आ गये और हम उनके संग मंदिर की परिक्रमा व देवी दरसन को चल पड़े।

कई हजार मानुष की भीड़ के बीच हमनें परिक्रमा में अनेकन जांगा पूजा-अर्चना करी। पंडा जी ने बताई कै मुक्ख बीच कौ मंदिर कामाख्या देवी कौ है जी के तल में पत्थर से ढकी सती जी की महामुद्रा रखी है। जीर्ण शीर्ण मंदिर कौ जीर्णोद्धार सन् १४९० में हिन्दु राजा विश्व सिंह नें करो तो। अन्य मंदिर लक्ष्मी सरस्वती, काली व गणेश जी के है। मुक्ख मंदिर के पीछे भाग में शिव व सती की चाँदी की मूर्ति एक सिंहासन में विराजमान है। भक्त इन के दरसन कर कृतार्थ हो जात। पूरब में सौभाग्य कुण्ड है जहाँ पूजा जरूरी है। मानता है कै यह कुण्ड पुरानौ है और शिव के क्रोध से छार शरीर कामदेव ने नहा के अपनौ पुरानों रूप पायो तो। मंदिर समूह के आखिर में बलि स्थान है जितै पशु पक्षियन को बलिदान करे से देवी कै आशीर्वाद की प्राप्ति होती है जो अब वंद है। बलिदान में अर्पित बकरे बतख कबूतर आदि खुले घूमत-फिरत। पूरे पर्वत क्षेत्र पै पण्डो के निवास व धर्म कर्म पूजा सामग्री के बाजार हैं। इतै पंडौ के बिना पूजा नईं होत। देवी दरसन के काजे १००-२००-५०० रूपये के सुविधा मिलत जीसें दर्शन जल्दी हो जात। धरणीकांत देव शर्मा वड़े पण्डा (बड़े पुजारी) समेत अनेक पण्डा है जो देवी दर्शन व अर्चन में सहायक होत। हम घर के लिये देवी प्रसाद लैकें वापिस भये।

डायनेस्टी होटल के दरबाजे पै लिखौ A bod of seven sisters सात बहनों का स्वर्ग पढ़ कै मन में जानवे की इच्छा जागी। तबई असम के इतिहास पै नजर गई। कालिका पुराण में ई स्थान कों सृष्टि के कर्ता ब्रम्हा कौ क्षेत्र मानो –

अस्य मध्ये स्थितो ब्रम्हा प्राड्-नक्षत्रं समर्जह।
ततः प्राग्ज्योतिपाख्ये यमं पुरी शक्रपुरी सभा।

सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा में इते हिन्द राजा भास्कर बर्मन के शासन होवे की बात लिखी। ई के बाद असुर पाल सेन आदि कौ इते राज रओ। 16वीं सदी में जौ क्षेत्र अहोम नाव से जानो गओ जो अहोम के वीरों के बलिदान के बाद अंग्रेजी शासन मेंसन १८८७ ई. में हिन्दू राजा विश्वसिंह नें कामाख्या देवी के मंदिर को जीर्णोद्धार करावतो। कामरूप प्रदेश कौ प्राचीन नाम धर्मराज्य हतो। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य में राजा रघु की दिगविजय बखान में कामरूप कौ उल्लेख करो। ऐईं तरां रामायण व महाभारत में कामरूप क्षेत्रकौ राजा भीष्मक लिखो जो रूकमनी के पिता हते। अंग्रेजी शासन में असम आदि क्षेत्र को नेफा (NEFA) जानो गओ जो बाद में असम के विघटन सें सात छोटे-छोटे राज्य मेघालय, बोडालेंड, नागालेंड, अरूणांचल प्रदेश आदि हैं। वर्तमान में असम की राजधानी दिशपुर है। ऐसे असम के इतिहास को सुरूप समाप्त समाप्त करतई भाषा सम्मान कौ इतिहास प्रारंभ भओ।

चार बजे शाम हम विवेकानंद संस्कृति संस्थान के राह पै चले। बीच में बाजार सजे-धजे लोगों से अटे पड़े हते। अचरज की बात कै इतै पुलिस जवान इक्का-दुक्का दिखे जैसो कै आतंक कौ वातावरण है। सब शांत दिखौ किन्तु विवेकानंद हॉल साहित्य समारोह की गूँज सें गूंज रयोतो। मंच सज्जा असमियाँ संस्कृति रूचि-सुचि से सजी तैयार देख हम जाके आगे की पांत में बैठ गये। उद्घोषक महोदय ने माइक से सम्मान समारोह के शुरू होबे कौ ऐलान कर सबई सम्मान हेतु पधारे साहित्य कारन कों मंच पै आसन ग्रहण करबे कौ अनुरोध करो। हम सब मंचासीन भये। अग्रिम पांत में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष बगैरह बैठे हते। कार्यवाही असमिया भाषा में बानी वंदना से शुरू भई। सुर

लय ताल में वंदना नें एक समां बाँध दओ। ई के बाद साहित्य अकादमी के सचिव श्री अग्रहार कृष्णामूर्ति ने स्वागत भाषण करत अकादमी के काम काज कौ विवरण दओ। उननें अकादमी द्वारा ऐसे क्षेत्रीय साहित्य आयोजन की बात बताई जीसे पूरे देश भर में साहित्य समारोह होवे से सबई क्षेत्रन के विद्वान आये थे क्षेत्र की भाषन की उन्नति हुइये और हिन्दी भाषा समृद्ध हुइये। ई के बाद अध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय जी ने ऐसे आयोजन से क्षेत्रीय भाषन की समृद्धि मालूम परे ताकि जो भाषाएँ देश की भाषा सूची में जगह बनावे योग्य बनें। ई के बाद भाषा सम्मान कार्यक्रम शुरू भओ। पूरे देश के लगभग तेरह साहित्यकार अपनी भाषा समृद्धि मे योगदान के काजें भाषा सम्मान से सम्मानित भये। इनमें अवधी, बुन्देली, चकमा (त्रिपुरा), गढ़वाली, कच्छी (कच्छ) एवं राजवंशी के विद्वान सम्मानित भये। समारोह जलपान के बाद समाप्त भओ।

रात्रि भोज के बाद पलंग पै लेटत दिन के काम काज सामें आ गये। भाषा सम्मान में देय गये भाषण से जानकारी भई कै केन्द्रीय सरकार की यह साहित्य संस्था क्षेत्रीय भाषन की बढ़ोत्तरी में सजग है और क्षेत्रीय भाषा सम्मेलन कर इस ओर ठोस प्रयास कर रई ईसें कुछ लोगों के विचार कै क्षेत्रीय भाषन के विकास से हिन्दी भाषा कौ नुकसान हुइये, भद्दा मजाक व उनके दिमाग के दिवालियापन हीं दिखे भाषा-भाषा मिल के सम्पूर्ण रूप से पूर्ण बन सकती है। साहितय अकेदमी के जे प्रयास सराहनीय हैं। संतोषी विचार से मन मस्तिष्क को आराम मिलो और नींद के आगोस में हम खो गये।

29 अक्टूबर को समारोह हॉल पूरौ भर गओ तो। समारोह अकेदमी के उपाध्यक्ष श्री सतेन्दर सिंह नूर की अध्यक्षता में शुरू भओ। आज सम्मानित साहित्यकारन कौ मिलन के साथ उनके सृजन के अपने अनुभव व चिंतन पै विचार करवे कौ हतो। सब सम्मानीयन मे अपनी सृजन की पीड़ा बताउत समस्यायें गिनाई। हमनें अपनी बारी आवे पै अपने साहित्य यात्रा कथा सुनाई और कैसे स्वान्तः सुखाय के मकसद से प्रारम्भ लेखन पर हिताय बनो। विचार मैंने अपनी भाषा बुन्देली में रखे विरासत मं मिले साहित्य कर्म को अपने समय के बड़े साहित्यकारन की प्रेरणा से आगे बढ़ाओ। यदि लेखक की मंसा सई है तो दशा सुधर जात और दिशा मिल जात। सरकारी सेवा के बंधन सच्चे साहित्य लिखबे में बाधा नई बनत। प्रकाशन में परेशानी अवरस लेत। ई झनझट से निपटने कौ राह हमें मिली और सब ठीक होत रओ। बात लेखक प्रकाशक की सच्चाई उजागर कर छपे बिके लेखकन के आगे छुटभइया लेखकन की दशा को खुलकें रखो और सस्ते चालू चापलूसी चालीसा छाप लेखन की असलियत सामें रखी साहित्य में आरक्षण जैसे मंच दलित नारी साहित्य-साहित्य में स्तरहीन सामग्री पैदा कर रये ई में हॉल तालियों से गूँज उठो। अंत में साधनहीन अच्छे साहित्यकारन के साहित्य को साहित्य अकेदमी जैसी संस्थान के माध्यम से प्रकशन कई अंत में अकेदमी को बुन्देली भाषा को मान सम्मान देबे काजें हमने धन्यवाद दओ।

30 अक्टूबर सुबह गुवाहाटी और ब्रम्हपुत्र से बिदा लेत वापसी यात्रा पै चल पड़ौ। रास्ते में प्रसिद्ध गायक श्री भूपेन्द्र हजारिका के गाये गीतन के बोल मन में गूँजत रये- गंगा आये कहाँ से, गंगा जाये कहाँ रे... धूप छाँव रे... तथा ब्रम्हपुत्र गाथा ब्रम्हपुत्र गाथागीत-सच्चे समझ देखे। गंगा व ब्रम्हपुत्र आदि नदी-नद जैसे प्रवाह व उद्वेलित जल धारन की भांति साहित्य में सोई शांत सुखद व क्रांतिकारी धारा में निकल देश समाज को संदेश देती रहती है। जोई सनातन साहित्य को संदेश है और विभिन्न बोली के विद्वानन के विचार मिले कौ हमे प्रसाद मिलौ जो हम अब आपसे बाँट रये।

* * *

जाड़न में गाये जावे वारे लोकगीत

- प्रेमनारायण पाठक 'अरुण'

टंड का प्रभाव तो सभी जगह एक जैसा ही होता है। किंतु टंड के विषय में रचे गये लोकगीतों में स्थान भेद के आधार पर अनेक भौतिक कल्पनायें प्रकट होने लगती हैं। यथार्त और कल्पना का जो एक टंडप्रदेश बुंदेलखण्ड में लगता है वह इस लेख में अनुभव किया जा सकता है।

अपने इतै साल भरे में छै रितुयें होती, अकेले जाड़ौ हराँ-हराँ कार्तिकई सें अपनौ रंग जमाउन लगत, फिर अगन, पूस, माघ और फागुन लौ संग नई छोड़त, कछू होय अकेले जाड़न की रित सबखा साजी लगत, पैला जंगलन में खूब डाँगे हतीं खूब पानी बरसत हतो, फिर जाड़े सोऊ बज्जुर के परत हते, रात कें कुदवन कौ, कै फिर धान कौ प्यार विछाव जात हतो और अच्छी मोटी तगड़ी कथरी, खुवारें ओड़नें परत तीं, तबई आंख लग पाउत ती, धरन धरन में कौड़े बरत हते, अब तो वे दिन हिरात से जात , जनसंख्या बढ़ी, जमीनें जादाँ बुबन जुतन लगीं विरबा कटे सो पानी कम बरसो, सूका परो, ऊपर सें मँगाई प्रान खाँय जात, उन्नति तौ सबई तराँ से भई। बड्डे बूढ़न से जे लैने सोऊ हमने खूब सुनी-

जाड़ौ ठाँड़ो खेत में, बोले हेत उचार।
मोरे वैरी तीन हैं, खई कम्बल और प्यार॥
बारन सें मैं बोलत नइयाँ, ज्वान लगें मोरे भैया।
बूढ़न खों मैं छोड़त नइयाँ, चयै करने हा हा दैया॥

जड़कारे में तीज त्यौहार सोऊ कुतल होत, बन्न बन्न के लोकगीत गाय जात, खास तौर से जाड़न में जोन लोकगीत गाय जात उनकी शुरूआत हम कार्तिकई सें कर रयै, कार्तिक सोऊ कुल्ल तराँ से गाव जात जिनकी धुनें सोऊ जुदी-जुदी होतीं-

उठौ मोरे कृष्णा भये भुन्सारे,
गौवन के बँध खोलौ सकारे॥
मोर मुकुट पीताम्बर मोहै,
आरती राधा कृष्ण की सोहै,
हर बोलन में बोल उचारे, उठौ मोरे...

ई गीत खाँ 14 मात्रा याने कै दीपचन्दी ताल में गाव जात है, वैसें तौ कार्तिक गीत बिन साज बाजके गाय जात, अकेलें अब इनें साज बाज के संगै गाउन लगे, तुलसा पै जल चढ़ाउत बेराँ और तुलसी धरा के परकम्मा लगाउतीं बेरां जौ कार्तिक गाव जात-

तुलसा महारानी, नमो नमो,
तुलसा के गेरुँ गेराँ, धले हैं हिड़ोरा,
सो झूलें श्री कृष्ण, झुलावें राधा प्यारी, नमो नमो।

तीसरौ तराँ कौ कार्तिक ई प्रकार से गाव जात-

अब न दुहाऊँ ऐंसी गैया, श्याम तो सों,
अब न दुहाऊँ ऐंसी गैया।
कछु कारे कछु ओढ़े कमरिया,
सो विचकत है मोरी गैया, श्याम तो सों, अब न ...

चौथो कछु ई तराँ सें कतकारीं गाउतीं-

हिलमिल के बिछुड़ जिन जाव गौवन के प्यारें,
दिन-दिन लगत सुहावनों।
हरि के माथे मोर मुकुट सोहै,
उनके कुण्डल में जड़े हैं, जड़ाव गौवन के प्यारे,
दिन-दिन लगत सुहावनों।

पाँचवौ कछु ऐंसौ है -

गिरधारी मोरौ बारौ, गिर न परै।
एक हाँथ हरि मुकुट सम्हारें,
दूजे हाँथ परवत लयें ठाँड़े, परवत लयें ठाँड़े,
गिर न परै।

तौ ई पाँचऊ तराँ की न्यारीं-न्यारीं कार्तिक धुनन में गुलक्के गीत कतकारीं मईना भर गाउतीं है।

ऐई कार्तिकई के मईना में यादव जाति के ग्वाला भैया अपने आप खों भगवान कृष्ण और यदुवंशी मानकें दिवारीं गाउत, रंग बिरंगी पोषाकें पैर कें ढुलक, नगड़िया, पाई खेलवे के लानें डंडा और मोर के पंखा लैकें दिवारी गाउत हैं, और नचत हैं। जे दिवारी गीत दोहा जैसेहोत हैं, जो सोऊ एक न्यारौ राग है, ई में पैलां दिवारी गा लई जात फिर बाद में साज बाज बजाय जात और दोहा के बाद में रे या हों लगाव जात-

विन्द्रावन की गैल में, होन लगी अनरीत रे,
तनक दही के कारनें, बहियाँ गहत अहीर रे,

और ई तराँ से कतल गाँव मँजयाउत भये, कोनऊँ ऐंगर पास के धार्मिक स्थान में जात है।

अगन के मईना में जाँगन ताँगन मेला भर, खेलकूद होत, सो ई मईना में राई जादाँ गाई जाती, नचनारीं नचतीं सोईं-ई में कहखा राई के रप्पा और स्वाँग सोऊ गाय जात, जा राई पूरी रात नची और गाई जात है। इनकें संगै ढुलक, नगड़िया, झींका, मँजीरा और ठपें बजाई जाती हैं, जैसे-

मोरी चन्दा चकोर,
नेहा लगाकें न टोरियौ।

अगन मईना की जा चौकड़िया सोऊ पढ़वे जोग है-

आ गयै अगहन मास सुहाने, जाड़े हैं मनमानें,
नर नारिन ने तन पै पैरे, रंग बिरंगे बाने।
ओस नगीना पात जड़े हैं, जी भर नीर जुड़ानें,
अरुण लुके बादर में सूरज, जानें कै शरमानें।

पूष और माँव के मईना में गाय जात हैं, लम्बी टेर के लमटेरा, उनमें लम्बी-लम्बी टेर होवे सें इमें लमटेरा कव जात हैं, इनमें बम्बुलियां, रमटेरा, बाबा गीत, यात्रा गीत और भोलागीत सोऊ कब जात है जब कोऊ तीरथन खों जात तौ इने समूह में गाव जात, पूष से लैकें इनें बसन्तन और शिवरात्री लौं गावो कौ चलन है-

महादेव बाबा बड़े रसिया रे, बड़े रसिया रे
माई गौरा सें, जोरें बैठे गाँठ रे, महादेव बाबा हो।
सपर लइयौ काशी झिरियाँ रें, काशी झिरियाँ रें,
कट जैहें जमन के पाप रे, सपर लइयौ हो।

जो लमटैरा भक्ति भाव सें ओतप्रोत होत, इनमें अच्छी-अच्छी बातें और सीखें भरी होती, इनमें जादाँ मिठास होवे सें फिल्मी दुनियाँ की गायिका वाणी जय राम नें सोऊ गाव है-

दरश की तौ बेला भई रे, बेला भई रे,
पर खोलौ, छबीले नाथ हो, दरश कील तौ हो।

माँव के मईना में स्नान दान कौ भौतऊं पुण्य बताव गव, नदियन के किनारें, धार्मिक स्थानन में जबग मेला लगत तौ लमटेरन की धूम सुनतई बनत।

जे जाड़े फागुन लौ पिण्ड नई छोड़त, सो फागन की चरचा कये खों बची रावै, जै फागें सोऊ अपने बुन्देलखण्ड में केऊ तरां से गाई जातीं, एक होत है 'लाल की फाग' ई में लाल शब्द जरूरई लगाव जात,

बलम विदा के लानें आ गयै,
बलम विदा के लानें लाल।
अब की टिया टारदे जो कोऊ,
जनम-जनम जस राने, आ गयै।
बलम विदा के लानें लाल।

एक गाई जात है 'खड़ी फाग' ई की प्रत्येक कड़ी में 30 मात्रायें होती हैं 16 और 14 पै विराम लव जात हैं, पैलाँ के

कवियन ने जे फागें इक्का दुक्का लिखीं पैं, स्व. पंडित गंगाधर जू व्यास नें इनें विस्तार से जादाँ हरो भरो करो-

दिन ललित बसन्ती आन लगे,
दिन ललित बसन्ती आन लगे।
हरे पात पियरान लगे, दिन ललित...
घटन लगी रजनी अब सजनी,
रवि के रथ ठहरान लगे, दिन ललित..

और जोंन फागें कबीर की साखियन की शैली में गाई जातीं उनें कव जात है 'सखयाऊ फाग'

प्रीतम प्रीत लगाय कें, बसन दूर जिन जाव,
बसौ हमारी नागरी, दरशन दै दै जाव,
नजर सें टारें टरौ नईं, मोरे बालमा,
अरे हाँ नजर से टारे...

कछु फागें ढप के संगै गाईं जातीं, उनें ढप की फाग कव जात है-

गिरधारी लाल तोरौ भरोसो है भारी
काये खों बोली कोयलिया, काये खों मोर
काये खों बोलीं राधिका, जहाँ कृष्ण चितचोर, गिरधारी लाल...

पैले के जमाने में आदमी में आदमी कम पढ़त लिखत ते, ऐसो मात्रा की गणना वे अपने अन्दाज सें करत हते, पशु प्रेम तौ पैलई से चलो आव गैयाँ, भैंसे खूब पालत हते, उनके पाँवन में दो-दो खुर होत सो मात्रा की गणना सोऊ उनके खुरन सें करत हते, ऐई सें जोन फागन में डेढ़ खुर होत, उनें कव जात है 'डिढ़खुरयाऊ फाग'

जो बोलक दोई काँ के, मुनि जू जे दोई बालक काँ के,
काँ के कौन दिशा के, मनि जू जे दोई बालक काँ के,

ऐई फागन को झूमर खेल संगै, सोऊ गाव जात, ई सें इनें, झूमर य झूलना की फाग सोऊ कव जात-

साँवरिया तँबुआ तान, अटा पै कारे बदरा हो आये,
जुर आये सखिन के झुण्ड, कन्हैया झूमर खेलें राधा सों,

सबसे जादाँ गाई जाती है चौकड़िया या टहूका की फागें, इनके प्रत्येक चरण में 28 मात्रायें होती हैं, 16 और 12 वें विराम होता है, आखिरी में दीर्घ स्वर होत, ई में चार कड़ी होती, ऐई सें इनें चौकड़िया फाग कव जात ई शैली खों आँगू बढ़ावे में भारतेन्दु युगीन कवि पंडित ईसुरी जू कौ भौत बड्डौ योगदान है, जा फाग चाय जोंन धुन में चाय जोंन फाग के बीच में जोर के गाई जा सकत -

ऐंसौ अचरज देखो भारी, एक पुरूष छै नारी,
वे सब नारीं रंग बिरंगी, आवें बारी-बारी
जान लेव से जानन हारो, नई तर चूक तुम्हारी,
ईसुर मिलकें छैऊ बनावें, एक पुरूष औतारी,

जोंन दोहा लावनी छन्दन के संगै गाइ जातीं उनें कव जात है 'छन्दयाऊ फाग'-

फैशन भारत देश खों, करे देत बरवाद,
लोंगन नें कुल कान की, छोड़ दई मरजाद,
फैशन की बलिहारी भारत दशा बिगारी,
सिर पै टोपी नहीं लगावें, साफा बाँधत में शरमावें,
अपने ऐंसे बाल कटावें, ढूँड़े नही चुटैया पावें,
या विधि अपनौ धरम नसावें,
चश्मा चढ़ो आँखें के ऊपर जे नई उमर के छैल,
गलियन मे डोलत फिरें, कोल्हू कैसे बैल।

जा चरचा हती जाड़न में गाये जावे बारे लोकगीतन की अकेलें, कुल्ल विधायें ऐंसी होतीं जौन चाय जबै गाई जातीं, जैसें संस्कार गीत, श्रम गीत, देवी गीत, भजन स्वाँग, देश भक्ति गीत, बधैया, दादरे,गारीं गैलयाई, जाति परक गीत, बारामासी, लांगुरिया ख्याल, चौकड़िया ऐंसे मूलक लोकगीत हैं जिनकी गिनती करवौ मुस्किल है।

हम बुन्देलखण्ड के वासी, बोलें साँसी साँसी,
सरस रसीले लोकगीत, जाँ सीखें देवें खासी,
रानी है बुन्देली भाषा और सबई हैं दासी,
अरुण हमाई जनम भूमि में होत वीर सन्यासी।

सटई जिला-छतरपुर (म.प्र.)

* * *

(नलनगर) रनेह का शिव मठ

- पं. ज्ञानी महिराज

भइया और बिन्नू हरो,

सबई जनों खों जै राम जी की।

मैं, अपुन सब खों, अपनी सुनी, पढ़ी एवं अनुभव की बात बताबे की कोशिश आ कर रओ हों।

मैंने, पुराणों के इतिहास में दो नल दमयन्ती की गाथा पढ़ी है। एक नल दमयन्ती वे जो सतजुग में हते, जिन दमयन्ती को सीता ने अपना आदर्श माना। दूसरे वे जो महाभारत काल के बाद के आयँ। संजोग भी ऐंसो रओ कै, दौक जनों ने अबेरा भोगी।मैं, इन पछारें के नल दमयन्ती की कहानी आ सबई जनों खों बताबे की बात करन चाउत हों। इन नल दमयन्ती का पैला मिलन ऊ जघां भओ तो जहां आज (जागेश्वर धाम) बांदकपुर के भोले बाबा विराजे हैं। नल ने अपने और दमयन्ती के नाम पर दो नगर बसाये (नलनगर एवं दमयन्ती नगर) नल नगर का नाम आज सबई जनें रनेह के नाम सें जानत हैं और दमयन्ती नगर खों दमोह सें।

इन्दर की शाप सें जब राजा नल एवं दमयन्ती राज छोड़कर निकल गए तो उनकी परजा ने तालाब बनावो शुरू कर दओ, जासें पानी की कमी ना रहे। ग्राम रनेह और दमोह के तालावों के नाम आज भी एक से मिलत हैं। जैंसे-कचोरा-फुटेरा, पुरैना, वेलालाल इत्यादि।

हाँ भैया, एक प्रमाण और विशेष तौर पैदेखबे खों मिलत है। इन नल के कुँवर को नाम हतो ''ढोला'' और उनकी पुत्र वधु को नाम हतो ''मारू'' ग्राम रनेह में एक झील को नाम है ''ढोलाताल'' और दमोह नगर के पास है ''मारूताल'' ।

बुंदेलखण्ड के अंचलों में चौपालों पर गाओ जाने बारों ''ढोलाराग'' बहुत प्रसिद्ध है। उस राग का एक उदाहरण में इतै दैवो चाउत हों। जौन समय राजा नल एवं दमयन्ती अबेरा काट खें अपने राज (नलनगर) में लौटे तो उन्हें पतो चलो कै उनके कुँवर ''ढोला'' अपनी ससुरार में रै रये हैं तो दमयन्ती ने अपने कुँवर खों लौटावे के लाने एक बूढ़े व्यक्ति खों भेजो हतो। उन बूढ़े को सबई जनें (ढट्दी) बब्बा कहत हते। रानी दमयन्ती ने (ढट्दी) बब्बा के हाथन कुँवर खों जो संदेशो पठाओ हतो कै जात हो ढड्ढी जात हो कइयो कुँवर समुझाय। लल्ला को मों देखवे लरख रई हैं माय। आगें ढट्दी बब्बा कुँवर को पतो पूँछत जब मारू के देश पौंचे तो उनसें एक मालिन ने ऐसी बात कई ली।

ढड्ढी आये किते तें, कितें बिलाई रात।
जे मारू के देशरा, मारू कहाये सातई जात॥

जा कहानी आय उन नल दमयन्ती की हम जौन नल की चर्चा नीचे करन चाउत हैं।

राजा नल ने अपने नलनगर (ग्राम रनेह) में जहां अपनो महल बनवाओ हतो उते पै उनमें धरती के नेंचे बड़े-बड़े तलधरा बनवाये हते। उनने उन तलघरों में एक सोने को मंदिर बनवा खों ऊ में सोने के शिव, पार्वती, गणेश, भैरव और नांदिया बिठाये थे जिनकी वे रोज पूजा करत हते। बारहवीं शताब्दी में जब भोंडोल परो तो राजा नल को महल और नगर पूरो धरती में मिल गओ। भोंडोल के बाद गाँव के आदमी अपनी अपनी जघां पै कच्चे मकान बना खें रैन लगे।

कछु दिन के ... गाँव

के आदमियन ने उतई के खंभा एवं पत्थर उठा-उठा ऊके ऊपर दो खंड को मढ़ा बना दओ। मढ़ा में चार रँग के पत्थर लगे हैं और मढ़ा की बनावट बाहर से बेमेल सी दिखात हैं। लगत हैं जैसें कोऊ कारीगर को बनाओ नै होय।

मढ़ा के भूतल में हमारी अपनी आँखन देखी एकदरार हती, ऊ में पैंसा डब्बल डारवे सें ठन्न-ठन्न की आवाज सुनात ती।

हमें हमारे स्यानन ने बताओ रहो कै, ऊ दरार वारी जघां पर पथरा आ ढांक दओ। उते पैलऊं चौक चौर छेद हतो और ऊं में नेंचे जावे खें छिड़ियां दिखात थी। ऊ बिल से एक बेरां एक चोर पकरो गओ तो, और ऊ में एक छिरिया गिर गयी थी तब से ऊ छेर पथरा से बंद आ कर दओ।

एक बेरां हमने खुद अजमाइश करी। ऊ दिना सूरज गहन परो रओ। हम जाखें मढ़ा में बैठ गए।गहन के समय हमें एक सुनहरी परछाईं सी दिखानी। वा परछाईं ऐसी लगे जैसें सोने को मंदिर सो वनो होय, ऐसी आभा करीब दश मिनिट तक दिखात रई जब सें मढ़ा में कहूँ से उजयारो आऊतई नै हतो।

मठ में ऐसे चमत्कार तो होतई आ रहत।साँचऊ कछु न कछु विशेषता तो है ई मढ़ा में।

ई समय पुरातत्व विभाग बारे के रये हैं विकै मढ़ा के चौतरफा 100 मीटर की जघां में रैवे बारे अपने मकान ना सुधार सकत ना सफाई करसकत ई पत्रिका के माध्यम से हम सबई जनों को कैवो ऐसो है कै सरकार उचित मुआवजा दें और रैवे जघां दे तो हम सब जनें घर छोड़वे तैयार हैं नईं तो...

- नल नगर (रनेह) हटा,
दमोह (म.प्र.)
मो. 9893902928

* * *

छत्रसाल की भूम पै धरे ना बैरी पाँव

- रामस्वरूप 'स्वरूप'

अकेले बुन्देलखण्ड केई नई पूरे राष्ट्र के गौरव महाराजा छत्रसाल अपने शौर्य और पराक्रम से बुन्देलखण्ड कौं स्वतंत्र बनाऐं रै। आत्मगौरव और स्वाभिमान की पहचान, बुन्देलखण्ड कौ व्यक्तित्व सदा-सदा सें रौ है, और रै है।

साहित्य के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड केशरी महाराज छत्रसाल ने सन. 1770 में स्थापित छतरपुर नगर कौं साहित्य, कला और संस्कृति कौ केन्द्र बना दौ तो। राष्ट्रनायक छत्रसाल नें अपनी तरवार सें बैरियन कों बुन्देलखण्ड की भूमि पै पाँव नई धरन दौ जैसे वे कृपाण के धनी हते बैसेंई बे कलम के धनी होत भै कलम के सिपाइन कों मान सम्मान दैबे में अग्रणी रै।

प्रख्यात साहित्यकार श्री श्री निवास जू नें अपने आलेख **''छतरपुर जिले की साहित्य परम्परा''** में महाराजा छत्रसाल को जन्म जेठ शुक्ल तीज गुरूवार संवत् सत्रह सौ छै ताके अनुसार सन् सोला सौ उन्चास चार मई को बताओ है। अपने पिता चम्पतराय की जागीर महेबा की मातृभूमि और बुन्देलखण्ड कों मुगलिया आक्रमण सें मुक्त कराय रै और जा के लाने पूरे जीवन संघर्ष करत रै। ऐसे बुन्देलखण्ड केशरी ने अपने बैरियन कों अपनी धरती पै पाँव नई धरन दौ।

अपनी वीरता कौशल के संगे साहित्य तपस्या में भक्ति और नीति परक काव्य की रचना कर माँ भवानी के संगे-संगे माँ सरस्वती के सच्चे सपूतन में अपनी गिनती रखी। छत्र विलास में रामध्वजाष्टक, हनुमान पचीसी, महाराज छत्रसाल के प्रति अक्षर अनन्य के प्रश्न, द्रष्टान्ती और फुटकर कवित द्रष्टान्ति तथा राजनीति परक दोहा समूह आदि रचनाएँ शामिलहैं-

सुजसु सौ न भूषन, विचार सो न मंत्री त्यों,
साहस सो सूर कहुं ज्योति सो न पौन सो।
संयमी सी औषधि न, विद्या सो अटूट धन,
नेह सो न बन्धु और, दया सो पुन्य कौनसो।
कहें छत्रसाल कहुं शील सो न जीतवान,
आलस सो बैरी नहिं, मीठो कछु नोन सो।
शौक कैसी चोट है न भक्ति कैसी ओट कहुं,
राम सो ना जाप ओर, तप है न मौन सो।

एक अच्छे कवि होबे के संगै-संगै कवियन कों मान-सम्मान राखबे में उनकी तुलना में, जा संसार में ना कोऊ भौ और ना कोऊ हो पै है। महाराज छत्रसाल को सिद्धांत हतो कै **''कीरत के बिरवा कवि हैं, इनकों कबहुं मुरझान ना दीजे''** कवि 'भूषण' की पालकी में कंधा लगा दैबो एक प्रतापी राजा सूरवीर को सम्मान दैबो जा सें जादां का हो सकत है। बुन्देलखण्ड में शौर्य गाथा सीमा के संबंध में दोहा तो प्रचलित हैई।

**इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की रही न काऊ होंस॥**

अपनी सेना कों बलवती राखबे के लाने उनको सिद्धांत हतो ''रैयत सब राजी रहे, ताजी रहे सिपाही'' जा तरियां उनकी कथनी और करनी एक सी के आधार पै अद्वितीय है। औरंगजेब के सिंहासन की चूलें हिला दैबे वाले महाराजा छत्रसाल की वीरता की प्रशंसा करबे में लाल कवि को उच्च कोटि के कवि होबे को श्रेय प्राप्त भौ। महाकवि 'भूषण' नें तौ उनके महान व्यक्तित्व की प्रशंसा वर्णन करबे में अपनी प्रतिभा समर्पित कर दइ ती। शिवा कों सराहों कै सराहों छत्रसाल कों।

महाराजा छत्रसाल कों ज्ञान की भूख नें संतुष्ट नई कर पाए। प्राणनाथ जी कों गुरू मानकें धाम पंथ स्वीकार ऐन कर लौतो अकेलें ज्ञान पिपासा बनी रई। स्वतंत्रता संग्राम में

लगातार अपने आपकों समर्पित करबे की स्थिति में काव्य कला की आराधना करबे में अड़चने आउत रई। जा में कछू जीवन उनकोऐसो अस्त-व्यस्त रौ ता के बावजूद जो काव्य साधना हो पायी बो उनकी काव्य विलक्षणता और प्रतिभा को परिचायक है। आध्यात्म ज्ञानी संतकवि महात्मा अक्षर अनन्य के सम्पर्क में आबे की उत्कंठा नें पत्राचार को माध्यम बनाओ।

संवत् 1761 वि. में औरंगजेब द्वारा भेजे गए सेनानी 'शाह कुली' कों परास्त करबे के बाद उनके मन में विरति पैदा हो गई ती। जई कारण से उनने धाम पंथ स्वीकार करो। अकेलें छत्रसाल जू प्राणनाथ जू सें जादां अक्षर अनन्य से प्रभावित हते।

ज्ञान योग की साधना को श्रेष्ठ मान कें पूर्ति के लाने महात्मा अक्षर अनन्य कों सेंवढ़ा से पन्ना लाने तक कौ न्योतो पठाओ। उनने पत्र में लिखौ तो- ''राखत हैं हम टेक उपासना बात विवेक हूं नाहिं भुलानी।'' ताके उत्तर में अक्षर अनन्य ने छत्रसाल जू कों पत्र लिखे जो काव्यमय हैं-

''धाम की टेक तुम्हारें बंधी नृप,
दूसरी बात कहें दुख पावत॥
काहु की टेक ना राखत हैं हम,
जैसे को तैसो प्रमाण बतावत॥
मानहिं कोऊ भलो कै बुरो,
नहिं काहु को आसरो चित्त में लावत॥
टेक-विवेक सों बीच बड़ो,
हम को किहि कारन राज बुलावत॥''

महाराजा छत्रसाल धाम पंथ में दीक्षित होबे के कारण साधना हठ कों स्वीकार कर चुकेते और अक्षर अनन्य उनके हृदय कों ठेस नई पौंचान चाउत ते।

छत्रसाल ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि माने जात हैं और ज्ञान प्राप्ति के लैं उनने महात्मा अक्षर अनन्य कों पत्र लिखो-

-राखत है हम टेक उपासना, बात विवेक हू नाहिं भुलानी॥
-पीवत हैं चर्चा करि अमृत, भूप छ्त्रा रस में रस सानी॥
-देखत के नर नारि कहावत, जीव स्वरूप की एक निसानी॥
-कारन की तजबीज करो, हम सों सुन लीजबी कए जुबानी॥

काय सें महाराज छत्रसालजू अक्षर अनन्य कों ''है अनन्य नहिं अन्य कोऊ'' मानत हते। अक्षर अनन्य पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' की प्रार्थना पर ओरछा छोड़ कैं सेंवढ़ा आएत, जा कौ एकमात्र कारण 'रसनिधि' कौ स्वयं में कवि होवौ हतौ और सनक सनन्दन सनतकुमार जैसो तीर्थ, निर्जन सनकुआ की कुवरती गुफाएँ निर्मल जलधार एकांतवास प्राकृतिक सुन्दरता ने उन्हें मोह लौ तौ।

अक्षर अनन्य और महाराज छत्रसाल जैसी असाधारण ज्ञान और काव्य की प्रतिमाएं कऊं एक साथ मिल जाती तौं हिन्दी साहित्य में काव्य और ज्ञान की परम्परा में रामचरित मानस जैसी लोकप्रियता मिल जाती है जामें कौनऊ आश्चर्य वाली बात नैयां।

सेवढ़ा दतिया (म.प्र.)

* * *

अक्कल की कदर

(बुन्देली किस्सा)

- एन.डी सोनी

ऐसें-ऐसें एक गाँव में एक मदरसा हतो। ऊ मदरसा में एक किसान कौ लरका पड़त तो। लरका भौतऊ हुश्यार और अक्कल बारौ हतो। एक दिना की बात है कै ऊ लरका से गुरू जी भौतऊ नाराज हो गओ। सोउतन में लरका में बर्राटन में देखो कै बादशा ने अपनी बेटी कौ ब्याज ऊके संगे कर दओ। जब ऊकी आँख खुली तौ बौ भारी खुशी भओ। दूसरे दिना जब लरका मदरसा गओ तौ ऊखों खुशी देख कें गुरूजी अचरज में पर गये। उनने लरका से खुशी होवे को कारन पूछों पै ऊनैं कछु न बताई। लरका नें अपने गुइयन खों सोअ सपने की वात नई बताई। मूलक दिना ऐसई कड़ गये।

जौन राज में लरका कौं गाँवहतो ऊ राज के राजा खों बादशा नें दो पुतरियाँ पोंचाई जौन देखत में बिल्कुल एकई सी हतीं। बादशा ने राजा खों संगई एक चिठिया लिखी कै जो कोऊ इन पुतरियन में से छोटी और बड़ी कौ भेद बताय ऊके संगे हम अपनी वेटी कौ ब्याव करदें और अपनौ आदौ राज-पाठ सोऊ दै दैहें। कजन की दारै कोऊ नें न बता पाई तौ तुमारों राज-पाठ हम छीन लैहें। राजा ने अपने मंत्रियन व कामदारन खों बुलाव और सबखों समस्या बताई। सबने उन पुतरियन खों खूबई बारीकी सें देखो पै कोऊ खों उनमें कौनऊ फरक नई दिखानों। हैरान हो कैं राजा में डोंडेरी पिटवाई और बादशा की लिखी बात सबखों बताई।

डोंड़ेरी सुनकें राज के बड़े-बड़े ज्ञानी और जनवा उन पुतरियन खों देख-देख के हैरान होत रये पै कोऊ की समझ में पुतरियन में फरक समज में नई आऔ। मदरसा के गुरू जी सोऊ पुतरियाँ देखने गये ते सो उनने मदरसा के सब लरकन खों किस्सा सुनाव। घर-घर में पुतरियन की चर्चा भई। किसान के जौन लरका किसना ने बर्राटन देखो तो कै ऊ कौ ब्याव बादशा की बेटी से हो गऔ, ऊ खों मन में कछु बात घुरी। ऊनै मनई मन सोची कै कऊँ हम जा पुतरियन की पहेली सुरजा दै तौ हमाव ब्याव साँसऊ बादशा की बेटी से हो जै। दूसरई दिना किसान महलन में गऔ। ऊने मौका देख के अकेलें में वे पुतरियाँ खूब देर लों देखी पै कछू फरक नई दिखानों। बौ बेर-बेर लौट पल्ट के पुतरियन खों देख रओ तो कै ऊखों पुतरियन के कानन में छेद दिखानों। कछू सोच के ऊनें एक गीली सी सींक ढूँड़ी औ एक पुतरिया के कान में डारी। बा सींक ऊ पुतरिया के दूसरे कान में होके बायरे कढ़ याई। फिर ऊनें दूसरी पुतरिया के दूसरे कान में होके बायरें कढ़ आई। फिर ऊनें दूसरी पुतरिया के कान में सींक डारी तौ वा सींक पुतरिया के पेट में खों चली गई। जौ फरक देख कें किसना विचार करन लगो कै ई कौ का मतलब है। घोकत-घोकत ऊ खौं समज में आई जौन पुतरिया के कानन में सींक आर-पार हो जात वा पुतरिया कौनऊँ बात खों ई कान सुनके ऊ कान हो कें निकार देत। कौ मतलब है कै ऊके पेट में कौनऊँ बात नईं पचत। वा पुतरिया कम समजदार है ई खें वा छोटी आय। दूसरी पुतरिया के कान में सींकें डारे से पेट में खो जात। ई कौ मतलब है कै वा पुतरिया बात सुनकें अपनें पेट में राखत। वा पुतरिया समजदार है ईसें बेई पुतरिया बड़ी आय। ऊनैं जो हल निकारो तौ ऊखों मनई मन खूब खुशी भई। ऊ लरका किसना खों ऐसो लगो कै हमाई बर्राटन देखी बात अब साँची हो जैहै।

अब ऊ लरका ने राजा के कामदारन सें कई पुतरिया की पहली हमाई समज में आ गई तौ वे सुनकें हँसन लगे कै ई तनक से लरका खों का समज में आ गई। बड़े जनवा जौन नई समज पाये वा ई टुरवा की समज में काँसें आ गई। सो वे ऊखों

धुत्कारन लगे। पै लरका नें हिम्मत नई हारी। ऊनै कैऊ दारै उन दरबारन सें कई कै मोय राजा नों लुआ चलौ। कजन की दारै ...री बात झूँटी कहै तो अपन जो चाव सो सजा दियौ। एक समजदार कामदार खों लगी कै होय न होय लरका खों साचऊँ ...ड़ु समज में आई होवै। ऊनें महलन में भीतर जाके राजा से अरज करी कै महाराज एक लरका जिद्द कर रओ कै पुतरियन की पहेली ऊकी समज में आ गई। वो आपके दर्शन करकें आपई खों बताउन चाहत। राजा की मर्जी भई कै लरका खों इतै बुला लै आऔ। लरका खों राजा के अंगाऊँ हाजर करो गऔ।

बौ लरका किसना दोई पुतरियाँ औ सींक लैकें राजा के ...हाजर भऔ। ऊनै दोई पुतरियन के कानन में सींक डार-डार कें राजा खों अपनी सोची बात समजाई। राजा ऊकी बात सुनकें हद्द से जादाँ खुशी भये। ऊनेलगो कै अब हमाओ राज-...बच जैहे। राजा ने खुशी में लरका खों छाती से लगाओ और ऊकी अक्कल की दाद दई। राजा ने लरका खों अपनी ...से तुरतई इनाम इकराम देकें ऊखों आशा बंदाई। लरका ...लैकें अपने घरै गओ। इतै राजा नें बादशा खों एक चिठिया लिखकें किसना की बताई सबरी बातें ऊमें लिखीं। राजा ने अपने दूत से चिठिया बादशा के ऐंगर पोंचाई। बादशा चिठिया पढ़कें भौतऊ खुश भये। बादशा ने राजा खों खबर पोंचाइ कै हम अपनी बेटी कौ ब्याव ओई अक्कलदार लरका सें करहें जौन ने पुतरियन की पहेली सुरजाई।

इतै बादशा नें पंडित जू खों बुलाके लगन सुदवाई और सबरी परजा के सामने बेटी कौ ब्याव किसान के लरका किसना से करो। बादशा ने ऐलान करो कै हम अपनो आदौ राजपाठ सोऊ किसना खों दैहे। बादशा ने बेटी और किसना खों ऊकी इच्छानुसार ऊकै गाँव लाव-लश्कर के संगै पोंचाव। किसना अपनी अक्कल सें राजा बन गओ तौ ऊकी खुशी कौ पार नईं रओ।

किसना जब बादशा की बेटी के संगै अपने गांव लौटो तो राजा ने सोऊ ऊको आदर करो और अपनी तरपन सें ऊखों और इनाम दई। लरका किसना नें दूसरे दिना अपनें गुरूजू सें भेंट करी और अपनें सपनें की बात बताई। सुनकें गुरूजू खिल-खिला कें हँस परे। किसा हती सो खतम भई।

राजमहल के पास, टीकमगढ़ (म.प्र.)

* * *

बुंदेली दरसन

भुनसरिया को भूलो

- कु. सौम्या पाण्डे

बुंदेलीखण्ड में डकैती समस्या की जड़े बड़ी गहरी हैं। सारा क्षेत्र डाकुओं के आतंक से थर्राता रहा है - इस संवेदनशील समस्या पर नवोदित कहानीकार ने कलम चलाई है - पढ़िये "भुनसरिया को भूलो"

''सुजान ! सुजान'' मूरतसिंह चिचयाने। मूरत सिंह : इलाके भर को कुखयात डाकू। लुटाई और कुटाई ही ऊ के ईमान और धरम हते। ई समय ऊ की आँखें सुजान खों खोज रईं ती। एकाएक उन दोनऊँ की आखें चार भईं। मूरतसिंह बोले - ''अरे तुम इते आ हते ? मैं कबसे तोखों ढूंढ़त फिरत रओ।

सुजान सिंह ददंक गयो - ''कक्का जू, माफी दई जाय, में तलवार भांजवे में मगन हतो, ईसे इसारो अनख न पाओ। मैंने, घोकी - ''डकैती के धंधे में तलवारबाजी तो नीचट ही भयो चहिए। डाकें डारन के समय अपनी जान हथेली पै ही रखी जात है, तबै तो दूसरे की जान लई जात है - यदि तलवार को हुनर कमतर भओ तो लेवे की बजाय देवो पर सकत है - सो आगे की तैयारी में जुटो हतो। ऐसो कहत भओ सुजान - कक्का जू के चरननमें लोट गयो। कक्का जू ने ऊ की पीठ पे हाथ फेरो और कई - चल कलेबा कर ले - सूरज कब से छाती पे चढ़ आओ है। तैने ग्यासौंई नई करो। सुजान सिंह ने ई धरती पे हसनपुर में आँखे खोलीं तीं। ऊ के दद्दा, हुनगारो लरका देख के, ऊ खों शिवाजी महाराना परताप जैंसो सूरवीर बनावो चाहत ते । सो भिनसारई से दंड, बैठकें लगवाउत ते और रात खों सोतऊँ सोतऊँ देस भकतन के जीवन की कथायें सुनाउत ते। वे ऊखों पक्को देस भकत बनावो चाहत ते - पै ईसुर खों कछु और मनजूर हतो।

सुजान ने अबे आठई चौमासे निहार पाये ते, के मूरतसिंह की टेढ़ी नजर हसनपुर पे पर गई - गाँव देखतई देखतई मरघटा में बदल गयो, बच गयो तो केवल सुजान बचवा। मूरतसिंह ने ई रोबीले लरका खों देख अपने संग डुरया लओ। सुजान के संगे अब न दद्दा हते और न उनके मनखता से पगे विचार। अब तो मूरतसिंह की बिगनऊ नजर और हत्यारी हरकतें हतीं। इन सबई की छाया सुजान के मन पे परन लगी। गिरदोना खों देख गिरदोना रंग बदल लेत है फिर तो सुजान खों मूरतसिंह बनवे में जादा टेम न लगो। बाप सेर तो बेटा सबा सेर। सुजान की दहसत इलाके भर में दमार सी फेल गई। जी गली में से सुजान निकर जाय, उतईं सन्नाटो छा जात तो।

सुजान तैने बियारी कर लई ? सुजान को जूंठे हाँत धोउत देख कें कई मूरतसिंह ने - हओ कक्का जू सुजान ने झुक के कई मूरतसिंह सुजान से बतयान लगे। सुजान भौत दिना हो रये एकऊ सिकार नईं भई। इलाके के मनख सोचन लग हें के मूरत तो अब बुढ़ा गयो हे और सुजान अबे लरका है। एकाद धमाका होई जाय - ऐसों कछु घोकौ पासई के कस्बा बस्ती में छदामी सेठ बलबला आओ हे। अब तो ऊ हमई से झौंड़ लेवे की सोचन लगो हे - काय न कुरा खोंट दओजाय ? ऐसों सुनके सुजान के गटा लाल हो परे - सुजान बोलो - कक्का जू के लाने जो आँखें दिखे हे - ऊ की आँखें निकार लई जैहें - अबई हुकम होवे - ऊ के वंश को नाव मिटा दओ जेहे । सलाह सुद भई - जैसई सोता परे - डकैत छदामी सेठ के घरे आ धमके। आव देखो न ताव, दना दन फेर होन लगे मूंड़े भटा सीं गिरन लगीं, घर रकत से रंग गयो, चौख

चिल्लाहट शांत हो गई – मूरतसिंह ने जी भरकें लुटाई करी, ऊ की खूनी आँखों में खुशी की सुरखी ती। भौंत दिनन के बाद ऊंखों हाथ लगो तो। डकैत ई वारदात के तुरतऊँ पाछें घर खों लूटन लगे तो पाछें से एक ललकार, उनके कानों में घुसी – रुको, तुमने भोले भाले मनख्यों के प्राण लये हैं। ईसुर तुमें कबऊँ चैन से ने रेन दैहे। डकैत ऐसों सुनखें चिल्लाने – ते हमें ईसुर की डरवावनी आ देत है ? हम तो ऐसई लूटत रेंहें और मनख्यों खों पोलत रेहें – तोरो ईसुर हमाओ कछु न बिगार पै है। डकैतों नें देखा सेठ छदामी की बहू अपने हात में तमंचा लये - सजीवन दुर्गा सी दिख रई ती। ऊने कई हत्यारो मोरो ईसुर तुम्हें निश्चय ही सजा देहे – तुमने मोरो पूरे कुनबा खों पेल डारो है-अब ईसुर तुमें पौल हे। ऐसो सुन तई डकैत ऊ पे झपट परे। बहू ने तमंचा से अपने छाती के द्वारे खो छलनी कर डारो और डाकुओं खों हाँत लगावे को मौका ही न दओ।

सुजान ने जब ई स्वांग की जा झाँकी देखी तो ऊ को सोओ ईमान जग उठो। ऊखों सोरा बरस पहले की घरी याद आई-जब ये ई झाँकी ऊ के घर में सजी ती- ऊ के बौ दउवाई ऐसईं धरती पे लुढ़क रये ते। हत्यारे मूरतसिंह की सूरत और अपने घर को सूनो आंगन सुजान को एकई सात दिखे। ऊने सोची न जाने अब ऐसे कितने घर मौत के डेरा बन हैं। वा हंड़िया ही फोर डारो जी में गुआ चुरत है। बस फिर का हतो सुजान की तलवार के एकई वार ने मूरत की मुंडी घर से अलग कर दई। अब तक गाँव के रहैया एकट्ठे हो गये-वे डकैतों को जो खूनी जुद्ध देखन लगे। जैसई मूरत पै बार भओ- दूसरे डकैत, सुजान पे टूट परे। सुजान खेलो खॉव गुइयाँ हतो। ऊने एक एक की खबर लई। पै ऊ अकेलो और जे डकैत मुलक भर के, होन लगे बार पे बार- सुजान अकेलो कब तक लड़तो- आखीर में धरती पे गिर परो। ओई घरी गाँव वारों में भी जोश आ गयो और उन्ने उनकी करनी को फल चखाई दयो।

भुनसारो होत होत जा खबर सबरे इलाके भर में फैल गयी। सब जने सुजान की बड़ाई करन लगे। आसपास के मनख्य मड़ई मेला जैसे जुर गये। सबने सोची सुजान ने हमें समझ दई है- डकैतों का खात्मा कर डारो। उनखों मदद न करो-पुलस को साथ दे देओ। ऊ स्तान पर "सुजान चबूतरा" गढ़ वे को निच्चय भओ और हर साल इते मड़ई लगाने की ठानी अब इते सुजान डकैत देवता सो पुजन लगो है।

-ज्ञानगंगा इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल,

जबलपुर (म.प्र.)

* * *

बुंदेली कहानी

'हँसना मोरो सुभाव, बलम तुम बुरओ न मानौ'

- डॉ. लखन लाल पाल

(डॉ. लखनलाल पाल हिन्दी के सुधी अध्येता और बुंदेली के मंजे हुए रचनाकार हैं। प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने बुंदेली मन की अनेक परतों को उघाड़ा है। बुंदेलखण्ड की विनोद वृत्ति और बुंदेलखण्ड की ठसक और मसक इस कहानी में दृष्टव्य है।)

रामरती भुनसारें जगी तौ ओखौं शरीर बुरई तरां से टूट रओ तो। जब वा खटिया सें उठी ता ओखे शरीर कौ पोर-पोर दूख गओ। कछु चक्करऊ से आये और आँखिन सें तिलूला फूट परे। ऊनै अपने बिलाउस के बटन लगाये और साड़ी हाँत में लैखें अपने बदन सें लपेटी। गालन पै परे घत्तन खें ऊनै अपने हाँत से रगड़ो। बखरी के आले सें ऊनै गुटका उठाखें फारो और मसालौ मूँ में डारो। ऊँगरिया में चूना लगाखें बहरिया उठाई और दोरौ झारन लगी। पहलवानी वाले दंगल में वा परासतई नई भई ती बुरई तरां सें रौंदीयऊ गई ती।

रामरती नै दोरौ झारखें चौतरा पै बहरिया फेरी तौलौ ओखी परोसन सुन्ती ओखे दोरे के सामूँ से निकरी। रामरती खें चौतरा झारत दिख खें वा बोली- 'रामरती! ई वेरा दोरौ झार रई, ई बेरा में, न ऊ बेरा में, का बात है अभई जगी का? रामरती ने गुटका की पहली पीक थूकी और बोली - 'जिज्जी का करौं, बरगओ आँखी लग गयी।' सुन्ती मुस्क्या परी, ऊनै रामरती पै उछैटौ व्यंग फैको - ''रात सोवे के लानै बनाई है भगवान नै, आदमी ओई में काट ब्योंत करिहै ता यौ तौ होनई है।'' इत्तौ कहात भई वा चली गई। रामरती के मूँ पै मुस्कान पसर गई।

रामरती हल्के साँवरे रंग की मंझोला कद काठी की लुगाई है। भरो पूरौ शरीर पूरी तरां से कसो भओ है। गोल-गोल मूँ, बड़ी-बड़ी आँखी, लम्बी गोल नाक, भरे-भरे गाल, जेखी नजर पर जाय ता नजर हटाई न हटत ती। ओखी खरखरात भई आवाज सबखें साजी लगत, पै इ दुश्मन लोक लाज के मारें आदमी कहाँ जादा दिख पाउत तो। बड़ी-बड़ी कजरारी आँखी सूधी करेजे सें समपरक साधत ती। जेखऊ ई मूँ खें एक देर दिख लेबै ता ऊ देर पै देर दिखें खें फिरत तो। यौं हत्यारौ परदाऊ खूबसूरती खें ढाँकई बनो रहत। आदमिन कौ बनाओ परदा अब आदमिन खें भारू लगन लगो। गैल घाट में कोऊ नई दिखानों सो रामरती घूँघट माथे पै धर लेत्ती। ओई समै कोऊ निकर भगो ता जरूर ओखें चाँदी के दरशन हो जात्ते । रामरती झट से लम्बौ घूँघट काढ़ लेत्ती। यौ खूबसूरत मूँ कोऊ-कोऊ की आँखिन में कौंधतई बनो रहात। ई ठसी बइयर खें दिखखें तौ कई आदमिन खें अपनी सात भाँवरन की गेरी-गिराई तुच्छ लगन लगीं, पै करै का, भाग खें कोस रये ते .... पुरखन खें पानी दै रये ते।

रामरती बाड़े में भैंस कौ गोबर डलिया में भर-भर खै फैंक रई ती। ओखौ मन रातई सें कछू खटयानो सौ हतो - 'कैसौ आदमी है, इंसान खें इंसानई नई समझत, खुद तौ जानवर है दूसरनऊ खें जानवर समझ लेत। दिन-रात डंडई दिखाउत रहात। बड़ौ शकी है इंसान है। बस मूँ सियें रहाय, काऊ सें न बतावै। काऊ से बतानी ता वर जात .... आगी छूब जात। काल के दिना रतना सें हँसत बोलत दिख लओ सो यौ और लाल हो गओ। अभै दिखी

नहियाँ बइरें .... मूँछन पै झूला घालती। ऐसी मिल जाती सो समझ में आ जातो। मोखें नाठपरो लगाई बनो रहात। आदमी बइयर की थोरी बहुत तन्ना फुसकी तौ चलतई रहात, पै ईनै रोज-रोज कौ धातम बना लओ। अपना मठा कैसौ घूँट पियें बनो रहात सो मोरहऊ खें अपने कैसौ बनावो चाहत। सबकौ सुभाव एकई जैसौ तौ नई होत आय ...... इत्तो नई समझ पाउत यौ। रामरती बहुत देर लौ ऐसई बरबरात रही। ऊनै गोबर फैक खें अपने हाँत पाँव धोये और भैंसकी सानी बनावे खे चली गई।'

बालेन्द्र सिंह, रामरती कौ पति .... खसम .... भरतार .... औखौ संरक्षक जो कछू समझौ। जित्तौ काम होत उतनई बोलत .... फालतू की बातन सें ओखे कोऊ मतलब नहियाँ। गाँव मुहल्ला में बालेन्द्र सिंह बालेन नाव सें बुलाये जात। अब तौ ओऊ खें नई लगत आय कि कभऊँ ओखौ नाव बालेन्द्र सिंह हतो। बालेन नाव से सब कहूँ जानो जात। चिठिया-पतिया, बुलउआ-चलउआ येई नाव सें होत। ओखें, मुहल्ला के वे लरका साजे लगत जुन ओखी लुगाई सें हँसत बोलत नहियाँ। बइरिन के बीच में बैठ खें पंचाट लगाउत वाले खें ऊ मिहरा कहात। ई मामले में ऊ सबसें जादा नाराज रतना सें रहात। रतना अठारा साल कौ नओ लरका है। गोरौ चिट्ठौ, कारी घनी रोयेदार दाढ़ी मूँछ में ऊकौ भरो मूँ साजौ लगत। अपनी बइयर कौ रतना सें हँसवो बोलवो बालेन खें फूटी आँखिन नई भाउत।रामरती खें ऊनै कई देर हटक दओ कि तैं ऊ लुंगाड़े से न बोले करे, पै ओई नई मानी। बात न मानें कौ मतलब का भओ? बस येई सें बालेन रामरती सें खौखरयानो बनो रहात। ऊ कभऊँ कोऊ सें नई दबो, पै रतना के सामूँ ओखी बोलती बन्द हो जात .... उमंगें उदासी में बदल जात। या कौन सी वजै है, ओऊ नई जानत। यौ भीतर घुसो चोर ओखें हलकान करें रहात।

मैंने ई लुगाई खें दिखो है। या गाँव के बाहर बने आठ दस कच्चे-पक्के मकानन के माँझा में नई रहात, जहाँ घरन के आस-पास गिंधलयापन रहात .... जहाँ छुट्टा ढोर घूमत रहात, ... जहाँ सुँघरिया जब कभऊँ घरन में जबरई घुस जात और खटोली में सूख रई पिसिया में मूँ मार देत। या लुगाई वहाँ रहात जहाँ बस्ती घनी है। कछू बइरिन और आदमिन की आँखिन में या लुगाई बरोबर खटकत। येऊ ऊ लोगन के बीच में वरोबर खटत, फिरऊ या ऊ घर खें नई छोड़वो चाहत.................. रहात है वा अपने शकी, जिद्दी और बात-बात पै हाँत औ डंडा चलाउत वाले खसम के संगै। मोखे लगत है कि वा ऊसी है, पै वा ऊसी है नहियाँ। जब मैं महसूस करत हौं कि वा ऊसी नहियाँ तौ लगत है कि वा ऊसई है। स्यात ऐसई ई चारौ काटत वाली बइरिनखें लगत। चरखारी वाली ई झुण्ड की मुखयान हती। वा बोली - "लरका बिटिया कौ मूँ उघारबो कौन साजौ लगत। अभई एकई दो साल तौ भई है आँय। दाई बनी फिरत। पाँच साल तक हमाये काऊ नै ओंठ नई दिखपाये। अब तौ लरका बच्चा हो गये सो आय धोती माथे लौ सरका लेत।"

-'जिज्जी, रतना सें ऐसें ठिलठिलात जैसें ....। ओई झुण्ड की एक ऐंचक बैचक दाँतन वाली लुगाई नै मूँ निंदोरो।

-"रतना अकेले से काये वा तौ सबसें ठिलठिलात। हरजाई की हौकई नई मरत आय।" चरखारी वाली अरिया चलाउत भई बोली- "खसम लहडुआ है जौन आय उचकत फिरत। हमाये कैसौ आदमी मिल जातो ता चोदी चिग्घारती।" चरखारी वाली नै अपनौ कद बड़ौ करो- का मजाल जुन काऊ सें हँसी ठिठोली कर लऊँ। मैं तौ अभऊँ आँखिन सें डिरात।"

चरखारी वाली कौ जादू चौकस बइरिन के मूँड़ पै चढ़ खें बोलन लगो। बइरें चरखारी वाली की वे सब बातें भूल गई जुन परसाल उड़त रही तीं। आदमिन खें कान नई दये जाते । आज ओई दूद की धुबी रामरती के पछाऊँ परी

ती। सब कछु छोड़खें उन्हें तौ रामरती कौ कटबो चिरबो करेजे खें ठंडक पहुँचाउत तो। उन्हें लगत तो जैसे वे चारौ नई काटत होय...... रमरतिया खें काट रई होय। उनके खसम ओखी खूबसूरती की बहुत बड़वाई करत रहात सो वा उन्हें शूल सी सालत। आज लगत तो कि वे अपने गली के सब काँटे झार खें फैंक देहे।

गाँव में बालेन कौ अच्छौ जलजलौ है। ओसें उरझे सें सब कोऊ डिरात। धुकैल आदमी पता नई अंधयारें उजयारें का कर ठाड़ो होवै, सो ऊसें कोऊ नईउरझवो चाहत। ऊसी बातन पै आदमी कनाव काट खें निकर जात। आदमी महीनन ओखे दोरें नई झाँसकें, पै जब से रामरती आ गई तब से जरूर कछु बइरें उठ-बैठ लेत। ओऊ जब ऊ घर में नई होत। रामरती कौ सुभाव साजौ है। चीजें बसतें लैबे-दैबे में वा तनकऊ चुड़िढन नहिया। एक दूसरे की दुख तकलीफ में ठाड़ी बनी रहात। जब कभऊँ वा बइरिन खें दाम पड़सिन सें मदद कर देत, फिर काये न ओखे ढिंगें बैठ है बइरें?...... जरूर बैठ हैं। रामरती तौ उनखें सालत जिनकौ अपने खसमन पै काबू नहियाँ .... जिन्हें लगत रामरती हमसें जादा खूसूरत है...... जिन्हे लगत हमाये आदमी हमाये हाँत से सरक न जायें।

बालेन खें लगत कि रामरती ओखें हाँत से न सरक जाय। ओखें यौ तौ पूरौ विसवास है कि कोऊ ऊखे संग में धोका न करिहै .... काये कि ओखें सब डिरात, पै या लुगइया मोखें नई जानत कि कहूँ खाला ऊँची में पाँव डार दओ ता काट डार हों। सासकेरी की ऊ लौंडा रतना से बहुत हँसखें बतात। ओऊ की हिम्मत तौ दिखौ, ऊ दिना चार आदमिन के बीच में कैसी ढार-ढार बाते करत तो- बइयर, पहलवानी में नई रहात........... ओखौ दिल जीतनै परत .... ओखें अनी मुस्कान सें, अपनी स्टाल से जीतो जात। प्रेम ऊ कहाउत जब एक-दूसरे खें दिखे बिना चै न परै। प्रेम समरपन चाहत। लाठी सें कब तक दबा खें राखिहौ? लुगाई डंडा तक लौ सहात जब लौ ओखी सहें की सीमा होत। उखर परी ता फिर चहाँ जुन मुंसवा होबै, कोऊ ओखौ बार ढेढ़ौ न कर पाहै। बालेन मनई मन मुस्क्यानो- हुँ बेटा करत रऔ ऐसई, फिर मैं दिखत को कैखौ बार ढेढ़ौ नई कर पाउत।

रतना नै कटे झाकर पगहिया में बाँधे और अपने अंगौछा की कुंडी बनाई। दोजखना लाठी सें झाकर उठाखें मूँड़ पै धरे और चल दओ। झाकर ऊनै बाड़े में फैंके। रामरती कौ बाड़ौ रतना के बाड़े से लगो भओ हतो। बाड़े की सीमा झाकरन से बँटी ती। रामरती अपने बाड़े की सफाई कर रई ती। रतना नै अंगौछा सें अपने मूँ कौ पसीना पौंछौ। रामरती नै रतना खें दिखो और हँसखें बोी - लला, बहुत मेहनत करत हौ, अब देवरानी बुला लेव।

रामरती की मीठी बातें सुनखें रतना की सब थकान मिट गयी। ओऊ मुस्क्या खें बोलो- भौजी का जरूरत है अभै .... तुम सब जने तौ हौ।

'दो माटी के जुतै बैलवा की उतनी कीमत नई होत लला, जितनी नये कलोरे की होत।' रामरती की बड़ी-बड़ी कजरारी आँखी रतना के मूँ पै अटकगई - 'नओ कलोरौ अभै तुम्हाये घरई में बँधों हैं। काये खें बारा जहँगा घर ढ़ंढत फिरत हौ .... घरई में भाँवरें डरा लेव।'

रामरती के सामूँ रतना टिक न पाओ। रामरती के व्यंग नै रतना कौ मूँ लाल कर दओ। ऊ अपनी झेंप मिटाउत भओ बोलो - भौजी, बालेन भइया नाराज रहान लगो है, ईसें तैं मोसे जादा बातें न करे-कर। का फायदा मोय पाछूँ तोर फदियत होवै। रतना की बातें सुनखें रामरती खुल खें हँस परी- लला, इत्ते काहे डिरात हौ? कये सैंघौ सुटक लैहै का ? रामरती डलिया में कूरा भरत भई बोली- है तौ बड़ौ शकी इंसान, ऊ समझत कि मैं तौ ....। लला जब कर नहियाँ तौ डर काहे कौ। ओखें तौ यौ लगत कि - ''मैं गद्दी पै धरै। कभऊँ इंसानन के बीच रहो है कि ढोरई चराउत रहो।'' - ऐसौ कछू नहियाँ भौजी, बालेन भइया

दस पास है। का बताओ जावै, ऊ गँवार है। ऊ तौ हलकेई सें ऐसौ रहो।

ऐसई में भूलू निकरवे परो। भूलू, रतना की मेरा ढाँकरी कौ हतो। हाँत में पानी से भरो लोटा लेंय खेतन कोद हगन जा रओ तो सो उनकी बातें सुनखे ठिठक गओ। रामरती भूलू सें बोली- लला तुम हगयाऊ, इतै तौ रामकथा हो रई है। तुम न परौ ई चक्कर में, रामरती आँखी मटका खें हँस परी। भूलू खें रामरती कौ आँखी मटकावो साजौ लगो, सो ऊ बोलो- बचखें रहियो, बालेन भइया नै दिखलओ तौ रामकथा खें रावण कथा में बदल दैहै।

लला, रामकथा होवै वहाँ रावण कथा, पीसी तौ बइयरई जात।

हओ भौजी, तोई येऊ बात सही है। भूलू नै मुडी मटकाई- "रतना और बालेन भइया के पाटन के बीच में तैं न पिस जइये।" भूलू इत्तौ कहखें आँगे बढ़ गओ।

रामरती नै खड़ारौ एक कोद धरो और वा अपनौ दूसरौ काम करन लगी। रतना बाड़े से निकर आओ।

रतना ने अपनौ ब्याव करावे से इंकार कर दओ। का बात है? मुहल्ला में खुस-पुसउआ मच गओ। रतना के बाप मतारी नै ओखे खूब समझाओ, पै ऊ न मानो। नहियाँ सुने से विचारे सगाई वाले लौट गये। काऊ की समझ तरें नई आओ कि रतना ब्याव काये नई करा रओ। पै कछू आदमी ई बात खें दूसरे इंगल में दिखत ते। काये कि यौ लौंडा रामरती से बहुत हँस-हँस खे बतात। उनकी शक की सुजी वहीं घूमन लगी। कोऊ खें का करनै? आप सुरझै बालेन, न सुरझै बालेन। उनकी तौ मूँ गुबरयाय की आदत हती सो खूब मूँ गुबरयाओ। कइयक ई ईरखा में मरे जात्ते कि रामरती जित्ती अच्छी तरां रतना से हँसत बोलत, उत्ती अच्छी तरां से हम सें नई बोलत। स्वसुर नै साजी लुगाई फटकार दई। बालेनऊ के कान में या खबर पर गई। ऊ तौ ऊसई जरो भुकरो बैठो तो ई खबर सें ऊ और तिलमिला गओ। अभै तक तौ ऊ शकई आय करत तो, अब तौ ओखें पूरौ विसवास हो गओ कि रामरती पक्की छोलन है।

बालेन नै खाना खाखें लोटा भर पानी पियो और उठ बैठो। रामरती नै बालेन की जूठी टाठी उठाखें पनारे पै धर दई। रामरती नै बालेन कोद दिखो और बोली - भैसें अभई ढील दऊँ कि कछु देर में? दो दिना से भुकरो बालेन गटा तरेरत भओ बोलो- पहलूँ मोई एक बात तैं अच्छी तरां से सुन लै .... हिसाब से रहिये। मोखें कछू सुनै मिल गओ ता मैं तोये ये घैला कैसे पोंद है न, दोऊ फोर डार हौं। ध्यान करै रहिये। बालेन की ऐसी बातें सुनखें वा कुढ़ गई, फिरऊ हँरा से बोली - मैं ऐसौ का करत हौ जुन तुम मोई रोज ताँस नवाई करत रहात हौ? तुमन कभऊँ कछु दिखो है .... दिखो होय ता बताऊ?

- "जौन दिना में दिख लैहौं, ऊ दिना बताये खें रैहौ? काट डार हौं। तैं मोखें कौन जानत अभै? पूरौ गाँव जानत है, तहीं अकेली रह गई है जानै खें। बालने गुर्रात भओ बोलो - तोरौ यौ बूँदा या लिपिस्टिक .... यौ पौडर .... खरखरात भई आवाज बहुतन खें साजी लगत।"

- "मैं काल से सब बन्द कर दैहो .... जब तुम्हें साजौ नई लगत ता मैं कौन खसम खें दिखा हौं।"

- "मैं नई कहात कि तें बन्द कर दै कि न कर। मो तौ यौ सूधौ लट्ठ है।"

बालेन की ऐसी उल्टी सूधी बातें सुनखें ओखें रोबो आ गओ। का करैं? कैसें समझावै ई मूरख खें? रामरती अपने बाप खें कोसन लगी- दुनिया में एखें दूसरौ लरकई नई मिलो। मोखे ई शकी जन्डैल के गरे सें बाँध गओ, अब खबर तक नई लेत कि मरत हौं कि जियत हौं। मैं अपने बाप खें इतनी भारू हो गई कि मोखें दिखन तक नई आउत। रामरती बरबरात-बरबरात वासन माँजन लगी। बालेन भैसें ढील खे खेतन कोद लै गओ। रामरती नै अपनी धोती के छोर में अँसुआ पौंछे आँखें मन में बादर से घुमड़न लगे- "अच्छौ दवा लओ ईनै मोखें .... कब

भुलू अपने ब्याव की बातें सुनखें कछू शरमियानो, वे येऊ कम नई हतो सो बोलो- "भौजी रतना नै तौ अपनौ ब्याव उटका लओ। अब न ईखें कोऊ पूछ है।"

"लला खें अब ब्याव की का जरूरत है? जब ऐसई काम चल रओ है ता दुनिया भरे कौ बबाल काहै खें करत रहबै।" काहत-कहात रामरती खिलखिला खें हँस परी- घरई में है, ओई से भाँवरें गेर लै। न पइसा लगनै, न कहूँ फिरनै।

रतना लिड़यानी हँसी हँस परो। ऊनै जवाब दओ- "भौजी, मोखें तौ तहीं अच्छी लगत। तोय कैसी बइयर न मिल है काऊ खें। बालने भइया की भाग साजौ है जून ओखें तैं मिल गई।"

"मोरहई खें काये नई राख लेत आव। हमाई-तुम्हाई जोड़ी साजी रैहे।" रामरती, रतना कोद मूँ कर खें खिलखिला परी।

"काये खें भौजी, ऊसई तौ बालेन भइया नाराज रहत है। अगर तोपै मैं कब्जा कर लैहों ता ऊ न जानै का करहै?

"मैं इत्ती नई डिरात लला रामरती निडर होखे बोल- "सात भाँवरे गेर खें आई हौं, कछू पूँछत-पूँछत नई आई।"

"भौजी तोई येई बातें तौ साजी लगत। ऐसौ लगत तोखें छोड़ै न .... दिन भर तोरहई खें दिखत रहाय। रतना नै हँस खें या बात कह- भागवान नै बहुतई अच्छी बनाओ तोखे।

"लला, तुम्हऊ तौ साजे लगत हौं। सौ लरकन के बीच मैं ठाड़ो कर देवै ता तुम अलग दिखौ। अपनी बड़वाई सुनखें रतना फूल गओ।

ऊ दोउअन की बातें सुनत-सुनत भुलुअऊ की मन हुल उठो। ओऊ नै अपनी मुस्कान ढीली- "भौजी बयाव मैं का-का होत?"

"धत.............! समरती लजानी- लला ब्याव होहै सो सब सीख जैहौ।"

"हओ! मैं सोचत तो ....।"

"अब तुम कछू नई सोचौ लला। रामरती नै भुलू की बात काटी।

"स्वसर के, जब तोखें इतनी स्वाद नहियां ता काये खें वीरा चाब लओ......... कह न देतो कि मैं अभै कछु नई जानत।" रतना नै भुलू से ठिल्ल्याव करो।

रतना की बातन सें भुलू झेंप गओ। अपनी झेंप मिटावे खें और रामरती के सामूँ अपनी कद ऊचौ करै के लानै ऊनै सत्ते पै सत्ता मारो- "तैनें येई से आय का वीरा नई चाबो?"

"और कई बातें हो सकत लला।" रामरती नै अपनी आँखी चमकाई भुलू नै रामरती के मूँ पै अपनी नजरें गड़ा दई। रामरती की बातन पै ऊखौ निरनै करबो कठिन हो गओ कि या मोई बात कौ समरथन कर रई है कि रतना की बातन कौ?

बातनई बातन में रतना नै बखरी कोद झाँको। दिन लौट गओ तो सो ऊनै कहीं - "भौजी, चलन दो, अब उसार बाद की वेरा भई। चलौ कछु दिखहै-सुनहै। रतना ठाड़ो हो गओ- जाबे कौ मन तौ नई करत।

"इतई बने रहाव। रामरती हँसी।

अब फिर दिखहै। इत्तौ कहखें वे दोऊ रामरती के घर से निकर आये।

रामरती नै दोरे के किवाड़े उड़का दये। वा अपनी काम करबे के लानै भीतर वाले मढ़ा में घुसी। मढ़ा में घुसतई ओखौ शरीर जड़ हो गओ। मूँ पीरौ पर गओ। आँखी फट सी गई। रामरती के सामूँ बालेन ठाड़ो तो। ओखी आँखिन के सामूँ मढ़ा घूमन लगो।

"तुम .... तुम कभै आये हारै नई गए का?" रामरती की जुबान लिफड़या गई।

"मैं आज गओ कहाँ हौ? कहूँ नहीं दिनभर येई मढ़ा में घुसो रहो। बालने लाल भभूका हो गओ। आँखी

लाल .... सुरंग लाल हो गई- चले गये वे दोउ?

- "हओ .... ओ।" रामरती इत्तौ कहखें बाहर खें निकरी। बालेन नै ओखौ हाँत पकरो - कहाँ जात? बालेन के मूँ पै क्रूरता मढ़ गई।

- "काम डरो, ऊ करनै है।" रामरती नै अपनी डर निकारें की कोशिश करी।

- "रतना खें बुलाऊँ का? काये सें कि बिना रतना के तोरौ मन काम में लगत कहाँ है।" बालेन वहशी हँसी हँसो।

- रामरती नै बालेन के मूँ कोद दिखो फिर तरे खें आँखी करखें मुस्करानी स्यात पथरा पिघल जाय - "तुम्हें कछू नई सूझत, बस येई सूझत।"

- "तो मूँ साजौ है, मोखें तौ अभै पतई नई परो। भगवान नै तौखें बहुत साजौ बनाओ। बालेन के मूँ से कटुता भरो जहर निकरो।

- "तौ अब दिख लेव .... मैं कौन कहूँ भग आ गई।" रामरती की आवाज में खासी खरखराहट हती। 'हूँ .... मोय संग में तोर्खें पहलवानी दिखात ....' दुनियाभार की नौटंकी करत .... 'कहात कि हलूस खें धर देत।' बालेन भभको - ऊ नई तोखें हलूसत .... ऊ काये खें हलूस है .... ओखी और तोरी जोड़ी साजी है।'

- 'तुम इतै सें जात काये नहियाँ हौ .... भैसें ल्याऊ .... जानै कहाँ फिरत होहैं?' रामरती नै बालेन खें प्रेम से डपटो।

- आ हा ...... हा ...... हा ...... या बात मोई समझ तरें नई आई कि मोय भगे सें तो काम जल्दी हो जैहै।' बालने नै रामरती पै कटु बयंग कौ तीर फैंको।

- हओ, येई समझ लेव .... तुम जाव इतै सें। रामरती नै बनावटी गुस्सा दिखाओ।

- मोर्खें तोरौ यौ मूँ तौ दिख लैन दै। कैसो बनो है? सब कोऊ कहात तो मूँ साजौ है। येई मूँ दिखें के लानै सब कोऊ तोसें गाछी सौ चिपकत। अब तोरौ यौ मूँ आज के बाद कोऊ न दिख है। गुस्सा में बालेन कौ मूँ करिया पर गओ। झपट्टा मार खें ऊनै रामरती कौ पूरौ मूँ अपनी पाँच ऊ ऊँगरियन से भरो जैसे बाज बटेर खें अपने पंजन में बिदा लेत .... जैसे बिघना गाड़र खें दाब लेत। रामरती न तौ बटेर हती और न गाड़र। वा पहलूं से हुशियार हती। रामरती जानत ती कि कछू न कछू तौ होनई है सो ऊनै बालने खें धकया दओ। बालेन सध न पाओ और लड़खड़ा गओ। बालेन कौ खून उबल गओ-बड़बर होखें मोखें धकयाउत .... ससरी मार डार हौं। बालेन ने रामरती खें लातें घमूसा मारबो शुरू कर दई। रामरती के मूँड पै की धोती खालें गिर गई। रामरती अपने आप खें हाँतन स बचाउत रही .... पै कौ लौ बचातीं .... हाँतन के बार बचाती कि लातन के । पूरी बखरी में दिवारी सी खिलन लगी। रामरती के शरीर से धोती अलग हो गई अब ओखें बदन पै पेटीकोट और बिलाउज भर रह गए ते। रामरती के चिल्लउआ पारें ती। वा जितनई चिल्लावै ओखी गुस्सा उतनई बढ़त जात्ती । लातें घमूसा मारत-मारत बालने थकयाओ । हाँफत भओ चिल्लानो- ससरी, डंडा डार हौं तब मान हि तैं। रामरती या बात सुनतई कँप गई। या मार तौ वा सहत रही पै यौ .... । ईसें आँगू वा सोच न पाई। अपने बचाव के लानै तौ कीरा मकोरु तइयार हो जात फिर आदमी इत्तौ दब्बू कैसे हो गओ? खासकर खें लुगाई। ईखें केने बनाओ इत्तौ दब्बू? धोती ने कि येई कि जात लुगाई नै या फिर पुरुष। ईखें उत्तर कोऊ न दै पाहै सिवाय लुगाई के .... ओऊ जब वा खुद से पूँछें? रामरती सुन्न पर गई....... ओखी पिड़री कँपन लगी। अचानक बिजली सी कड़क गई।

उतई डरो खड़ेरूआ रामरती नै उठा लओ और बालेन पै हुजैयो। बालने पाछूँ हट गओ........ जानबूझ खें नई ऐसई बिचक खें। खेड़रूआ (करीब दो हाथ लम्बा लकड़ी का डण्डा) दिखतनई बालेन अपनौ आपा खौ बैठो। ऊ जोर सें चिग्घारौ - "तैं मोखें मार है, तोई इत्ती

हिम्मत .... घाँटी काट डार हौं।''

- ''अब छुबाई खें दिख लै, दही सौ फैला दैहौं। रामरती गुर्राई। ओखी आँखिन से झर-झर अँसुआ झरन लगे। रोवे सें ऊकौ मूँ बिगर गओ। रामरती नै ऊखें चेताओ - कान कें ठेंटा निकार खें अच्छी तरां सुन लै, मैं अपनी सीमा जानत हौं। महूँ अपने परिवार में दस ससद्दन (सदस्य) के बीच में रही। मोखें सब ग्यान है ...... अपनी मरजादा कौ .... अपने बाप मतारी की इज्जत कौ। तोय जैसी सोच में तौ दुनिया भर लुगाई छोलन निकर आहै। तै तौ इत्तौ जानत कि हँसे बोलें में लुगाई बिगर जात। तैं अपनी आदत सें मजबूर है .... गँवार आदमी खें कहूँ ये बातें समझ में आउत ?''

बालेन रामरती कौ यौ रूप दिखखें सनक गओ। ऊखें खूबई भ्यास गओ कि अब ऊनै तनकई लौकाटारी करी ता जुन या कहात है, कर ठाड़ी होहै। गाँव भरे के आदमी नाव धर हैं कि बड़ौ लठैत बनो फिरत तो .... लुगाई से कुट गओ। बालेन खें अब अपनी इज्जत बचावो मुश्किल दिखान लगो। पुरूष होकें बइयर के सामूँ हतयार डार दैवो या तौ ओखें लानै बहुतई बड़ी तोहनी वाली बात हो गई ती। ओखें तो चुरूवा भरे पानी में डूब खें मर जाओ चाहिये। ततोस कम न होवै सो ऊ मिसमिसयानो - अरी रंडी तोरहई कारन तौ ऊनै अपनौ ब्याव नई कराओ और तैं मोखें सिखैऊत। ''तोय पास जित्तौ दिमाग है उत्तई तौ सोच पाहित। ईसें आँगू सोचें की तोमें शक्ति कहाँ हैं ?'' एक देर फिर सें रामरती के अंसुआ झरे- ''एकाद देर अलग सोच खें दिख लेतौ .... यौ फितूर निकारखें।'' ''तैं बड़ी अक्कल वाली हित ता तहीं बता कारन .... महूँ तौ सुनौ।'' बालेन नै नथरा फुलैये। ओखें घर में ज्वान बहन बैठी है। ऊ चाहत है कि पहलूँ बहन कौ ब्याव हो जावै, फिर ऊ अपनी ब्याव करा है। रामरती नै खदेरूआ जमीन पै टिकाओ।

अब बालेन सकपकानो का या बात सही है ? अगर सही है ता साँचऊँ मैने गलती कर दई पै यौ मरद मन इत्ते जल्दी ये बातें मानै खें कैसे तइयार हो जैहे .... ऐसौ होई नई सकत । ओखें भीतर के पुरूष नै कुतरक करो - तै मुहँ न सिखै .... जून ये बातें बना-बना खें मोखें सुना रई है .... मैं सब सीखीं हौं। तोरे कैसी बइरें सबसे पहलूँ बातई बनाओ सीखतीं। वे और कोऊ पींधा पाठा आदमी होहै जुन तोय जैसी छोलन की बातन में आ जात .... मैं ई बातन में आउत वालौ नहियाँ।

तहूँ अच्छी तरां सें सुन लै .... ईसें जादा सफाइ न दै पाहौं .... तोखें विसवाास नहियाँ ता मोय बाप खें अभई खबर पहुँचा दै .... मैं अपने मायके चली जैहों। या बात कहात में रामरती कौ करेजौ सौ निकर गओ।

- ''रामरती तुहै कहूँ नई जानै ....मोय घरै चल, जैसी मोई दो मौड़ी है तीसरी तहूँ आय। सुन्ती हल्ला सुने सें अपने घर सें दौरी चली आई। ऊनै रामरती के मूँड पै लाड़ सें हॉत फेरो। रामरती सुन्ती सें चिपक खें रो परी । सुन्ती रामरती खें चुपाउत भई बोली - न रो रामरती, मैं तुहे जानत नहियाँ .... खूब जानत। घोड़ा खें लगाम होत .... बैल खें नाथ होत ....आदमी खें ....।

- कृष्णाधाम के आगे अजनारी रोड
नया रामनगर, उरई (जालौन) उ.प्र.
मोबा. 9236480075

बुन्देली निकुँज

बुंदेली-गज़ल

अँखियाँ-अँसुवा लयें...।
अखियाँ-अँसुवा लयें रो रईं॥

चैन-चैनऊँ खाँ भी खो रईं॥
छै-महीना में आवे कही -

सालें तकते-तकन हो रईं॥
का पतौ का करत हैं कहाँ?

बात कौनऊँ से ना हो रईं॥
अब सबुर की भी हद न रई-

का करें भी ये दुख ढो रईं॥
अब दारऊ में कारो-दिखें-

सीकर नई-सौतनें हो रईं॥

-डॉ. एल.आर. सोनी 'सीकर'
सीकर भवन, ठंडी सड़क, दतिया

(बुन्देली गज़ल)

जुन्दईया

- साकेत सुमन चतुर्वेदी

सबकौं जी चुरात है तें वारी! जुन्दईया।
मनखाँ भौत भात है तें प्यारी जुन्दईया॥

रूखन की ई डगांर ऊ डगांर पें
टुनग-टुनग कुदकवें मतवारी जुन्दईया
पत्तन के कौंचा संग पोर तक दिखें
परत जबई ऊपरें उजियारी जुन्दईया

ऐंगर कों न सुजात अंदियारे में
तनक में मिटात रात कारी जुन्दईया
बदरई की धुतिया सें आँग ढाँकके
लगत है कतकारी सी न्यारी जुन्दईया

हिंचरू सी सबरें, जब लिपट जात है
पलपट सी देत है किलकारी जुन्दईया
सेई के काँटे सी गुच्च जात है
रात-दिनां दुखत है दुखयारी जुन्दईया

उल्टी गैल चलत काओ तें बता 'सुमन'
भोर होत बजत जो निंदयारी जुन्दईया

36/15, प्रेमगंज, सोपरी
झाँसी - 284003, जिला - झाँसी (उ.प्र.)

शब्दार्थ :

जुन्दईया - चाँदनी, रूखन - पेड़, डगांर - शाखा / डाल
कौंचा - हाथ, ऐंगर - पास, सुजात - दिखना, बदरई - बदली
धुतिया - साड़ी, हिंचरू - एक खरपतवार बेल, पलपट - हरे चने के फल
सेई - एक छोटा जानवर जिसके शरीर में एक फीट लम्बे काँटे होते हैं। जिंदनारी - सोने वाली

ससरार की होरी

होरी सें पैलां सारे नें मोखाँ चिठिया डारी।
ससरारे आबे की जीजा करलो अब तैयारी।
मैंने ज्वाब लिखो चिठिया को ई दइयाँ में आहौं।
तुम औरन के घरै तबई के संगै फाग मनाहौं।

होरी में ससरारे पौंचो दैंव किये में खोरी॥
मोरों कातन कछू बनै नाँ जैसी गत भई मोरी॥

बैठो तो खटिया के ऊपर जबरई मोय खचोरो।
मौं से भरो हतो तो नरदा ऊ में मोखाँ बोरो।
घोरें धरे हते पैलाँ से करिया रँग की नाँदे।
मोय ढकेलत उतै लिवा गए जितै गदा से बाँदें।

मोरे संगै करी सबइ नें ऐंनइ दाँत निपोरी।
मोसें कातन कछू बनें नाँ जैसी गत भई मोरी॥

नरदा में हो गई सबरी कुरती परदनिया कारी।
बोले जीजा बैठ जाव अब हम लै आए सवारी।
मोय फटे मुन्डन की उननें पैरा दई ती माला।
कान लगे मुस्क्याकें सबरें नौंने लग रए लाला।

मो पै आन कुड़ेली उननें भरी राख की बोरी।
मोसें कातन कछू बनें नाँ जैसी गत भई मोरी॥
मोरे मौं पै उननें पोतो ल्याकें चूना सूको।
बन्न बन्न उन्नाँ पैराकें मोय बनाओं विजूको।
टूटो बारा लैकें उननें जबरन बाँदों मोरें।
गेर गाँव घुमवाओ गदा पै ल्वा गए अपने दोरें।

मोरे लौ अलकतरा लैकें दौरे छोरा छोरी॥
मौसें कातन कछू बनें जैसी गत भई मोरी॥

मोय विजूको घाँइ देखकें सब मोखाँ तिनगाबें।
सब कैबे के लानें जुट गए जीजा नाच दिखाबें।
सबरन सें धिगया पतयाकें छूटे पिन्ड मसाकें।
कुर्रू दइ मैंने फिर तौ दम लइ मोंटर में आकें।

मन में कइ रे सारे लीला बड़ी विकट है तोरी॥
मोसें कातन कछू बनें नाँ जैसी गत भइ मोरी॥

पकरे कान घरै आकें कऊँ होरी में नाँ जैहौं।
कोउ कितेकउ कात राय मैं घुसो घरइ में रैहौं।
सारे करतूत भौत ई दइयाँ मोय अखर गइ।
अब नाँ आहौ कभऊँ भूलके उयै खबर जा कर दइ।

कल्ला रइ है अबलौ मुँइयाँ मोरी गोरी गोरी।
मोसें कातन कछू बनें नाँ जैसी गत भइ मोरी॥

मैंने कभऊँ होस में ऐसी होरी खेली नाँ ती।
ससरारै जाकें अबकी सें जैसी भइ ती दाँती।
रँगनइ हतो प्रैम के रँग में मोखाँ ऐंनइ रँगते।
मोय पतो नाँ हतो उनन की होरी के जे ढँगते।

भौत हतो "मायूस" मजे सें मोय लगाते रोरी॥
मोसें कातन कछू बनें नाँ जैसी गत भइ मोरी॥

- नवल किशोर सोनी 'मायूस'
कोतवाली के पीछे, छतरपुर (म.प्र.) 471001
फोन : 07682-248161, मोबा. : 9993693226

धनुआं की किसानी

- पं. रतिभानु तिवारी 'कंज'

अपनौं रूप संवारे फसलें, खेतन में हरयानी।
आंसों की सालै धनुआं नें नौनी करी किसानी॥

सतरंगी सारी पैरे जे
खेतन खों सिंगारे।
फागुन के मइना में फसलें
अपनौं रूप निखारें॥

घूंघट में हो करे इशारे, इन खेतन की रानी।
आंसों की सालै धनुआं ने नौनी करी किसानी॥

बटरा की कोंसे पायल के
रोना सी झनकारें।
गैलारे पनघट के ऐंगर,
चुनबे बूट उखारें॥

माठठ के दूजे पानु सें पिसिया भई स्यानी।
आंसों की सालै धनुआं ने नौनी करी किसानी॥

आलसी खों लखतन इठलानें,
जे सरसों के फूला।
धना विचारौ खेत भरे में,
बजा रऔ रम तूला॥

मसरी नवल दुलैया प्यारी, खेतन में मुस्क्यानी॥
आंसों की सालै धनुआं ने नौनी करी किसानी॥

चना पिसी आपस में दोउ,
डार रए गलबैंया।
नेव बड़ौ चौमासौ कड़तन,
जब से डरी हरैयां॥

पिसिया अगन फूस में समरी फागुन में गर्रानी।
आंसों की सालै धनुआं ने नौनी करी किसानी॥

सेंमर के फूला फसलन की
भरें मांग में रोरी।
आज उनारी भौजी के संग,
टेसू खेलै होरी॥

बीच मेड़ पे ठाड़ौ धनुआ तकै बाल गदरानी,
आंसों की सालै धनुआं ने नौनी करी किसानी॥

बुन्देली धाम
नैगुवाँ-टीकमगढ़ (म.प्र.)

विरही-पाती

एम.एल.चौरसिया

लगत चैत को टिया धरो तो, आन लगो चौमासो ।
पिया पिया पपिहा की सुनकें, छिन-छिन आये झमारो।
काय की सें कै बुलवा लेव, संदेशो उनका पठवा देउ ।
हूक उठे सुन कूक मोर की, मन मयूर मचलत है।
भरे समुद्र में घोंघा प्यासो, सो जो जी तलफत है।
मों बिरहिन के दोहू नैनन में, छैल छबीलो झूलै ।

सीताराम कालोनी, छतरपुर (म.प्र.)

गौ कौ आल्हा गीत

- लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'

गैयाँ बैला कभऊँ कसाई के हाँतन में ना पकराव।
गैयाँ गाँवन सें हँकवाबे, उनके छुये चना ना खाव॥
कष्ट कतलखाँनन कौ सुनकें, सबरौं जी भर थर्रा जात।
ईसें गैयाँ गाँवन में रये उर फसलें भी बचवें आज॥

अपने अपने ढ़ोर बछेरू, बाँदौ अपनी अपनी थान।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान॥

पैलां अपनी इन गउवन खौं, भूँखन प्यासन मारो जात।
खौलत पानी की फुहार खौं, इनके ऊपर डारो जात॥
खाल जियत में इनकी उदरत, जौ सब देख नरक थर्रात।
तब कऊँ इन खौं मरन देत, फिर कट कें माँस विदेशन जात॥

गउवन की जा दशा होत जौ, नैयाँ मान्स मनई खौं ज्ञान।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान॥

कष्ट देत हैं जो गउवन खौं, बे तौ सूदेनरकै जात।
पुरखा गिरत नरक में उनके, उनकी करनी पै पछतात।
लावारिस गउवन के लाने, शासन सें ल्यों सुविधा आज।
गाँव-गाँव गउशाला खुलवें, अब तौ है पंचायत-राज॥

गउ की गउचर गउवन खौं दो, बैला है किसान की जाँन।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान॥

गउयें पूंजी श्री कृष्ण नें, इनमें सब देवतन कौ वास।
किलपा किलपा इनें मार रये, उनकौ होने सत्यानाश॥
जात कसाई कौनऊँ नैयाँ, करम कसाई कौ है पाप।
सत्य अहिंसा की धरती पै, ईसें बड़ौ नही अभिशाप॥

गउ कौ दूद सजीवन इमरत, गोवर सबरे सुख की खान।
मिटबा देव कसाईखानें, तवई देश कौ है कल्यान॥

करम कसाई कौ जो करबें, बे दूरइ सें ठर्रे जाँय।
धरम-एकता की जा धरती ई पे दुष्ट पनप ना पाँय॥
राई राई भरे लबैया, बछवा बछियाँ इनें बचाव।
प्यारे गैयाँ बैलाइन खौं, कभऊँ जंगलन ना हँकवाव॥

जंगल सें लै जात कसाई, वचन देव तुम गउ के प्रान।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान।।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सब खौं है गउधन सें प्यार।
जुगन जुगन सें सब धरमन कौ, गऊ के ऊपर लाड़ दुलार॥
कीमें ऐसी सामरथा जो, गउ के सबरे गुन लिख पाय।
जौंन शारदा ने लिखवा दओ, तुलसी सूर कबीरा गाय॥

गउधन कौ जो संग न छोड़त, ऊकौ संग देत भगवान।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान।

ईसें मोरे प्यारे भैया, इनैं गाँव से नही भगाव।
इनके प्रान बचाबे खौं तुम मिलजुर कै सब आँगें आव॥
गउ के भागन पानी बरसत, जीसें उगलत धरती अन्न।
गउ कौ दूद मिलै पीवे तौ, बालपन हो जावे धन्न॥

गउधन खौं गाँवन में राखौ, जीसें बड़ै गाँव कौ मान।
मिटवा देव कसाईखाने, तबई देश कौ है कल्यान॥

ईशानगर, छतरपुर (म.प्र.)

कबै की कौ का हो जानें

- *दीनदयाल तिवारी 'बेताल'*

कबै की कौ का हो जानें, फिकर काउ खौं नइयाँ।
बड़े मजे से सबखौं आ रई,ऊँट चड़त मलकइयाँ॥

की के घर इंदयारौ होनें, की के घर उजयारौ।
की के घर में सूनर होनें, की कौ जात सहारौ॥
ऐसी बुरई घरी जा आ रइ, का है राम करइयाँ।
बड़े मजे से सबखौं............

जबै जी की दार बगरनं, ओइऐ रूखौ खानें।
मौ आई रोटी छुड़ जानें, सोस सोस रै जाने॥
ऐसौ ऊदम होनें इक दिन, मिलें नपाँव पनैयाँ।
बड़े मजे से सबखौं...........

अपनो बनकें लूटत मारत, की पै करत भरोसौ।
अपनौ रौंम अपन खौं बैरी, तनक बैठकें सोसौ॥
नौनी बात लगत सतुर सी, काए मरोरत मुइयाँ।
बड़े मजे से सबखौं...........

मंत्री नेता खीर छान रए, अफसर खा रए हलुआ।
देख देख के भऊँ भऊँ कर रए, चक्कर काटत ठलुआ॥
जी पै बीदत बोउ निनवारत, चलायँ न चलती बइयाँ।
बड़े मजे से सबखौं............
एक न एक अदन धरौ है, कभउ न फुरसत हौने।
इक कथरी कौ लगो है जाड़ौ, आदौ होय कै पौनें॥
हाली फूली 'बेताल' गाउतीं, गीत गाँव की गुइयाँ।
बड़े मजे से सबखौं............

श्री सिद्धबाबा कॉलोनी
टीकमगढ़ (म.प्र.)

व्यंग्य गीत बुन्देली कहावतों पर आधारित

- *गोविन्द यदुवंशी*

कउंआ कोसे से कोउ मरो नइयां
इन बातन में कछु धरो नइयां
उन्ने कई ऊँट बिल्इया लै गई
काये जूं लै गई व कैसें लै गई

हाँ जू लै गइ उठा कै लै गई
कोउ ने कछू करो नइयां
इन बातन में कछु धरो नइयां

ऊँट क चोरी नुहर के न होवे
चाय कोउ कितनों चतुर चोर होवे
बखरी खां लइ किवारे खा लये
सोनेको ठाठ रओ नइयां
चोरन के घर खेती हो रई
चोरी से कोउ बचो नइयां
इन बातन में कछू धरो नइयां

डुकरा खां खटिया से नीचे उतारो
गोबर लिपा के धरती पै पारो
ठठरी पै धरके मरैला में डारो
मरेला में डुकरा मरो नइयां
कउआ कोसे से कोउ मरो नइयं
इन बातन में कछू धरो नइयां

अध्यक्ष म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन
राम मंदिर के पास, पन्ना

समाज सुधार

- परशुराम भास्कर 'विमल'

हर गंगा हर गोपाल, हर के वचन सुनों दो चार।
साजी बातन कौ भण्डार
ई में सबकौ होय सुधार
अपने मन में करो विचार
बातई करे तुम्हें खुशहाल
बातई सें हो जौ कंगाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

भजन करौ सातौ दिन रात
करौ न दगा काउ के सात
सुन लो जितनो जुरी जमात
तुन बदलौ जा अपनी चाल
गलै उतै तुमाई दाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

ई की ऊकी करें बुराई
गाँवमें करवा देत लराई
कैरये देखौ कला हमाई
लरबे ठोंकेअपनी ताल
चेला इनके करें कमाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

पंच कमेटी लगी दिखाय
साँसी बात कोऊ न काय
मैं देखी सब कोठ सटकाय
जितने ऐसे बने दलाल
मिट गये धनी बने कंगाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

कथा पढ़ें करें मन भरमाय
कर झूंठी माला मटकांय
जे ढोंगी साधु कहलांय
बगला ध्यानी चलें कुचाल
खा खा माल परे जे लाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

गाँव में सौ सौ चक्कर दैंय
पल पल की सब खबर जे लैंय
बैठे रोज ढंवड़ी-मैंय
फँस गये जब मकरी के जाल
बचे न सिर में एकऊ बाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

देखे और पराई नार
गाँव के लरका करें पिरचार
लुक्का आओ रऔ हुशयार
फैले इनके बड़े बबाल
अब आगें के सुनौ हवाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

जो कोऊ मन के चंचल होंय
घर में अपनी इज्जित खोंय
रोगी बनें एड्स के रोंय
बनकें आ गओ उनखां काल
जो मनमौजी रये बेहाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

मेंनत से जो करके खांय
काऊ के ऐंगर वे न जांय
ऊँसें कात हम तुमें बतांय
साफ नियत के हैं खुशयाल
जिनके सुन्दर चरित विशाल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

सुनी बात पै करो विवेक
आंखन देखी सबसें नेक
लाख टका सी कै दई एक
अपने मन सोचौ तत्काल
पुण्य की जरें होत पाताल
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

'परशुराम' लिख दओ सब सार
नैया करौ माजे से पार
नरतन मिलै न बारम्बार
रतन जतन सें रखौ संभाल
तुम्हें मुबारक हो नई साल
गाँव में सौ सौ चक्कर दैंय
-हर गंगा हर गोपाल, हर के ...

ग्राम-सापरा, पो.-म्यावरी, तह.-मऊरानीपुर
जिला-झाँसी (उ.प्र.), मो.9935967278

कैसी जा तेरी करतूत

- डॉ. कमलेश "आलमपुर"

बारी ओ दुनियां दीवानी
कैसी जा तेरी करतूत?

बई बाँस की बनीं टुकनियाँ, बई के डलना-सूप।
वंशकार नें जान होम कें, इन्हें दओ जा रूप॥

कलाकार की कदर न जानी-
उल्टो कहो अछूत। बारी ओ ...

मौर बाँच फ्लकन को, दूल्हा बनों तुमाओ बेटा।
जाने इये बनाओ, कैसें यो फिर हो गओ हेटा।

अबहूँ सोचो-समझो फेकों-
सिर सें जा नफरत को मूत। बारी ओ ...

भरे छबुलिया में पूरी तुम सबको परसत जाव
जानें इये बनाई, उसें कहत दूर भाग जाव॥

कैसे रहै एकता-समता
कछु तो कहो धरम के दूत। बारी ओ ...

भये रैदास जई तबका में, जई में संत कबीरा।
जई में जन्में, भीमराव जी से कानूनी-कीरा।

वना विधान देश को बाँको-
दओ विद्वता-सबूत। बारी ओ ...

रूच-रूच गढ़ी मूर्ती सुन्दर, मन्दिर-मंडल बनाए।
वइ शिल्पी के लानें, मंदिर के किबार उड़काए॥

हलुआ-मालपुआ पंडन कों-
मिलै न वाय भभूत। बारी ओ दुनियाँ ...

आलमपुर (भिण्ड) म.प्र. पिन-477449

चौकड़िया

- डॉ. प्रेमलता 'नीलम'

हँसन तुमाई जादू कर गई,
मनइं-मनइं मन हर गई।
नोनी छब टुइयाँ सी मुइयाँ,
मोरे हिये उतर गई।

घुँघटा खेंचत-खेंचत हारी,
नयना दोऊ अनारी,
इन नयनों से बचके रइयो,
देखत चढ़त तिजारी।

जियरा भौंरा सो मडरानो,
बगियन फिरत हिरानो।
मिलो नईं रस सो मन हारो,
ढूढ़त फिरत जमानो।

छत पै बोलो कागा कारो,
उठो भओ भुन्सारो।
उठ गई घर की बूढ़ी काकी,
गइयन पूरा डारो।

काव्य कुंज
बी.-29, एलोरा कालोनी
दमोह, मो.: 9425406017

बुन्देली की छटा निराली

- *राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'*

दुनियाँ भर सें न्यारी न्यारी, बुन्देली की छटा निराली,
जाँ देखों ताँ प्यारी-प्यारी, बुन्देली की छटा निराली।

गाँव गली खोरन खोरन में, लिपे पुते दोरन में,
रकम रकम के रंगन बारी, बुन्देली की छटा निराली।

चौक चाँदनी ब्याव वरातें, ज्योनारन खों डारी पाँतें,
कड़ी बरन ने आन समारी, बुन्देली की छटा निराली।

सबई तीज त्यौहार रँगे हैं, बुन्देली के रंग में भइया,
बुड़की हो के होय दिवारी, बुन्देली की छटा निराली।

चाँये भजन कबीरा गालो, चाँये सूरवीरन के सैरा,
सब में झलकत है अवढ़ारी बुन्देली की छटा निराली।

मेला ठेला जग्ग जाता के तीरख खों होय जवाई,
सबरें सोभा की वलहारी, बुन्देली की छटा निराली।

खेतन हार पहारन देखो, का नोंनी कोदन की भोरें,
भुरी मौंसिया सी लमछारी, बुन्देली की छटा निराली।

चाँये कोउ रमटेरा गावै, चाँये ईसुरी की चौकड़िया।
सब्दन-सब्दन में अनियारी, बुन्देली की छटा निराली।

जैसई सन्नावे बिलवारी, झूम उठे गदरानी बालें,
कान लगी कोयलिया कारी, बुन्देली की छटा निराली।

करें तौ कोनऊ कम नइया, पै मैं साँसी काँव "सनेही"
सबसे सवा हौंत अतकारी, बुन्देली की छटा निराली।

- सरानी दरवाजे के बाहर
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9406762156

बारहमासी वर्जित भोजन

- ठाकुर जमना प्रसाद 'जलेश'

चैते गुड़, बैसाखे तेल, जेठे लटा अषाढ़े बेल।
सावन सतुआ, भादौं मही, कुंआर करेला कार्तिक दही।
अगहन जीरा, पूसे धना, माघे मिसरी फागुन चना।
जो यह बारह देय बचाय ता घर वैद्य कबहुं न जाय।

अर्थ: चैत्र में गुड़ खाने से कफ और बैसाख में तेल खाने से गर्मी पड़ती है। जेठ मास में महुआ गर्मी करता है, आषाढ़ माह में बेल खने से अग्नि मंद होती है। श्रावण में सतुआ खाने से वायु कोप होकर पेट फूलता है। भादौं में मही खाने से पित्त खराब होता है। कुंवार में करेला पक जाने से उन्हें खाने से शीत रोग बढ़ते हैं। अगहन और पूस ठंड के महीने होते हैं इनमें धना और जीरा हानिकारक है। माघ में ठंड पड़ने से मिसरी खाने से ठंड पैदा, फागुन में चना खानें से मल में खरावी और रक्त की कमी होती है।

बारहमासी सेवन योग्य भोजन

- ठाकुर जमना प्रसाद 'जलेश'

सावन खट्टा भादों तीत, कुंआर मास गुड़ खायें मीत।
कार्तिक मुरई अगहन तेल, पूस में करे दूध से मेल।
माघ मास उठ प्रात नहाय, फागुन में घी खिचड़ी खाय।
चैत पिये निब्बू का पात, बैसाखें जड़ धनियाँ भात।
जेठे मास नींद भर सोवें, तेकर दुख असाढ़ में रोबे।
सावन ब्यारी जव कब कीजे, भादो बाको नाम न लीजे।
कुंआर मास के दो पखवारे, जतन-जतन से काटो प्यारे।
कार्तिक मास दिवाली आय, जै बार पावे तैं बार खाय।

आदर्श स्कूल के पास,
सिविल वार्ड नं.4,
दमोह (म.प्र.) पिन-470661

बुन्देली प्रेम

- डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचेन'

भैया बुन्देली की गानें, घर-घर अलख जगाने।
ईसुर वै गये बीज बुन्देली, नींदत गोड़त रानें॥
बुन्देली में चला कलम नित, रस बरसा बरसानें।
नाटक लिखें, लिखें कविताई, किस्सा गद्य बखानें॥
दयाराम जो बाग-बुन्देली, हरौ भरौ मानें॥
हम खाँ लगत बुन्देली प्यारी, है गुर कैसी पारी।
गुलगुच सी गुरयात स्वाद में, जा रस भरी न्यारी॥
बुन्देली की बुंदी छटी है, स्वाद लेंय खुशमारी।
बांकी लगत बतासन में जा, घुरत देत सुख प्यारी॥
दयाराम मौंअन से मीठी, जा सबसें अनियारी॥
रस के मटका भरी बुन्देली, जा बोली अलबेली,
लाड़ लड़ैती चटकीली जा बुन्देलन कै खेली।
ब्रज की बैन हिन्दी की बिटियाँ, अवधी बनी सहेली
संस्कृत है नातिन प्यारी, चमक दिखा रई सेली
दयाराम अटका उन आने, ई की गजब पहेली।

पो.स्यावरी, महारानीपुर, झाँसी (उ.प्र.)
मो. 9794419115
(R)-05178261697

कहावतें और कविता

- वीरेन्द्र सिंह परमार

सुधर, सलोनी, साँवरी, आँखिन कजरा लेत।
गृहकारज निपटावने, झीन इशारौ देत॥ १ ॥

भोरऊँ, दिन-दुफरै, कभुँ, इच्छा जागृत होय।
टोर पघँईंयाँ लाज की, समौ सँभारत दोय॥ २ ॥

अम्मा-अम्मा जोर सें, जब चिल्लावै जीव।
तभँईं सून-भओ जानियौ, समझौ प्यारे पीव॥ ३ ॥

जभईं प्यारी पीव हिय, झुकत-झुमाकौ लेत।
समझौ दोनों प्रेम की, उखरी में सिर देत॥ ४ ॥

विरह-व्यथा नैनन बहै, हियै सतावै काम।
फिरऊँ सुनौ! ऐसो लगै, जाड़े कैसो धाम॥ ५ ॥

नेम-प्रेम क बीच में टेम बड़ौ है भाय।
पीछूँ पर रओ कुटम सब, साँसत धाय पै धाय॥ ६ ॥

ऊपर के दोहा लिखे, खुबई सोच विचार।
अनुभव करकैं देखियो, कहै वीरेन्द्र परमार॥ ७ ॥

ग्राम-उटियाँ/घरौन जिला-महोबा उ.प्र.
संपर्क सूत्रः 09936514519

दहेज कौ दाँनों

- डॉ. शंकर दयाल खरे 'शंकर'

कैसो बरयानौं है भैया, जौ दहेज कौ दाँनों।
बिटियन के बापन कौ दुसमन, ईखाँ पक्कौ जानों।
घुसकें इनें देस हमाये, हमखाँ भौत सताओ।
घुनसों घुसो हमाये घर में, कोऊ जान न पाओ।
देस-निकारौ ईकौ कर दो, बात हमाई मानों।
कैसौ बरयानों ...॥

जी गरीब कें कन्या जनमी, आफत ऊकी हो गइ।
बिटिया की मताई चिन्तन में, सूक ठटेरौ हो रई।
कंगाली में आटा गीलौ, कैसें परै ठिकानों ?
कैसौ बरयानों ...॥

ब्याव लाक हैं लरका जीके, सुरसा सौ मौं बा रए।
सूदे मौं बे बात न करबें भारी ठसक दिखा रए।
लेंन-देन की लालच में बे, करबे खींचा-ताँनों।
कैसौ बरयानों ...॥

कितनों बेंनन के भैयन खाँ, विष कौ घूँट पियाओ।
कितनी बिटियन के बापन खाँ, जम के लोक पठाओ।
लगा लुगरिया इयै जरा दो, रावन जैसो जानों।
कैसौ बरयानों ...॥

काल बनों कितनी कन्यन कौ, ईकी गिनती नैयाँ।
करनें ईकौ नास जरूरइ, बिनती सुनों गुसैंयाँ।
करिया मों ईकौ करबे की, अपनें मन में ठानों।
कैसौ बरयानों ...॥

जो दहेज की चरचा करबें, कालख मुख पै पोतों।
लरका बिटियाँ गाँठ बाँद लो, दूर तलक की सोचौ।
जागौ युवा देस भारत के, बदलौ नओ जमानौ।
कैसौ बरयानों ...॥

- समीप अवस्थी बंगला, दूल्हा बाबा मार्ग नौगाँव
जिला-छतरपुर (म.प्र.)

शीर्ष बुंदेली कवि / लेखक

कैलाश मड़बैया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ.भा.बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्

75, चित्रगुप्त नगर, कोटरा,
भोपाल - 462003
मो. 09826015643
फोन : 0755-2774037

दिनांक . 30 दिसम्बर 2010

मान्यवर,

अपनी चिठिया मिली। भौत नौंनो लगो कै अपन अबै भी पैल घॉई हिम्मत और लगन सें अपनी माटी की सेवा में लगे हैं। एई कौ सुफल है कै बुंदेली दरसन कौ चौथौ अंक २०११ में प्रकाशित करवे कौ संकल्प साद रए। हटा कौ नाव दमोह सें बायरें भी प्रदेश में एतिहासिक संस्कृति के लानें जानो जात। हमाई मंशा है कै हटा सबरे बुंदेलखण्ड में अपनी नीकी बुंदेली साहित्य और दरसन के लानें नेतृत्व करबै। अपन औरे अगर एसई अपनी बुंदेली संस्कृति के सृजन में लगे रैव तौ वौ दिना दूर नईयाँ जब भारत सरकार बुंदेली भाषा खों आठवीं अनुसूची में अवश्य शामिल करै।

बुंदेली एक हजार साल से भी पुरानी भाषा है जी के उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में करोड़न बोलवे बारे औंर सैकरन सृजन करवे बारे साहित्यकार हैं। पै स्तरीय पत्रिकायें नईयाँ सो कलमकारन खों प्रकाशन नई मिल पाउत। बुंदेलखण्ड सें जादाँ बुंदेली खों प्रकाशन की जरूरत है। जैंसे मराठी, गुजराती, बंगाली, और दक्षिण की भाषन खों खाद-पानी मिलत रत ऊसई अगर बुंदेली - अभिव्यक्ति खों प्रकाशन मिलवे तौं अनेकन साहित्यकार बुदेली में लिखवे खों प्रोत्साहित हुइयें। बुंदेली दरसन खों भी, बुंदेलखण्ड पै बुंदेली भाषा में सामग्री छापवे की पहल करे चाहिये तबई जगाँ-जगाँ बुंदेली बोली में जौन अंतर मिलत ऊ कौ मानकीकरन हुईयै और बुंदेली भाषा कौ साँचों सरूप मिल पैहै।

हमाई मंगल कामनायें आपके संगै

केवल हृदय सें नई सृजन-सहयोग से भी है।

(कैलाश मड़बैया)

प्रति,

डॉ. एम.एम. पाण्डे
संपादक
बुंदेली दरसन
हटा, दमोह (म.प्र.)

राजगुरू

पं. कपिलदेव तैलंग

एम.ए., बी.एड. साहित्य रत्न

मो. 975525095, फोन : 0755-4094470

एस.11, मंदाकिनी कॉलोनी, कोलार रोड,

भोपाल (म.प्र.)

समादरणीय,

पाण्डेय जी

संपादक - ''बुंदेली दरसन''

जय बुंदेली, जय बुंदेलखण्ड।

महोदय

आप द्वारा सम्प्रेषित बुंदेली दरसन के तृतीय अंक 2010 का प्राप्त कर आनंद की अनुभूति हुई। बुंदेली दरसन के दर्शन मात्र से ही हृदय गद-गद हो उठा। अतः साधुवाद,

अंक का प्रकाशन विविधवर्णी, बहुआयामी एवं सुसज्जित रूप में सामने आया है। प्रकाशन का गेट अप, सेट अप सब कुछ आशानुरूप ही नही संभावना से भी बढ़कर रहा। यथा स्थान, यथावसर की चित्रावली मुझ अनदेखे को भी सब कुछ आभासित कर रही थी, बहुत कुछ कह रही थी।

अंक बुंदेली भाषा साहित्य, संस्कृति, संस्कार, आचार-व्यवहार, उत्सव आयोजन पर अध्ययनपूर्ण जानकारी प्रकाशित कर आपने अपने कुशल सम्पादकीयता के साथ बुंदेलखण्ड के समग्र दर्शन करा दिए हैं। अब तक बुंदेली संस्कृति से सम्बन्धित प्रकाशित होने वाली पत्र पत्रिकाओं से आपने मेरी समझ में अल्पावधि में शीर्ष स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की है।

एक सुझाव देने का साहस कर रहा हूँ कृपया अन्यथा न लें लेख प्रायः खड़ी बोली में है। एक स्तंभ बुंदेली बोली (भाषा) में लिखे गए आलेखों कविताओं के दे सकें तो बहुत कुछ स्वरूप निखरेगा। यद्यपि कुछ आलेख बुन्देली में देखने पढ़ने को मिले।

बुन्देली भाषा-संस्कृति एवं साहित्य के संवर्धन में संलग्न आप जैसे महतीय जन मेरे लिए प्रशंसा के पात्र ही नहीं समादरणीय और आराध्य है। अतः मैंने समादरणीय शब्द से सम्बोधित किया है।

भवदीय

कपिलेव तैलंग

परम आदरणीय डॉ. पाण्डेय जी

(सम्पादक-बुन्देली दरसन)

बुंदेली दरसन प्राप्त हुई। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई मुख्य पृष्ठ कवर वहुत आकर्षक है । बुंदेली दरसन के संरक्षक **श्री पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी** एवं आपका कुशल संपादन, लगन, उत्साह एंव तन-मन-धन से लगे रहकर बुन्देली उत्सव का सफलतम आयोजन कराते हैं। बुन्देली उत्सव के कारण आज हटा की पहचान पूरे बुन्देलखण्ड में बन गयी है बुन्देलखण्ड की संस्कृति, रीति-रिवाज एवं बुन्देली से संबंधित ढेर सारे लेखों को **बुन्देली दरसन** में समेटकर वहुत प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। आप सही अर्थों में **बुंदेली** एवं **बुन्देली संस्कृति** का संरक्षण कर रहे हैं आपको श्री हजारी जी को एवं नगर पालिका परिषद हटा को साधुवाद।

साहित्यकारों, पत्रकारों एवं विशेष कलाकारों को भी प्रतिवर्ष सम्मानित करना प्रारंभ कर दें तो इस **बुंदेली उत्सव** में चार चाँद लग जायेंगे।

उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए पुनः धन्यवाद।

आपका

राजीव नामदेव ''राना लिधौरी''

संपादक ''आकांक्षा''

अध्यक्ष-म.प्र.लेखक संघ, जिला-इकाई, टीकमगढ़

●●●

डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव

अनन्य कालोनी, सेंवढा जिला दतिया (म.प्र.)

श्रद्धेय डॉ. पाण्डे जी, नमस्कार ।

बुंदेली दरसन अंक-3, वर्ष 2010 प्राप्त हो गया है। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं एवं समसामयिक चिंतन, दर्शन पर आधारित सुधी विद्वानों और कवियों की रचनाओं से यह अंक समृद्ध हो गया है। आपका व्यक्तित्व एवं सम्पादन कौशल प्रशंसनीय है। रचनाओं का यथा स्थान संयोजन स्तुत्य है। एक ही अंक मे प्रभूत और उपोदय साहित्यिक रचनाओं को पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत करने के लिए आपको हार्दिक साधुवाद। आशा है आप इसी तरह साहित्य और समाज की सेवा में रत रहेंगे।

भवदीय

श्यामबिहारी

श्रीयुत पांडे जी,

सादर अभिवादन

बुंदेली दरसन २०१० अंक-3 की लेखकीय प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद्।

पत्रिका (स्मारिका) से संग्रहीत सामग्री एवं चित्र आपके कुशल सम्पादकत्व का परिणााम है। तीसरे वर्ष में ही बुंदेली बंसत की ऊंचाई को नापना आपके परिश्रम का प्रतिफल है। बुंदेली इतिहास परम्परा पुरातत्व साहित्य एवं संस्कृति का सुन्दर सामंजस्य सराहनीय है। आशा की नई दिशायें एवं नवीन खोजों को निरंतर उद्घाटित करने में बुंदेली दरसन अग्रणी भूमिका का निर्वाह करती रहेगी।

कु. शिवभूषण सिंह गौतम
''अन्तर्वेद'' कमला कालोनी,
छतरपुर (म.प्र.) ४६९००१

डाक्टर साहब जू जय हो

- ''बुन्देली दरसन पढ़ी,'' भौ बुन्देली शान।
  सम्पादन अद्भुत करो, खूब लगा के ध्यान॥
- छटा निराली है हटा, जैसें सभा शिवेन्द्र।
  संयोजन मेला को करें, कुंअर श्री पुष्पेन्द्र॥
- बुन्देली गौरव बढ़ो, करकें नई-नई खोज।
  लोक कथायें गीत के, खिल-खिल गये सरोज॥
- नृत्य बुन्देली राग में, मनको हर-हर लेत।
  संस्कृति सोहे आवरण, नई दिशा है देत॥
- नायक बाबू जी गुनी, सबै गुनन की खान।
  मेला में भौ आगमन, अपनेपन को मान॥

रामस्वरूप 'स्वरूप'
गीतकार, समीक्षक बुंदेला शोध संस्थान,
सेंवढ़ा दतिया (म.प्र.)

डॉ. बहादुर सिंह परमार
संपादक-बुन्देली बसन्त
एम.आई.जी.-7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, छतरपुर

आदरणीय पांडे जी,

सादर प्रणाम।

आपके द्वारा प्रेषित बुन्देली दरसन का अंक-3 मिला । पढ़कर प्रसन्नता हुई कि आप इस पत्रिका के माध्यम से बुंदेली के महत्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित कर रहे हैं। बुंदेली मेला की झांकी मनमोहक है। उम्मीद है कि इसी उल्लास व उत्साह से आप बुंदेली का कोष समृद्ध करते रहेंगे। मेरी ओर से माननीय श्री हजारी जू को प्रणाम कहिएगा।

आपका
बहादुर सिंह परमार

●●●

गंगा प्रसाद बरसैंया
12-एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)

आदरणीय डॉ. पाण्डे जी सादर नमस्कार।

बुंदेली दरसन अंक-3 पाकर अतीव प्रसन्नता हुई। उसका एक रंग और कलेवर तो आकर्षक ही है। उसमें संयोजित की गई सामग्री अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन लेखों और कविताओं में बुंदेली और बुंदेलखण्ड की संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व और जीवन के अनेक पक्ष उजागर होते है। सबसे बड़ी बात है बुंदेली में लिख गये लेख और कवितायें। इससे बुंदेली साहित्य समृद्ध होगा बसारी के बुंदेली बसंत,एवं सागर के ईसुरी और आपके हटा के बुन्देली दरसन नया वातावरण बना है। लगता है जैसे बुन्देली संस्कृति और संपदा को उजागर करने की नई लहर आई है जो चीजे हमसे छूट रही थी वे फिर पुनर्जीवित हो रही है। यह अत्यन्त सुंदर है। अच्छे प्रकाशन के लिए मेरी बधाई स्वीकार करें।

गंगा प्रसाद बरसैंया

●●●

आदरणीय डॉ. पाण्डे जी, सादर नमस्कार।

बुंदेली दरसन अंक-3, 2010 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद। बुंदेली संस्कृति इतिहास कला साहित्य पर केन्द्रित यह अंक न केवल पठनीय है, संग्रहणीय भी है। बुंदेलखण्ड अंचल के प्रायः सभी चर्चित रचनाकारों के लेख आपने जुटायेहैं। पत्रिका की सुरूचिपूर्ण प्रस्तुति एवं संपादन के लिए मेरी बधाइयां स्वीकारें। आशा है स्वस्थ सानंद होंगे। शुभकामना सहित।

आपका
आनंद प्रकाश त्रिपाठी
सं. "शब्द शिखर" कथायन यादव कालोनी, सागर